सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

निकोलाई लेस्कोव

विमुग्ध यायावर और दूसरी कहानियां

प्रगति प्रकाशन

मास्को
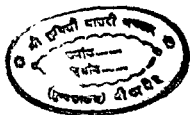
अनुवादक : रामनाथ व्यास 'परिकर'

Н. С. Лесков.
ОЧАРОВАННЫЙ СТРАННИК
И ДРУГИЕ РАССКАЗЫ
На языке хинди.

$Л\frac{70301-992}{014(01)-77}592-76$

सोवियत संघ में मुद्रित।

अनुक्रम

निकोलाई सेम्योनोविच लेस्कोव

(१८३१–१८६५)

9329

निकोलाई सेम्योनोविच लेस्कोव का जन्म रूस के मध्यवर्ती भाग मे स्थित ओर्योल गुबेर्निया के एक छोटे से गाव गोरोखोवो मे हुआ था। उनके पिता एक साधारण अधिकारी थे, पर असाधारण योग्यता और सत्य के प्रति अडिग निष्ठा वाले व्यक्ति थे। उनके जीवन का अधिकाश समय एक अरुचिकर नौकरी से अपने परिवार का भरण-पोषण करने मे बीता था। लेस्कोव ने अपने सस्मरणो मे लिखा है· "मेरे पिता एक अप्रतिम बुद्धिमत्ता के व्यक्ति थे, मेरी मा ने अभिजात वर्ग की होते हुए भी उनसे प्रेम किया था। मेरे पिता रिलेयेव और बेस्तूजेव* से परिचित थे, पहले उन्हे काकेशस क्षेत्र मे भेज दिया गया था पर बाद मे वे ओर्योल आ गये और विवाहित हो गये। उनकी पर्यवेक्षण-शक्ति और सूक्ष्मदर्शिता के कारण वे एक अपराध जाचकर्त्ता के रूप मे प्रसिद्ध हुए। अलौकिक कार्यकुशलता व दूरदर्शिता के लिए उन्हे बडा सम्मान व सभी कुछ प्राप्त हुआ अलावा धन के जिससे उन्हे सदैव वचित रखा गया, इससे वे रुष्ठ हो गये और उन्होने खेतो और सब्जियो के बगीचो के सपने लेने शुरू किये। उन्होने छोटी सी मिल्कियत खरीदी, और क्यारिया खोदनी शुरु की, परन्तु खराब फसलो, किसानो के झगडो, तूफानो, पशुओ की महामारी और अन्य कष्टो से, जिनको हम ग्रामीण जिदगी के सपने लेते हुए भूल जाते है–वे इतने क्लान्त हो गये कि पाच वर्ष के भीतर ही अपनी देह पेर-पेरकर उनका प्राणान्त हो गया।

---

*रिलेयेव और बेस्तूजेव–विख्यात रूसी साहित्यकार, क्रान्तिकारी, सेंट पीटर्सबुर्ग मे १४ दिसबर १८२५ को हुए विद्रोह के सगठक और उसमे भाग लेनेवाले व्यक्ति।–स०

जानकारी हासिल की। यहां उन्होंने अनगिनत मानवीय नाटक देखे और लोगों के भाग्यों की पृष्ठभूमि को समझा...

बाद में लेस्कोव उसी विभाग में काम करते हुए आठ वर्ष तक मालोरोसिया (आजकल का उक्राइना) की राजधानी कीयेव में रहे। ये वर्ष उनकी शिक्षा की दृष्टि से विशेष लाभदायक रहे। कीयेव में अपने चाचा, चिकित्सा विज्ञान के प्रोफेसर स० प० अल्फेर्येव के घर में वे प्रगतिशील विचारों के बुद्धिजीवियों, लेखकों व कलाकारों के गहरे सम्पर्क में आये, उन्होंने विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का तत्परता से अध्ययन किया और अपनी शिक्षा की कई कमियों को पूरा किया। उन्होंने विशेषकर प्राचीन व आधुनिक इतिहास के ग्रंथों का पूरा अध्ययन किया, रूसी प्रतिमा चित्रण सीखने में गहरी दिलचस्पी ली, रूसी चर्च के इतिहास में विधर्मी प्रवृत्तियों के विषय में खोज की और विभिन्न कलाओं का जिज्ञासा के साथ ज्ञान प्राप्त किया। "मुझ में हमेशा ही एक कमज़ोरी रही है—पता नहीं सद्भाग्यवश या दुर्भाग्यवश—हर प्रकार की कला का शौक होना। अस्तु, मुझे देव प्रतिमा चित्रण, लोकगीत, जन-चिकित्सा व चित्रों का पुनरुद्धार करने आदि का शौक रहा है," लेस्कोव ने अपने संस्मरणों में लिखा है।

उन वर्षों में भी लेस्कोव ने बहुत कुछ देखा जब उन्होंने अपने मौसा अंग्रेज़ श्कौट की नौकरी की। श्कौट, पेरोवस्की काउंटों के प्रबंधक थे, जिनकी जागीरें विभिन्न गुबेर्नियों में बिखरी हुई थीं। दौरे के एजेन्ट के रूप में लेस्कोव को काफ़ी समय तक दक्षिण रूस और वोल्गा क्षेत्र में यात्राएं करनी पड़ी थीं। उन्हें कभी-कभी देश के बहुत पिछड़े हुए इलाकों में भी जाना पड़ता था और सभी जगह वे जीवन का परिचय प्राप्त करते थे। "मैंने अपना अध्ययन स्कूल में नहीं पर श्कौट की नावों में दौरे करते हुए किया है," उन्होंने बाद में लिखा। उन्होंने ओर्योल, पेन्ज़ा, कीयेव, सेंट पीटर्सबुर्ग, मास्को, निज़्नी नोव्गोरोद, प्स्कोव, ओरेनबर्ग और ओदेसा की यात्राएं की थीं। वे बाल्टिक सागर के तटवर्ती इलाकों और फ़िनलैंड की खाड़ी के द्वीपों में रहे थे... दक्षिण में उन्होंने किर्गिज़ स्तेपी की वायु में सांस ली थी, जहां चांदी जैसी चमकदार पंख-घास होती है और उत्तर में

जो निरंतर परम सुख अथवा सत्य की खोज में लगे हुए दिखते हैं। वे कर्तव्य-परायण, निस्वार्थ और निष्ठावान व्यक्ति हैं और ऐसे व्यक्ति भी जो अपनी कामनाओं की लपटों में जलकर खाक हो जाते हैं।

लेस्कोव अपने नायकों के अंतर के गुप्त रहस्यों में पैठने, उनके मन में गहरे छिपे हुए सपनों को समझने, अपने दिल में उनके कष्टों को अनुभूत करने तथा उनकी अवचेतन चेष्टाओं व आत्मा की बेचैनी को चीन्हने में निपुण हैं।

उन वर्षों में, रूस में १८६१ के कुख्यात कृषक सुधार के बाद, जैसा कि लेव तोलस्तोय ने उचित ही कहा था, "सब कुछ उलट दिया गया है और केवल जमने लगा है," उस काल में लेस्कोव ने अपनी सत्य की खोज में केवल विचारों अथवा सिद्धान्तों की ओर न झुककर, किसी सजीव उदाहरण अर्थात् मनुष्य को आधार बनाना आवश्यक समझा। इस प्रकार, अनेक "ईमानदार सनकी लोग", और "संत" उनकी कृतियों में प्रकट हुए—ऐसे लोग जो भलाई के लिए भला काम करने की चेष्टा करते हैं और जो किसी सम्मान अथवा प्रोत्साहन की अपेक्षा नहीं रखते। लेस्कोव ने लिखा है, "मेरी प्रतिभा की शक्ति आदर्श नायकों में निहित है. . ."

लेस्कोव को विश्वास था कि मुख्य बात तो व्यक्ति के नैतिक सुधार की है। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि नैतिक और धार्मिक विचारों के प्रभाव से समाज के गर्भ में एक नवमानव का जन्म होगा जो इतिहास के क्षेत्र में प्रकट होगा। उन्हें आशा थी कि ऐसे व्यक्तियों का उदय होगा जो अपने चारों ओर के जनसमाज को प्रभावित करेंगे। आरम्भ में ऐसे कुछ व्यक्ति होंगे व बाद में बाक़ी सब लोग भी प्रेम और सद्‌वृत्ति के पथ पर उनका अनुसरण करेंगे। जनता के प्रति उनकी आस्था इसी सादे विचार में छिपी हुई थी। लेस्कोव ने लिखा, "मानव में द्वन्द्वभावना होना सम्भव है पर उसका गहनतम 'सार' वहीं मिलेगा जहां उसकी उत्तम संवेदनाएं हैं।"

उनके नायक विभिन्न प्रकार के होते हुए भी अपनी विशिष्टताओं में एक दूसरे के निकट हैं। उन सभी ने कष्टप्रद जीवन-यापन किया किन्तु वे गहरी दयावृत्ति व आत्मबलिदान की भावना धारण किये हुए हैं। उनमें विश्व के प्रति गहरा मानवीय झुकाव एकदम ही नहीं उभरा, पर यह

उनकी जीवन-यात्राओं के कष्टों मे जन्मा है। उदाहरणार्थ, यह केवल
संयोग ही नही या कि लेस्कोव की कहानियों में से एक उत्कृष्ट व विशि
कहानी का शीर्षक "विमुग्ध यायावर" है। लेस्कोव के कई कथानाय
सत्य की खोज में रत यात्री हैं। उनमें से प्रत्येक अपनी खोजों की
परीक्षा की घड़ियो मे "मानव आत्मा" को धारण किये हुए है... वे
अपने मानवीय कर्तव्य का पालन करने में सुख पाते हैं। एक अन्य
विशिष्टता यह है कि लेस्कोव के कई प्रिय नायक अपनी रुचि के धंधे से
सम्बद्ध हैं जिसमे उनकी विलक्षण प्रतिभा प्रकट होती है। वे सत्य के
प्रवर्तक और कुशल दस्तकार हैं, यथा ईवान सेवेर्यानिच फ़्लागिन
("विमुग्ध यायावर", १८७३) अथवा अरकादी ("प्रसाधन कलाकार",
१८८३)।

लेस्कोव का एक और वैशिष्ट्य है उनका प्रगाढ़ अंतर्राष्ट्रीयतावाद। "मानव
जाति की एकता, चाहे जो कुछ कहे, कोरी कल्पना मात्र नही है–मनुष्य
प्रथमतः दयावृत्ति का अधिकारी है, क्योंकि वह मनुष्य है और मैं उसकी
स्थिति को ख़ूब समझता हूं, चाहे उसकी राष्ट्रीयता कोई क्यों न हो,"
इस प्रकार लेस्कोव ने अपने अंतरतम के विचारों को अभिव्यक्त किया है।
लेस्कोव की प्रत्येक रचना में लेखक की कामना–इन्सान का पक्ष लेने,
उसे संसार मे स्थापित करने में सहायक होने और उसे यह सिखाने की
रही है कि "लोगों के मानवीय स्वतंत्रता के अपरिहार्य अधिकार का
सम्मान करना चाहिए।" यह संयोग मात्र ही नही है कि अंग्रेज लेखक चार्ल्स
स्नो ने, अधिक समय नही हुआ, लेस्कोव को रूसी साहित्य के अन्य सर्वश्रेष्ठ
के साथ "वास्तविक मानवतावाद का प्रतिनिधि" माना है। लेस्कोव की
कृतियों मे मानवीय करुणरस की अभिव्यक्ति सभी लोगों के निकटस्थ रही
है और उनके द्वारा प्रशंसित हुई है।

साथ ही, लेस्कोव की कृतियां अन्य लेखकों के मुक़ाबले अधिक
राष्ट्रीयता लिये हुए हैं। गोर्की ने लिखा है, "लेस्कोव का मूल
विचार किसी व्यक्ति के भाग्य को समर्पित न होकर रूस के भाग्य के
बारे मे है।" उनकी कृतियों में पुराना मौलिक रूस तथा समकालीन
वास्तविकता दोनों ही अभिव्यक्त हुए हैं, वे विभिन्न परिस्थितियों में रूसी
जनता को अंकित करती हैं, जनता का उल्लेख सदैव यथार्थता,
प्रेम और सहानुभूति के साथ किया गया है। उनके नायक आत्मा से व

अपनी मातृभूमि के प्रति स्वाभाविक प्रेम में रूसी हैं, जिसके बिना वे जीवित ही नहीं रह सकते। उन्होंने अपनी माता के दूध के साथ रूस के प्रति प्रेम को आत्मसात किया है और वे सभी "अपनी पितृभूमि के निष्ठावान पुत्र हैं, सच्चे देशभक्त हैं, जो अपनी जनता के लिए मरने को इच्छुक हैं"।

• • •

इस संग्रह में ली गई कई कहानियां पुराने रूस को दैनंदिन जीवन के पूर्ण विवरण सहित प्रतिबिम्बित करती हैं। विभिन्न प्रकार की श्रेणियों और धंधों के लोगों छोटे व्यापारियों, मध्यम वर्ग के लोगों, पादरियों, नौकरों, अभिजात वर्ग और साधारण अधिकारियों – सभी का प्रतिबिम्ब उनकी कहानियों में है। सभी वर्गों के जीवन की रोजमर्रा पहेलियों और मानवीय सम्बन्धों से लेखक का मन आकृष्ट हुआ था। उन पहेलियों को हल करने के लिए उन्होंने ऐसे नायकों को स्थान दिया है जिन्होंने अपने जीवन तथा स्वयं के बारे में बताया है।

लेस्कोव "रूसी मनुष्य के अंतरतम की गहराई" को जानते थे, वे जनता के अंग थे। उन्हें "जनता की वाणी को सुनने और लोक मतों को जानने" की अपनी क्षमता से सदैव सहायता मिलती थी। उन्होंने "जनसाधारण का आदमी" ठीक उसी ढंग से वर्णित किया जैसी उस आदमी की खुद की समझ थी और जैसे वह खुद अपने को महसूस किया करता था। लेस्कोव इस आदमी के विचारों और भावनाओं की गहराइयों की तह में उतरे थे। "विमुग्ध मायावर", "प्रसाधन कलाकार" और अन्य कई कहानियों में लेखक कथन शुरू करता है और फिर यह काम अपने नायकों को सौंप देता है। लेस्कोव के प्रत्येक कथानायक का अपना निजी व्यक्तित्व है, वह एक निजी वाणी बोलता है और सहज कथा में स्वयं को "व्यक्त" करता है। "मनुष्य शब्दों से ही जीवित है और यह जानना आवश्यक है कि मानसिक जीवन के किन क्षणों में, कोई किन शब्दों को पायेगा" – इसी में लेस्कोव को लेखन-कला के दर्शन हुए थे।

लेस्कोव के कथानायक, नियमतः, जीवन का विपुल अनुभव रखते हैं लेकिन साथ ही वे सरलहृदय और कई मामलों में भोले-भाले हैं। और,

बेहद बरोजगार ही नहीं है। कई बार लेस्कोव ने किसान व साधारण मध्यवर्गीय वर्गों के लोगों के जीवन को चित्रित किया अर्थात् उन श्रेणियों के लोगों को जिन्होंने १८६०–१८८० के रूप में "जीवन में सक्रिय भाग लेना" आरंभ ही किया था। उनमें से बहुत से नायक अब तक अपने इर्दगिर्द की स्थिति को पूर्ण रूप से समझने के योग्य नहीं थे पर इन लोगों के पास घटने ही रूप से देखने व अनुभूत करने की आश्चर्यजनक क्षमता थी... वे इस प्रकार बोलते हैं मानो वे आपके साथ अपने भाग्य के उतार-चढ़ावों को बांटना चाहते हों अथवा अपने सुननेवालों में उस बात में दिलचस्पी पैदा करना चाहते हों जिसका उन्हें अब तक अचंभा है। वे संसार पर विमुग्ध हो गये हों। उनकी भावनायें जो स्वयं उनके लिए अस्पष्ट हैं, उन की उक्तियों में मनचाहे ही उभर आती हैं। "उनकी स्वयं की आवाज़" कितनी महत्त्वपूर्ण है! नायकों की बातों के माध्यम से, जो लोकप्रिय कहावतों, मनोरंजक मुहावरों, वाक्यांशों और शब्दों से भरी-पूरी हैं–दुर्भाग्यवश जो लगभग अनुवादपरक नहीं है*–वर्णित व्यक्तियों के सोचने का तरीका और उनकी मनोदशा तथा उस काल के सही लक्षणों को सहज ही समझा जा सकता है। काल को लेस्कोव ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना है: "यदि काल को सही प्रकार से वर्णित किया जाय तो कलात्मक लक्ष्य की उपलब्धि हो जाती है।"

"म्त्सेन्स्क जिले की लेडी मैकबेथ" में एक व्यापारी परिवार की दासतापूर्ण अधीनता की कठोर नैतिकता और भयंकर ऊब को देखा जा सकता है। भावाविष्ट व आवेगपूर्ण कातेरीना इज़्माइलोवा के भाग्य में यही वातावरण बदा था। उसके चरित्र की दृढ़ता की शेक्सपियर की नायिका से तुलना की जा सकती है। उसका जीवन असंतुष्ट वासनाओं से परिपूर्ण है। वह प्रेम व मातृत्व के लिए छटपटाती है पर उसके तड़पने का कोई हल नहीं मिल पाता है। वह मानवीय सम्मान को प्राप्त करना तो चाहती है पर वह उसे नहीं मिल पाता है, आख़िर उसे अपने

---

* इस संबंध में लिखा था कि उनकी कई कृतियों की ... अन्य भाषा में सम्प्रेषित नहीं की जा सकती (रूसी में), खण्ड ११, मास्को, १९५७, पृ०

मत्त से अधिकार की रक्षा करने को बाध्य होना पड़ता है—वह अपनी भावनाओं को अबाध रीति से प्रदर्शित करती है और अन्ततः व्यवसायी जीवन-पद्धति के उस "अंधकारपूर्ण राज्य" से संघर्ष कर बैठती है। पर वह स्वयं को उस राज्य के अभिन्न अंग के रूप में पाती है। अन्ततः अपने प्रिय मगर विश्वासघाती और धनलोलुप कारिन्दे सेर्गेई द्वारा उत्तेजित किये जाने पर वह अपराध करती है और विनष्ट हो जाती है। इस कहानी से उत्पन्न मनोदशा में यही विचार उठता है कि वह जीवन कितना अप्राकृतिक है जिसमें मनुष्य की उत्कृष्ट कामनाएं विकृत हो जाती हैं और जीवनोल्लास से परिपूर्ण लोग विनष्ट हो जाते हैं।

"विमुग्ध यायावर" लघु-उपन्यास एक दूसरे ढंग के संसार को उजागर करता है, जहां वास्तविक घटनाएं भी परी-कथा सी लगती हैं। उपन्यास में भूदास ईवान सेवेर्यानिच प्ल्यागिन के विस्मयपूर्ण जीवन और उसकी यात्राओं का वर्णन है। इस वास्तविक प्रतीकवादी नायक में बड़े सही रूप में उन लोगों की असली विशेषताओं को प्रतिबिम्बित किया गया है, जो तत्कालीन रूस में सचमुच ही रहा करते थे। लेस्कोव सजीवता से अपने कथानायक की बालसुलभ आत्मा की दुर्दमनीय शक्ति, उसकी अनश्वर जीवनक्षमता ("पूरे जीवन भर मैं मृत्यु के समीप रहा था पर कभी विनष्ट न हो सका"), उसकी दयालुता और अन्य व्यक्तियों के दुर्भाग्य के प्रति उसकी करुण भावना को प्रदर्शित करते हैं। वह कर्त्तव्य-भावना से प्रेरित होकर कार्य करता है—प्रायः अन्तःस्फूर्ति के कारण और कभी-कभी भावुकता के आवेगों के फलस्वरूप। फिर भी उसके समस्त कार्य, चाहे आश्चर्यजनक हों, उसमें निहित उदारवृत्ति से उत्पन्न होते हैं। वह अपनी भूलों और कठोर पश्चाताप से गुजरता हुआ सत्य और सौंदर्य की ओर उन्मुख होता है, वह प्रेम ढूंढता है और स्वयं ही वह लोगों के प्रति अपने प्रेम को उदारता से लुटाता है।

"विमुग्ध यायावर" में लोकवीरता की विषयवस्तु लेस्कोव की कृतियों में प्रथम बार प्रयुक्त हुई है और नायक अपनी सच्ची आंतरिक महानता के साथ वास्तविक लोक-चारित्रिक विशेषताओं को धारण किए हुए प्रकट हुआ है।

एक अन्य कथानायक—सुयोग्य केशप्रसाधक अरकादी ("प्रसाधन कलाकार," १८८३) के जीवन का इतिहास और भी अधिक उदासीनता

ऐसा सयोगवश ही नही है। कई बार लेस्कोव ने किसान व साधारण बुद्धिजीवी घरो के लोगो के जीवन को चित्रित किया अर्थात् उन श्रेणियों के लोगों को जिन्होंने १८६०–१८८० के रूस मे "जीवन में सक्रिय भाग लेना" आरम्भ ही किया था। उनमे से बहुत से नायक अब तक अपने इर्दगिर्द की स्थिति को पूर्ण रूप मे समझने के योग्य नही थे पर इन लोगों मे पास अपने ही ढग से देखने व अनुभूत करने की आश्चर्यजनक क्षमता थी... वे इस प्रकार बोलते है मानो वे आपके साथ अपने भाग्य के उतार-चढ़ावो को बाटना चाहते हो अथवा अपने सुननेवालो मे उस बात में दिलचस्पी पैदा करना चाहते हो जिसका उन्हे अब तक अचभा है। वे ससार पर विमुग्ध हो गये हों। उनकी भावनायें जो स्वय उनके लिए अस्पष्ट हैं, उन की उक्तियों मे मनचाहे ही उभर आती हैं। "उनकी स्वय की आवाज" कितनी महत्वपूर्ण है! नायकों की बातों के माध्यम से, जो लोकप्रिय कहावतों, मनोरजक मुहावरों, वाक्याशो और शब्दों से भरी-पूरी हैं—दुर्भाग्यवश जो लगभग अनुवादपरक नही हैं*—वर्णित व्यक्तियो के सोचने का तरीका और उनकी मनोदशा तथा उस काल के लोगों की भावनाओं को सहज ही समझा जा सकता है। काल को लेस्कोव ने अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है "यदि काल को सही प्रकार से वर्णित किया जाय तो कलात्मक सत्य की उपलब्धि हो जाती है।"

"म्त्सेन्स्क जिले की लेडी मैकबेथ" मे एक व्यापारी परिवार की दमनपूर्ण अधीनता की कठोर नैतिकता और भयकर ऊब को देखा जा सकता है। भावातिरेक व आवेगपूर्ण कातेरीना इस्माइलोवा के अन्दर में यही वातावरण बढ़ा था। उसके चरित्र की दृढ़ता की शेक्सपियर की नायिका से तुलना की जा सकती है। उसका जीवन असन्तुष्ट वासनाओं से परिपूर्ण है। वह प्रेम व मातृत्व के लिए तरसती है पर उसे इसका कोई हल नहीं मिल पाता है। वह मानवीय सम्मान को प्राप्त करना चाहती है पर वह उसे नहीं मिल पाता है, आखिर तंग आकर

---

*लेस्कोव ने स्वयं इस संबंध में लिखा था कि उनकी कई कृतियों को "[illegible]" किसी अन्य भाषा में अनूदित नहीं की जा सकती है।—मक्सिम गोर्की (खण्ड [illegible]), खण्ड ११, मास्को, १९[illegible], पृ० [illegible]—सं०

मुख के अधिकार की रक्षा करने को बाध्य होना पड़ता है – वह अपनी भावनाओं को अबाध रीति से प्रदर्शित करती है और अन्ततः व्यवसायी जीवन-पद्धति के उस "अंधकारपूर्ण राज्य" से संघर्ष कर बैठती है। पर वह स्वयं को उस राज्य के अभिन्न अंग के रूप में पाती है। अन्ततः अपने प्रिय मगर विश्वासघाती और धनलोलुप कारिन्दे सेर्गेई द्वारा उत्तेजित किये जाने पर वह अपराध करती है और विनष्ट हो जाती है। इस कहानी में उत्पन्न मनोदशा से यही विचार उठता है कि वह जीवन कितना अप्राकृतिक है जिसमें मनुष्य की उत्कृष्ट कामनाएं विकृत हो जाती हैं और जीवनोल्लास से परिपूर्ण लोग विनष्ट हो जाते हैं।

"विमुग्ध यायावर" लघु-उपन्यास एक दूसरे ढंग के संसार को उजागर करता है, जहां वास्तविक घटनाएं भी परी-कथा सी लगती है। उपन्यास में भूदास ईवान सेवेर्यानिच फ्लागिन के विस्मयपूर्ण जीवन और उसकी यात्राओं का वर्णन है। इस वास्तविक प्रतीकवादी नायक में बड़े सही रूप में उन लोगों की असली विशेषताओं को प्रतिबिम्बित किया गया है, जो तत्कालीन रूस में सचमुच ही रहा करते थे। लेस्कोव सजीवता से अपने कथानायक की बालसुलभ आत्मा की दुर्दमनीय शक्ति, उसकी अनश्वर जीवनक्षमता ("पूरे जीवन भर मैं मृत्यु के समीप रहा था पर कभी विनष्ट न हो सका"), उसकी दयालुता और अन्य व्यक्तियों के दुर्भाग्य के प्रति उसकी करुण भावना को प्रदर्शित करते हैं। वह कर्त्तव्य-भावना से प्रेरित होकर कार्य करता है – प्राय अन्तःस्फूर्ति के कारण और कभी-कभी भावुकता के आवेगों के फलस्वरूप। फिर भी उसके समस्त कार्य, चाहे आश्चर्यजनक हों, उसमें निहित उदारवृत्ति से उत्पन्न होते हैं। वह अपनी भूलों और कठोर पश्चात्ताप से गुजरता हुआ सत्य और सौंदर्य की ओर उन्मुख होता है, वह प्रेम ढूंढता है और स्वयं ही वह लोगों के प्रति अपने प्रेम को उदारता से लुटाता है।

"विमुग्ध यायावर" में लोकवीरता की विषयवस्तु लेस्कोव की कृतियों में प्रथम बार प्रयुक्त हुई है और नायक अपनी सच्ची आतरिक महानता के साथ वास्तविक लोक-चारित्रिक विशेषताओं को धारण किए हुए प्रकट हुआ है।

एक अन्य कथानायक – सुयोग्य वेशप्रसाधक अरकादी ("प्रसाधन कलाकार," १८८३) के जीवन का इतिहास और भी अधिक उदासीनता

. . . है। परन्तु इसम लखक की प्रवृत्ति
ई कहानियों में कहीं अधिक स्पष्टता और तीव्रता से प्रकट हुई है–
यन की ध्वनि के स्थान पर खुल्लमखुल्ला व्यंगपूर्ण कथन की शैली
गई है। लेखक व्यंग के माध्यम से सत्ताधारियों का वर्णन करता
ने नायक पर एक अनुचित मुकदमा चलाया और स्वार्थवश
दयतापूर्वक दंडित कर दिया। कहानी का असत्य "सुखान्त"
उसके सभी पात्रों का "तुष्टीकरण" सत्ताधीशों के
र निर्दयता को और भी अधिक स्पष्टता से लक्षित
।

• • •

गेव ने सौ से अधिक कहानियां, लघु उपन्यास, "गाथाएं",
कई बड़े उपन्यास और पुरावृत्त लिखे थे। उनका साहित्यिक मार्ग
, उनका "कष्टमय विकास" जैसा उन्होंने लिखा है, अंतर्विरोधों
हुआ था और आरंभ में उन पर प्रतिक्रियावादी प्रभावों की छाप
प्रभावों का सामना नहीं कर सके थे, क्योंकि उन्हें भी अपने इर्दगिर्द
रण के पूर्वाग्रहों का बोझ वहन करना पड़ रहा था– "वे बेड़ियां
रुस के कुलीन घरानों के बच्चे को बचपन में ही जकड़ दिया
" जैसा उन्हीं के शब्दों में वर्णित हुआ है। उनका जोशीला स्वभाव
उनके गहन मनन से बाधक हुआ था। कई बार वे पश्चात्ताप
और अपने "अतिक्रमों" को बराबर कोसा करते थे। यह सब
मतापूर्ण वैयक्तिगत लक्षणों– दयालुता और मृदुलता, भावुकता और
क्रोध और धीरज की कामना से और भी गुरुतर हो जाता है।
उनके समस्त विचार और भावनाएं एक ही कामना से नियंत्रित
की सेवा हेतु" और "विश्व हेतु" कार्य करना। ये शब्द जो
कथानायक के मुख से कहे गये हैं, लेखक की कृतियों की प्रवृत्ति
म परिचय देते हैं। ठीक इसी कारण से लेस्कोव प्रगतिशील
ने की अग्रपंक्ति में सम्मिलित हैं और उनके प्रमुख प्रतिनिधियों
क सम्मानपूर्ण स्थान [illegible] सर्वश्रेष्ठ गोर्की के कथना-
सी साहित्य[illegible] लेस्कोव ऐसे
[illegible] होने के अधिकारी हैं [illegible] तोलस्तोय,

गोगोल, तुर्गेनेव एवं गोन्चारोव। लेस्कोव की प्रतिभा शक्ति और मौलि-
कता में रूसी भूमि के पवित्र लेखन के उपरोक्त रचनाकारों से कुछ निम्नतर नहीं
है अर्थात जीवन के अवगाहन की व्यापकता में, जीवन की वैयक्ति-
कताओं को समझने की गहनता में, और इसी भाषा के सम्पूर्ण ज्ञान
में वे कभी-कभी अपने उपरोक्त पूर्ववर्ती व समकालीन लेखकों से आगे
बढ़ जाते हैं।"

अ० मु० गोर्की

म्त्सेन्स्क ज़िले की लेडी मैकबेथ

(एक रेखाचित्र)

पहला गीत गुलाबी मुस्कान लिये होता है।
—एक कहावत

अध्याय १

हमारे इलाके में कभी-कभी ऐसे चरित्र उभर आते हैं कि जिनकी याद से ही, घटना के बरसों बाद भी लोगों के दिल दहल जाते हैं। ऐसा ही एक चरित्र है कातेरीना ल्वोव्ना इस्माइलोवा का, जो एक व्यापारी की पत्नी थी। उसने अपने जीवन-काल में ऐसा भयानक नाटक खेला था, जिस पर ज़िले के किसी चतुर व्यक्ति ने उसे म्त्सेन्स्क ज़िले की लेडी मैकबेथ का नाम दे डाला और अभिजात लोग उसे इसी नाम से पुकारने लगे।

कातेरीना ल्वोव्ना जन्मजात सुंदरी तो थी नहीं, पर एक मनोहर सूरत की महिला थी। कथारम्भ के समय उसकी आयु कोई चौबीस वर्ष की रही होगी; क़द ऊंचा तो नहीं पर शरीर सुडौल व सुगठित था—सफ़ेद मरमरी गर्दन, गोल कंधे, सुदृढ़ वक्ष, तीखी व सीधी नाक, काली चंचल आंखें, ऊंचा श्वेत ललाट और उसके सघन काले केश नीली झाईं सी छोड़ते थे। कुर्स्क गुबेर्निया के तुस्कारी क़स्बे के हमारे व्यापारी इस्माइलोव से विवाहित होते समय आसक्ति या प्रेम का आधार तो था नहीं। ग़रीब परिवार की होने के कारण उसकी रुचि का तो सवाल ही कहां था। हमारे क़स्बे में इस्माइलोवों का घराना कोई पिछड़ा हुआ तो नहीं कहा जा सकता: वे आटे के व्यवसायी थे, ज़िले में एक बड़ी आटा मिल किराये पर ले रखी थी, क़स्बे के पास ही उनका एक फलों का लाभदायक बाग़ था और क़स्बे में अच्छी स्थिति का घर। सारांश यह कि समृद्ध व्यापारियों में इनकी गिनती थी। उनका परिवार छोटा सा था: ससुर बोरीस तिमोफ़ेयेविच इस्माइलोव, कोई अस्सी साल की उम्र का, लम्बे अरसे से विधुर था,

उसका पुत्र ज़िनोवी बोरीसिच, पचास से ऊपर की आयु वाला कातेरीना ल्वोव्ना का पति और स्वयं कातेरीना ल्वोव्ना। विवाह हुए पांच साल गुज़र चुके थे पर कोई संतान नहीं थी। ज़िनोवी बोरीसिच की पहली पत्नी से भी कोई संतान नहीं थी, जो मृत्युपर्यंत उसकी बीस वर्ष तक साथिन रही। दूसरा विवाह करते समय उसने सोचा और आशा लगाई कि ईश कृपा से उसे अपने व्यवसाय व सम्पत्ति का उत्तराधिकारी प्राप्त हो सकेगा। पर, पहली की भांति दूसरी पत्नी को भी यह सद्भाग्य नहीं मिला।

संतानहीन होने से न केवल ज़िनोवी बोरीसिच ही, बल्कि उसका बूढ़ा बाप, बोरीस तिमोफ़ेयिच और खुद कातेरीना ल्वोव्ना, तीनों ही अत्यंत दुखी थे। युवा पत्नी अपने व्यापारी के बंद मकान में अकेली ऊबती नहीं तो करती क्या—चारों ओर ऊंची दीवारें और अहाते में खुले दौड़ते खूंख्वार कुत्ते। अकेलेपन की ऊब से घबराकर उसका मस्तिष्क कुंठाग्रस्त हो गया था। अपनी गोद में मुन्ना पाकर उसे कितनी प्रसन्नता होती, ईश ही जानता है उसकी गति। इसके अलावा लोगों ने निरंतर तानों से उसे अधमरा ही कर डाला था—"तुमने विवाह किया ही क्यों? यदि बांझ थी तो किसी व्यक्ति के जीवन से खिलवाड़ करने का तुम्हें क्या अधिकार था?" मानो अपने पति, ससुर व उसकी समूची ईमानदार व्यापारी जाति के प्रति उससे कोई जघन्य अपराध हो गया हो।

सुख और ऐशो-आराम के सभी साधन होते हुए भी, ससुराल में कातेरीना ल्वोव्ना का जीवन अत्यंत नीरस था। वह शायद ही कभी बाहर निकल पाती थी और यदि सुयोग से कभी अपने पति के साथ उसके साथी व्यापारियों के घर जाने का अवसर मिलता तो वह भी कोई खुशी की बात नहीं थी। वे सभी लोग इतने कठोर और रूखे थे कि उसकी हर हरकत, उठने-बैठने, चलने-फिरने आदि को आंकते हुए से लगते थे। फिर, कातेरीना ल्वोव्ना तो एक खुशमिज़ाज और ग़रीब घर की होने के कारण सादगी और आज़ादी पसंद करती थी। हाथ में बाल्टियां लिये नदी पर दौड़कर जाने, घाट पर नीचे उतरकर केवल कमीज़ पहने नहा लेने या बाड़ के दरवाज़े के पास से गुज़रते हुए किसी नवयुवक पर सूरजमुखी के बीजों के छिलके फेंकने को उसका जी करता था। पर, यहां तो हर बात ही न्यारी थी। उसके पति और ससुर दोनों ही सुबह जल्दी उठनेवाले लोग थे, छः बजे वे चाय पी लेते थे और फिर अपने धंधे में

लग जाते थे जब कि उसे कमरों मे इधर-उधर डोलने के सिवा कोई काम ही नहीं था। पूरी जगह साफ-सुथरी थी, घर मे खामोशी और सूनापन था, देव प्रतिमाओं के सामने दीपक जलते रहते थे, पर कहीं भी किसी जीवित प्राणी की आहट या मानव स्वर सुनाई देने का प्रश्न ही नहीं था।

कातेरीना ल्वोव्ना एक सूने कमरे से दूसरे में फिरती रहती, ऊब के मारे जम्हाइयां भरती और फिर अपने शयन के छोटे अटारीदार कमरे में ऊपर चढ़ जाती। वहां बैठकर लोगों को सन तोलते और सायबान के नीचे आटा भरते हुए देखती रहती और फिर जम्हाइयां भरने लग जाती, यह भी खुशी की बात हुई: घंटे दो घंटे ऊंघने के बाद फिर उसी रूसी क्लांति वाली, व्यापारी के घर की उदासीनता मे जाग पड़ती, जिसके बारे में कहावत है कि फांसी का फंदा लगाकर मर जाना भी यहां दिल बहलानेवाली बात है। कातेरीना ल्वोव्ना को पढ़ने में कोई रुचि नहीं थी, और फिर घर में भी कीयेव के मठवासियों की वार्ताओं* के अलावा कुछ था ही नहीं।

धनी ससुराल में प्रेमविहीन पति के साथ वैवाहिक जीवन के इन पांच लम्बे बरसों में उसे उदासीन जीवन का दुखड़ा भोगना ही था, पर उसकी इस ऊब की ओर कोई जरा भी ध्यान क्यों देने लगा, हर व्यक्ति इसे सामान्य ही मानता था।

अध्याय २

कातेरीना ल्वोव्ना के विवाह के छठे वसंत में इस्माइलोवों की मिल का बांध ऐसे समय टूटा, जब मिल पर काम की भरमार थी। पर दरार बहुत गहरी पड़ी थी और पानी बांध के निचले शहतीर के नीचे से इतनी तेजी से निकलने लगा था कि उसे तुरंत रोका नहीं जा सकता था। जिनोवी बोरीसिच ने जिले भर से लोग भरती किये और उन्हें मिल पर लगाया तथा स्वयं भी अपना सारा समय वहीं बिताने लगा। कस्बे का

*पुराना रूसी कहानी-संग्रह (१३-१७वी शती), जो कीयेवो-पेचोर्स्की मठ की प्रतिमाओं और इसकी रचना के इतिहास के बारे मे है।—स०

धंधा उसका बूढ़ा बाप संभालता था और लगातार कई दिनों तक कातेरीना ल्वोव्ना घर में एकदम अकेली रह जाती। आरंभ में तो अपने पति के बिना वह उदास रही, लेकिन बाद में उसके बिना भी अच्छा लगने लगा। आखिर, उसे अकेलेपन में आज़ादी तो अधिक थी। उसे अपने पति से कोई खास लगाव नहीं था; चलो, उससे उस पर हुक्म चलानेवाला एक आदमी तो कम हुआ।

एक दिन कातेरीना ल्वोव्ना अपनी अटारी की खिड़की में बैठी, किसी खास विषय पर न सोचती हुई, जमुहाइयां ले रही थी। अन्ततः, उसे इन जमुहाइयों से कुछ शर्म सी आने लगी। मौसम ग़ज़ब का सुहावना था: गर्म, उज्ज्वल और उल्लासपूर्ण। उसकी नज़र हरे-भरे बाग़ की चहारदीवारी के पार खड़े पेड़ों पर, एक डाल से दूसरी डाल पर फुदकती हुई चिड़ियों पर पड़ रही थी।

मन ही मन में वह सोचने लगी, "क्या हो गया है मुझे, इतनी जमुहाइयां क्यों आ रही हैं? अब यहां से उठना चाहिए, चलूं ज़रा, अहाते और बाग़ में टहल आऊं।"

उसने एक पुराना रेशमी कोट अपने कंधों पर डाला और बाहर निकल आई।

बाहर के खुले वातावरण में उसे मुक्त सांस लेने को मिली; उधर भंडारघर के बरामदे से हंसी के गुलछर्रे उड़ते सुनाई दिये।

"किस बात की खुशी है इतनी?" कातेरीना ल्वोव्ना ने अपने ससुर के कारिंदों से पूछा।

"एक ज़िन्दा सुअरनी को तोल रहे हैं, कातेरीना ल्वोव्ना" बूढ़े कारिंदे ने उत्तर दिया।

"कैसी सुअरनी?"

"सुअरनी अक्सीन्या, जिसके लड़का हुआ है वसीली, और जिसने हमें बपतिस्मे के दिन बुलाया तक नहीं!" तपाक से एक तेज़तर्रार उत्तर मिला; कहनेवाला था एक नवयुवक, सुंदर चेहरे वाला, जिसके घुंघराले बाल काली घटा जैसे थे और मसें फूटी ही थीं।

उसी क्षण रसोईदारिन अक्सीन्या का फूला-फूला सा मोटा चेहरा, तराज़ू की डंडी से लटके हुए आटे के ड्रम में से झांकता हुआ, दिखाई दिया।

"शैतान के बच्चे," हिलते हुए ड्रम से निकलने के लिये, लोहे के बीम पकड़ने की कोशिश करती हुई वह बोली।

"पूरा आठ पूद* वजन है इसका, खाना खाने से पहले! खाने को
स का गट्ठा डालो और फिर इसे तोलो तो सभी बाट कम पड़ेंगे,"
हते हुए सुंदर युवक ने ड्रम से रसोईदारिन को निकालकर कोने में पड़े
नों के ढेर पर गिरा दिया।

औरत हंसी-हंसी में उसे कोसती हुई अपने कपड़े ठीक करने लगी।

"देखना जरा, मेरा वजन कितना है," मज़ाक़ में कातेरीना ल्वोव्ना
से को पकड़कर तराज़ू के पलड़े में कूद गई।

"तीन पूद सात पौंड," उसी सुंदर युवक सेर्गेई ने पलड़े मे बाट रखते
ए कहा, "क्या जादू है!"

"जादू की इसमें क्या बात है?"

"आपका वजन तीन पूद है, कातेरीना ल्वोव्ना। कोई चाहे तो
आपको दिन भर बाहों मे लिये हुए घूम सकता है। उठानेवाला
केगा नहीं, बल्कि उसे अच्छा ही लगेगा।"

" अरे, तुम तो थक हो जाओगे, जरूर," कुछ लाल होते हुए
कातेरीना ल्वोव्ना ने जवाब दिया। ऐसी बातें करने की आदत नहीं रही
ी उसे। जी भरकर मज़ाक़ करने और मज़ा लूटने को उसका दिल
रने लगा।

"भई वाह! आपको लिये हुए तो खुशी अर्खविस्तान तक चला जाऊंगा
ं," उसकी बात का उत्तर देते हुए सेर्गेई ने कहा।

"तुम्हारा सोचना क़तई ग़लत है, नौजवान," सायबान मे आटा भरते
ए एक बूढ़े किसान ने कहा। "वजन किस चीज़ से होता है? पलड़े पर
तुम्हारा जिस्म ही तो सब कुछ नहीं होता, नौजवान, वजन तो तुम्हारी
ाक़त का है, ताक़त का, कोरा जिस्म कुछ नहीं होता!"

"हां, जब कुंवारी थी तो मैं भी ग़ज़ब की ताक़तवर थी," कातेरीना
ल्वोव्ना अपने आपको न रोक सकी और फिर बोल उठी, "हर मर्द से तो
मैं भी कमज़ोर नहीं थी।"

---

*पूद–वजन का पुराना रूसी मान है, जो १६ किलोग्राम से थोड़ा अधिक है।–अनु०
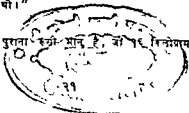
"यदि आप सही हैं, तो जरा देखूं आपकी पकड़," युवक ने कहा।

इस पर कातेरीना ल्वोव्ना थोड़ी सहम सी गई, पर उसने अपना हाथ आगे बढ़ा ही दिया।

"छोड़ो, अरे छोड़ो न, अंगूठी दर्द करती है!" सेर्गेई द्वारा हाथ दबाये जाने पर वह चिल्ला उठी और उसने खुले हाथ से उसकी छाती पर धक्का दे मारा।

युवक ने मालकिन का हाथ छोड़ दिया और उसके धक्के से वह कुछ कदम पीछे की ओर लड़खड़ा गया।

"देख लो, औरत की ताक़त," बूढ़ा किसान बोल उठा।

"हम लोग कुश्ती खेलते हुए अपने ताक़त आजमाते हैं, क्या बैसे तैयार हो?" सेर्गेई अपने घुंघराले बालों को झटककर बोला।

"चलो," प्रसन्न मुद्रा में कातेरीना ल्वोव्ना ने कहा और अपनी कोहनियां ऊंची उठा लीं।

सेर्गेई ने युवा मालकिन को बाहों में भरकर उठा लिया और उसके सुदृढ़ वक्ष को अपनी लाल कमीज पर दबा दिया। कातेरीना ल्वोव्ना ने अपने कंधों को हिलाया ही था कि सेर्गेई ने उसे उठाकर कस डाला और फिर उल्टे पड़े हुए टोकरे पर हलके से बिठा दिया।

कातेरीना ल्वोव्ना को अपनी शेखी भरी ताक़त दिखाने का मौक़ा ही नहीं मिल पाया। उसके चेहरे पर लाली सी दौड़ गई। वह टोकरे पर बैठी हुई कोट को कंधों पर ठीक करती रही और फिर भंडारघर से चुपचाप बाहर चली गई। इतने में सेर्गेई जोर से खखारता और चिल्लाता हुआ बोला:

"आओ रे, बुद्धू कहीं के! भरो आटा और वजन करो जो वजन है ऊपर हो वह उठा ले जाना।"

ऐसा लगा मानो जो कुछ अभी हुआ था, उसका उसे कोई ध्यान ही न हो।

"यह बेशर्म सेर्गेई तो लहंगेवालियों का तमाशा बना रहता है," रसोईदारिन अक्सीन्या अपनी मालकिन के पीछे चलती कहे जा रही थी। "आख़िर कम्बख़्त लम्बा-तड़ंगा, ख़ूबसूरत ठहरा, हर कोई अपना दिल दे बैठती है उसे। किसी औरत की बात क्यों न हो—वह शैतान तो उसकी ख़ुशामद में लग ही जाता है और आख़िर उसे जो करना होता है कर

ही बैठता है। पर, किसी एक का होकर तो थोड़े दिन भी नहीं टिकता; चंचल ऐसा है कि फ़ौरन बस के बाहर हो जाता है!"

"अरे, अक्सीन्या... वह तेरा... जो बेटा है", आगे चलती हुई बुढ़िया मालकिन पूछने लगी, "ज़िन्दा है न?"

"हां, हां, मालकिन, ज़िन्दा क्यों न हो वह? इन अनचाहों को मौत थोड़े ही आती है।"

"किसका है?"

"उंह... वैसे ही, आख़िर तो मैं भी लोगों के बीच रहती हूं, न।"

"और, वह नौजवान, क्या वह हमारे यहां अरसे से काम करता है?"

"आपका मतलब किससे है? सेर्गेई क्या?"

"हां।"

"कोई महीने भर से काम पर है, हमारे यहां। पहले कोप्चोनोवों के यहां पर था, पर वहां से उसे मालिक ने निकाल दिया।" अक्सीन्या ने आवाज़ धीमी करते हुए कहा, "लोग कहते हैं कि वह वहां मालकिन से प्रेम-लीला करने लगा था... बड़ा दिलेर है, नरक में जाय वह!"

9329

अध्याय ३
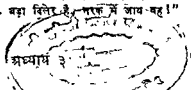
सुहावनी, गर्म, दूध जैसी धूमिल संध्या क़स्बे पर उतर आई थी। ज़िनोवी बोरीसिच अभी मिल के बांध से लौटा नहीं था। ससुर बोरीस तिमोफ़ेयिच भी बाहर था—एक पुराने दोस्त के यहां किसी उत्सव में चला गया था। जाते समय कातेरीना ल्वोव्ना से कह गया था कि ब्यालू के लिए उसकी राह न देखे। कातेरीना ल्वोव्ना खाने से जल्दी ही निवृत्त हो गई। उसने अपनी अटारी की खिड़की खोली और वहां बैठी सूरजमुखी के बीज चटखाने लगी। घर के नौकर रसोईघर में खाना खा चुके थे और सोने के लिए चल पड़े थे: कोई छप्पर में, कोई भंडारघर में, तो कोई सूखी घास के ऊंचे सुगन्धित ढेरों पर। रसोईघर से सबसे बाद में निकला सेर्गेई। वह अहाते में इधर-उधर घूमने लगा, रखवाली के कुत्तों को खोला, फिर सीटी बजाने लगा और कातेरीना

ल्वोव्ना की खिड़की के नीचे से गुजरते समय उसने ऊपर उसकी ओर देखा और अदब से झुका।

"नमस्ते," कातेरीना ल्वोव्ना ने अपनी अटारी की खिड़की से धीमे स्वर में कहा और सारा अहाता सुनसान पड़ा था, एक मठ की भां

"बीबी जी!" किसी ने दो मिनट बाद ही उसके बंद दरवाजे पुकारा।

"कौन है?" भयविह्वल स्वर में कातेरीना ल्वोव्ना ने पूछा।

"डरने की कोई बात नहीं है, बीबी जी, यह तो मैं हूं, सेर्गेई कारिंदे ने उत्तर दिया।

"क्या चाहते हो, सेर्गेई?"

"थोड़ा सा काम है, आप से बात करनी है। छोटी सी बात जिसके लिए आपसे निवेदन है, मुझे पल भर के लिए भीतर आने दें

कातेरीना ल्वोव्ना ने चाबी घुमाई और सेर्गेई को भीतर आने दि

"क्या चाहिए तुम्हें?" उसने खिड़की के पास सरकते हुए पूछा

"मुझे यह पूछना था, कातेरीना ल्वोव्ना, कि आप के पास पुस्तक है क्या? मैं यहां की ऊब से घबरा गया हूं।"

"कोई किताब नहीं है, सेर्गेई, और न मैं किताबें पढ़ती ही हूं," उ उत्तर दिया।

"कैसी ऊब है!" सेर्गेई ने शिकायत की।

"तुम्हें उदास बैठने की क्या जरूरत है?"

"यहां उदास न बैठना कैसे संभव है? बड़ी ही दयनीय अवस्था में ठहरा नौजवान, जैसे हम किसी मठ में रहते हैं और शायद मृत्यु यहां तो ऐसा एकान्त सहन करना पड़ेगा। मेरा मन तो कभी-कभी विकल हो उठता है।"

"तुम शादी क्यों नहीं कर लेते?"

"कहना तो सरल है। पर शादी करूं तो किससे? मैं कोई घराने का तो हूं नहीं कि कोई अमीर की बेटी चाहे... और लड़कियों में से तो आप स्वयं ही जानती हैं, कातेरीना ल्वोव्ना, कि अनपढ़ हैं व अपनी ग़रीबी के कारण सभ्य नहीं कही जा सकतीं। वास्त प्रेम को वह क्या समझें? फिर अमीर भी इसे कहां तक समझ पाते हैं? आप जैसी महिला ऐसे किसी भी पुरुष का सहारा बन सकती है, जो

भावुक हो, पर वे आप को पालतू मैना की भांति पिंजरे में बंद किये रखते हैं।"

"हां, मुझे बड़ी उदासी सी लगती है," आखिर कातेरीना ल्वोव्ना ने हामी भर ही ली।

"आप को ऐसा जीवन बहुत खटकता होगा। काश! आपको भी औरों की भांति कोई साथी मिल पाता—पर आपको तो किसी को देखने तक का भी मौका कहां है!"

"अब तुम बहुत कह गये। सही बात तो यह है कि यदि मेरी गोद में बच्चा आ जाय तो मुझे लगता है कि मैं सुखी हो सकूंगी।"

"पर मुझे कहने की अनुमति दीजिये, बालक के आने का भी कारण होता है; बच्चे यों ही तो नहीं पहुंच जाते हैं किसी की गोद में! इतने बरसों तक कई मालिकों की नौकरी करके और व्यापारी लोगों की पत्नियों का ऐसा जीवन देखकर—वे कैसा दयनीय जीवन बिताती हैं—मैं भी कुछ समझ पाया हूं। एक गीत की कड़ी है जिसे लोग गाते हैं, 'हुई मैं उदास, पिया के बिना...' आप विश्वास करें कातेरीना ल्वोव्ना, मेरा दिल भी इसी के मारे भारी-भारी सा रहता है। यह सच्ची भावना है मेरी, आपकी इस ऊब के प्रति—मैं अपने दिल को चाकू से निकालकर आपके चरणों में अर्पित कर दूं तो फिर मुझे सौगुना अधिक अच्छा लगेगा..."

सेर्गेई की आवाज़ थरथराने लगी।

"तुम अपने दिल की ये बातें मुझे क्यों सुनाने लगे हो? इसका कोई सरोकार नहीं है मुझसे। जाओ, चले जाओ..."

"क्षमा करें," सेर्गेई कांपते-कांपते कातेरीना ल्वोव्ना की ओर क़दम बढ़ाते हुए फुसफुसाया, "अब मैं समझा कि आपका जीवन भी मुझसे अच्छा नहीं है... और अब, इसी क्षण, मेरा सर्वस्व आपके हाथों में, आपके अधिकार में है..."

"तुम यह क्या रहे हो? क्यों आये हो तुम मेरे पास? मैं अभी खिड़की से कूद जाऊंगी," कातेरीना ल्वोव्ना खिड़की की चौखट पकड़े, अत्यंत भय से आकुल होकर बोली।

"मेरी जीवन-सर्वस्व! खिड़की से कूदने में क्या रखा है?" सेर्गेई धृष्टता से फुसफुसाया और युवा मालकिन को अपनी मजबूत बांहों में थामे खिड़की से दूर खींचकर ले गया।

"हाय रे! मुझे छोड़ दो," सेर्गेई के जलते हुए चुम्बनों से इत होती हुई वह धीमे स्वर में गुर्राने लगी, और स्वयं को अनिच्छापूर्व उसके सशक्त शरीर से दबाने लगी।

सेर्गेई ने मालकिन को अपने हाथों में बच्चे की भांति उठा लिया औ उसे एक अंधेरे कोने में ले गया।

कमरे की नीरवता, कातेरीना ल्वोव्ना के पलंग के सिरहाने टंगी उस पति की घड़ी की लयपूर्ण टिक-टिक से भग्न हो रही थी; पर इससे क अन्तर पड़नेवाला था?

"चले जाओ," कातेरीना ल्वोव्ना ने, कोई आधे घंटे बाद, सें. की ओर बिना देखे कहा। और, फिर वह एक छोटे आईने के सामने अपने बिखरे बालों को संवारने लगी।

"अब, क्यों चला जाऊं मैं?" सेर्गेई ने प्रफुल्लित स्वर से पूछा।

"ससुर दरवाजों के ताले लगा देंगे।"

"अरे, मेरी प्रिये! तुम भी कैसे लोगों में रही हो, जो स्त्री पास केवल दरवाजों से होकर ही पहुंचते हैं? तुम्हें पाने मैं अपनी मर्जी से आया-जाया करूंगा, हर कहीं दरवाजे हैं," उत्तर देते हुए युवक बरामदे के खम्भों की ओर इशारा किया।

...

अध्याय ४

एक और सप्ताह बीत गया, पर जिनोवी बोरीसिच अभी तक नहीं लौटा और सप्ताह भर, रात-ब-रात भोर होने तक, उसकी प सेर्गेई के साथ रंगरेलियां मनाती रही।

और उन रातों में जिनोवी बोरीसिच के शयनकक्ष में ससुर तहखाने से निकालकर खूब शराब पी गयी, अनेक मिठाइयों का स लिया गया, मालकिन के मधुर होंठों पर बहुत से चुम्बनों की भरमार और उसके हाथ कोमल तकिये पर पड़ी सेर्गेई की घुंघराली केशराशि प्रणय-क्रीड़ा करते रहे। प्रेम की राह सदा समतल तो होती नहीं, कभी कभी इसमें छिपे गड्ढे भी मिलते ही हैं।

इन्हीं रातों में एक रात बोरीस तिमोफ़ेयिच को नींद नहीं आ बूढ़ा अपनी बहुरंगी सूती कमीज पहने सूने मकान में इधर-उधर घूम

था, एक खिड़की से फिर दूसरी खिड़की से देख रहा था, पर अचानक, यह क्या? सेर्गेई लाल कमीज पहने, उसकी पुत्रवधू की खिड़की के पास वाले खम्भे से फिसलकर उतर रहा था। कैसा विचित्र था यह! बोरीस तिमोफ़ेयिच ने लपककर युवक की टांगों को कसकर पकड़ लिया। सेर्गेई ने भी मालिक के कान पर ज़ोर से प्रहार करना चाहा, पर उसे डर लगा कि कहीं शोर न मच जाय।

"कहां था रे तू, बदमाश कहीं के?" बोरीस तिमोफ़ेयिच बोल उठा।

"कहां रहा मैं, वहां अब नहीं, बोरीस तिमोफ़ेयिच, सरकार," सेर्गेई ने प्रत्युत्तर दिया।

"क्या रात बिताई पुत्रवधू के साथ, तूने?"

"वहीं भी, मेरे मालिक, मुझे मालूम है, मैंने रात कहां बिताई। पर बोरीस तिमोफ़ेयिच, आप मेरी बात को समझें – जो हो गया सो हो गया, वह तो हर्गिज़ मिटाया नहीं जा सकता। हर हालत में, कम से कम अपने नामी व्यापारी घराने की इज्ज़त तो मत लुटाओ। अब, आप ही बतायें, मुझसे चाहते क्या हैं? आप क्या पाने की अपेक्षा करते हैं?"

"पांच सौ कोड़े लगाऊं तुझे, ओ ज़हरीले नाग!" बोरीस तिमोफ़ेयिच ने उत्तर दिया।

"ग़लती मेरी है, अतः आप जो चाहें, करें," युवक ने सहमति प्रकट की, "ले जाइये मुझे जहां चाहें ताकि मेरा खून पीकर खुश हो सकें।"

बोरीस तिमोफ़ेयिच उसे भंडारघर में ले गया और लगा सटकारने चाबुक से, जब तक उसके हाथ थक न गये। सेर्गेई के होंठों से उफ़ तक नहीं निकली, पर उसने दांतों से कमीज की आधी बांहें चबा डालीं।

बोरीस तिमोफ़ेयिच ने सेर्गेई की लाल उधड़ी पीठ को अच्छा होने के लिए वहीं छोड़ा; उसे पानी का घड़ा दिया और दरवाज़े पर बड़ा सा ताला मारकर अपने बेटे को बुला भेजा।

आज भी रूस के कच्चे रास्तों पर सौ वेर्स्ता* की यात्रा कोई जल्दी पूरी नहीं होती है और कातेरीना ल्वोवना अपने सेर्गेई से मिले बिना एक

---

*वेर्स्ता – फ़ासले का पुराना रूसी मान है, जो एक किलोमीटर से थोड़ा अधिक है। – अनु०

ड़ी भी नहीं रह सकती थी। अचानक उसके स्वभाव का सत्य
वरूप सामने आया—उसे कौन डिगा सकता था। वह सेर्गेई का फ़
ागाकर लोहे के दरवाज़े में से उससे बात करने लगी और फिर शांति
ढ़ने में लग गई। अपने ससुर से जाकर बोली, "छोड़ दीजिये न सेर्गे
ो, छोड़ दीजिये।"

बूढ़ा इस बात को सुनकर हैरान हो गया। उसकी बहू इतनी बदनमीज़ी
रे, जिसने पाप किया हो और जो आज तक सदा विनम्र रही हो!
भला, इसके बारे में वह कैसे सोच सकता था।

"क्या बातें बना रही है तू?.." और लगा वह गालियों की बौछार
करने।

"उसे छोड़ दीजिये," वह कहने लगी, "मैं ईमानदारी से बताना
चाहती हूं कि हम दोनों के बीच कोई बुरी बात नहीं हुई।"

"कोई बुरी बात नहीं," वह दांत पीसता हुआ बोला, "तो, तू इन
रातों में उसके साथ क्या करती रही थी? अपने पति की गद्दियां बुनती
रही थी?"

और उसने अपनी बात नहीं छोड़ी—बस किसी तरह छुड़ा ले उसे।

"यदि, *यही बात है तो,*" *बोरीस तिमोफ़ेयिच* बोला, "मैं तुझे
कुछ कहना चाहता हूं—जब तेरा पति आयेगा तो हम तुम बफ़ादार पत्नी
को अस्तबल में ले जायेंगे और अपने हाथों से तेरी खाल खींच डालेंगे और
उस पाजी गुण्डे को कल ही जेल में डलवा देंगे।"

यह था बोरीस तिमोफ़ेयिच का निर्णय, पर होना कुछ और ही था।

अध्याय ५

रात के खाने में बोरीस तिमोफ़ेयिच ने खुमियां और दलिया खाया
जिससे उसे मेदे की जलन हो गई, और फिर उसके आमाशय
अचानक दर्द उठा। भयंकर उल्टियां हुईं और सुबह होते-होते व
मृतावस्था में पाया गया। वह ठीक उसी भांति मर गया, जैसे कातेरीना
ल्वोव्ना के ज़हरीले सफ़ेद पाउडर से बने खाने से भंडारों के चूहे म
रते थे।

कातेरीना ल्वोव्ना ने अपने प्रिय सेर्गेई को बूढ़े के भंडारघर से बाहर निकाला। दुनिया क्या कहेगी, इसकी भला उसे क्या परवाह थी – कोड़ों की मार का उपचार पति के पलंग पर बड़े आराम के साथ होने लगा; और ससुर बोरीस तिमोफ़ेयिच को बिना शर्म के ईसाई रिवाज से दफ़नाया गया। आख़िर, ऐसी कौन सी अजीब बात थी: बोरीस तिमोफ़ेयिच की मौत खुमियां खाने से हुई थी, और ऐसी मौतें पहले भी होती रही थीं। लोगों ने बोरीस तिमोफ़ेयिच को उस के पुत्र की प्रतीक्षा किये बिना ही गाड़ दिया, क्योंकि एक तो मौसम गरम था और फिर हरकारे को भी मिल में ज़िनोवी बोरीसिच नहीं मिला था। उसने कोई १०० वेर्स्ता दूर के इलाक़े में जंगल के मंदे भावों में बिकने की ख़बर सुनी तो बिना किसी को सही पता बताये माल देखने चला गया था।

इस काम से निपटने के बाद कातेरीना ल्वोव्ना अन्य कामों में जुट गई। वह कोई डरपोक स्त्री तो थी नहीं और अब कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि वह क्या करेगी – तुरुप जैसे चलती, घर के सारे धंधे की बागडोर अपने हाथ में लेकर वह सब पर हुक्म चलाने लगी। सेर्गेई को वह एक पल भर भी अपने से अलग नहीं होने देती। इससे घर में सबको ताज्जुब तो हुआ, पर कातेरीना ल्वोव्ना ने सभी कुछ ठीक ढंग से संभाल लिया और ताज्जुब बंद हुआ। "मालकिन तो सेर्गेई पर फ़िदा हो रही है," लोग मन में सब समझते हुए कहते थे, "ठीक है। यह उनकी अपनी सूझ है। आख़िर इसका फल भी वे ही भोगेंगे।"

इसी बीच सेर्गेई की हालत में सुधार हुआ, वह अपने उसी पुराने रंग में आ गया और कातेरीना ल्वोव्ना के इर्दगिर्द बाज की तरह फुदकने लगा। उनकी सुहावनी ज़िन्दगी का दौर फिर शुरू हो गया। पर समय का दौर केवल उन्हीं के लिये तो था नहीं। आख़िर एक लम्बे अरसे के बाद, ज़िनोवी बोरीसिच, एक अपमानित पति, घर वापस लौटनेवाला था।

अध्याय ६

दोपहर के भोजन के बाद बड़ी सख़्त गर्मी होने लगी, एक चंचल मक्खी भी बहुत सताने लगी। कातेरीना ल्वोव्ना ने अपने शयनकक्ष की खिड़की पर झिलमिली खींच दी और भीतर की ओर एक ऊनी शाल लटका दिया

घड़ी भी नहीं रह सकती थी। अचानक उसके स्वभाव का सच्चा स्वरूप सामने आया—उसे कौन डिगा सकता था। वह सेर्गेई का पता लगाकर लोहे के दरवाज़े में से उससे बात करने लगी और फिर चाबियां ढूंढ़ने में लग गई। अपने ससुर से जाकर बोली, "छोड़ दीजिये न सेर्गेई को, छोड़ दीजिये।"

बूढ़ा इस बात को सुनकर हैरान हो गया। उसकी बहू इतनी बदतमीज़ी करे, जिसने पाप किया हो और जो आज तक सदा विनम्र रही हो! भला, इसके बारे में वह कैसे सोच सकता था।

"क्या बातें बना रही है तू?.." और लगा वह गालियों की बौछार करने।

"उसे छोड़ दीजिये," वह कहने लगी, "मैं ईमानदारी से बताना चाहती हूं कि हम दोनों के बीच कोई बुरी बात नहीं हुई।"

"कोई बुरी बात नहीं," वह दांत पीसता हुआ बोला, "तो, तू इन रातों में उसके साथ क्या करती रही थी? अपने पति की गद्दियां बुनती रही थी?"

और उसने अपनी बात नहीं छोड़ी—बस किसी तरह छुड़ा ले उसे।

"यदि, यही बात है तो," बोरीस तिमोफ़ेयिच बोला, "मैं तुझे कुछ कहना चाहता हूं—जब तेरा पति आयेगा तो हम तुझ वफ़ादार पत्नी को अस्तबल में ले जायेंगे और अपने हाथों से तेरी खाल खींच डालेंगे और उस पाजी गुण्डे को कल ही जेल में डलवा देंगे।"

यह था बोरीस तिमोफ़ेयिच का निर्णय, पर होना कुछ और ही था।

अध्याय ५

रात के खाने में बोरीस तिमोफ़ेयिच ने खुमियां और दलिया खाया जिससे उसे मेदे की जलन हो गई, और फिर उसके आमाशय में अचानक दर्द उठा। भयंकर उल्टियां हुईं और सुबह होते-होते वह मृतावस्था में पाया गया। वह ठीक उसी भांति मर गया, जैसे कातेरीना ल्वोव्ना के ज़हरीले सफ़ेद पाउडर से बने खाने से भंडारों के चूहे मर जाया करते थे।

कातेरीना ल्वोव्ना ने अपने प्रिय सेर्गेई को बूढ़े के भंडारघर से बाहर निकाला। दुनिया क्या कहेगी, इसकी भला उसे क्या परवाह थी–कोड़ों की मार का उपचार पति के पलंग पर बड़े आराम के साथ होने लगा; और ससुर बोरीस तिमोफ़ेयिच को बिना शर्म के ईसाई रिवाज से दफनाया गया। आखिर, ऐसी कौन सी अजीब बात थी: बोरीस तिमोफ़ेयिच की मौत खुमियां खाने से हुई थी, और ऐसी मौतें पहले भी होती रही थीं। लोगों ने बोरीस तिमोफ़ेयिच को उस के पुत्र की प्रतीक्षा किये बिना ही गाड़ दिया, क्योंकि एक तो मौसम गरम था और फिर हरकारे को भी मिल में जिनोवी बोरीसिच नहीं मिला था। उसने कोई १०० वेर्स्ता दूर के इलाक़े में जंगल के मंदे भावों मे बिकने की खबर सुनी तो बिना किसी को सही पता बताये माल देखने चला गया था।

इस काम से निपटने के बाद कातेरीना ल्वोव्ना अन्य कामों में जुट गई। वह कोई डरपोक स्त्री तो थी नहीं और अब कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि वह क्या करेगी–तुरुप जैसे चलती, घर के सारे धंधे की बागडोर अपने हाथ में लेकर वह सब पर हुक्म चलाने लगी। सेर्गेई को वह एक पल भर भी अपने से अलग नहीं होने देती। इससे घर में सबको ताज्जुब तो हुआ, पर कातेरीना ल्वोव्ना ने सभी कुछ ठीक ढंग से संभाल लिया और ताज्जुब बंद हुआ। "मालकिन तो सेर्गेई पर फ़िदा हो रही है," लोग मन में सब समझते हुए कहते थे, "ठीक है। यह उनकी अपनी सूझ है। आखिर इसका फल भी वे ही भोगेंगे।"

इसी बीच सेर्गेई की हालत में सुधार हुआ, वह अपने उसी पुराने रंग में आ गया और कातेरीना ल्वोव्ना के इर्दगिर्द, बाज की तरह फुदकने लगा। उनकी सुहावनी ज़िन्दगी का दौर फिर शुरू हो गया। पर समय का दौर केवल उन्हीं के लिये तो था नहीं। आखिर एक लम्बे अरसे के बाद, जिनोवी बोरीसिच, एक अपमानित पति, घर वापस लौटनेवाला था।

अध्याय ६

दोपहर के भोजन के बाद बड़ी सख्त गर्मी होने लगी, एक चंचल मक्खी भी बहुत सताने लगी। कातेरीना ल्वोव्ना ने अपने शयनकक्ष की खिड़की पर झिलमिली खींच दी और भीतर की ओर एक ऊनी शाल लटका दिया

भ्रौर फिर आराम करने हेतु अपने पति के ऊंचे पलंग पर सेर्गेई के
लेट गई। कुछ सोई और कुछ जगी हुई सी। वह काफी थक चुकी
चेहरे पर पसीना झलक रहा था और उसे सांस भी मुश्किल से आ
थी। उसे लगा कि जागने का समय है, बगीचे में जाकर चाय पीने का
वेला हो गई थी, पर वह उठ ही नहीं पा रही थी। आखिर, रसोईदारि
आई और उसने दरवाजा खटखटाते हुए कहा, "समोवार सेब के पे
तले ठंडा होने लगा है।" कातेरीना ल्वोव्ना मुश्किल से जागी और पास
पड़े बिल्ले को सहलाने लगी। वह सेर्गेई और उसके बीच में पड़ा दोनों
से रगड़ खा रहा था। कैसा अजीब भूरा, बड़ा व मोटा बिल्ला था वह!
कातेरीना ल्वोव्ना उसके गुदगुदे केशों में अंगुलियां चला रही थी, और व
उससे लिपटता हुआ अपनी चपटे चेहरे से उसके पुष्ट स्तनों को रगड़त
जा रहा था। बिल्ला बराबर गुर्राता हुआ ऐसा लगता था मानो उं
कोई प्रेमकथा सुना रहा हो। "आखिर, यह मोटा बिल्ला यहां घुस
क्यों?" कातेरीना ल्वोव्ना अचरज में डूबने लगी, "मैंने खिड़की के ता
में मलाई रखी थी, जरूर वह उसे चट्ट कर जायेगा। उसे बाहर निका
जरा।" उसने यह निश्चय करके बिल्ले को बाहर फेंकने के लि
पकड़ने की कोशिश की, पर वह उसकी अंगुलियों में से कुहरे की तर
सरक गया। "पर, आखिर यह बिल्ला घुसा कहां से होगा?" कातेरीन
ल्वोव्ना अपने दुःस्वप्न में खो गई। "हमने तो शयनकक्ष में कभी को
बिल्ला नहीं रखा, और अब देखो, यह कैसा तगड़ा शैतान यहां आ
पहुंचा है।" पुनः उसने बिल्ले को पकड़ना चाहा। पर वह वहां हो ता
न? "अरे, कुछ भी हो सकता है यह? क्या यह वास्तव में बिल्ला है
या या और कुछ?" कातेरीना ल्वोव्ना ने सोचा। भय से उसका सपना
और आलस दोनों ही टूट चुके थे। वह कमरे में इधर-उधर देखने लगी-
पर कहीं बिल्ला हो तो; केवल सुंदर सा सेर्गेई वहां लेटा हुआ था,
अपने मजबूत बाजू से उसकी छाती को अपने गर्म चेहरे पर दबाता हुआ।

कातेरीना ल्वोव्ना बिस्तर पर उठ बैठी। वह बारबार सेर्गेई के चुम्बन
लेती व उसे सहलाती रही, अपना सिलवटभरा लिहाफ बिस्तर पर सीधा
करने लगी और फिर बाग की ओर चाय के लिये चल दी। सूरज डूब
चुका था और शाम की ठंडी व मस्त बयार तपी हुई भूमि पर लहराने

"मैं खूब सोई रही," कातेरीना ल्वोव्ना पूरे खिले हुए सेब के पेड़ के नीचे चाय पीने क़ालीन पर बैठती हुई अक्सीन्या से बोली। "और, अक्सीन्या इन सब बातों का क्या मतलब होता है?" वह नेपकिन से तश्तरी पोंछते हुए रसोईदारिन से बोली।

"क्या मतलब है, किसका?"

"कहीं वह सपना तो नहीं था—वास्तव में ऐसा हुआ कि एक बिल्ला आया और मुझसे लिपटने लगा। क्या हो सकता है वह?"

"क्या बात कर रही हैं?"

"ठीक है, एक बिल्ला आया था।"

कातेरीना ल्वोव्ना ने उसे बिल्ले वाली पूरी घटना सुना दी।

"आपने उसे सहलाया क्यों?"

"मुझे तो खुद को यह पता नहीं है कि मैंने उसे क्यों सहलाया।"

"बड़ा अजीब है यह भी!"

"मैं भी समझ नहीं पा रही।"

"ज़रूर इसका मतलब है कि कोई आपके बहुत क़रीब आ रहा है। या कुछ और भी हो सकता है, मगर इसका ज़रूर कुछ नतीजा निकलनेवाला है।"

"पर, वह है क्या?"

"ठीक-ठीक तो कोई भी नहीं बता सकता, पर कुछ न कुछ होनेवाला ज़रूर है।"

"मैं सपनों में चांद को देखती रहती हूं और अब यह बिल्ला," वह कहती चली गई।

"चांद का मतलब है बच्चा।"

कातेरीना ल्वोव्ना के चेहरे पर लाली दौड़ गई।

"क्या मैं सेर्गेई को यहां भेजूं, मालकिन?" अक्सीन्या ने अपनी मालकिन की ख़ास कृपापात्र होने की आशा लगाकर पूछा।

"अच्छा, जाओ सेर्गेई को बुला लाओ, मैं उसे यहीं चाय पिलाऊंगी।" कातेरीना ल्वोव्ना ने जवाब दिया।

"मैं भी यही सोचती हूं, अभी यहीं भेजती हूं।" अक्सीन्या ने निश्चय किया और वह बत्तख की भांति बाग़ के दरवाज़े की ओर चल दी।

कातेरीना ल्वोव्ना ने सेर्गेई को भी बिल्ले के बारे में बताया।

"मैं खूब सोई रही," कातेरीना ल्वोव्ना पूरे खिले हुए सेब के पेड़ के नीचे चाय पीने क़ालीन पर बैठती हुई अक्सीन्या से बोली। "और, अक्सीन्या इन सब बातों का क्या मतलब होता है?" वह नैपकिन से तश्तरी पोंछते हुए रसोईवालिन से बोली।

"क्या मतलब है, किसका?"

"वहीं वह सपना तो नहीं था—वास्तव में ऐसा हुआ कि एक बिल्ला आया और मुझसे लिपटने लगा। क्या हो सकता है वह?"

"क्या बात कर रही हैं?"

"ठीक है, एक बिल्ला आया था।"

कातेरीना ल्वोव्ना ने उसे बिल्ले वाली पूरी घटना सुना दी।

"आपने उसे सहलाया क्यों?"

"मुझे तो खुद को यह पता नहीं है कि मैंने उसे क्यों सहलाया।"

"बड़ा अजीब है यह भी!"

"मैं भी समझ नहीं पा रही।"

"जरूर इसका मतलब है कि कोई आपके बहुत क़रीब आ रहा है। कुछ और भी हो सकता है, मगर इसका जरूर कुछ नतीजा निकलनेवाला है।"

"पर, यह है क्या?"

"ठीक-ठीक तो कोई भी नहीं बता सकता, पर कुछ न कुछ होनेवाला जरूर है।"

"मैं सपनों में चांद को देखती रहती हूं और अब यह बिल्ला," वह कहती चली गई।

"चांद का मतलब है बच्चा।"

कातेरीना ल्वोव्ना के चेहरे पर लाली दौड़ गई।

"क्या मैं सेर्गेई को यहां भेजूं, मालकिन?" अक्सीन्या ने अपनी मालकिन की खास कृपापात्र होने की आशा लगाकर पूछा।

"अच्छा, जाओ सेर्गेई को बुला लाओ, मैं उसे यहीं चाय पिलाऊंगी।" कातेरीना ल्वोव्ना ने जवाब दिया।

"मैं भी यही सोचती हूं, अभी यहीं भेजती हूं।" अक्सीन्या ने निश्चय किया और वह बतख की भांति बाग़ के दरवाज़े की ओर चल दी।

कातेरीना ल्वोव्ना ने सेर्गेई को भी बिल्ले के बारे में

"योंही, सपना है बस," सेर्गेई का मत था।

"पर, ऐसा क्यों है कि पहले तो मुझे ऐसे सपने कभी नहीं आये, सेर्गेई?"

"बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं, जिनके बारे में हम पहले सोच ही नहीं सकते थे पर अब हमारे पास हैं! पहले मैंने तुम्हें केवल आंखों से ही देखा था और तड़पा करता था, पर अब? तुम्हारा समूचा सुंदर शरीर मेरा है!"

सेर्गेई ने उसे बांहों में कसकर थाम लिया, हवा में घुमा डाला और मज़ाक करते हुए फिर उसे कोमल क़ालीन पर धकेल दिया।

"अरे तुमने तो मुझे खिलौना ही बना डाला।" कातेरीना ल्वोव्ना चीख सी पड़ी, "सेर्गेई, आओ मेरे पास बैठो," सुख भोगते हुए उसे पुकारती हुई वह विलासपूर्ण मुद्रा में लेट गई।

युवक सफ़ेद फूलों वाले सेव को लटकती हुई टहनियों के नीचे घुसने के लिये झुका और कातेरीना ल्वोव्ना के पांवों के निकट क़ालीन पर आ बैठा।

"क्या तुम मेरे लिये तड़पा करते थे, सेर्गेई?"

"अवश्य ही।"

"पर कैसा लगता था तुम्हें? मुझे इस बारे में सब कुछ बता डालो।"

"कहने को क्या है?, मैं कैसे बताऊं कि चाहत क्या है? मैं उदास रहा करता था।"

"पर मुझे ऐसा क्यों नहीं लगा, सेर्गेई, मुझे यह पता क्यों न लगा कि तुम मेरे बारे में सोचते रहते थे? लोग कहते हैं कि इसका पता चल जाता है।"

सेर्गेई निरुत्तर रहा।

"यदि तुम मेरे लिये इतने व्यग्र रहते थे तो फिर सदा गाने क्यों गाया करते थे? मैंने तुमको बरामदे में गाते हुए सुना था," उसने अपनी बात जारी रखी और उसे बराबर प्यार करती रही।

"क्या हुआ यदि मैंने गा भी लिया हो तो? क्या मच्छर सारी उम्र नहीं गुनगुनाते रहते और क्या यह उनकी खुशी का कारण है?" सेर्गेई ... ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर के लिए वे चुप रहे। सेर्गेई की ग्रात्मस्वीकृति सुनकर कातेरीना ल्वोव्ना हर्ष से ग्रोतप्रोत हो गई।

वह बात करना चाहती थी पर सेर्गेई कुछ झल्लाने सा लगा था और खामोश बैठा रहा।

"देखो सेर्गेई, स्वर्ग है न यह, साक्षात् स्वर्ग!" उसने ऊपर छाई हुई ाब की मंजरियों से लदी डालियों में से झांकते हुए कहा। ऊपर नीलगगन । द्युतिपूर्ण चंद्रमा लटकता हुआ सा दिख रहा था।

पत्तियों और कलियों में से चांदनी तिरछी सी झांक रही थी और पने हलके चित्र-विचित्र रंग-प्रतिमानों से, पीठ पर लेटी हुई कातेरीना वोव्ना के चेहरे और शरीर पर, खिलवाड़ सी कर रही थी। वातावरण ान्त था; थोड़ी-थोड़ी देर में तन्द्रामग्न पत्तियों को गरमाई सी बयार के लके झोंके झकझोर रहे थे। पुष्पित वृक्षों और घास की भीनी-ीनी सी सुगंध ग्रा रही थी और उदासीन निश्वास छोड़ती हुई हवा ालस, विलासिता और धूमिल कामनाग्रों को जगा रही थी।

कातेरीना ल्वोव्ना उत्तर न पाकर फिर चुप हो गई और हलके गुलाबी ़लों में से ग्राकाश को देखती रही। सेर्गेई भी चुप हो गया था; लेकिन ह ग्राकाश देखने में मग्न नहीं था। दोनों हाथों से ग्रपने घुटनों को पकड़े ए वह गंभीरता से ग्रपने बूटों की ग्रोर देख रहा था।

एक सुनहरी रात! खामोशी, चांदनी, मादक गंध और जीवनदायिनी रणता! नाले के पार, कहीं दूर, बग़ीचे के दूसरी ग्रोर किसीने ीठी तान छेड़ी, बाड़ के पीछे से बर्ड-चेरी के कुंज में से बुलबुल ने कारा और फिर ज़ोर-ज़ोर से कूजने लगी और किसी ऊंचे खम्भे पर टंगे ंजड़े में तंद्रामग्न बटेर ने गुनगुनाना शुरू किया। इसी बीच, ग्रस्तबल में मोटे-ताजे घोड़े की तीखी हिनहिनाहट सुनाई दी और बग़ीचे की हारदीवारी के पार कुत्तों के दौड़ने की हलकी सी सरसराहट पुराने ेरान नमक के गोदामों की भद्दी सी काली छाया में जाकर लुप्त हो गई।

कातेरीना ल्वोव्ना ग्रपनी कोहनी के सहारे उठकर बग़ीचे की ऊंची-ंची घास को निहारने लगी; घास मानो चांदनी से खेल सी रही थी गैर चांदनी वृक्षों के पुष्पों और पत्तियों में से छनती हुई घास पर हराये हुए धब्बों जैसे बिम्ब छोड़ रही थी। प्रकाश के उन बिम्बों में ास सुनहरी सी दिखने लगी और नाचते व कांपने से वे बिम्ब सजीव

नेय रंग की तितलियों की भांति लग रहे थे—या मानो पेड़ों के तने इ
स चांदनी के उस जाल में फंस गई हो तथा जाल एक ओर से दूस
र झकोले खा रहा हो।
"सेर्गेई! देखो तो ज़रा, कैसा शानदार नज़ारा है!" चारों ओर नज़
ड़ाती हुई कातेरीना ल्वोव्ना खुशी के मारे चीख पड़ी।
सेर्गेई ने अन्यमनस्कता से एक नज़र फेंकी।
"तुम इतने दयनीय से क्यों दिखाई दे रहे हो? शायद तुम मेरे प्य
ऊब गये हो?"
"ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें क्यों कर रही हो?" सेर्गेई ने रूखेपन से उत्त
दिया। वह थोड़ा झुका और उसने अलस भाव से उसके गाल को च
लिया।
"तुम मेरे प्रति सच्चे नहीं हो, तुम्हारा मन अस्थिर है," कातेरी
ल्वोव्ना ने ईर्ष्यावश कहा।
"मैं तुम्हारी बात के आईने में अपनी शकल नहीं देख पाता हूं
सेर्गेई ने शान्त स्वर में उत्तर दिया।
"तो, तुमने मुझे ऐसे क्यों चूमा?"
सेर्गेई एक शब्द भी नहीं बोला।
"इसी तरह पति अपनी पत्नियों के चुम्बन लिया करते हैं," उस
घुंघराले बालों से खेलते हुए कातेरीना ल्वोव्ना ने कहना जारी रखा
"वे केवल एक दूसरे के होंठों की धूल झाड़ते हैं। तुम्हें तो मुझे ऐसे चुम्ब
करना चाहिए कि जिस पेड़ के तले हम बैठे हैं उसके सभी ताज़े फूल हम
पर बरबस बरस पड़ें। ऐसे, ऐसे, ऐसे," फुसफुसाती हुई श
अपने प्रेमी को बांहों में कसकर कामुक व कोमल भाव से चूमने
लगी।
"एक बात बताओ सेर्गेई, लोग तुम्हें अस्थिर मन का क्यों कहते हैं
सभी लोग यही बात कहते हैं न?" कातेरीना ल्वोव्ना थोड़ी देर के ब
बोली।
"कौन है ऐसी बकवास करनेवाला?"
"लोग कहते हैं ऐसी बातें।"
"शायद, जिन्हें मैं प्रेम के काबिल कभी नहीं समझता, उनको
छोड़ चुका था।"

"यदि वे प्रेम के लायक नहीं थीं तो तुमने उनके साथ प्रेम करने मूर्खता क्यों की? जो पात्र न हो उन्हें प्रेम भी नहीं करना ए।"

"बातें बनाना तो तुम्हें खूब आता है। क्या ये बातें सही विचार से जाती हैं? केवल लोभ, बस इतनी सी बात है। मैंने किसी स्त्री से ही, किसी गंभीर इरादे के बिना अपनी आज्ञा को तोड़ा, पर फिर गले में भार भी बन जाती है।"

"मेरी बात सुनो, सेर्गेई! मैं न तो जानती हूं और न मुझे जानने च्छा ही है कि दूसरों के साथ क्या गुज़री; पर, हमारे प्यार में पहल ने की थी और तुम यह भी जानते हो कि मैंने जितना अपनी मरज़ी र शुरू किया था उतना ही तुम्हारी फुसलाहट से भी। सो, सेर्गेई, मुझे धोखा देकर किसी अन्य से नाता जोड़ लोगे, तो याद सेर्गेई, मेरे मीत, मैं जीवित रहकर तुम से नहीं बिछुड़ूंगी।"

र्गेई ने भड़ककर बात शुरू की।

'पर, कातेरीना ल्वोव्ना!" सेर्गेई ने कहा, "प्यारी, ज़रा देखो, स्थिति कैसी है। तुम्हीं कहती हो, आज मैं उदास हूं, पर यह नहीं ते कि उदास न होना कैसे संभव है? मेरा दिल शायद ख़ून हो गया है।"

कहो सेर्गेई, सुनाओ न अपना दुखड़ा मुझे।"

कहने को क्या है? पहली बात तो यही है कि यदि ईश्कृपा से पति वापस आ जाता है तो सेर्गेई फ़िलीपिच की बात ही समाप्त। तो अहाते में उन्हीं गानेवालों के साथ जाकर कोठरी में ! कातेरीना ल्वोव्ना के शयनकक्ष में जलती मोमबत्ती की ओर रहना होगा, जब वह गुदगुदे बिस्तर को झाड़कर उस पर अपने पति, ज़िनोवी बोरीसिच के साथ सो जायगी।"

ऐसा कभी नहीं होगा!" कातेरीना ल्वोव्ना ने स्मित मुद्रा से, मंद , अपना हाथ हिलाकर कहा।

ऐसे नहीं होगा यह? मैं ऐसा समझता हूं कि तुम इसके बिना नहीं गेगी। पर, कातेरीना ल्वोव्ना, मेरे भी दिल है, और अपने दुःखों भी समझ पाता हूं।"

स करो, इस बारे में काफ़ी बात हो चुकी।"

कातेरीना ल्वोव्ना सेर्गेई की ईर्ष्या देखकर प्रसन्न हुई और हंसकर पुनः के चुम्बन लेने लगी।

सेर्गेई ने उसकी अधनंगी बांहों में से अपना सिर निकालते हुए कहना री रखा, "और फिर से मैं यह बता देना चाहूंगा कि मैं साधारण गति का आदमी हूं और मुझे हर प्रकार से हर बात को बार-बार सोचना गा। यदि मैं तुम्हारे बराबर का होता, यदि कोई अभिजात कुल वाला व्यापारी होता, तो कातेरीना ल्वोव्ना, तुम्हें जीवन भर कभी न छोड़ता। : तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि मेरे जैसे व्यक्ति को तुम्हारे साथ ते और क्यों निभ सकेगी? जब मैं तुम्हारे पति को तुम्हारी कुमुदिनी सी श्वेत बांहों से थामे हुए शयनकक्ष मे ले जाते देखूंगा तो मेरे दिल को ह सब सहना होगा और हो सकता है कि इसी कारण मेरे मन में जीवन र अपने प्रति एक ग्लानि का भाव घर कर जायगा। कातेरीना ल्वोव्ना! औरों की भांति तो हूं नहीं कि स्त्री को भोगकर संतुष्ट हो जाऊं। जानता हूं वास्तविक प्रेम क्या है, मैं अपने हृदय को एक काले सर्प से सा जाते हुए अनुभव कर रहा हूं ..."

कातेरीना ल्वोव्ना ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, "मुझे इन सब ातों को सुनाने का तुम्हारा क्या आशय है?"

उसके मन में सेर्गेई के प्रति करुण भाव जाग गये थे।

"कातेरीना ल्वोव्ना! मैं तुमसे न कहूं तो कर ही क्या सकता हूं? मैं मौन भी रहूं तो कैसे संभव है? उनको सभी बातों का विवरण मिल गया हो, संभव है, अधिक देर नहीं, कल ही सेर्गेई को यहां से निकलना पड़े तथा फिर उसका नामोनिशान भी इस घर मे न मिले।"

"नहीं, नहीं, ऐसा न कहो सेर्गेई! कभी नहीं, चाहे कुछ भी हो जाय, मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूंगी!" कातेरीना ल्वोव्ना ने प्यार जारी रखते हुए कहा, "यदि ऐसा ही होना होगा... तो या वह जीवित नहीं रहेगा या मैं हो न रहूंगी पर, मेरा संकल्प तो तुम्हें पाने का ही है।"

"ऐसा नहीं हो सकेगा, किसी भी हालत में नहीं, कातेरीना ल्वोव्ना," सेर्गेई ने कष्ट व खिन्नता के साथ अपना सिर हिलाते हुए उत्तर दिया। "मुझे अपनी जिन्दगी में कोई आनन्द नहीं दिखता, इस प्यार के मारे। यदि मैंने मेरे बराबर हैसियत वाली स्त्री से प्यार किया होता तो मुझे संतोष तो रहता। क्या तुम भी सदैव ही मुझे प्रेमपात्र बनाये रखने के

लायक हो? क्या तुम्हें इसमें कोई गर्व है कि तुम मेरी प्रेमिका बनो? मैं तुम्हारा जी-जान से पति बनना चाहता हूं, तुमसे पुण्य गिरजे में विवाह करना चाहूंगा। यद्यपि मैं सदैव स्वयं को तुमसे छोटा मानता रहूंगा, फिर भी कम से कम लोगों को यह तो बता सकूंगा कि मैं अपनी पत्नी को कितना आदर देता हूं..."

सेर्गेई के इन शब्दों से, उसकी ईर्ष्या व विवाह-सूत्र में बंधने की इच्छा से कातेरीना ल्वोव्ना का सिर चकराने लगा। स्त्री को सदैव ही यह प्रिय लगता है कि कोई उससे विवाह करना चाहे, यद्यपि विवाह से पूर्व उस पुरुष के साथ उसके सम्बंध कितने ही अल्पकालिक क्यों न रहे हों। सेर्गेई के लिये वह आग या पानी में कूदने और क़ैद भोगने अथवा सूली पर चढ़ने के लिये भी तैयार थी। सेर्गेई ने उस पर कितना प्यार लुटाया था! उसके प्रति आस्था के भाव की कोई सीमा ही नहीं थी। वह सुख से पागल हो उठी। उसके ख़ून मे एक रवानी सी आ गई। वह और अधिक सुनने में असमर्थ सी थी। तेज़ी से उसने अपना हाथ सेर्गेई के होंठों पर रख दिया व उसके सिर को अपनी छाती से लगाते हुए कहने लगी:

"अब मैं जान गयी हूं कि तुम्हें कैसे एक व्यापारी बनाकर मुझे तुम्हारे साथ उचित रीति से रहना चाहिये। केवल इतना ख़याल रखना कि सही वक़्त आने से पहले नाहक़ ही मुझे उदास न कर डालो।"

पुनः चुम्बन और प्यार-दुलार का दौर चल पड़ा।

भंडार में सोये हुए बूढ़े कारिंदे की गहरी नींद, रात के सन्नाटे में फुसफुसाहट और कोमल हंसी से भंग होती रही। उसे नींद में ऐसा लगता था मानो कुछ शरारती बच्चे आपस में एक कमज़ोर बूढ़े का मज़ाक़ उड़ाने की सलाह कर रहे हों और कभी ऐसे हंसी-ख़ुशी के क़हक़हे सुनाई देते मानों मदमाती परियां किसी को गुदगुदा रही हों। यह आवाज़ थी अपने पति के कारिंदे के साथ, कोमल क़ालीन पर, चांदनी में नहाती हुई व रंगरेलियां करती हुई कातेरीना ल्वोव्ना की। पुराने सेब के पेड़ से सफ़ेद फूल झरते रहे और आख़िर यह फूलों का गिरना भी रुका। इसी बीच गर्मी की वह छोटी सी रात गुज़र गई, चांद माल-गोदामों की ऊंची छतों की ढाल के पीछे जा छिपा और खोया हुआ सा धरती की ओर देखने लगा। रसोईघर की छत पर बिल्लियों ने चीख़ते हुए लड़ना शुरू किया,

तके बाद उनके गुर्राने व ललकारने की क्रुद्ध आवाज़ आई और आख़िर
तीन बिल्ले छत से लुढ़ककर पास पड़े तख्तों के ढेर पर जा गिरे।

"आओ, अब सोने चलें," कातेरीना ल्वोव्ना ने कहा और मंद गति
, जैसे वह थक गई हो, क़ालीन से उठी और उसी हालत में क़मीज़
र पेटीकोट पहने, व्यापारी अहाते के स्तब्ध व मरणतुल्य मौन के पार
ल पड़ी। पीछे-पीछे सेर्गेई क़ालीन तथा उसका ब्लाउज़ लिये हुए चल
हा था, जो उसने प्रेम-क्रीड़ा के दौरान उतार फेंका था।

अध्याय ७

कातेरीना ल्वोव्ना ने बस मोमबत्ती बुझाई ही थी और कपड़े उतारकर
टी ही थी कि उसे नींद ने आ घेरा। जी भरकर रति-क्रीड़ा करने के बाद
से ऐसी गहरी नींद आई कि उसके हाथ-पांव भी सुन्न हो गये। नींद में
से ऐसा लगा कि दरवाज़ा खुल गया है और अभी थोड़ी देर पहले जो
बिल्ला आया था, पलंग पर ढेर सा आ गिरा है।

"कैसा अजीब प्राणी है यह बिल्ला?" थकी हुई कातेरीना ल्वोव्ना
असमंजस में पड़ गई। "इस बार तो मैंने बड़े ध्यान से दरवाज़े को ताला
लगाया था और खिड़की भी कसकर बंद की थी, फिर भी यह आ गया।
मैं इसे अभी बाहर फेंक दूंगी," और कातेरीना ल्वोव्ना ने उठने की चेष्टा
की पर हाथ-पैर सुन्न पड़ गये थे। और, बिल्ला अनोखी सी गुर्राहट
करता हुआ, मानो वह मनुष्य की बोली बोल रहा हो, उसके शरीर पर
ऊपर से नीचे तक फिर गया। उसके समूचे शरीर में एक सनसनी सी
दौड़ गयी।

"नहीं," उसने सोचा, "कल पवित्र जल लाकर बिस्तर पर छिड़कना
ही होगा, इसके सिवा कोई चारा नहीं है क्योंकि यह तो बड़ा ही विचित्र
बिल्ला है जिसे मेरे पास आने की आदत पड़ गई है।"

उसके कान के ठीक नीचे वही गुर्राहट आने लगी और उसके मुंह से
अपना चेहरा रगड़ता हुआ बिल्ला फिर कहने लगा, "मैं भी कैसा
बिल्ला हूं? तुम मुझे बिल्ला कहकर क्यों पुकारती हो? बड़ी होशियार
हो, कातेरीना ल्वोव्ना, जो मुझे बिल्ला कहती हो, जब तुम्हें पता है
कि मैं प्रसिद्ध व्यापारी बोरीस तिमोफ़ेयेविच हूं। मेरी हालत तो अब इसलिये

खिड़की खोली। उसी क्षण सेर्गेई नंगे पांव ही खिड़की से कूदकर बरामदे के उस खम्भे से चिपट गया, जिस पर होकर वह अपनी मालकिन के शयनकक्ष से प्रायः आता-जाता रहता था।

"नहीं, नहीं, जाओ मत। यहीं लेट जाओ और दूर मत जाओ," कातेरीना ल्वोव्ना फुसफुसाई; उसने सेर्गेई के कपड़े व जूते खिड़की से बाहर डाल दिये और खुद कम्बल ओढ़कर पति की प्रतीक्षा में लेट गई।

सेर्गेई ने आज्ञा मानी और बजाय खम्भे से उतरने के वह बरामदे में रखी टोकरी के नीचे दुबककर बैठ गया।

इतने में कातेरीना ल्वोव्ना को अपने पति के दरवाजे की ओर बढ़ने की तथा कुछ सुनने के लिये सांस रोके हुए खड़े रहने की आहट सी हुई। वह अपने पति के ईर्ष्यालु दिल की तेज धड़कन को महसूस कर रही थी लेकिन कातेरीना ल्वोव्ना को दया आने के बदले एक अनिष्टकारी हंसी अनुभूत हुई।

"करो खूब खेल की," वह मन ही मन मुस्कराने और एक निर्दोष शिशु की भांति मंद-मंद सांस लेते हुए सोचने लगी।

लगभग दस मिनट तक ऐसा चलता रहा: आखिर जिनोवी बोरीसिच प्रतीक्षा करने और अपनी पत्नी की नींद की सांस सुनते-सुनते थक सा गया और उसने दरवाजा खटखटाया।

"कौन है?" थोड़ी देर में कातेरीना ल्वोव्ना निद्राकुल स्वर में बोली।

"मैं हूं," जिनोवी बोरीसिच ने उत्तर दिया।

"क्या आप हैं, जिनोवी बोरीसिच?"

"हां, मैं हूं, क्या तुम्हें सुनाई नहीं दिया!"

कातेरीना ल्वोव्ना शमीज पहने जैसे लेटी थी, वैसे ही कूदकर बाहर निकली, पति को भीतर लिवाया और फिर से कम्बल में घुस गई।

"भोर होने के पहले कुछ ठंड सी है," उसने अपने आप को कम्बल में लपेटते हुए कहा।

जिनोवी बोरीसिच भीतर आने पर चारों ओर देखने लगा, उसने प्रार्थना की, एक मोमबत्ती जलाई और फिर से कमरे में चारों ओर देखने लगा।

"क्या हालचाल है तुम्हारे?" उसने अपनी पत्नी से पूछा।

"सब ठीक है," कातेरीना ल्वोव्ना ने उत्तर दिया और बिस्तर पर बैठते हुए छींट का सूती ब्लाउज पहनने लगी।

"आखिर हम इतने जवान तो हैं नहीं कि एक दूसरे से मिलते पर पागल हो उठें। आप भी जाने क्या चाहते हैं? मैं तो आप ही के काम में दौड़ती फिर रही हूं।"

कातेरीना ल्वोव्ना फिर से कमरे के बाहर समोवार लाने के लिए दौड़ी, उसने सेर्गेई को पुनः झकझोरते हुए कहा, "अपनी आंखें खुली रखो, सेर्गेई!"

सेर्गेई स्पष्टतया नहीं सोच पा रहा था कि इन सब बातों का क्या नतीजा निकलनेवाला है, फिर भी वह सावधान होकर बैठा रहा।

कातेरीना ल्वोव्ना लौटी तो ज़िनोवी बोरीसिच पलंग पर घुटने टेके बिस्तर के सिरहाने पर लगी कील में मनके की चेन वाली अपनी चांदी की जेब-घड़ी लटका रहा था।

"कातेरीना ल्वोव्ना, यह क्या बात है कि अकेलेपन में होते हुए भी तुम दो के लिए बिस्तर लगाती हो?" उसने पत्नी से बड़ी होशियारी के साथ पूछा।

"मैं तो हर समय आप का इंतज़ार करती रहती थी," कातेरीना ल्वोव्ना ने उसकी ओर शांत भाव से देखते हुए जवाब दिया।

"इसके लिये तो आपका धन्यवाद... पर यह चीज बिस्तर पर बंधे पड़ी हुई है?"

बिस्तर की चद्दर पर से ज़िनोवी बोरीसिच ने सेर्गेई की नीली ऊनी कमरपेटी उठाई और उसे एक सिरे से पकड़कर पत्नी की आंखों के सामने किया।

कातेरीना ल्वोव्ना उससे तनिक भी विचलित नहीं हुई।

"बगीचे में पड़ी मिल गयी थी और मैंने इससे अपनी स्कर्ट बांध ली थी।"

"हां, मैंने भी तुम्हारी स्कर्ट के बारे में कुछ बातें सुनी हैं।" ज़िनोवी बोरीसिच ने विशेष ज़ोर देते हुए कहा।

"क्या सुना है आपने?"

"तुम्हारी सब अच्छी हरकतों के बारे में।"

"वहां तो कोई ऐसी बातें नहीं है।"

"मैं कुछ भारी बात का पता लगा चुका, सब अभी पता लगा चुका है," ज़िनोवी बोरीसिच ने पत्नी की ओर खाली प्याला सरकाते हुए कहा।

कातेरीना ल्वोव्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"हम तुम्हारी सारी हरकतों का पर्दाफ़ाश कर देंगे, कातेरीना ल्वोव्ना," एक लम्बी ख़ामोशी के बाद अपनी पत्नी पर क्रुद्ध होते हुए वह बोल उठा।

"तो, तुम्हारी कातेरीना ल्वोव्ना भी इतनी भीरु नहीं है। उसे इसका कोई विशेष डर नहीं है," उसने जवाब दिया।

"क्या, क्या?" ज़िनोवी बोरीसिच ने ऊंचे स्वर से चिल्लाकर कहा।

"कोई ख़ास बात नहीं।" पत्नी ने उत्तर दिया।

"ज़रा सावधान होकर बात करो। मेरे बाहर रहने से तुम बड़ी वाचाल हो गई हो!"

"क्यों न होऊं वाचाल?" कातेरीना ल्वोव्ना पूछ बैठी।

"तुम्हें अपनी देखभाल भली प्रकार करनी चाहिए।"

"मुझे क्या पड़ी है अपनी देखभाल की। इन गज भर की जीभ वालों ने तुम्हें अंटसंट बातें कहने मे कसर थोड़े ही रखी है, साथ ही मुझे बदनामी का शिकार भी बनाया जा रहा है!"

"बातें बनानेवालों से इसका कोई सरोकार नहीं है। मुझे तुम्हारे प्रेमसम्बंध की सारी सच्चाई मालूम है।"

"किस प्रेमसंबंध के बारे में?" बिना बहाने कातेरीना ल्वोव्ना तमककर चिल्ला पड़ी।

"मुझे सब पता है इसका।"

"पता है तो साफ़-साफ़ कह डालिये न!"

ज़िनोवी बोरीसिच थोड़ी देर चुप बैठा रहा और पुनः अपनी पत्नी की ओर खाली प्याला सरकाया।

"मैं भी समझती हूं कि तुम शायद ही कुछ कह सकते हो," कातेरीना ल्वोव्ना ने तिरस्कार के साथ चुटकी ली और आवेश में आकर पति की तश्तरी में एक छोटा चमचा फेंक दिया। "तो फिर बताओ उन कहनेवालों ने क्या कहा है आपको? कौन है यह मेरा प्रेमी जिसके बारे में आप जानते हैं?"

"सब पता लग जायेगा, वक़्त आने पर, हड़बड़ी मचाने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

"आपने सेर्गेई के बारे में कुछ बकवास सुनी है न?"

"मैं पता करूंगा, सब पता लगा लूंगा, कातेरीना ल्वोव्ना। न किसीने

तुम पर मेरे अधिकार को छीना है और न कोई ऐसा कर ही सकता है... तुम्हारे मुंह से ही सारी बातें उगलवा लूंगा..."

"हाय हाय! मैं इससे घृणा करती हूं," कातेरीना ल्वोव्ना चीख मारकर दांत किटकिटाकर बोली। वह पीली पड़ गई और बिजली की भांति कूदकर दरवाज़े से बाहर हो गई।

"यह रहा वह," कुछ ही क्षणों बाद सेर्गेई को बांह से पकड़े ले आई और कहने लगी, "पूछो मुझसे और इससे अपनी जानकारी के बारे में। हो सकता है तुम्हें और भी कुछ मालूम पड़े, जिसकी तुम्हें सपने में भी आशा न हो!"

ज़िनोवी बोरीसिच यह देखकर दंग रह गया। पहले उसने दरवाज़े में खड़े सेर्गेई की ओर देखा फिर अपनी पत्नी की ओर, जो पलंग के एक सिरे पर हाथ पर हाथ धरे बैठी थी और उसे कुछ पता नहीं था कि आगे क्या होनेवाला था।

"क्या करती है तू, ओ कपटी नाग!" ज़िनोवी बोरीसिच कुर्सी में बैठा हुआ एकदम फट पड़ा।

'हां, हां, पूछो हमसे जो कुछ भी आप अच्छी तरह से जानते हैं," कातेरीना ल्वोव्ना ढीठता से बोली, "तुम सोचते हो कि मुझे पीटने की धमकी से डरा दोगे," वह अजीब तरह से आंखें मटकाती हुई कहती रही, "पर ऐसा कभी नहीं हो सकेगा। शायद तुम्हारे उन वादों को सुनने के पहले ही मैं यह जानती थी कि तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करूं, पर अब तो वही करूंगी।"

"क्या है यह? निकल बाहर!" ज़िनोवी बोरीसिच सेर्गेई से कड़ककर बोला।

"यह भी खूब रही!" उसकी खिल्ली उड़ाते हुए कातेरीना ल्वोव्ना ने कहा।

फिर बड़ी होशियारी से उसने दरवाज़े को ताला लगाया, चाबी जेब में डाली और फिर बिस्तर पर लेट गई।

"आओ, सेर्गेई, यहां मेरे पास, मेरे प्यारे!" उसने कारिंदे को अपने पास बुलाया।

सेर्गेई ने अपने घुंघराले बालों को झटका और मालकिन के पास जा बैठा।

"हे प्रभु! हे भगवान! यह हो क्या रहा है? क्या कर रहे हो तुम, जंगलियो?!" जिनोवी बोरीसिच चीख पड़ा, कुर्सी से उठते हुए उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।

"बोलो न अब, क्यों है न अजीब! देखो, देखो मेरा सुंदर छोकरा, कैसा प्यारा है!"

कातेरीना ल्वोव्ना हंसी और उसने अपने पति के सामने ही सेर्गेई को कामुकतावश चूम लिया।

उसी क्षण एक लपलपाता हुआ चांटा पत्नी के गाल पर पड़ा और जिनोवी बोरीसिच खुली खिड़की की ओर बढ़ गया।

अध्याय ८

"आह... आह... तो... अच्छा, मेरे प्रीतम, बहुत धन्यवाद! मैं तो केवल यही राह देख रही थी!" कातेरीना ल्वोव्ना चिल्ला उठी, "अब तुम जैसा चाहते हो वैसा नहीं होगा, पर जैसा मैं चाहूंगी वही होगा..."

तेज झटके से सेर्गेई को धकेलती हुई वह अपने पति की ओर फुर्ती से लपकी और जिनोवी बोरीसिच के खिड़की तक पहुंचने से पहले ही पीछे से पकड़ लिया और अपनी नाजुक अंगुलियों से उसका गला दबोचते हुए उसे फर्श पर भीगे हुए सन के गट्ठे की तरह धड़ाम से गिरा दिया।

गिरते समय जिनोवी बोरीसिच की गुद्दी का पिछला भाग फ़र्श पर पहले जा टकराया और वह स्वयं धराशायी होते ही पागल सा हो गया। घटना इतनी अचानक हुई थी कि वह शीघ्र ऐसे अन्त की अपेक्षा नहीं कर पाया था। पत्नी के इस पहले वार से उसे मालूम हो गया था कि वह उससे छुटकारा पाने के लिए कुछ भी करने को तुली हुई है और उसकी वर्तमान हालत बड़े खतरे की है। जिनोवी बोरीसिच गिरते ही पल भर में यह सब समझ गया था और इसी से वह नहीं चिल्लाया। क्योंकि वह जान चुका था कि उसकी चिल्लाहट किसी अन्य के कानों तक तो पहुंचेगी नहीं, बल्कि घटनाक्रम को और तेजी से पूरा कर देगी। चुपचाप पड़ा हुआ वह चारों ओर देखने लगा। क्रोध, तिरस्कार और पीड़ा से

सराबोर होकर उसकी आंखें पत्नी पर टिक गई जिसकी नाजुक अंगुलियां उसका गला दबोच रही थीं।

ज़िनोवी बोरीसिच ने अपनी कोई सुरक्षा नहीं की; उसकी मुट्ठियां सख्ती से बंधी व तनी हुई रहीं और हाथ आक्षेपजनक झटके खा रहे थे। एक हाथ बिल्कुल मुक्त था पर दूसरा कातेरीना ल्वोव्ना ने अपने घुटने से फ़र्श पर दबा रखा था।

"अरे, पकड़ो न इसे," उसने उदासीन स्वर में सेर्गेई से कहा और फिर पति की ओर मुड़ी।

सेर्गेई अपने मालिक पर बैठ गया, उसके दोनों हाथों को अपने घुटनों के नीचे दबा डाला और गले पर कातेरीना ल्वोव्ना के हाथों के नीचे अपने हाथ डालने ही वाला था कि अचानक चीख उठा। अपने दुश्मन को सामने पाकर खौफ़नाक भावना से ज़िनोवी बोरीसिच ने अंतिम प्रयत्न किया: उसने झटके के साथ स्वयं को छुड़ाते हुए अपने हाथ सेर्गेई के घुटनों के नीचे से खींच लिए, व सेर्गेई के बाल अपने मुक्त हाथों से पकड़ लिए—फिर उसने एक जंगली पशु की भांति सेर्गेई को गले में काट खाया। पल भर के लिए ही यह सारी घटना जारी रही कि तुरंत ही भारी गुर्राहट के साथ ज़िनोवी बोरीसिच का सिर फ़र्श पर गिर पड़ा।

कातेरीना ल्वोव्ना पीली सी पड़ गई थी व कठिनाई से सांस ले रही थी और अपने पति और प्रेमी के पास खड़ी हुई थी। उसके दायें हाथ में धातु का बना मोमबत्ती स्टैंड था जिसे वह ऊपर से पकड़े हुए थी और उसका भारी हिस्सा नीचे की ओर था। ज़िनोवी बोरीसिच की कनपटी से गहरे लाल खून की पतली धारा बह निकली थी।

"पादरी को बुलाओ..." ज़िनोवी बोरीसिच ने कराहते हुए कहा। घृणावश उसने ऊपर बैठे सेर्गेई से अपना सिर अधिक से अधिक दूर हटाने की कोशिश की। "पाप क्षमा-याचना..." उसने बड़े मंद स्वर में अपनी नजर बालों के नीचे जमे खून पर टिकाते व कांपते हुए कहा।

"तुम पापों की क्षमा के बिना ही ठीक रहोगे जैसे अभी हो," कातेरीना ल्वोव्ना फुसफुसायी।

"इसने काफी वक्त लगा दिया है अब तक," उसने सेर्गेई से कहा, "गले को जरा जोर से दबाओ।"

ज़िनोवी बोरीसिच के गले से कुछ घर्घर ध्वनि निकली।

कातेरीना ल्वोव्ना नीचे झुकी और अपने हाथों से सेर्गेई के हाथों को दबाया जो उसके पति के गले पर थे और कान लगाकर उसकी छाती की धड़कन सुनने लगी। पांच मिनट के मौन के बाद वह उठी और बोली:

"हो गया इसका अंत।"

सेर्गेई भी सांस लेने उठा। जिनोवी बोरीसिच गला घोंटकर मारा हुआ पड़ा था, उसकी कनपटी फटी हुई थी। सिर के पीछे बाईं ओर खून का छोटा सा जमाव था जो छोटे घाव से बहते-बहते उसके बढ़े हुए बालों में जम गया था।

सेर्गेई जिनोवी बोरीसिच को उठाकर तहखाने में ले गया जो उसी पत्थर के भंडारघर में था, जिसमें थोड़े दिनों पहले सेर्गेई को स्वर्गीय बोरीस तिमोफ़ेयिच ने बंद किया था। फिर वह अटारी वाले कमरे में वापस आ गया। इसी बीच कातेरीना ल्वोव्ना क़मीज़ की बांहें चढ़ाये हुए व पेटीकोट ऊंचा टांके हुए जिनोवी बोरीसिच के खून के जमाव को बारीकी से झांवे व साबुन से साफ करने लगी। समोवार में अब भी पानी गर्म था जिसकी ज़हरीली चाय से जिनोवी बोरीसिच ने अपनी प्रभुत्वपूर्ण आत्मा को तृप्त किया था और उसी पानी से उसके खून का दाग़ साफ़-साफ़ धो डाला गया था।

कातेरीना ल्वोव्ना ने धोने के लिए तांबे का कटोरा और साबुन लगा झांवा हाथ में ले रखा था।

"मुझे रोशनी दिखाओ," उसने सेर्गेई से दरवाजे की ओर आगे बढ़ते हुए कहा, "नीचे, और नीचे करो," और ध्यान से फ़र्श के तख्तों की पूरी जांच करती गई, जिन पर होकर सेर्गेई जिनोवी बोरीसिच को घसीटकर तहख़ाने तक ले गया होगा।

रंग किये फ़र्श पर दो जगह मेंर जितने छोटे दाग़ थे जिन्हें कातेरीना ल्वोव्ना ने झांवे से रगड़ा और दाग़ मिट गये।

"अपनी पत्नी पर चोर की तरह टोह रखने का यही फल होता है," कातेरीना ल्वोव्ना ने सीधी तनकर तहख़ाने की ओर देखते हुए कहा।

"अब, बस," सेर्गेई ने अपनी ही आवाज से कांपते हुए कहा।

जब तक वे सोने के कमरे में वापस पहुंचे, एक कुम्हलाई हुई उषाकाल की गुलाबी रेखा पूर्व में दिखाई दी, जिस के प्रकाश में सेब के पेड़ के फूल सुनहरे से दिखाई देने लगे थे और बग़ीचे के हरे जंगले में से किरणें कातेरीना ल्वोव्ना के कमरे में झांकने लगी थीं।

बूढ़ा कारिंदा धीरे-धीरे महाते के पार सायबान से रसोईघर की ओर, भेड़ की खाल का कोट अपने कंधों पर डाते हुए कोंस लगाते और जम्हाइयां लेते हुए जा रहा था।

कातेरीना ल्वोव्ना ने खिड़की की झिलमिली खोलने के लिए सावधानी से रस्सी खींची और सेर्गेई की ध्यानपूर्वक जांच करने लगी, मानो उसकी आत्मा में झांकने की कोशिश कर रही हो।

"अब तुम एक व्यापारी हो," सेर्गेई के कंधों पर अपने सफ़ेद हाथ रखते हुए उसने कहा।

सेर्गेई ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

सेर्गेई के होंठ कांपने लगे और उसे बुख़ार हो गया था। कातेरीना ल्वोव्ना के होंठ ठंडे पड़ गये थे।

दो दिनों के बाद, सेर्गेई की हथेलियों पर फावड़ा और रंभा चलाने से बड़ी सी गांठें पड़ गईं; उसने तहख़ाने में ज़िनोवी बोरीसिच को इस प्रकार दफ़नाया था कि बिना उसकी विधवा और उसके प्रेमी की मदद के कोई ईसा के न्याय के दिन तक उसका पता नहीं लगा सकता था।

अध्याय ६

गले में दर्द होने की शिकायत का बहाना करके सेर्गेई एक लाल रूमाल डाले घूमा करता था। इस बीच उसके गले पर ज़िनोवी बोरीसिच के दांतों के निशान अच्छा होने से पहले लोगों ने कातेरीना ल्वोव्ना के पति के बारे में पूछना शुरू कर दिया था। दूसरों से कहीं अधिक स्वयं सेर्गेई ही उसके बारे में बातें करता था। शाम को दूसरे युवकों के साथ वह बग़ीचे की बेंच पर बैठ जाता और बातें शुरू हो जातीं, "अपने मालिक को क्या हो गया? वह अब तक वापस क्यों नहीं आया?"

दूसरे युवक भी इसके बारे में अचम्भा सा करते।

उन्हीं दिनों आटे की मिल से यह ख़बर आई कि मालिक ने घोड़ा-गाड़ी किराये पर ली थी और वह घर जाने के लिये बहुत दिन पहले रवाना हो चुका था। कोचवान जो उसे लेकर आया था कहने लगा कि ज़िनोवी बोरीसिच ज़रा परेशान सा लगता था और उसने किराये का पैसा

भी अजीब ढंग से दिया था: उसने गाड़ी मठ के पास रोकी, जो क़स्बे से तीन वेर्स्ता दूर है, और अपना थैला उठाकर चल दिया। इस क़िस्से से लोग और भी आश्चर्य में पड़ गये थे।

ज़िनोवी बोरीसिच लापता था।

उसकी खोज की गई पर कुछ भी पता नहीं चला। गिरफ़्तार किये गये कोचवान ने बयान में कहा कि व्यापारी उसकी गाड़ी से मठ के पास, नदी के किनारे पर उतरकर चल दिया था। कोई ख़ुलासा आगे नहीं मिल पा रहा था और कातेरीना ल्वोव्ना, जो वास्तव में विधवा हो गई थी खुलेआम सेर्गेई के साथ रहने लगी थी। भिन्न-भिन्न अटकलें लगाई जा रही थीं कि ज़िनोवी बोरीसिच इधर या उधर है; पर वह वापस लौटकर नहीं आया और कातेरीना ल्वोव्ना दूसरों के मुक़ाबले यह अच्छी तरह से जानती थी कि वह कभी लौटकर नहीं आयेगा।

घटना को एक, दो और तीन माह बीते और तभी कातेरीना ल्वोव्ना को पता लगा कि वह गर्भवती हो गई है।

"हमें सारी सम्पत्ति मिल जायगी, सेर्गेई! मुझे उत्तराधिकारी मिल गया है," उसने कहा और फिर नगर परिषद में जाकर उसने निवेदन किया कि सारी बात इस प्रकार है कि वह गर्भवती है, व्यापार का कामकाज ठप्प सा पड़ा हुआ है, इसलिए उसे हर प्रकार के नियंत्रण के अधिकार मिल जाने चाहिए।

एक व्यापारिक धंधे को इस प्रकार नष्ट तो नहीं होने दिया जा सकता था। कातेरीना ल्वोव्ना अपने पति की क़ानूनी पत्नी थी, व्यापार में कोई क़र्ज़ नहीं थे इसलिए कोई ऐसा कारण नहीं था कि उसे अधिकार न मिलें, अतः उसे अधिकार प्राप्त हो गये।

कातेरीना ल्वोव्ना ने व्यापार को अपने कड़े नियंत्रण में ले लिया और उसकी वजह से सेर्गेई को सेर्गेई फ़िलीपिच के नाम से पुकारा जाने लगा। तभी, अचानक, न जाने कहां से एक और विपदा आ गई। नगर परिषद के अध्यक्ष को लिव्नी से एक पत्र मिला कि बोरीस तिमोफ़ेयिच ने अपने धंधे में केवल अपनी पूंजी ही नहीं लगा रखी थी बल्कि उसके एक नाबालिग भतीजे, फ़्योदर ज़ाख़ारोव ल्यामिन का पैसा भी इस धंधे में लगा हुआ था, इसलिए इस मामले की छानबीन की जानी चाहिए और नियंत्रण के अधिकार अकेली कातेरीना ल्वोव्ना को ही न दिये जायें।

समाचार मिलते ही अध्यक्ष ने कातेरीना ल्वोव्ना को बताया और तभी एक सप्ताह के बाद एक बूढ़ा लिव्नी से एक छोटे बालक को लिए हुए उनके यहां आ पहुंची।

"मैं स्वर्गीय बोरीस तिमोफ़ेयिच की चचेरी बहिन हूं," उसने कहा, "और यह है मेरा भतीजा, फ्योदर लामिन।"

कातेरीना ल्वोव्ना ने उनको ठहराया।

सेर्गेई आंगन से उनके आगमन पर कातेरीना ल्वोव्ना द्वारा किये गये सत्कार को देखकर स्तब्ध सा रह गया।

"तुम्हें क्या हो गया है?" मालकिन ने उसकी मुर्दनी देखकर पूछा, जब वह नवागन्तुकों के साथ ही घर में घुसा, फिर ड्योढ़ी में उनकी ओर टकटकी लगाए देखता रहा।

"कुछ नहीं," कारिंदे ने ड्योढ़ी से बाहर वाली बैठक में आते हुए कहा। "मैं अभी सोच ही रहा था यह लिव्नी कितनी अद्भुत जगह है," उसने आह सी भरकर दरवाजा बंद करते हुए कहा।

"अब हमें क्या करना चाहिये?" सेर्गेई फ़िलीपिच ने कातेरीना ल्वोव्ना से उस दिन शाम को समोवार के पास बैठे हुए पूछा। "जहां तक व्यापार का संबंध है, यह सारा काम खत्म हो जायेगा।"

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो, सेर्गेई?"

"क्योंकि अब सब का बंटवारा होगा। हमें इसमें क्या मिलनेवाला है, तब हम कैसे मालिक रहेंगे?"

"अवश्य ही, तुम्हारे लिये तो काफ़ी होगा, सेर्गेई?"

"मैं अपने बारे में नहीं सोच रहा हूं; मैं तो केवल यही सोच रहा हूं कि अब हम सुखी नहीं रह पायेंगे।"

"क्यों नहीं? हम सुखी क्यों नहीं रह पायेंगे?"

"क्योंकि, कातेरीना ल्वोव्ना, मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूं कि वास्तव में तुम्हें एक सम्भ्रांत महिला के रूप में देखना चाहता हूं और तुम्हारा जीवन वैसा नहीं चाहता जैसा अब तक रहा है," सेर्गेई फ़िलीपिच ने उत्तर दिया, "और अब ऐसा लगता है कि पूंजी कम होगी जिससे हमारी इज्जत घटने के कारण होगी देखकर हमें संतोष ही करना होगा।"

"पर, तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मुझे केवल पूंजी की ही जरूरत है, सेर्गेई?"

ठीक है, यह हो सकता है तुम्हें इस बात में सचमुच ही दिलचस्पी
पर मुझे तो है, क्योंकि मैं तुम्हारी इज्जत करता हूं पर मामूली
र्तु लोगों की नजरों में तो यह बड़ा खटकेगा। निस्संदेह, तुम अपने
सोच सकती हो, पर जैसे हालात हैं उनमें मैं तो स्वयं को कभी
नहीं समझ सकता। इस बारे में ये मेरे निजी विचार हैं।"
ौर सेर्गेई कातेरीना ल्वोव्ना को बराबर यही बताने लगा कि इस
सामिन के कारण वह बड़ा दुखी हो गया है तथा उन सभी भावी
से वह वंचित हो चुका है, जिनकी वह कामना किया करता
दूसरे व्यापारियों के मुकाबले कातेरीना ल्वोव्ना का रुतबा काफी
ो पायेगा। हर बार सेर्गेई इस विषय में इसी परिणाम पर पहुंचता,
ह यह फ्योदर बीच में न होता तो कातेरीना ल्वोव्ना के पति के
होने के नौ माह के अरसे में पुत्रप्राप्ति होने पर सारी सम्पत्ति का
मुल उनको मिलनेवाला था।

अध्याय १०

ई ने थोड़े दिनों में उत्तराधिकार वाली चर्चा करना हो बंद कर
सेर्गेई के होंठों से उसकी बात निकलनी बंद हुई कि कातेरीना
के दिल व दिमाग पर फ़्रेद्या लामिन वाला विचार छा गया—
हुई सी रहने लगी और सेर्गेई के साथ भी अनुदार हो गई।
रही हो, घरेलू धंधों मे व्यस्त हो या प्रार्थना करती हो, उसके
ही विचार उठते रहते कि "ऐसी बातें कैसे चलेंगी? मैं उसके
ा कैसे खोती रहूंगी? मैंने कितने दुख भोगे हैं, कितने पाप मेरे
हैं और इधर वह आ पहुंचा है बिना किसी तकलीफ के मुझसे
ने के लिये... अगर वह पूरा वयस्क आदमी हो, तो बात दूसरी
र यह तो बालक ही है, निरा बच्चा..."
पहला पाला गिर गया था। कहना नहीं होगा कि ज़िनोवी
के बारे में कहीं से भी कोई समाचार नहीं मिले थे। कातेरीना
ने से मोटी हो गई थी और गहरे विचार में डूबी रहती थी।
सकी कई बातें उड़ती रहती थीं—यह कैसे हुआ कि वह जवान

इस्माइलोवा जो अब तक बांझ थी तथा लगातार पतली-दुबली होती जा रही थी, अचानक आगे से फूल गई है। उधर, सम्पत्ति के उत्तराधिकार का हिस्सेदार, नाबालिग़ फ्योदर सामिन अपना हलका पोस्तीन पहने हुए चौक के गड्ढों में जमी हुई पतली बर्फ़ तोड़ने का खेल खेलता रहता था।

"यह क्या फ्योदर इग्नात्यिच, क्या व्यापारी के बच्चे को ऐसी हरकतें हों कि गड्ढों में बर्फ़ तोड़ता फिरे?" रसोईदारिन अक्सीन्या अहाते में दौड़ती हुई फ्योदर को देखकर चिल्ला उठी।

जायदाद का हिस्सेदार, जो कातेरीना ल्वोव्ना और उसके प्रेमी की परेशानी का कारण था, बड़े इतमीनान से बकरी के बच्चे की तरह फुदकता फिरता था। बुढ़िया उसका पालन-पोषण करती थी और वह उसीके पास वाले पलंग पर बेफ़िक्री से सोता था। बालक सपने में भी ऐसा नहीं सोच सकता था कि वह किसी के रास्ते में रोड़ा है या किसी के सुख को समाप्त करने का कारण बन रहा है।

आख़िर फ़ेद्या को छोटी माता निकल आई, जो कफ़ जम जाने से और भी बिगड़ गई, इसलिये बालक को बिस्तर में लिटाये रखा जाने लगा। पहले तो देसी दवाओं और घरेलू नुस्ख़ों से इलाज किया गया पर बाद में डॉक्टर को बुलाया गया।

डॉक्टर नियमित रूप से आने लगा व उसने कुछ दवाएं बनाईं जो बच्चे को उचित समय पर उसकी बुढ़िया चाची या उसके कहने पर कातेरीना ल्वोव्ना दिया करती।

"दयावान बनो, कातेरीना, तुम्हारा भी पैर भारी है और भगवान के न्याय का इंतज़ार कर रही हो, दयालु बनी रहो।"

कातेरीना ल्वोव्ना कभी बुढ़िया को इन्कार नहीं करती। जब बुढ़िया "रोगशय्या में पड़े बच्चे फ्योदर" के लिये सुबह या शाम को गिरजे की उपासना में जाती तो कातेरीना ल्वोव्ना बीमार बालक के पास बैठती, उसको ज़रूरत पड़ने पर पानी पिलाती व सही वक़्त पर दवा देती।

एक बार जब बुढ़िया गिरजे में सांध्योपासना में कुमारी मेरी के धौतदर्शन दिवस पर्व के अवसर पर जाने लगी तो उसने कातेरीना ल्वोव्ना से फ्योदर की देखभाल करने के लिये कहा। फ्योदर की हालत सुधार पर थी।

कातेरीना ल्वोव्ना फ़ेद्या के कमरे में गई तो वह अपना पोस्तीन पहने हुए "संतकथाएं" पढ़ रहा था।

"क्या पढ़ रहे हो फ़्योदर?" कुर्सी पर बैठते हुए कातेरीना ल्वोव्ना ने पूछा।

"संतकथाएं, चाची, मैं कथाओं वाली किताब पढ़ रहा हूं।"

"क्या ये मज़ेदार हैं?"

"हां, चाची, बड़ी ही मज़ेदार हैं।"

कातेरीना ल्वोव्ना अपने हाथ पर ठोड़ी रखे हुए उसके हिलते हुए होंठों की ओर देखने लगी और अचानक ऐसा लगा कि शैतान के दूत खुले छूट गये हैं और वह अपने पहले के विचारों की शिकार हो गई कि यह लड़का उसे कितना नुक़सान पहुंचा रहा है और क्या ही अच्छा हो कि वह इस दुनिया में हो न रहे।

"अधिक से अधिक यही बात होगी कि वह बीमार है; उसे दवा दी जा रही है... रोगी को कुछ भी हो सकता है... डॉक्टर ने सही दवा तैयार नहीं की, बस सब ठीक-ठाक है," कातेरीना ल्वोव्ना ने सोचा।

"फ़ेद्या, क्या तुम्हारे दवा लेने का वक़्त नहीं हुआ?"

"तुम चाहो तो दे दो चाची।" बच्चे ने कहा और चम्मच से दवा पी "यह तो बड़ी मज़ेदार कथा है, चाची, संतों का वर्णन तो बहुत ही अच्छा है।"

"अच्छा तो पढ़ते रहो," कातेरीना ल्वोव्ना ने कहा और कमरे में एक भावशून्य दृष्टि डाली और फिर उसकी नज़र बर्फ़ की सजावट से ढकी खिड़कियों पर जा टिकी।

"नौकरों से कहूं ज़रा कि झिलमिलियां बंद कर दें," ऐसा कहती हुई वह बैठक के कमरे और हॉल में से होती हुई ऊपर वाले अपने कमरे में जाकर बैठ गई।

पांच मिनट बाद ही सेर्गेई फ़र के कॉलर व भेड़ की खाल वाला ओवरकोट पहने उसके कमरे में बिना कुछ कहे आ पहुंचा।

"क्या नौकरों ने झिलमिलियां लगा दीं?" कातेरीना ल्वोव्ना ने उसे पूछा।

"हां लगा दी हैं," सेर्गेई ने तुरंत उत्तर दिया और वह मोमबत्ती के गुल को कैंची से काटकर आतिशदान के पास आ गया।

खामोशी सी छा गई।

"क्या आज आखिरी उपासना लम्बी चलनेवाली है?" कातेरीना ल्वोव्ना ने पूछा।

"हां, कल बड़ा त्योहार है: उपासना तो लम्बी ही चलेगी," सेर्गेई ने जवाब दिया।

पुनः खामोशी छा गई।

"जरा फ़्रेद्या के पास जाती हूं। वह वहां अकेला जो है," उठते हुए कातेरीना ल्वोव्ना धीरे से बोली।

"अकेला?" सेर्गेई ने भौंह चढ़ाते हुए पूछा।

"हां, अकेला," उसने फुसफुसाकर कहा, "तो इस से क्या हुआ?"

उन दोनों की आंखों में बिजली सी कौंध गई लेकिन कोई दूसरा शब्द नहीं निकल पाया।

कातेरीना ल्वोव्ना नीचे उतरकर खाली कमरों में से गुजरी, सर्वत्र शान्ति व्याप्त थी, प्रतिमाओं के दीपक शान्ति से जल रहे थे और उनकी लव की छाया दीवारों पर नाच रही थी; झिलमिलियां लगने के बाद खिड़कियों पर जमी हुई बर्फ पिघलनी शुरू हो गई थी और पानी टपकने से वे रोती सी दीखने लगीं। फ़्योदर बैठा हुआ पढ़ रहा था। जब उसने कातेरीना ल्वोव्ना को देखा तो बोला:

"चाची, कृपा करके यह किताब ले लो और प्रतिमाओं वाले ऐक पर रखी हुई वह दूसरी किताब दे दो।"

कातेरीना ल्वोव्ना ने भतीजे की बात मानकर उसे दूसरी किताब पकड़ा दी।

"क्या सोओगे नहीं, फ़्रेद्या?"

"नहीं, चाची, मैं दादी का इंतजार करूंगा।"

"इंतजार की क्या जरूरत है?"

"वह मेरे लिये गिरजे से अपनी रोटी लाने का वादा करके गई है।"

कातेरीना ल्वोव्ना का चेहरा पीला पड़ गया: पहली बार उसके दिल के नीचे गर्भ में बच्चा करवट लेने लगा था और उसकी छाती में ठंडक सी महसूस हुई। वह थोड़ी देर कमरे के बीच में खड़ी रही और फिर अपने ठंडे हाथों को मसलती हुई बाहर निकली।

"अच्छा, तो?" सोने के कमरे में घुसते हुए वह फुसफुसायी और
कि सेर्गेई उसी हालत में भागवान के पास खड़ा हुआ है।
क्या?" सेर्गेई एकदम दबी आवाज़ में बोला जैसे उसका कंठावरोध
हो।
वह अकेला है।"
ई ने भौंहें चढ़ाईं और उसकी सांस ज़ोर-ज़ोर से चलने लगी।
आ जाओ," कातेरीना ल्वोव्ना दरवाज़े की तरफ़ मुड़ती।
ई ने जल्दी से अपने जूते उतारे और पूछा: "मुझे क्या ची
?"
छ नहीं," कातेरीना ल्वोव्ना सांस खींचती हुई बोली और उसक
ड़कर तसल्ली से चल पड़ी।

अध्याय ११

तीसरी बार कातेरीना ल्वोव्ना उसके कमरे में आई तो बीमार
प उठा और उसने किताब घुटनों पर गिरा दी।
बात है, फ़ेद्या?"
कुछ डर सा लग रहा है चाची," उसने भयमिश्रित
के साथ जवाब दिया और बिस्तर के एक कोने में दुबक गया।
का डर लग रहा है तुझे?"
रे साथ कौन था, चाची?"
? मेरे साथ तो कोई नहीं था मेरे प्यारे।"
नहीं?"
बिस्तर के पायों की ओर झुका, उसने दरवाज़े पर आंखें टिका
शान्त हो गया।
शायद वैसे ही कुछ लगा है," उसने कहा।
ल्वोव्ना अपने भतीजे के पलंग के सिरहाने पर झुकी हुई
चाची की ओर देखा और बोला कि जाने क्यों वह बहुत
ल रही है।

जवाब में कातेरीना ल्वोव्ना ने जान बूझकर खांसा और उम्मीद के साथ बैठक के दरवाज़े की ओर झांका। वहां फ़र्श के तख्ते की कुछ चरमराहट सी हुई।

"मैं अपने रखवाले ऐंजल, संत थियोदोर की वार्ता पढ़ रहा था। उसने भगवान की खूब सेवा की थी।"

कातेरीना ल्वोव्ना चुपचाप वहीं खड़ी रही।

"तुम चाहो तो, चाची, यहां बैठ जाओ और मैं वह फिर से पढ़कर तुम्हें सुनाऊं।" भतीजे ने प्यार से कहा।

"ठहरो ज़रा, मैं बैठक में प्रतिमा के आगे दीपक मंदा करके आती हूं," कातेरीना ल्वोव्ना ने उत्तर दिया और फ़ौरन कमरे के बाहर चली गई।

बैठक में से धीमी-धीमी सी फुसफुसाहट सुनाई दी मगर घर की उस ख़ामोशी में वह बालक के तेज़ कानों तक जा पहुंची।

"चाची! यह क्या है? तुम किससे कानाफूसी कर रही हो?" लड़का रोने की आवाज़ में चिल्ला उठा। "यहां वापस आ जाओ चाची, मुझे डर लग रहा है," क्षण भर बाद फिर आंसू भरे हुए वह बोला और उसने कातेरीना ल्वोव्ना को बैठक में यह कहते सुना, "सब ठीक है," और बालक समझा कि यह उसी से कहा है।

"तुम्हें किसका डर है?" कातेरीना ल्वोव्ना ने कुछ रूखी सी आवाज़ में पूछा, जब मज़बूती से क़दम जमाती हुई वह आई और उसके पलंग के पास इस तरह खड़ी हुई कि उसके शरीर से बैठक का दरवाज़ा रोगी बालक की नज़र से छिपा हुआ रहे। "लेट जाओ," इसके बाद उसने कहा।

"मैं नहीं चाहता लेटना, चाची।"

"नहीं, फ़्योदर, जैसा मैं कहती हूं वैसा ही करो, लेट जाओ, बहुत देर हो गई है..." कातेरीना ल्वोव्ना ने दोहराया।

"पर क्यों चाची? मुझे नींद बिल्कुल नहीं आ रही है।"

"नहीं, तुम लेट ही जाओ, लेटो," कातेरीना ल्वोव्ना ने किसी अलग, डांवांडोल स्वर से कहा। फिर उसने बालक को बग़लों में थामा और बिस्तर के सिरहाने पर लिटा दिया।

उसी क्षण फ़ेद्या की घबराहट के मारे चीख़ निकल गई: उसने पीले पड़े हुए सेर्गेई को नंगे पांव कमरे में घुसते हुए देख लिया था।

कातेरीना ल्वोव्ना ने भयभीत बालक के डर से खुले हुए मुंह को अपने हाथ से ढक दिया और चिल्लाई: "चलो, जल्दी करो, उसे सीधा पकड़े रहो ताकि हाथ-पैर न मार सके!"

सेर्गेई ने फ़ेद्या के हाथ और पांव पकड़ लिये और एक झटके के साथ कातेरीना ल्वोव्ना ने परों के बड़े तकिये से दुखी बालक का नन्हा सा चेहरा ढक दिया और उसके ऊपर अपने मज़बूत और कठोर सीने का पूरा वज़न डाल दिया।

कोई चार मिनट तक कमरे में श्मशान-शांति छाई रही।

"मर गया," कातेरीना ल्वोव्ना फुसफुसायी और सब चीज़ों को क से जमाने के लिये उठी ही थी कि उस पुराने मकान की दीवारें, न्होंने न जाने कितने अपराध देखे थे, कान फोड़नेवाले प्रहारों से कांपने गीं—खिड़कियां खड़खड़ाने लगीं, फ़र्श डोल उठे, दीवारों पर प्रतिमा के पकों की हिलती हुई ज़ंजीरों की काल्पनिक छायाएं नाचने सी लगीं।

सेर्गेई सिहर उठा और अपने पांवों से जितना तेज़ भाग सकता था गा; कातेरीना ल्वोव्ना उसके पीछे भागी और शोरगुल व हंगामा उन नों का पीछा करने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ कि कुछ अपार्थिव शक्तियां स पापमय भवन की नींवों को हिला रही हों।

कातेरीना ल्वोव्ना को भय था कि कहीं आतंक से घबराकर सेर्गेई हाते में दौड़कर न चला जाय और अपनी घबराहट में पर्दाफ़ाश न कर दे; पर वह अटारी वाले शयनकक्ष में चल दिया।

सेर्गेई पूरी तेज़ी से सीढ़ियों पर चढ़ चुका था पर अंधेरे में उसका सिर खुले दरवाज़े से जा टकराया; एक कराह के साथ वह सीढ़ियों से ढुकने लगा, अंधविश्वास के डर से वह बिल्कुल पागल सा हो चुका था।

"ज़िनोवी बोरीसिच, ज़िनोवी बोरीसिच!" बड़बड़ाता हुआ वह सीढ़ियों से क़लाबाज़ी खाते हुए गिरा जिससे कातेरीना ल्वोव्ना के पांव भी उखड़ गये थे और उसे भी साथ में घसीटता ले चला।

"कहां?" उसने पूछा।

"वह अभी लोहे की चद्दर लिये हुए हमारे ऊपर से उड़ा है। वहां, वहां, वह देखो फिर! हाय रे, हाय रे..." सेर्गेई चीख पड़ा। "सुनो उसकी खड़खड़ाहट, वह फिर खड़खड़ा रहा है।"

अब तक यह बिल्कुल स्पष्ट हो चुका था कि खिड़कियों पर बाहर की

ग्रोर से अनेक हाथों के थपेड़े पड़ रहे थे और कोई दरवाज़ों पर धक्के मारने की कोशिश कर रहा था।

"अरे मूर्ख! उठ जा, मूर्ख कहीं के!" कातेरीना ल्वोव्ना चिल्ला व इन्हीं शब्दों के साथ फ़ेद्या की ओर लपकी, उसके मृतक सिर को तकिये पर सहज रीति से रखा, मानो वह सो रहा हो और फिर उसने हाथों से दरवाज़ा खोला, जिसको भीड़ बड़े ज़ोर से खटखटा रही थी।

उसकी आंखों के सामने बड़ा ही भयानक दृश्य था। कातेरीना ल्वोव्ना भीड़ की ओर देख रही थी, जो मकान की ड्योढ़ी का घेरा डाले हुए थी, अनजाने लोगों की क़तार पर क़तार अहाते की चहारदीवारी पर चढ़ रही थी और सड़क पर लोगों का हाहाकार मचा हुआ था।

इससे पूर्व कि कातेरीना ल्वोव्ना कुछ समझ पाती, सामने की भीड़ ने उसे कुचल दिया और घर के भीतर धकेल दिया।

अध्याय १२

इस परेशानी के वातावरण के पैदा होने का कारण यह था: कातेरीना ल्वोव्ना जिस क़स्बे में रहती थी, चाहे वह ज़िले का क़स्बा ही था पर काफ़ी बड़ा था, वहां कुछ बड़े कारख़ाने भी थे; महान पर्व के पहले सभी गिरजाघरों में शाम की उपासना के लिये इकट्ठे लोगों की बड़ी संख्या जमा थी, और दूसरे दिन जिस गिरजे में उसका संत-स्मृति-दिवस का उत्सव मनाया जानेवाला था, वहां बड़ी भीड़ थी और गिरजे का अहाता भी रात्रि की सामूहिक प्रार्थना के लिये खचाखच भरा हुआ था। ऐसे गिरजे में हमेशा गायक गाते रहते थे जिन में व्यापारियों के नौजवान बेटे होते थे और जिनका अगुआ संगीत का एक स्थानीय शौक़िया कलाकार ही था।

हमारी जनता भी भक्त, आस्थावान व भगवान के गिरजे के प्रति समर्पित सी रही है और इसी कारण स्वभावतः लोगों में कलात्मक अभिरुचि भी होती है: गिरजाघरों की शानदार सुंदरता व लयबद्ध "ऑर्गन संगीत" गायन की शालीन रसमयता में हमारी जनता को उच्चतम व पवित्रतम आनंद प्राप्त होता रहा है। जहां गिरजे के गायक गाते हैं, क़स्बे की लगभग आधी से अधिक जनता अवश्य ही उमड़ पड़ती है, विशेषकर व्यापारी नौजवान लोग: दुकानों के कारिंदे, बच्चे, युवक तथा कारख़ानों

दूर व मिस्त्री आदि और स्वयं मालिक अपनी स्त्रियों के साथ, सभी
ारजे में उमड़ पड़ते हैं।

स्माइलोव घराने के इस पैरिश के गिरजे में पवित्र कुमारी–ईसा
की माता को प्रतिमा को गिरजे में प्रविष्ट किये जाने का पर्व हो
, अतः पर्व के पहले की शाम को पूरे क़स्बे के सभी नवयुवक उस
में एकत्र हुए थे, और वही समय फ़ेद्या वाली उपरोक्त घटना के
होने का था।

ी लोग तो संगीत की समस्याओं में रुचि नहीं रखते: भीड़ में ऐसे
ो थे जिनको अन्य बातो मे अधिक दिलचस्पी थी।

तुम्हें मालूम है कि उस इस्माइलोवा औरत के बारे में कैसी
सी बातें फैल रही हैं," एक मिस्त्री ने इस्माइलोव के मकान
से निकलते समय कहा जिसे एक व्यापारी पीटर्सबर्ग से अपनी भाप
ो चलाने लाया था, "सुना है कि वह अपने कारिंदे सेर्गेई के
ः वक़्त प्रेमलीला में फंसी रहती है..."

र आदमी जानता है," एक अन्य व्यक्ति ने कहा, जो भेड़ की
नीला कोट पहने था, "वह आज गिरजे में भी तो नहीं आई

रे, गिरजे की बात करते हो! यह ऐसी गंदी कुतिया है कि उसे
का या अपनी आत्मा का या दुनिया के सोचने का कोई खौफ नहीं

ो न, उसके यहां ऊपर कमरे में रोशनी जल रही है," मिस्त्री
ली की दरार की ओर इशारा करते हुए कहा।

ा दरार में से देखो कि वे क्या कर रहे हैं," कई
ों एक साथ गुनगुनाहट हुई।

ी ने अपने दो साथियों के कंधों पर चढ़कर जैसे ही दरार में
कर देखा, वह पूरे जोर से चीखते हुए बोला:

देखो, वे क्या कर रहे हैं! वे अंदर किसी का गला घोंट रहे
घोंट रहे हैं किसी का!" और मिस्त्री ने पूरी ताक़त से बेतहाशा
र झिलमिली को जोर से खटखटाने की कोशिश की। लगभग
दूसरे आदमी भी वैसा ही करने लगे, खिड़कियों तक चढ़ गये
मिलियों पर प्रहार करने लगे।

भीड़ बढ़ती ही चली गई और जैसा हमें ज्ञात है इस्माइलोवों के मकान का घेरा डाला जाने लगा।

"मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है," मिस्त्री ने फ़ेद्या की लाश के पास खड़े होते हुए शनाख्त की, "लड़के को बिस्तर पर लिटा दिया गया था और ये दोनों उसका गला घोंट रहे थे।"

सेर्गेई को उसी रात पुलिस थाने ले जाया गया और कातेरीना ल्वोव्ना को उसके ऊपर के कमरे में ले गये और दो संतरी उस पर निगरानी के लिये तैनात कर दिये गये।

इस्माइलोवों के घर में ठंड असह्य हो रही थी, क्योंकि अलावा जलाये नहीं गये थे और दरवाजे काफ़ी समय तक खुले रहे थे: भीड़ में से एक के बाद एक अजनबी दर्शकों का झुंड आ रहा था। वे सब ताबूत में लिटाये हुए फ़ेद्या को और एक दूसरे बड़े ताबूत को जो चौड़ी चादर से ढका हुआ था, देखने आये थे। फ़ेद्या के ललाट पर सफ़ेद अतलस की पट्टी बंधी हुई थी जिससे उसकी खोपड़ी पर शवपरीक्षा के समय पड़ा हुआ लाल दाग़ ढका हुआ था। पुलिस के डॉक्टर की जांच से पता लगा कि फ़ेद्या की मृत्यु गला घोंटे जाने से हुई है—जब सेर्गेई को शव के सामने लाया गया और जब पादरी ने प्रलय-दिवस, ईश्वर के न्याय तथा पश्चात्ताप न करनेवाले पापियों के दंड भोगने के शब्द कहे, तो वह रो पड़ा और उसने निष्कपट तौर से न सिर्फ़ फ़ेद्या की हत्या ही क़बूल की पर बताया कि ज़िनोवी बोरीसिच की लाश को भी खोदकर निकाला जाय, जिसे बिना विधिवत अन्त्येष्टि के ही उसने गाड़ दिया था। कातेरीना ल्वोव्ना के पति का शव सूखी रेत में गाड़ा हुआ था और अभी तक पूरी तरह सड़ा नहीं था, उसे खोदकर बाहर निकाला गया और एक बड़े ताबूत में रखा गया। सभी लोगों को भयाकुल करते हुए सेर्गेई ने अपनी युवा मालकिन का नाम इन दोनों अपराधों में अपनी साथिन के रूप में लिया। कातेरीना ल्वोव्ना ने उससे पूछे गये सभी सवालों का एक ही जवाब दिया, "मुझे इस तरह की किसी बात का पता नहीं है।" सेर्गेई को उसके सामने लाया गया और उसे घटनाओं का पर्दाफ़ाश करने के लिये मजबूर किया गया। कातेरीना ल्वोव्ना ने उसकी अपराध-स्वीकृति को सुना पर बिना क्रोध किये हुए उसकी ओर मौन आश्चर्य में डूबी हुई ताकने लगी और फिर उदासीन होकर बोली, "यदि वह सब कुछ बताने को

उत्सुक है तो मेरे भी खड़े रहने का कोई कारण नहीं है। मैंने इन्हें मारा है।"

उससे पूछा गया, "किस लिये?"

"उसके लिये," सिर नीचे किये हुए सेर्गेई की ओर इशारा करते हुए उसने उत्तर दिया।

अपराधियों को जेल में रखा गया और इस ख़ौफनाक मुकदमे से, जिसकी ओर सब लोगों का ध्यान आकृष्ट हो गया था और जिससे लोगों में घृणा उभर आई थी, झटपट निपटा दिया गया। फ़रवरी के अंत में कचहरी ने सेर्गेई को और व्यापारी की तीसरी गिल्ड की विधवा कातेरीना ल्वोव्ना को बाजार के चौराहे पर कोड़े लगाये जाने तथा फिर कालेपानी की कड़ी क़ैद के लिये निर्वासित करने की सजा का फ़ैसला सुना दिया। मार्च की शुरुआत में एक ठंडे दिन जल्लाद ने कातेरीना ल्वोव्ना की सफ़ेद नंगी पीठ पर हुक्म के मुताबिक़ कोड़ों के लाल व नीले निशान उधेड़ डाले। फिर सेर्गेई के कंधों पर कोड़े लगाये और उसके खूबसूरत चेहरे पर कालेपानी के तीन कलंक के दाग़ लगा दिये।

उस वक़्त न जाने क्यों लोगों के दिलों में कातेरीना ल्वोव्ना के बजाय सेर्गेई के लिये ज्यादा हमदर्दी दिखाई दी। ख़ून और गंदगी में सना हुआ वह काले चबूतरे से उतरते हुए लड़खड़ा सा गया था पर कातेरीना ल्वोव्ना चुपचाप उतर आई थी—वह केवल अपने मोटे क़मीज़ और खुरदरे जेल के कोट से अपनी उघड़ी हुई पीठ को छूने व रगड़ खाने से बचाने की कोशिश कर रही थी।

जेल के अस्पताल में जब उसका बच्चा पास में लाया गया तो उसने केवल यही कहा, "मुझे इससे परेशान न करो!" और दीवार की तरफ़ मुंह करके बिना कराहे या शिकायत किये वह कठोर बिस्तर पर छाती पर औंधी पड़ी रही।

अध्याय १३

अपराधियों की जिस टोली में सेर्गेई और कातेरीना ल्वोव्ना थे उसे कैलेंडर के मुताबिक़ बसंत की शुरुआत में रवाना होना था, पर इन दिनों रूसी कहावत के अनुसार, "सूरज तेज़ी से चमकता तो है पर कोई गर्मी नहीं देता।"

कातेरीना ल्वोव्ना का बच्चा पालनपोषण के लिये बोरीस तिमोफ़े
की बुढ़िया बहन को दे दिया गया और वह हत्यारिनी के मृत पति
क़ानूनी पुत्र मान्य होने से पूरी इस्माइलोव सम्पत्ति का एक
उत्तराधिकारी बचा हुआ था। कातेरीना ल्वोव्ना इससे बड़ी संतुष्ट थी।
इसलिए उसने बच्चे को पूरी उदासीनता दिखाते हुए छोड़ दिया
बच्चे के पिता के प्रति उसे जितना प्रेम था, जैसा कि कई अत्य
रतिप्रिया स्त्रियों के साथ हुआ करता है, उसका अंशमात्र भी बच्चे
को नहीं मिला।

संयोगवश, उजाला व अंधेरा, अच्छा व बुरा तथा खुशी व
सभी उसके लिए बीत चुके थे; वह न तो कुछ समझ पाती थी न कि
से प्रेम ही कर पाती थी, यहां तक कि स्वयं से भी नहीं। वह तो
टोली की रवानगी का बड़ी बेचैनी से इंतजार कर रही थी क्योंकि
आशा थी कि अपने प्रिय सेर्गेई से फिर मिल पायेगी और बच्चे के
में तो वह ख़याल तक करना भी भूल चुकी थी।

कातेरीना ल्वोव्ना की आशा निराधार नहीं थी: भारी जंजीरों से बं
हुआ दाग़ी सेर्गेई क़ैदियों की उसी टोली के साथ जेल के फाटक
गुजरा।

मनुष्य हर प्रकार की स्थिति का आदी हो जाता है, चाहे वह अत्यं
घृणित ही क्यों न हो, हर हालत में वह यथासंभव योग्यता के अनुसा
थोड़े बहुत सुख भोग सकता है। कातेरीना ल्वोव्ना को अपनी स्थिति की
आदत डालने की तो आवश्यकता थी नहीं, केवल इतना ही काफ़ी
कि वह अपने सेर्गेई को दुबारा देख पायेगी और उसके साथ तो
का यह रास्ता भी खुशियों से भरपूर लगता था।

कातेरीना ल्वोव्ना अपने कैन्वास के थैले में बहुत सी मूल्यवान चीजें
तो नहीं लाई थी और नक़द पैसा तो उसके पास और भी कम था।
वह निज्नी नोवृगोरोद पहुंचने के पहले ही अपना पूरा पैसा पहरेदारों
बांट चुकी थी ताकि वह सड़क पर सेर्गेई के साथ चलने का मौक़ा पा सके
और मार्ग की जेल के ठंडे, अंधेरे व संकरे गलियारों में रात में घंटे
के क़रीब उसका आलिंगन कर सके।

मगर कातेरीना ल्वोव्ना का दाग़ी साथी उसके प्रति इतना प्रेम नहीं
दिखाता था, उससे गुप्त मुलाक़ातों की कोई ख़ास क़द्र नहीं करता था।

लिए वह औरत खाना-पीना छोड़कर अपने खाली हो रहे बटुए
२५ कोपेक निकालकर संतरियों को देती थी। वह इसके बावजूद
कहा करता, "मेरे साथ इन कोनों में छिपकर मिलने के लिये
को पैसा देने के बजाय मुझे ही दे दो तो अच्छा होगा।"
प्यारे सेर्गेई, मैंने तो उसे सिर्फ २५ कोपेक ही दिये हैं," कातेरीना
ने अपनी सफाई देते हुए कहा।
क्या यह पैसा नहीं है? क्या तुम्हें ये कहीं सड़क में पड़े मिल
२५ कोपेक, फिर भी तुमने तो काफी दे डाला है इन्हें।"
इतने पर भी हम लोग मिल तो पाये हैं।"
अरे, इस सब तकलीफ़ के बाद भी इस तरह मिलने में तुम्हें क्या
मिलता है? मुलाक़ात की तो बात ही क्या, मैं तो अपने समूचे
को ही धिक्कार रहा हूं!"
र, सेर्गेई, जब तक मैं तुमसे मिल पाती हूं, मुझे किसी बात की
नहीं है।"
ह सब बकवास है," सेर्गेई ने उत्तर दिया।
बार ऐसे जवाब सुनकर कातेरीना ल्वोव्ना अपने होंठों को खून
तक काटकर रह जाती और रात के अंधकार में मिलने पर रोने
र न होते हुए भी उसकी आंखों में गुस्से और दर्द के आंसू भर
ह खामोश होकर सब सह लेती और अपने आपको धोखा देने
श करती रहती।
प्रकार के आपसी संबंधों में पड़कर वे निज्नी नोव्गोरोद तक की
कर पाये। यहां पर मास्को राजमार्ग से साइबेरिया जानेवाली
टोली उनके साथ आ मिली।
बड़ी टोली में तरह-तरह के अनेक लोग थे, औरतों के विभाग
दिलचस्प औरतें थीं: इनमें एक थी फ़िओना, यारोस्लाव्ल के
की बीवी, ऊंचे क़द की, सघन काली चोटी वाली और बड़ी
वाली रसीली बदामी आंखों की और भले मिज़ाज वाली,
स्त्री; दूसरी थी १७ वर्षीय, पतले चेहरे, सुनहरे बाल,
बी चमड़ी व छोटे से मुंह वाली, जिसके गालों में खड्डे पड़ते
हलकी सुनहरी व घुंघराली लटें सिर पर बंधे क़ैदी के
में से ललाट पर चंचलता के साथ झूल रही थीं।

टोली के लोग इस लड़की को सोनेत्का के नाम से पुकारते थे।

सुंदर फ़िग्रोना मृदु और सुस्त स्वभाव की थी। अपनी टोली का ह
आदमी उसे खूब जानता था और कोई मर्द भी उसे पाकर खुश
था क्योंकि वह हर चाहनेवाले को प्यार कर बैठती थी।

"हमारी फ़िग्रोना धाची बड़ी दयालु है, सबके लिए उदार है
क़ैदी लोग मज़ाक़ करते हुए सहमति प्रकट करते थे।

मगर सोनेत्का का चरित्र न्यारे ढंग का था।

"वह चंचल है, पास रहती है मगर किसी के हाथ नहीं आती
लोग उसके बारे में कहते।

सोनेत्का सुरुचिपूर्ण थी, चुनाव करना पसंद करती थी, उसका सच
ही बड़ा सख्त चुनाव था; वह बिना मनुहार के किसी का प्र
स्वीकार नहीं कर सकती थी, प्यार का मज़ा ज़ायक़ेदार चटनी की त
परोसे जाने पर ही वह खुश होती थी और थोड़े कष्ट और बलिदान
साथ प्यार चाहती थी। पर फ़िग्रोना तो रूसी सादगी वाली स्त्री थी
किसी को ना कहने में भी सुस्ती दिखाती और केवल यही जानती थी कि
एक स्त्री मात्र है। ऐसी स्त्रियों की चोरों के गिरोहों में, क़ैदियों
टोलियों में खूब क़द्र की जाती है।

इन दोनों औरतों का एक मिली-जुली टोली में, सेर्गेई और कातेरी
ल्वोव्ना के साथ शामिल हो जाना कातेरीना ल्वोव्ना के लिए बड़े दुख
नतीजों का कारण बन गया।

अध्याय १४

निज़्नी नोवगोरोद से कज़ान तक की यात्रा के शुरू के दिनों में ही
सेर्गेई खुले रूप से फ़िग्रोना से प्यार की याचना करने लगा और उसे
निराश भी नहीं होना पड़ा। रसीली सुंदरी फ़िग्रोना ने सेर्गेई का प्रतिकार
नहीं किया, क्योंकि अपने दिल की उदारतावश वह किसी को टाल नहीं
पाती थी। एक दिन यात्रा के तीसरे या चौथे पड़ाव में कातेरीना ल्वोव्ना
ने संतरी को रिश्वत देकर अपने प्यारे सेर्गेई के साथ शाम होते ही

मुलाकात तय कर ली थी, वह कोठरी में आंखें खोले हर समय संतरी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी, जो उसे इशारा करे व धीरे से कहे, "दौड़ो जल्दी से।" दरवाजा पहली बार खुला और एक औरत गलियारे में लपककर भागी; दरवाजा दूसरी बार खुला और दूसरी औरत तख्ते वाले मांचे से जल्दी से उठी और संतरी के साथ ग़ायब हो गई; अंत में किसी ने कातेरीना ल्वोव्ना के ओढ़ हुए कोट को हिलाया। जवान औरत तख्ते से उठी जिसको न जाने कितने क़ैदियों ने अपने पहलुओं से रगड़कर चमका रखा था, उसने अपने कंधे पर कोट डाला और सामने खड़े संतरी को धकेल दिया।

जब कातेरीना ल्वोव्ना गलियारे में आगे बढ़ रही थी तो जहां एक चिराग़ से रोशनी आ रही थी, वहां पर वह दो या तीन जोड़ों से टकरायी जो दूर से किसी तरह भी दिखाई नहीं दे रहे थे और जिन्हें वह दूर से नहीं पहचान सकती थी। जैसे ही वह मर्दों की कोठरी के पास से निकली उसने दरवाज़े के देखने के सूराख़ में से आती हुई दबी हुई सी हंसी सुनी।

"उफ़! क्या चहलपहल कर रहे हैं!" यह कहते हुए संतरी ने कातेरीना ल्वोव्ना को एक कोने में धकेल दिया और ख़ुद चला गया।

कातेरीना ल्वोव्ना का एक हाथ कोट और दाढ़ी पर लगा और दूसरा हाथ किसी औरत के गरम चेहरे से छू गया।

"कौन है यह?" सेर्गेई ने धीमे स्वर में पूछा।

"तुम यहां क्या कर रहे हो? और कौन है यह तुम्हारे साथ में?"

अंधेरे में कातेरीना ल्वोव्ना ने अपनी प्रतिद्वन्द्वी स्त्री के सिर का रूमाल खींच लिया। स्त्री एक ओर से खिसकी, गलियारे में किसी से ठोकर खाई और गिर पड़ी।

मर्दों की कोठरी से मिली-जुली ज़ोरदार हंसी सुनाई दी।

"सुअर कहीं का," कातेरीना ल्वोव्ना ने फुसफुसाकर कहा और सेर्गेई के चेहरे पर उसी रूमाल के छोरों से मारा जिसे उसको नई चहेती के सिर से उतारा था।

सेर्गेई उस पर हाथ उठा लेता पर कातेरीना ल्वोव्ना गलियारे से तेज़ी से गुज़र गई और अपनी कोठरी के दरवाज़े को छू गई। उसके पीछे दुबारा मर्दों की कोठरी से हंसी के ठहाके सुनाई दिये जो इतने ज़ोरदार थे कि

टोली के लोग इस लड़की को सोनेत्का के नाम से पुकारते थे।

सुंदर फ़िओना मृदु और सुस्त स्वभाव की थी। अपनी टोली का हर आदमी उसे खूब जानता था और कोई मर्द भी उसे पाकर खुश था क्योंकि वह हर चाहनेवाले को प्यार कर बैठती थी।

"हमारी फ़िओना चाची बड़ी दयालु है, सबके लिए उदार है।" क़ैदी लोग मज़ाक़ करते हुए सहमति प्रकट करते थे।

मगर सोनेत्का का चरित्र न्यारे ढंग का था।

"वह चंचल है, पास रहती है मगर किसी के हाथ नहीं आती," लोग उसके बारे में कहते।

सोनेत्का सुरुचिपूर्ण थी, चुनाव करना पसंद करती थी, उसका चुनाव ही बड़ा सख़्त चुनाव था; वह बिना मनुहार के किसी का प्यार स्वीकार नहीं कर सकती थी, प्यार का मज़ा ज़ायक़ेदार चटनी की तरह परोसे जाने पर ही वह खुश होती थी और थोड़े कष्ट और बलिदान के साथ प्यार चाहती थी। पर फ़िओना तो रूसी सादगी वाली स्त्री थी जो किसी को ना कहने में भी सुस्ती दिखाती और केवल यही जानती थी कि वह एक स्त्री मात्र है। ऐसी स्त्रियों की चोरों के गिरोहों में, क़ैदियों की टोलियों में खूब क़द्र की जाती है।

इन दोनों औरतों का एक मिली-जुली टोली में, सेर्गेई और कातेरीना ल्वोव्ना के साथ शामिल हो जाना कातेरीना ल्वोव्ना के लिए बड़े दुखद नतीजों का कारण बन गया।

अध्याय १४

निज़्नी नोवगोरोद से कज़ान तक की यात्रा के शुरू के दिनों में ही सेर्गेई खुले रूप से फ़िओना से प्यार की याचना करने लगा और उसे निराश भी नहीं होना पड़ा। रसीली सुंदरी फ़िओना ने सेर्गेई का प्रतिकार नहीं किया, क्योंकि अपने दिल की उदारतावश वह किसी को टाल नहीं पाती थी। एक दिन यात्रा के तीसरे या चौथे पड़ाव में कातेरीना ल्वोव्ना ने संतरी को रिश्वत देकर अपने प्यारे सेर्गेई के साथ शाम होने ही

तात्कात तय कर ली थी, वह कोठरी में आंखें खोले हर समय संतरी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी, जो उसे इशारा करे व धीरे से कहे, "दौड़ो जल्दी से।" दरवाज़ा पहली बार खुला और एक औरत गलियारे में लपककर भागी; दरवाज़ा दूसरी बार खुला और दूसरी औरत तख्ते वाले पलंग से जल्दी से उठी और संतरी के साथ ग़ायब हो गई; अंत में किसी ने कातेरीना ल्वोव्ना के ओढ़े हुए कोट को हिलाया। जवान औरत तख्ते से उठी जिसको न जाने कितने क़ैदियों ने अपने पहलुओं से रगड़कर चमका रखा था, उसने अपने कंधे पर कोट डाला और सामने खड़े संतरी को धकेल दिया।

जब कातेरीना ल्वोव्ना गलियारे में आगे बढ़ रही थी तो जहां एक चिराग़ से रोशनी आ रही थी, वहां पर वह दो या तीन जोड़ों से टकरायी जो दूर से किसी तरह भी दिखाई नहीं दे रहे थे और जिन्हें वह दूर से नहीं पहचान सकती थी। जैसे ही वह मर्दों की कोठरी के पास से निकली उसने दरवाज़े के देखने के सूराख़ में से आती हुई दबी हुई सी हंसी सुनी।

"उफ़! क्या चहलपहल कर रहे हैं!" यह कहते हुए संतरी ने कातेरीना ल्वोव्ना को एक कोने में धकेल दिया और ख़ुद चला गया।

कातेरीना ल्वोव्ना का एक हाथ कोट और दाढ़ी पर लगा और दूसरा हाथ किसी औरत के गरम चेहरे से छू गया।

"कौन है यह?" सेर्गेई ने धीमे स्वर में पूछा।

"तुम यहां क्या कर रहे हो? और कौन है यह तुम्हारे साथ में?"

अंधेरे में कातेरीना ल्वोव्ना ने अपनी प्रतिद्वन्द्वी स्त्री के सिर का रूमाल खींच लिया। स्त्री एक ओर से खिसकी, गलियारे में किसी से ठोकर खाई और गिर पड़ी।

मर्दों की कोठरी से मिली-जुली ज़ोरदार हंसी सुनाई दी।

"दुष्ट कहीं का," कातेरीना ल्वोव्ना ने फुसफुसाकर कहा और सेर्गेई के चेहरे पर उसी रूमाल के छोरों से मारा जिसे उसकी नई चहेती के सिर से उतारा था।

सेर्गेई उस पर हाथ उठा लेता पर कातेरीना ल्वोव्ना गलियारे से तेज़ी से गुज़र गई और अपनी कोठरी के दरवाज़े को छू गई। उसके पीछे दुबारा मर्दों की कोठरी से हंसी के ठहाके सुनाई दिये जो इतने ज़ोरदार थे कि

टोली के लोग इस लड़की को सोनेत्का के नाम से पुकारते थे।

सुंदर फ़िओना मृदु और सुस्त स्वभाव की थी। अपनी टोली ।
आदमी उसे खूब जानता था और कोई मर्द भी उसे पाकर ख़ुश
था क्योंकि वह हर चाहनेवाले को प्यार कर बैठती थी।

"हमारी फ़िओना चाची बड़ी दयालु है, सबके लिए उदार।"
क़ैदी लोग मज़ाक़ करते हुए सहमति प्रकट करते थे।

मगर सोनेत्का का चरित्र न्यारे ढंग का था।

"वह चंचल है, पास रहती है मगर किसी के हाथ नहीं आती,"
लोग उसके बारे में कहते।

सोनेत्का सुरुचिपूर्ण थी, चुनाव करना पसंद करती थी,
ही बड़ा सख़्त चुनाव था; वह बिना मनुहार के किसी का
स्वीकार नहीं कर सकती थी, प्यार का मज़ा ज़ायक़ेदार चटनी के साथ
परोसे जाने पर ही वह ख़ुश होती थी और थोड़े कष्ट और बलिदान के
साथ प्यार चाहती थी। पर फ़िओना तो रूसी सादगी वाली स्त्री थी
किसी को ना कहने में भी सुस्ती दिखाती और केवल यही जानती थी कि
एक स्त्री मात्र है। ऐसी स्त्रियों की चोरों के गिरोहों में, क़ैदियों की
टोलियों में खूब क़द्र की जाती है।

इन दोनों औरतों का एक मिली-जुली टोली में, सेर्गेई और कातेरीना
ल्वोव्ना के साथ शामिल हो जाना कातेरीना ल्वोव्ना के लिए बड़े बु
नतीजों का कारण बन गया।

अध्याय १४

निज्नी नोवगोरोद से कज़ान तक की यात्रा के शुरू के दिनों में
सेर्गेई खुले रूप से फ़िओना से प्यार की याचना करने लगा और
निराश भी नहीं होना पड़ा। रसीली सुंदरी फ़िओना ने सेर्गेई का
नहीं किया, क्योंकि अपने दिल की उदारतावश वह किसी को टाल न
सकती थी। एक दिन यात्रा के तीसरे या चौथे पड़ाव में कातेरीना ल्वोव्ना
से संतरी को रिश्वत देकर
सेर्गेई के साथ शाम होते

मुलाक़ात तय कर ली थी, वह कोठरी में आंखें खोले हर समय संतरी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी, जो उसे इशारा करे व धीरे से कहे, "दौड़ो जल्दी से।" दरवाज़ा पहली बार खुला और एक औरत गलियारे में लपककर भागी; दरवाज़ा दूसरी बार खुला और दूसरी औरत तख़्ते वाले मचे से जल्दी से उठी और संतरी के साथ ग़ायब हो गई; अंत में किसी ने कातेरीना ल्वोव्ना के ओढ़े हुए कोट को हिलाया। जवान औरत तख़्ते से उठी जिसको न जाने कितने क़ैदियों ने अपने पहलुओं से रगड़कर चमका रखा था, उसने अपने कंधे पर कोट डाला और सामने खड़े संतरी को धकेल दिया।

जब कातेरीना ल्वोव्ना गलियारे में आगे बढ़ रही थी तो जहां एक चिराग़ से रोशनी आ रही थी, वहां पर वह दो या तीन जोड़ों से टकरायी जो दूर से किसी तरह भी दिखाई नहीं दे रहे थे और जिन्हें वह दूर से नहीं पहचान सकती थी। जैसे ही वह मर्दों की कोठरी के पास से निकली उसने दरवाज़े के देखने के सुराख़ में से आती हुई दबी हुई सी हंसी सुनी।

"उफ़! क्या चहलपहल कर रहे हैं!" यह कहते हुए संतरी ने कातेरीना ल्वोव्ना को एक कोने में धकेल दिया और ख़ुद चला गया।

कातेरीना ल्वोव्ना का एक हाथ कोट और दाढ़ी पर लगा और दूसरा हाथ किसी औरत के गरम चेहरे से छू गया।

"कौन है यह?" सेर्गेई ने धीमे स्वर में पूछा।

"तुम यहां क्या कर रहे हो? और कौन है यह तुम्हारे साथ में?"

अंधेरे में कातेरीना ल्वोव्ना ने अपनी प्रतिद्वन्द्वी स्त्री के सिर का रूमाल खींच लिया। स्त्री एक ओर से खिसकी, गलियारे में किसी से ठोकर खाई और गिर पड़ी।

मर्दों की कोठरी से मिली-जुली ज़ोरदार हंसी सुनाई दी।

"सूअर कहीं का," कातेरीना ल्वोव्ना ने फुसफुसाकर कहा और सेर्गेई के चेहरे पर उसी रूमाल के छोरों से मारा जिसे उसकी नई चहेती के सिर से उतारा था।

सेर्गेई उस पर हाथ उठा लेता पर कातेरीना ल्वोव्ना गलियारे से तेज़ी से गुज़र गई और अपनी कोठरी के दरवाज़े को छू गई। उसके पीछे दुबारा मर्दों की कोठरी से हंसी के ठहाके सुनाई दिये जो इतने ज़ोरदार थे कि

धुंधले चिराग़ के पास खड़े व अपने जूते के पंजों पर थूकते संतरी ने सिर उठाते हुए गुर्राकर कहा, "चुप रहो!"

कातेरीना ल्वोव्ना बिना कुछ कहे लेट गई और सुबह तक औंधी पड़ी रही। वह अपने आपसे कहना चाहती थी, "मैं उसे प्यार नहीं करती," और उसे मन ही मन महसूस हुआ कि वह उसे हमेशा से अधिक व्यग्रता के साथ प्यार करती है। और अपनी आंखों के सामने उस औरत के सिर के नीचे सेर्गेई की हथेली और दूसरा हाथ उसी औरत के गर्म कंधों को आलिंगन करते हुए दिखाई दिया।

बेचारी औरत रोयी और अनिच्छित रूप से सेर्गेई की कांपती हुई हथेली को अपने सिर के नीचे पाने और दूसरे हाथ से उन्मादवश [illegible] कांपते हुए कंधों से आलिंगन पाने के लिए तड़पती रही।

"अच्छा, क्या तुम मेरा रूमाल वापस कर दोगी?" सिपाही की बीवी फ़िओना ने उसे सुबह नींद से उठाते हुए पूछा।

"तो वह तुम थीं, तुम्हीं न?.."

"दे भी दो न!"

"हम दोनों को अलग क्यों किया?"

"मैंने कैसे अलग किया तुम्हें? वास्तव में यह कौनसा प्यार [illegible] रुचि थी कि इस पर तुम्हें चिढ़ हो जाय?"

कातेरीना ल्वोव्ना ने क्षण भर सोचा, फिर अपने तकिये के नीचे से वही रूमाल निकाला जिसे उसने रात में छीना था और उसे फ़िओना पर फेंककर दीवार की ओर घूम गई।

इससे उसका दिल अच्छा हो गया।

"छि:, छि:," उसने मन में कहा, "इस छिनाल से मैं क्या [illegible] करूंगी? भूल हो जाय यह! मेरा उसका क्या मुक़ाबला! कितनी [illegible] की बात है।"

"और, सुनो कातेरीना ल्वोव्ना, ज़रा ध्यान से सुन लो!" [illegible] बोला, जब वे सड़क पर साथ चल रहे थे, "मेहरबानी करके [illegible] यह तो सोचो कि मैं ज़िनोवी बोरीसिच नहीं हूं और दूसरे तुम भी [illegible] वैसी जमींदार नहीं हो; इसलिए इतना नाज मत दिखाओ, भूल कर [illegible] रखो! जवाबदार हो जाओ! यह जगह झगड़ा करने की नहीं है।"

कातेरीना ल्वोव्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया और एक हफ्ते [illegible]

उन्होंने यह देखा कि वह बड़े संतरी के क़रीब गई और ज्यों ही वे पा

को जेल के क़रीब पहुंचने लगे, उसने संतरी के हाथ में सत्रह कोपेक दा

दिये, जो दान में मिले थे।

"संभव होते ही मैं बाक़ी के दस कोपेक दे दूंगी," कातेरीना ल्वोव्ना

ने वादा किया।

"अच्छा," संतरी ने कहा और पैसा कोट की आस्तीन में छिपा

लिया।

जब बातचीत हो चुकी तो सेर्गेई थोड़ा खांसा और उसने सोनेत्का की

तरफ़ आंख मारी।

"अरे, कातेरीना ल्वोव्ना," उसने जेल की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए

उसे बांहों में थामकर कहा, "ऐसी औरत के मुक़ाबले में तो, प्यारे

साथी, इस दुनिया में कोई नहीं है!"

कातेरीना ल्वोव्ना का चेहरा खुशी से लाल हो गया और उसका दम

घुटने सा लगा।

ज्यों ही रात ढली, दरवाज़ा थोड़ा सा खुला और वह तुरंत बाहर

आ गई: वह थर-थर कांप उठी व अंधेरे गलियारे में सेर्गेई को अपने हाथों

से टटोल रही थी।

"कात्या, मेरी प्यारी!" सेर्गेई आलिंगन करते हुए फुसफुसाया।

"मेरे नादान प्रीतम!" कातेरीना ल्वोव्ना ने आंखों में आंसू भरकर

...को अस्पताल में दाखिल किये जाने के लिए पूछूं? ...सा मत करना सेर्गेई।"

...ब तो मैं मर ही जाऊंगा।"

...म पीछे रहोगे तो मुझे ये लोग लिवा ले जायंगे न?"

...र मैं कर ही क्या सकता हूं? ये जंजीरें तो मेरी हड्डियों तक को ...ल रही हैं, रगड़ पर रगड़ लगती जा रही है। यदि मेरे पास ...ऊनी मोजे होते तो हो सकता है..." सेर्गेई ने पल भर के बाद

...? हां, मेरे पास बाक़ी हैं नये मोजे, सेर्गेई।"

...नहीं, मैं कैसे ले सकता हूं उन्हें," सेर्गेई ने उत्तर दिया। ...कुछ कहे कातेरीना ल्वोव्ना लपककर कोठरी में गई, ...त पर खाली किया और फिर दौड़ती हुई गलियारे में सेर्गेई ...नीली ऊन के मोजे, जिन पर दोनों ओर चमकीले रंग के तो..., ले आई।

...सब ठीक हो जायगा," सेर्गेई ने कहा और उसने कातेरीन... आखिरी मोजों का जोड़ा लेकर विदा ली।

...कातेरीना ल्वोव्ना अपने तख़्त पर वापस लौट आई और गहरी ...गई।

...के बाद वह सोनेत्का के कोठरी से बाहर जाने की आहट न ...र न उसे भोर होने के थोड़ी देर पहले वापस लौटते ही देख...

...ना उसके कज़ान पहुंचने के केवल दो पड़ाव पहले घटित हुई

अध्याय १५
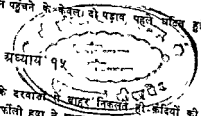
...दमघोटू जेल के दरवाज़े से बाहर निकलते ही क़ैदियों की ...ठंडे दिन की बर्फ़ीली हवा ने अभद्र रूप से स्वागत किया। ...ना बड़ी स्फूर्ति के साथ बाहर निकली पर ज्यों ही वह टोली ...आकर शामिल हुई कि कांपने लगी और पीली सी पड़ गई। ...के सामने अंधेरा सा छा गया और सारे जोड़ों में दर्द और

शिथिलता महसूस होने लगी। कातेरीना ल्वोव्ना के सामने ही सोनेत्का खड़ी थी जो वही जाने-पहचाने नीले ऊनी मोजे पहने हुए थी जिनके दोनों ओर चमकदार तौर बने हुए थे।

कातेरीना ल्वोव्ना वहां से भयभरी सी होकर हटने लगी; केवल उसकी आंखें सेर्गेई को तेजी से ताककर रह गईं, और फिर उसने नहीं हटीं।

पहले पड़ाव पर कातेरीना ल्वोव्ना शांत सी सेर्गेई की ओर आगे बढ़ी और उसने फुसफुसाकर कहा, "कमीना कहीं का!" और सहसा उसकी आंखों में सीधा थूक दिया।

सेर्गेई उसकी ओर झपटना ही चाहता था, पर उसे हटा दिया गया।

"जरा ठहरना तू!" अपना चेहरा पोंछते हुए वह भुनभुनाया।

"बड़ी हिम्मत वाली है वह, तुम्हें ठीक कर देगी," दूसरे क़ैदियों ने सेर्गेई का मखौल उड़ाया और सोनेत्का तो सबसे ज्यादा खुश होकर हंसने लगी।

सोनेत्का ने जिस प्रणय संबंध के लिये आत्मसमर्पण किया था वह उसकी रुचि के सर्वथा अनुकूल था।

"तू इसके लिए दण्ड भोगेगी," सेर्गेई ने कातेरीना ल्वोव्ना को धमकी देते हुए कहा।

खराब मौसम में लगातार चलने से थकने और दिल टूट जाने से कातेरीना ल्वोव्ना अगला पड़ाव आते ही तख्त पर दुखभरी नींद में पड़ गई और वह औरतों की कोठरी में दो मर्दों के आने की आहट न सुन सकी।

जब वे घुसे तो सोनेत्का ने उठकर बैठते हुए चुपचाप कातेरीना ल्वोव्ना की ओर इशारा किया और फिर कोट ओढ़कर लेट गई।

अगले ही क्षण कातेरीना ल्वोव्ना का कोट उसके सिर से खींचा गया और बटी हुई मोटी रस्सी का कोड़ा मर्द के भारी हाथ के पूरे जोर से उसकी पीठ पर जिस पर, केवल सूती कमीज मात्र थी, घूमने लगा।

कातेरीना ल्वोव्ना चीख पड़ी पर उसकी आवाज सिर पर पड़े कोट के नीचे दबी रह गई। उसने संघर्ष में झटका तो मारा पर सब निरर्थक था; एक हट्टाकट्टा क़ैदी उसके कंधों पर बैठा हुआ था जिसने उसके हाथ सख्ती से पकड़ रखे थे।

"पचास," आखिरी गिनती की आवाज सेर्गेई की थी, यह पहचानना कठिन नहीं था और रात के ये आगंतुक दरवाजे में से ओझल हो गये।

आत्मा को विदीर्ण करनेवाली नारकीय ध्वनियों में जो दुःख भयावहता को पूर्ण सा कर रहो हैं, बाइबिल में वर्णित जोब की पत्नी यह सलाह सुनाई दे रही थी: "तेरे जन्मदिन को धिक्कार और मर जा।

जो व्यक्ति भी इन शब्दों को न सुनना चाहता हो, जो इस स्थिति में भी मौत के विचार से आनन्द नहीं लूटता वर डरता है उसे दर्दनाक चीखों को किसी और अधिक भद्देपन से दबाने की कोशिश करनी चाहिए। आम आदमी इसे भली भांति जानता है कि ऐसे अवसरों पर वह अपनी पशुता का नंगा नाच खेल लेता है और स्वयं अपनी, दूसरों की अपनी भावनाओं की खिल्ली उड़ाने लगता है। साधारण स्थिति में चाहे वह विशेष शालीन न हो, पर ऐसी विषम स्थिति में वह पाप का पुतला बनकर रह जाता है।

"कहिये मालकिन महोदया! आपके कैसे मिज़ाज हैं?" जैसे ही टोली रात के पड़ाव वाले गांव को छोड़कर आगे बढ़ी, सेर्गेई ने कातेरीना ल्वोव्ना से बड़ी धृष्टता के साथ पूछा।

ये शब्द कहते हुए वह सोनेत्का की ओर मुड़ गया और उसको अपने कोट के घेरे में लेकर ऊंचे स्वर में गाने लगा:

> खिड़की में से दिखता मुझको तेरा शीश सुनहरा,
> नहीं नींद आई है तुमको, ऐसा लगता चेहरा,
> आओ मेरी प्रिये छुपा लूं प्यारा शीश सुनहरा...

इसके साथ ही सेर्गेई ने सोनेत्का को बांहों में ले लिया और पूरी टोली के सामने उसका ज़ोर से चुम्बन कर लिया...

कातेरीना ल्वोव्ना ने जैसे यह सब देखते हुए भी नहीं देखा: वह तब मृतप्राय सी हो गई। लोग उसे कोहनी मारने लगे, उसका ध्यान सेर्गेई की घृणित हरकतों की ओर खींचने लगे। वह भद्दे मज़ाकों का शिकार सी हो गई।

"उसे अकेली छोड़ दो," फ़िओना ने उस समय कहा जब टोली में से किसी ने ठोकर खाती कातेरीना ल्वोव्ना की खिल्ली उड़ाने की कोशिश की। "तुम्हें दिखाई नहीं देता कि यह औरत बहुत बीमार है?"

एक नौजवान क़ैदी ने फबती कसी, "कहीं उसके पांवों में पानी तो नहीं भर गया!"

प्रेमक्रीड़ाओं को, जैसे हम एक दूसरे के साथ पतझड़ की लम्बी रातों में बैठे रहा करते थे, किस तरह हमने तुम्हारे संबंधियों को बिना पादरी की मदद के सीधा स्वर्ग पहुंचा दिया था।"

कातेरीना ल्वोव्ना ठंड के मारे कांप रही थी। उसके भीगे हुए कपड़ों के नीचे हड्डियों तक में ठंड बैठ गई थी, इसके अलावा उसके शरीर में कई प्रकार के परिवर्तन होने भी शुरू हो गये थे। उसका सिर भीतर ही भीतर बहकने लगा था, उसकी आंखों की पुतलियां फटकर चौड़ी हो गई थीं। वे अनोखी तेज़ी से बड़े ज़ोर से लपलपा उठी थीं और चंचल रूप से उठती हुई लहरों पर गड़ी हुई सी दिख रही थीं।

"मुझे भी वोद्का की कुछ बूंदें चाहिए," खुशी से चहचहाती हुई सोनेत्का बोली, "इतनी ठंड है कि मैं इसे अधिक नहीं सह सकती।"

"मालकिन, क्या हमारे लिए एक बूंद भी नहीं खरीदोगी?" सेर्गेई उसे बराबर चिढ़ा रहा था।

"अरे, तुम्हारे कोई अंतरात्मा भी है कि नहीं?" फ़िओना ने घृणा से अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"हां, तुम्हारे लिए कोई शान की बात तो है नहीं," छोटी गोर्दयूश्का ने उसकी मदद की। "चाहे इससे तुम्हें शर्म न आती हो, पर दूसरों का तो खयाल करो।"

"छिः छिः, हर आदमी की औरत," सेर्गेई ने चिल्लाकर फ़िओना से कहा। "तुम्हें भी अंतरात्मा की बात खूब बनानी आती है। इससे मेरी अंतरात्मा का क्या संबंध है? हो सकता है मैंने कभी भी इसे प्यार न किया हो और अब भी न करता होऊं... मुझे तो सोनेत्का का पुराना जूता भी इसके खिसियाई हुई बिल्ली के गंदे चेहरे से कहीं सुंदर लगता है; अब तुम्हें इस बारे में क्या सफ़ाई देनी है? मेरी बला से वह उस टेढ़े मुंह वाले गोर्दयूश्का से प्यार करे; या फिर..." उसने एक खाल का चोग़ा ओढ़े और फ़ौजी टोपी में तुर्रा लगाये हुए बौने से संतरी की ओर देखकर कहा, "अरे इससे तो बेहतर होगा कि उस संतरी से ही नाता जोड़ ले, उसके चोग़े में बरसात का तो कोई असर नहीं होता।"

सोनेत्का ने झनझना कर कहा, "और फिर हर कोई उसे संतरी की श्रीमती कहेगा।"

"हां, ठीक, मोज़ों के लिए रुपये भी आसानी से मिलेंगे," सेर्गेई ने कहा।

कातेरीना ल्वोव्ना ने अपना बचाव करने की कोशिश नहीं की: वह पानी की ओर बराबर ताकती रही और उसके होंठ कुछ बड़बड़ाते हुए से लगे। सेर्गेई के दुष्टता भरे शब्दों के साथ उसे लहरों के फूलने और बारबार थपेड़े खाने से निकलती हुई चीखें और कराहें सुनाई दे रही थीं। अचानक एक टूटती हुई लहर में उसे बोरीस तिमोफ़ेयिच का नीला सा सिर दिखाई दिया और दूसरी लहर में उसके पति और फ़ेद्या सिर नीचे लटके हुए एक दूसरे को आलिंगन में भींचते हुए से दिखाई दिये। कातेरीना ल्वोव्ना ने प्रार्थना याद करने की चेष्टा की और उसे दोहराने के लिए होंठ हिलाये, पर वे फुसफुसा रहे थे, "हमारे कैसे अच्छे दिन साथ साथ बीते, कैसे हम पतझड़ की लम्बी रातों में साथ-साथ बैठे रहते थे, और कैसे हमने लोगों को मौत के घाट उतारा था।"

कातेरीना ल्वोव्ना कांप रही थी। उसकी भटकती हुई नजर ठहर सी गई और वहशी सी हो रही थी। उसके हाथ एक बार और, फिर और न जाने कहां दूरी में फैल गये और फिर गिर पड़े। अगले ही मिनट वह सारी की सारी कांपने लगी और काले पानी से अपनी नजर हटाए बिना नीचे झुके हुए उसने सोनेत्का के पैरों को पकड़ा और उसे लिए हुए एक ही छलांग भरकर नाव के नीचे पानी में जा गिरी।

यह देखकर हर आदमी आश्चर्यवश स्तब्ध सा रह गया।

कातेरीना ल्वोव्ना सतह पर दिखाई दी और फिर गायब हो गई; दूसरी लहर सोनेत्का को ऊपर ले आई।

"नाव का कांटा! उनकी ओर नाव का कांटा फेंको!" नाव पर लोग चिल्ला उठे।

नाव का भारी कांटा एक लम्बे रस्से से जुड़ा हुआ हवा में उड़ा और पानी में छपछपाया। सोनेत्का फिर ग़ायब हो गई। दो क्षणों बाद ही नदी के प्रवाह में नाव से दूर जाते हुए उसने अपनी बांहें हिलाई; और उसी क्षण कातेरीना ल्वोव्ना एक अन्य लहर में से अपनी कमर तक पानी से ऊपर उठी, सोनेत्का पर ऐसे झपटी मानो एक पाइक मछली किसी छोटी मछली पर झपटती हो... फिर दोनों जलमग्न हो गईं।

विमुग्ध यायावर

अध्याय १

लादोगा झील पर तैरते हुए हमारा जहाज़ कोनेवेत्स द्वीप को पी
छोड़कर वलाम के लिये रवाना हुआ और मार्ग में हमने कोरेला की बे
में जहाज़ी काम से प्रवेश किया। हममें से बहुत से लोग किनारे पहुंचने प
बड़े प्रसन्न हुए और फ़िन घोड़ों पर सवार होकर हमने उस वीरान औ
नीरस क़स्बे की यात्रा की। हमारे वापस लौटने पर कप्तान आगे बढ़
के लिये तैयार था और हमारा जहाज़ फिर से चल पड़ा।

कोरेला की सैर करने के बाद यह स्वाभाविक ही था कि हम उस
विपन्न और अत्यंत प्राचीन रूसी बस्ती के बारे में बात करना शुरू करते
जिससे अधिक उदास जगह की कल्पना करना संभव नहीं था। जहाज़ पर
सभी की यही राय थी। यात्रियों में से एक आदमी ने जो दार्शनिक
निष्कर्षों व राजनैतिक व्यंग्य का शौकीन था, तर्क पेश किया कि वह
यह बात नहीं समझ पाता है कि पीटर्सबुर्ग में अवांछनीय लोगों को
देश निकाले पर इतनी दूर क्यों भेजा जाता है, जिससे उनके परिवहन
से ख़ज़ाने को अवश्य ही हानि होती है, जब कि राजधानी के
निकट ही लादोगा के तट पर कोरेला जैसा अद्भुत स्थान है जहां की
जनता की उदासीनता और खिन्न व कंजूस प्रकृति की भयंकर विरक्ति के
आगे किसी प्रकार की बौद्धिक आज़ादी या विचार स्वातंत्र्य नहीं
टिक सकता।

इस यात्री ने मत प्रकट किया: "मुझे पूरा भरोसा है कि यदि इस
स्थिति के लिये रूढ़िप्रियता जिम्मेदार नहीं है तो सही जानकारी का अभाव
ही इसका मूल कारण हो सकता है।"

इतने में यात्रियों में से एक, जिसे उस इलाके की काफी जानकारी थी बोल उठा कि वहां निष्कासन की सजा वाले समय-समय पर रहते आये थे पर लगता है कि वे सब अधिक नहीं सह पाये थे।

"एक धार्मिक विद्यालय के छात्र को उसकी अनुशासनहीनता के लिये गिरजे का छोटा नौकर बनाकर यहां भेजा गया था (इसे निष्कासन कहें, यह मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आता)। यहां आने के बाद उसने पहले तो हंसमुख दिखने की बड़ी चेष्टा की और आशा रखी कि फैसला उसके हक में हो जायेगा, पर अंत में वह शराब पीने लगा, पागल होने की स्थिति तक शराब पीने लगा और उसने अपने अधिकारियो को एक प्रार्थनापत्र भेजा जिसमें निवेदन किया कि उसे गोली मार दी जाय या सेना मे भरती कर दिया जाय या अगर वह इसके लायक नहीं है तो उसे फांसी दे दी जाय।"

"फिर क्या फ़ैसला हुआ?"

"यह तो मैं नहीं कह सकता पर उसने किसी फ़ैसले का इन्तजार ही नहीं किया, उसने ख़ुद को फांसी लगा ली।"

"उसने अच्छा ही किया," दार्शनिक ने कहा।

"तुम ऐसा सोचते हो?" कहानी कहनेवाले ने आश्चर्य से पूछा, जो एक धनी व्यापारी व धार्मिक व्यक्ति सा लगता था।

"अवश्य ही, मरने पर वह किसी तरह दुःख से तो छूटा।"

"किसी तरह दुःख से छूटा! परलोक पहुंचने पर कैसा जीवन मिला होगा? आत्महत्यारे सदा ही शापित होते हैं और कोई व्यक्ति उनके लिये प्रार्थना तक नहीं कर सकता!"

दार्शनिक ने कटुता से मुस्करा दिया पर कोई उत्तर न दिया। लेकिन उसी समय बहस में इन दोनों के विरुद्ध एक नया व्यक्ति आ शामिल हुआ, जिसने उस अभागे गिरजे के नौकर का पक्ष लेते हुए हमे अचम्भे मे डाल दिया जिसने अपनी मौत की सजा अधिकारियों से आज्ञा मिले बिना ही ले ली थी।

यह एक नया यात्री था जो कोनेवेत्स में बिना किसी की दृष्टि में आये हम लोगों में आ मिला था। अब तक वह मौन बांधे हुए था और किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया था, मगर अब ज्यों ही हमने उसकी ओर देखा तो सभी दंग रह गये कि हम उसे पहले क्यों नहीं देख पाये?

यह एक विशाल क़द का, सांवला सा निष्कपट मुख का व्यक्ति था, जिसे घने लहराते हुए सफ़ेद बालों का रंग सीसे की सी झाँई भर रहा था। उसने मठ के नौसिखिये पादरी जैसा छोटा झूलदार कुरता पहन रखा था, एक चौड़ा मठ वाला कमरपट्टा बांध रखा था व ऊंची सी काले रंग की टोपी पहन रखी थी। वह एक नौसिखिया था या साधु यह कहना संभव नहीं था, क्योंकि लादोगा के द्वीपों के साधु यात्रा करते समय या द्वीपों में रहते हुए साधारणतया अपने विशेष टोप नहीं पहनते हैं बल्कि अपनी ग्रामीण सादगी में नौसिखिये की सी टोपी पहनना ही पसंद करते हैं। यह नया यात्री, जो बाद में हमारे लिये असाधारण रूप से मनोरंजक सिद्ध हुआ पचास से अधिक की आयु का लगता था मगर शब्द के हर अर्थ में एक अतिकाय मानव था, विशिष्ट, सौम्य स्वभाव वाला, सीधा-सादा रूसी सूरमा जिसे देखकर वेरेश्चागिन के शानदार चित्र अथवा काउंट अलेक्सेई तोलस्तोय की कविता में बाबा इल्या मुरोमवासी की स्मृति ताज़ा हो जाती है। उसे देखने ही यह सहज भावना होती थी कि उसे पादरियों वाला झूलदार कुरता न पहनकर एक "चितकबरे घोड़े" पर मोटे जूते पहने वन के पार सवारी करते हुए "प्रशान्त देवदार के वनों में राल व जंगली स्ट्राबेरी की भाप सुगंध" लेनी चाहिये थी।

उसके सम्पन्न सहज व भले स्वभाव के बावजूद यह समझना कठिन नहीं था कि उसने जीवन में बहुत दुनिया देखी होगी व उसे "काफ़ी अनुभव प्राप्त हुए" होंगे। वह एक साहसी व आत्मविश्वासी व्यक्ति लगता था जिसमें अधिक आडम्बर नहीं था और वह मंद, मोहक व गंभीर स्वर में बोलता था।

"इसके कहने का कोई अर्थ नहीं निकलता है," मुसाफ़िरों की ओर अपनी ऊपर ऐंठी हुई सफ़ेद मूंछ के नीचे से अपने होंठ हिलाते हुए वह बोला, "मैं अन्य के ख़्याल से सहमत नहीं हूं कि आत्महत्यारों को परलोक में कभी माफ़ नहीं किया जाता। फिर यह भी सत्य है कि कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो उनके लिये प्रार्थना कर सकता है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति मौजूद है जो उनकी स्थिति में बहुत ढंग से आसानी से सुधार कर सकता है।"

लोगों ने उससे पूछा: ऐसा व्यक्ति कौन है जिसने आत्महत्यारों की देखभाल करने का जिम्मा ले रखा था और जो मृत्यु के बाद उनके उन्हें

दया करेंगे और मेरी लड़की के लिये पति ढूंढेंगे ताकि मेरी जगह कमानेवाला तो होगा और मेरे परिवार का भरणपोषण कर सकेगा। इसलिये उसने अपने दुखी जीवन का अंत करने की बात बिना किसी झंझट के मन में ठान ली और इसके लिये एक दिन निश्चित कर लिया पर भले स्वभाव का आदमी होने के कारण वह सोचने लगा, 'ठीक है। यदि मान लो मैं मर जाऊंगा तो मेरी आत्मा का क्या होगा? मैं कोई जंगली जानवर तो हूं नहीं। मुझे तो अपनी आत्मा का ख्याल करना ही है। बाद में इसका क्या होगा?' इसके बाद तो वह और भी उदास हो गया। और वह मन ही मन बड़ा दुखी रहने लगा और महाधर्माध्यक्ष ने शराबखोरी के दोष में उसको नौकरी से हटाने का निर्णय कर लिया। एक दिन खाना खाने के बाद वे किताब लेकर सोफे पर बैठे ही थे कि उन्हें नींद सी आ गई। तभी उनके कमरे का दरवाजा खुलने सा लगा। उन्होंने पूछा, 'कौन है?' यह सोचते हुए कि उनका नौकर होगा जो किसी मिलनेवाले के आने की सूचना देने आया है। पर देखते हैं तो यह क्या, एक बूढ़ा सा व्यक्ति जिसके चेहरे पर असीम भलाई थी भीतर प्रविष्ट हुआ और धर्माधिकारी ने पवित्रतम संत सेर्गियस* को पहचान लिया।

"फिर महाधर्माध्यक्ष ने पूछा:

"'क्या ये आप ही हैं, धर्मपिता पिता सेर्गियस?'

"'हां, फिलारेत, ईश्वर के सेवक, यह तो मैं ही हूं।'

महाधर्माध्यक्ष ने पूछा:

"'हे पवित्र हृदय के स्वामी, आप मुझ तुच्छ जीव से क्या सेवा चाहते हैं?'

और तब सेर्गियस ने उत्तर दिया:

"'मैं तुमसे दयाभुता चाहता हूं।'

"'मुझे अन्य किस पर दया दिखाने के लिये कह रहे हैं?'

"और मन में उन पादरी का नाम लिया जिनकी नौकरी शराबखोरी के कारण छीनी गई थी और फिर वे अपने ही मार्ग पर चले गये,"

---

* संत सेर्गियस – सेर्गियस रादोनेज़्स्की (१३१४–१३९२) [illegible]) का ([illegible]) के [illegible]

१०

परमपवित्र जाग गये और स्वयं से ही पूछने लगे कि इसका क्या अर्थ हो सकता है। क्या उन्होंने एक साधारण सपना देखा था या यह उनकी कोरी कल्पना मात्र ही थी अथवा क्या यह दृश्य उन्हें मार्गदर्शन हेतु दिखा था? वे इस पर विचार करने लगे और अपनी महान बुद्धि के लिये विश्वप्रसिद्ध होने के नाते उन्होंने निर्णय लिया कि यह एकमात्र साधारण स्वप्न ही था; क्या यह हो सकता है कि संत सेर्जियस जिन्होंने अपना सम्पूर्ण सांसारिक जीवन उपवास और शुभ कार्यों में बिताया था एक हीन-चरित्र के कुमार्गगामी व्यक्ति के लिये मुझसे निवेदन करते? अच्छा, यह निर्णय लेने के बाद परमपवित्र ने उस सारी बात को अपने आप ही चलने दिया जैसे वह शुरू हुई थी और स्वयं अपने कार्यों मे लग गये और फिर वक्त आने पर नींद में पड़े। मगर सो जाते ही पुनः एक दृश्य देखा जो ऐसा था कि उससे उनकी महान आत्मा बड़ी दुखी हुई। आप कल्पना कीजिये किसी गड़गड़ाहट को, एक ऐसी भयावनी आवाज़ जो वर्णन के परे हो... दौड़ते हुए घोड़े... असंख्य और हरे कपड़े पहने, कवच व तुर्रे लगाये हुए, उनके काले घोड़े सिंहों की तरह थे, उनका नेतृत्व करते हुए अभिमानी सेनापति उसी पोशाक में थे और उनके हाथ में काला झंडा व झंडे पर सर्प था–जिस दिशा में सेनापति उस काले झंडे को लहराते, उसी दिशा में घुड़सवार सरपट दौड़ने लगते... परमपवित्र को पता नहीं लगा कि यह कैसा रिसाला हो सकता था, पर उन्होंने लश्कर के अभिमानी सेनापति को यह आज्ञा देते सुना, 'सताओ इन्हें, अब इनके लिये प्रार्थना करनेवाला कोई नहीं है।' इन शब्दों को कहते हुए वह पास से सरपट दौड़े और घुड़सवार अपने नायक के पीछे-पीछे चल पड़े और उनके पीछे वसंत में कृश हुए हंसों की भांति शोकमग्न छायाओं का एक लम्बा जुलूस आया व सभी ने परमपवित्र के सम्मुख सिर हिलाकर करुण स्वर के साथ और आंसू बहाते हुए निवेदन किया, कि 'छोड़ दो उसे, वही अकेला हमारे लिये प्रार्थना करता है!' ज्यों ही परमपवित्र जागे उन्होंने तुरंत उस पियक्कड़ पादरी को बुलवा भेजा और उससे पूछा कि वह किसकी प्रार्थना किस प्रकार किया करता है। इस पर वह पादरी अपनी आत्मिक भीरुता के कारण परमपवित्र की उपस्थिति में बड़ा घबरा गया और उसने उत्तर दिया, 'मैं नियमानुसार प्रार्थना करता हूं।' अंत में, बड़ी कठिनाई से ही परमपवित्र

"क्या आपको कभी यह जानकारी भी मिली है कि इस प्रकार की प्रार्थनाएं गिरजाघरों की उपासना में शामिल की जाती हैं?"

"मुझे यह ज्ञात नहीं है, पर आप मेरे शब्दों पर विश्वास न करें क्योंकि मैं अक्सर गिरजाघर नहीं जाता हूं।"

"क्यों नहीं?"

"मेरा धंधा नहीं जाने देता।"

"क्या आप एक पादरी हैं अथवा डीकन हैं?"

"इनमें से कोई नहीं। अब तक तो मैं केवल चोला ही धारण किये हुए हूं।"

"पर क्या इसका यह अर्थ नहीं कि आप कम से कम एक नवसिखिये तो हैं ही?"

"हां, लोग ऐसा ही कहते हैं।"

"वे ऐसा कह ही सकते हैं," व्यापारी ने टिप्पणी की, "पर चोला धारण किये हुए भी सेना में भरती किये जा सकते हैं।"

यह टिप्पणी भी अतिकाय साधु को कुछ बुरी नहीं लगी। उसने थोड़ी देर सोचकर कहा:

"हां, ऐसा हो सकता है और ऐसे उदाहरण भी हैं, पर मैं फ़ौजी काम के लिये कुछ बूढ़ा ज़रूर हो गया हूं, मैं तिरपन वर्ष का हूं वैसे तो सैनिक जीवन मेरे लिए नया नहीं है।"

"क्या सचमुच ही आप कभी सेना में रहे थे?"

"हां, रहा था।"

"हवलदार, मेरा अंदाज़ है?" यह प्रश्न भी फिर से व्यापारी ने ही किया।

"नहीं, मैं हवलदार नहीं था।"

"तो फिर आप क्या थे? सैनिक, सार्जेंट या संदेशवाहक या और कुछ?"

"आप हर बार ग़लती कर रहे हैं। फिर भी मैं एक सही सैनिक था, वास्तव में सैनिक मामलों से मेरा सम्बन्ध बचपन से ही था।"

"तो आप अवश्य ही किसी सैनिक के पुत्र होंगे और इसीसे सैनिक सेवा में रहे होंगे," व्यापारी ने झल्लाकर कहा जो सही बात जानने पर उतारू सा लगता था।

६*

अपने सवार का घुटना काटना सीख लिया था। यह शैतान अपने सवार को घुटने को अपनी अपनी विशाल दाढ़ों में जकड़ लेता और सारी चपनी को छील डालता था। उससे कई लोग मौत के शिकार हो गये थे। उन दिनों मास्को में रारे* नाम का एक अंग्रेज आया था जिसे 'पागलों का पालक' कहते थे, पर इस कमीने घोड़े ने उसको भी काट ही लिया था जिससे उसकी काफी बदनामी हो गई थी। मैंने यह सुना था कि उसने अपने घुटने पर फ़ौलाद की टोपी पहन रखी थी जिससे वह बच निकला था, यद्यपि घोड़े ने उसे काटा पर टोपी को नहीं खा पाया और उसे पीठ पर से फेंक दिया, यदि ऐसा न हुआ होता तो उसकी भी मौत हो जाती, पर मैंने उस जानवर का भी इलाज कर दिया।"

"आपने उसका क्या इलाज किया?"

"ईश्वर की दया से मैं यह कर पाया क्योंकि जैसे मैंने कहा था मुझे ऐसी नियामत मिली हुई है। मिस्टर रारे जो 'पागलों के पालक' के नाम से मशहूर था और दूसरे हर किसी ने उस घोड़े को सीधा करने की कोशिश की, सभी यही सोचते थे कि उसके द्वेष के विरुद्ध असली राज तो लगाम थामने में था—कि घोड़े की लगाम इस तरह पकड़ी जाय कि वह अपने सिर को इधर-उधर घुमा न सके, पर मैंने इसका एक अलग ही उपाय सोचा; जब अंग्रेज रारे ने घोड़े के बारे में कुछ भी करने से इन्कार कर दिया तो मैंने कहा, 'फ़ालतू बकवास! यह तो काफी आसान है, इस पर भूत सवार है, बस यही इसका दोष है। अंग्रेज इन बातों के बारे में कुछ नहीं जानता पर मैं सब जानता हूं और इस बारे में कुछ करके दिखा सकूंगा।' अधिकारी लोग इससे सहमत हो गये। फिर मैंने उनसे घोड़े को डोरोगोमिलोव्स्काया चुंगी-दरवाज़े से बाहर लाने के लिये कहा। उसे वहां लाया गया। हम उसे मोहरी के साथ सरकंड लगाकर फिली की घाटी तक ले गये जहां रईसों के गर्मी में रहने के बंगले बने हुए हैं। मैंने देखा कि यह जगह मेरी जरूरत के माफ़िक़ हो काफी बड़ी थी इसलिये मैं अपने काम में लग गया। मैं कमर तक नंगा होकर, नंगे पांव ही केवल इज़ार और सिर पर टोपी

---

*जॉन रारे—अमरीकी घोड़ों के साधनेवाले, जिन्होंने १८५७ में रूस की यात्रा की थी।—सं०

पहनकर उस नर-भक्षक की पीठ पर सवार हो गया। नंगे शरीर पर मैंने, तसमे वाला कमरपट्टा बांधा हुआ था जो नोव्गोरोद के संत बहादुर राजकुमार व्सेवोलोद-गावरील का था, जिसके बहादुरी के कामों का मैं बड़ा प्रशंसक था और जिसकी सुरक्षा में मुझे बड़ी आस्था थी, उस कमरपट्टे पर उसका आदर्श-वाक्य बुना हुआ था, 'मैं अपने सम्मान को किसी आदमी के आगे झुकने नहीं देता।' सिर्फ़ ये औजार मैंने साथ लिये थे—एक हाथ में तातारी चाबुक, जिसके छोर पर एक लगभग दो पौंड वजन का सीसे का गोला था और दूसरे हाथ में एक मिट्टी का भांड़ा जिसमें तरल सोंठ भरी हुई थी। इस प्रकार मैं उस की पीठ पर सवार हो गया। चार आदमी उसे अलग-अलग दिशाओं में लगाम डाले हुए खींच रहे थे ताकि वह किसी ओर भी अपने दांत न लगा पाये। शैतान घोड़े ने जब यह देखा कि वे उसके साथ सख़्ती से काम ले रहे हैं तो वह हिनहिनाने और ज़ोर से किलकारी मारने लगा, उसके पसीना छूट गया और उसका सारा शरीर ग़ुस्से के मारे कांपने लगा—वह मुझे खा डालने का पक्का इरादा कर चुका था, जिसे मैं साफ़ तौर से जान पाया था, इसलिये मैंने लगाम वाले लोगों को कहा, 'जल्दी करो, इस पाजी की लगाम उतार लो!' वे मेरी बात का भरोसा न कर सके कि उन्होंने मेरी आज्ञा सही सुनी है, क्योंकि उनको ऐसे किसी हुक्म की आशा नहीं थी; पर वे मेरी ओर ताकते खड़े रहे। 'खड़े क्यों हो?' मैंने सवाल किया, 'जैसा मैं कहूं वैसा तुम क्यों नहीं कर रहे हो? क्या तुम मेरी आवाज़ सुन सकते हो? जब मैं हुक्म दूं तो मैं उसकी फ़ौरन तामील चाहता हूं!' और उन्होंने जवाब में कहा, 'ईवान सेवेर्यानिच (मेरे चोला धारण करने से पहले लोग मुझे ईवान सेवेर्यानिच या साहब फ़्लागिन पुकारते थे), क्या आप दरअसल ही लगाम हटा लेने के लिये कह रहे हैं?' मुझे उन पर बड़ा ग़ुस्सा आ गया क्योंकि उस वक़्त मैं यह देख रहा था और मुझे पैरों में ऐसा लग रहा था कि घोड़ा मारे ग़ुस्से के पागल हो रहा है, इसलिये मैं उसे अपने घुटनों के बीच कसकर पकड़े हुए था; और उनसे चिल्लाकर कहा, 'दूर हटाओ लगाम!' वे और भी कुछ कहना चाहते थे पर मैं बिलकुल क्रोध में दांत पीसने लगा जिससे उन्होंने फ़ौरन लगाम हटा ली और अलग अलग दिशाओं में यथा-संभव तेज़ी से भाग निकले। ज्यों ही लगाम हटाई गई मैंने वही किया

ड़ा उसके सिर पर दे मारा, भांड़ा फूट गया और उससे निकली हुई लोई उसकी आंखों और नथुनों में घुस गई। वह सचमुच हक्काबक्का ा और जो कुछ भी हो रहा था उससे हैरत में पड़ गया। इतने बाएं हाथ से अपनी टोपी उतारी और उससे घोड़े की आंखों मे लोई गया और साथ-साथ उसके दोनों तरफ अपने दाएं हाथ से चाबुक रहा... वह बेतहाशा दौड़ता गया और मैं उसकी आंखों में लोई ही रहा ताकि वह कुछ भी देख न सके और बराबर चाबुक उड़ाता और ऐसे जारी रखता रहा और उसको सांस लेने या चारों तरफ़ ा मौका ही नहीं दिया। पर उसके थूथने पर बराबर लोई मलता उसे चुंधियाता रहा, उसे ईश्वर का भय दिलाते हुए, मैं दांत हुआ उसके बगलों पर चाबुक सटकारता रहा ताकि उसे पता : कि यह कोई मज़ाक नहीं है... वह मुझे अच्छी तरह से समझ योंकि उसने एक ही जगह पर अड़ना छोड़ दिया और इधर-उधर लगा। वह मुझे अपनी पीठ पर लिये जा रहा था और मैं उसे पीट रहा था, बल्कि उसके तेज़ दौड़ने पर मैं उसे उतना ही पीट रहा था। आखिर हम दोनों ही थकने लगे, मेरा कंधा गा और अपना हाथ उठाने मे भी मुझे थकावट महसूस हो रही मैंने यह देखा कि वह मेरी ओर कनखियो से नहीं देख रहा था सकी जीभ बाहर निकल आई थी। तब मुझे भरोसा हुआ कि वह ग रहा है, इसलिये मैं उस पर से उतर पड़ा, उसकी आंखें पोंछीं के सामने के बाल पकड़ कर कहा, 'खामोश! खड़ा रह, कुत्ते नरक के कुत्ते!' और मैंने उन्हें ऐसे ज़ोर से खींचा कि वह अपने र गिर पड़ा और एकदम सीधा और विनयी हो गया; अब वह ा आदमी को अपने पर चढ़ने और सवारी करने देता था पर न नहीं रहा।"

: गया?"

, बड़ा घमंडी जानवर था वह, लेकिन बड़ा विनम्र बर्ताव करने -अपने ही स्वभाव पर क़ाबू नहीं पा सका। मिस्टर रारे इस बारे में सुनकर मुझे नौकरी पर बुलाने लगा।"

ने मंज़ूर की?"

।"

"क्यों नहीं?"

"कैसे बताऊं यह? पहली बात तो मैं एक पारखी था और अपने धंधे में रवां हो चुका था। मेरा काम घोड़ों का चयन करने का था, उनको सधाना नहीं, पर रारं की पसंदगी का कारण मुझसे ए सर कराने का था। दूसरी बात यह थी कि मुझे ऐसे ओर से यह धोखे की चाल है।"

"किस तरह?"

"वह मेरा राज जानना चाहता था।"

"क्या तुम इस राज को उसे बेच देते?"

"हां, मैं बेच देता।"

"फिर आप किस कारण से रुक गये?"

था जो मुझे मिलने से भी डरता था। मैं खुद तो उसकी नौकरी बहुत चाहता था क्योंकि मैं रम के दौर में उसे पसंद करने लगा था, लेकिन कोई मनुष्य अपने भाग्य से नहीं बच सकता, मेरे भाग्य में तो कोई अन्य काम करना ही लिखा था।"

"आप अपने जीवन-ध्येय को क्या समझते हैं?"

"सच तो यह है कि मैं भली-भांति नहीं जानता हूं कि मेरा धंधा क्या हो सकता है?.. मैं काफ़ी घूमा-फिरा हूं, मैं घोड़ों के ऊपर और नीचे भी रहा था, मैं बंदी और युद्ध में सिपाही भी रह चुका था, मैंने लोगों को ख़ूब पीटा है और मुझे लोगों ने इतना पीटा था कि अपनी हड्डियां तुड़वा चुका था, हर कोई ऐसी पिटाई सहन नहीं कर सकता।"

"आप मठ में कब प्रविष्ठ हुए थे?"

"अधिक समय पहले नहीं,..."

"क्या आपने यह अनुभव किया कि यह भी आपका एक जीवन-ध्येय ही था?"

"मैं ठीक प्रकार नहीं जानता कि इसका कैसा खुलासा दूं... शायद मैंने ऐसा ही अनुभव किया।"

"आप ऐसे क्यों कहते हैं... जैसे आपकी कोई निश्चित राय ही न हो?"

"क्योंकि... यह निश्चित कैसे हो सकता है जब मेरी ज़िंदगी में इतनी बातें हुई हों जिनकी मैं थाह ही न पा सकूं?"

"यह कैसे?"

"क्योंकि जीवन में मेरे द्वारा किये गये बहुत से काम मेरी स्वेच्छा से नहीं किये गये थे।"

"तो फिर किसकी इच्छा से?"

"यह मेरे माता-पिता की मन्नत के कारण था।"

"तुम्हारे माता-पिता की मन्नत के कारण तुमको क्या हो गया था?"

"पूरे जीवन भर मैं मृत्यु के समीप रहा था पर कभी विनष्ट न हो सका।"

"क्या यह सत्य है?"

"पूर्णतया सत्य।"

"क्यों नहीं?"

"कैसे बताऊं यह? पहली बात तो मैं एक पारसी था और इस धंधे में रमा हो चुका था। मेरा काम घोड़ों का चयन करने का था, उन सधाना नहीं, पर रायं की पसंदगी का कारण मुझसे पागल घोड़ों। तर कराने का था। दूसरी बात यह थी कि मुझे ऐसे लगा कि उस ओर से यह धोखे की बात है।"

"किस तरह?"

"वह मेरा राज जानना चाहता था।"

"क्या तुम इस राज को उसे बेच देते?"

"हां, मैं बेच देता।"

"फिर आप किस कारण से रुक गये?"

"मुझे पता नहीं... शायद वही मुझसे डर गया था।"

"क्या आप कृपा करके हमें इस घटना के बारे में और बाते

था जो मुझे मिलने से भी डरता था। मैं खुद तो उसको नौकरी बहुत चाहता था क्योंकि मैं रम के दौर में उसे पसंद करने लगा था, लेकिन कोई मनुष्य अपने भाग्य से नहीं बच सकता, मेरे भाग्य में तो कोई अन्य काम करना ही लिखा था।"

"आप अपने जीवन-ध्येय को क्या समझते हैं?"

"सच तो यह है कि मैं भली-भांति नहीं जानता हूं कि मेरा धंधा क्या हो सकता है?.. मैं काफ़ी घूमा-फिरा हूं, मैं घोड़ों के ऊपर और नीचे भी रहा था, मैं बंदी और युद्ध में सिपाही भी रह चुका था, मैंने लोगों को खूब पीटा है और मुझे लोगों ने इतना पीटा था कि अपनी हड्डियां तुड़वा चुका था, हर कोई ऐसी पिटाई सहन नहीं कर सकता।"

"आप मठ में कब प्रविष्ठ हुए थे?"

"अधिक समय पहले नहीं,..."

"क्या आपने यह अनुभव किया कि यह भी आपका एक जीवन-ध्येय ही था?"

"मैं ठीक प्रकार नहीं जानता कि इसका कैसा खुलासा दूं... शायद मैंने ऐसा ही अनुभव किया।"

"आप ऐसे क्यों कहते हैं... जैसे आपकी कोई निश्चित राय हो न हो?"

"क्योंकि... यह निश्चित कैसे हो सकता है जब मेरी ज़िंदगी में इतनी बातें हुई हों जिनकी मैं थाह हो न पा सकूं?"

"यह कैसे?"

"क्योंकि जीवन में मेरे द्वारा किये गये बहुत से काम मेरी स्वेच्छा से नहीं किये गये थे।"

"तो फिर किसकी इच्छा से?"

"यह मेरे माता-पिता की मन्नत के कारण था।"

"तुम्हारे माता-पिता की मन्नत के कारण तुमको क्या हो गया था?"

"पूरे जीवन भर मैं मृत्यु के समीप रहा था पर कभी विनष्ट न हो सका।"

"क्या यह सत्य है?"

"पूर्णतया सत्य।"

के लिये केवल सख्ती ही बरतनी पड़ती थी, लेकिन जो यह सब सहकर आखिर सीख जाते वे ऐसे बढ़िया साबित होते कि फ़ार्म के पालतू घोड़े उनके मुकाबले में 'सवारी के गुणों' में कहीं नहीं टिक पाते थे।

मेरा बाप सेईतगलि इब्राहिम, इन किरगिज़ घोड़ों के दल को चराता था और जब मैं बड़ा हो गया तो मुझे उसके दल में ही साईस बना लिया गया। ये घोड़े खूंखार और क्रूर स्वभाव के थे और आजकल के जिन घोड़ों को इनके आगे कहीं नहीं ठहरते हैं जिनको अफ़सरों के लिए काम में लिया जाता है। हम इन अफ़सरों के घोड़ों को 'दरबारी नौकर' के नाम से पुकारते थे क्योंकि उन पर सवार होने में कोई मज़ा नहीं आता है—अफ़सर ही उन पर बैठा करते थे, पर मेरे पिता के घोड़े सचमुच ही जंगली थे—पशु, आग और सर्पराज सभी एक साथ—उनके थूथनों को ही लीजिये या भद्दे जबड़ों, खुरों और अयालों की ओर देखना भर ही काफ़ी था—वे बड़े ही भयंकर थे। चलना तो वे जानते ही नहीं थे, केवल अपनी [illegible] ही नहीं पर बोर्बोन से ग० गांव तक की सौ या एक सौ पचास वेर्स्तों की दूरी या इसी तरह वापस लौटना उनके लिये कुछ भी नहीं था। उन दिनों जब मैं पहली बार साईस के जीन पर बैठा तो मैं केवल ग्यारह साल का था, पर मेरी आवाज़ किसी बड़े जागीरदार के साईस की नौकरी के लिये उन दिनों ठीक ढंग की थी, सबसे बुलन्द और तीखी आवाज़—मैं लगातार आध घंटे तक 'ओ, हो, हो-हो' की लम्बी आवाज़ लगा सकता था। लेकिन मेरा शरीर काफ़ी शक्तिशाली नहीं था और लम्बी यात्राओं में सवार होकर आसानी से बैठा रहना मुश्किल होता, इसलिये मुझे दोनों व चमड़े के तस्मों से जीन व [illegible] के साथ ऐसी होशियारी से बांधा जाता कि मैं गिर ही नहीं सकता था। मेरे शरीर की हर हड्डी में दर्द होने लगता और कभी-कभी मैं इतना थक जाता था कि अवश्य ही बेहोश हो जाता, लेकिन [illegible] [illegible] होने के कारण जीन के तस्मों से फिर होश में आ जाता। यह कोई आसान काम नहीं था, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो जाता था कि मैं [illegible] हो जाता और फिर मैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इसकी आदत पड़ गई और फिर सारा काम बच्चों के खेल सा लगने लगा। और रास्ते में किसी राह चलते किसान की कमीज़ पर पूरी ताकत से चाबुक मार देने को मन करता था। हम साईसों का यह एक प्रचलित खेल माना जाता था। एक बार हम काउंट को किसी के यहां ले जा रहे थे। गर्मी का सुन्दर दिन था और काउंट खुली गाड़ी में अपने कुत्ते के साथ बैठा हुआ था, मेरा पिता चार घोड़ों की लगाम थामे हुए था और मैं आगे वाले जोड़े पर बैठा हुआ था। उस जगह हम बड़े रास्ते से मुड़कर एक तंग रास्ते की ओर बढ़े जो प० आथम नामक मठ की ओर पन्द्रह वेर्स्ता की दूरी पर था। मठ वालों ने यह रास्ता बनाया था। राजकीय मार्ग पर तो सभी प्रकार की गंदगी और बेंत के पेड़ों की मुड़ी हुई छड़ियां सड़क के किनारे ऊपर को निकली हुई थीं, पर मठ की ओर जानेवाला रास्ता साफ-सुथरा और झाड़ा-बुहारा हुआ सा लग रहा था, जिसके किनारे बर्च वृक्षों की कतारें लगी हुई थीं और रास्ता उन बर्चों से बड़ा ही हरा-भरा और सुगंधित लगता था। रास्ते के अंत में सुंदर खुले हुए मैदान दिखते थे... सारांश यह कि दृश्य ऐसा अनोखा था कि मेरा दिल ऊंची आवाज़ लगाने को होने लगा और मैं ऐसा बिना कारण तो कर भी नहीं सकता था, इसलिये मैं खुद को संभाले हुए सरपट चाल से चल रहा था लेकिन जब मठ से कोई तीन या चार वेर्स्ता रह गये थे तो सड़क ढालू होनी शुरू हो गई थी और अचानक मुझे अपने आगे एक काला धब्बा जैसा दिखाई दिया... जैसे छोटी साही की तरह कुछ चल रहा हो। मैं इस मौके से बड़ा प्रसन्न हुआ और एक ज़ोरदार 'ओ, हो, हो, हो, हो' की आवाज़ लगाने लगा और अपनी पूरी ताकत से एक वेर्स्ता तक चिल्लाता ही चला गया। मैं इतना आवेश में आ गया था कि ज्यों ही हम उस दो घोड़ों की गाड़ी से आगे निकलने लगे मैं अपनी रकाबों में खड़ा हो गया और मैंने गाड़ी के सूखे घास पर एक आदमी को लेटे हुए देखा। सूरज की धूप उसे निस्संदेह बड़े मजे से हवा के मंद-मंद झोंकों के साथ गर्मी दे रही थी और वह संसार की सारी चिन्ताओं को भुलाये हुए गहरी नींद में खोया हुआ था, उसका मुंह घास में दबा हुआ और उसके हाथ फैले हुए थे मानो वह गाड़ी को गले से लगा रहा हो। मैंने देखा कि वह गाड़ी एक ओर हटाकर हमें रास्ता नहीं देगा, इसलिये मैं

सड़क के बिल्कुल किनारे पर ही बढ़ रहा था। जैसे ही हम गाड़ी के पास से निकले, मैंने रकाबों में खड़े होकर अपने जीवन में पहली बार द किटकिटाकर, पूरी ताकत के साथ उसकी पीठ पर चाबुक सटकार दिय उसके घोड़े ढाल के नीचे की ओर क़ाबू से बाहर चल दिये और उछलकर गिर पड़ा—एक बूढ़ा सा आदमी, नवसिखिये का सा टोप प हुए था जैसा मैं अभी पहने हुए हूं और उसका चेहरा पीड़ा के मारे स्त्री की भांति दयनीय और घबराया हुआ सा था, उसके गालों पर आं बहने लगे और वह गाड़ी पर ऐसे छटपटाने लगा जैसे कड़ाही में तलते सम मछली हो, वह शायद अब तक नींद में था और गाड़ी का किना नहीं देख पाया था क्योंकि वह लुढ़ककर पहियों के नीचे आ गिरा, में लोटने लगा और उसके पांव लगामों में उलझ गये थे... पहले उसका सिर पर पांव किये लुढ़कना मुझे, मेरे पिता व काउंट को एक अजीब तमाशे सा लगा पर तभी मैंने देखा कि गाड़ी का पहिया पु के पास एक खम्भे में जा फंसा... घोड़े थम गये और न तो वह उ या थोड़ा हिला ही... जब हम उसके पास पहुंचे तो वह धूल में दब हुआ दिखा, उसके चेहरे पर नाक की जगह एक गहरा घाव सा ब गया था जिससे बराबर खून बह रहा था... काउंट ने हमें रुकने हुक्म दिया, खुद बाहर निकला और बूढ़े की ओर देखकर बोला, 'तुम उसे मार दिया है।' उसने घर पहुंचने पर मुझे कोड़े लगाये जाने धमकी दी और मुझे गाड़ी को तुरंत मठ ले चलने का हुक्म दिया। व से कुछ लोगों को पुल के पास भेजा गया और काउंट ने खुद मठाधी से इस बारे में बात की। उसी साल पतझड़ में जई, आटे और सूखी मछलियों की गाड़ियों का एक क़ाफ़िला दान के रूप में मठ भेजा गया और मेरे पिता ने मठ के एक छप्पर के पीछे की ओर ले जाकर मे पायजामे पर चाबुक लगाये, पर यह कोई असली सटकार तो थी नहीं क्योंकि मुझे मेरे ओहदे के अनुसार काम भी तो करना था और घो पर चढ़कर सीधा बैठना भी था। बात तो यहीं समाप्त हुई पर इसके अलावा उसी रात को वह मठवासी मेरे पास स्वप्न में आया जिसे मैंने को से मार डाला था और एक मूर्ख बूढ़ी औरत की भांति बिलखने लगा।

"'तुम मुझसे चाहते क्या हो?' मैंने पूछा, 'यहां से चले जाओ।'

"'तुमने बिना पश्चात्ताप के ही मेरी जान ले ली,' उसने कहा।

"इस बात के साथ ही वह अदृष्ट हो गया और जब मैं जगा तो उसके बारे में सब कुछ भूल गया था और मुझे आभास तक नहीं था कि मेरे शारीरिक व मानसिक कष्ट तभी से आरंभ होने वाले हैं और एक के बाद एक चलते ही जायेंगे। इसके तुरंत बाद ही हम काउंट और उनकी श्रीमती के साथ वोरोनेश गये, उनकी छोटी लड़की के पांव विकृत थे और हम उसे एक संत के अवशेष के दर्शन कराने ले गये थे, और रास्ते में हम लोग येलेत्स जिले के क्रूतोये गांव में घोड़ों को चारा खिलाने के लिये रुके, मुझे एक लट्ठे के पास ही नींद आ गई और फिर सपना आया कि मेरे हाथों मारे गये मठवासी ने मेरे पास आकर कहा:

"'इधर देखो, मोटे सिरवाले, मुझे तुम्हारे लिये बड़ा दुख है, तुम अपने मालिक से किसी मठ में प्रवेश दिलाने के लिये कहो और वे तुम्हें छोड़ देंगे।'

"'किस लिये?' मैंने पूछा।

उसने उत्तर में कहा:

"'तो देखो, तुम्हें कितने कष्ट भोगने होंगे!'

"अच्छा तो, तुम्हें सिर्फ खोखली बातें बनाना बाक़ी रही यदि मैंने तुम्हें मारा था, मैंने सोचा, और इसके साथ ही मैं उठ खड़ा हुआ, अपने पिता के साथ घोड़ों को जोता और फिर हम गांव से बाहर चल पड़े। वहां सड़क ढालू और अधिक ढालू होती चली गयी। एक तरफ गहरा खड्ड था जहां न जाने कितने लोगों की जानें गयी थीं। काउंट ने मुझसे कहा:

"'ध्यान रखना, मोटे सिरवाले, सावधान!'

"पर मैं अपने काम में खूब फुर्तीला था। यद्यपि बम के घोड़ों की लगामें कोचवान के हाथों में थीं और उन्हें पहाड़ी के ढाल में उतरते समय क़ाबू में रखना था लेकिन मैं पिता को मदद देने के अनेक तरीक़े जानता था। उसके बम के घोड़े मज़बूत थे: सड़क पर अपने पांव जमाते जाते थे, और ढाल पर उतरते समय वे लगभग अपनी दुमों पर बैठ जाते, पर उनमें से एक शैतान आकाश की ओर देखनेवाला था, मेरे पिता उसकी लगाम खींचते तो वह अपना सिर ऊंचा उठा लेता और सीधा आकाश देखने लगता। ऐसे स्वभाववाले ज्योतिषी–उनसे बदतर कुछ नहीं है, खासकर बम के ऐसे घोड़े को

खतरनाक होते हैं और साईस को ऐसी आदत के घोड़ों की पूरी संभाल रखनी होती है क्योंकि यह ज्योतिषी घोड़ा तो देखता ही नहीं कहां पांव चलाता है, ईश्वर जाने वह उन्हें कहां रख दे! अवश्य ही मैं अपने ज्योतिषी घोड़े के बारे में यह सब जानता था और उसे क़ाबू में रखने के लिये अपने पिता को मदद देता था: मैं अपने जीन वाले घोड़े और बगल वाले घोड़े की लगामें अपने बाएं हाथ में पकड़े रहता और उनको ऐसे रखता कि मेरे घोड़ों की पूंछें उनके पीछे वाले बम के घोड़ों के थूथनों से लग जायें और बम मेरे जोड़े के पुट्ठों के बीच में टिका रहे—और अपने दाएं हाथ से आकाश देखनेवाले घोड़े की आंखों के ऊपर अपना चाबुक लटकाए रखता ताकि ज्यों ही वह आकाश की ओर देखे मैं उसके नथुनों पर चाबुक लगा देता जिससे उसका सिर झुक जाता और इस तरह हम बड़ी बारीकी से चलते जाते। इस बार भी, ज्यों ही हम ढाल की ओर चले मैं ज्योतिषी घोड़े को चाबुक से शांत करने लगा पर अचानक मुझे लगा कि वह मेरे चाबुक की ओर मेरे पिता की लगाम की उपेक्षा कर रहा है, उसके मुंह में कड़ियों से खून बह रहा है और वह अपनी दुष्ट आंखें घुमा रहा है और अचानक मैंने अपने पीछे की ओर चरमराहट की आवाज सुनी और सारी की सारी गाड़ी आगे को झुकने लगी... गाड़ी का ब्रेक टूट गया था... 'पकड़े रहो! पकड़े रहो!' मैंने अपने पिता से चीखकर कहा। 'पकड़े रहो! पकड़े रहो!' वह वापस चिल्लाया... पर अब पकड़ने के लिए बचा ही क्या था, क्योंकि तीनों जोड़ियां ढाल में पागल होकर दौड़ती जा रही थीं, बिना देखे ही जाने कहां। मेरे पास से एक धमक गुजरी और पीछे देखते हुए मैंने अपने पिता को अपने स्थान से उड़ते हुए पाया, जिस लगाम को वह थामे हुए था वह टूट गई थी! मेरे सामने वह भयंकर लट्ठ था... मैं नहीं जानता कि मैं अपने मालिकों के लिये या अपने लिये दुखी हो रहा था पर जब मैंने अनिवार्य मृत्यु को अपने सामने पाया तो मैं अपने घोड़े से कूदकर बम को सिरे से पकड़कर उसपर लटक गया... मैंने बम के घोड़ों का लगभग दम ही घोंट डाला था और वे सांस लेने के लिये छटपटा रहे थे। मैंने देखा, आगे वाले चारों घोड़े गायब थे। मैं स्वयं भी गहरे लट्ठ के ऊपर लटक रहा था और गाड़ी बम

वाले घोड़ों से टकराकर खड़ी हो गई थी जिनका मैंने बम से लगभग दम ही घोंट डाला था।

"तभी मुझे सोचने का समय मिला और मैं डर गया—बम मेरे हाथों से छूट गया और मैं शून्य में गिरने लगा और मुझे कुछ होश नहीं रहा। मुझे पता नहीं कि मैं कितनी देर बेहोश रहा पर आगे की बात मुझे याद है कि मैं एक किसान की झोंपड़ी में था और मेरे पास ही एक भारी-भरकम किसान खड़ा हुआ बोल रहा था:

"'तो बेटे, तुम सचमुच ही जिन्दा हो?'

"'शायद जिन्दा हूं,' मैंने कहा।

"'तुम्हे पता है कि घटना कैसे हुई?'

"मैं यह याद करने लगा कि किस प्रकार घोड़े क़ाबू से बाहर हो गये और मैं कूद गया था और उस गहरे खड्ड के ऊपर बम को पकड़े लटकने लगा था—मुझे ज़रा भी ख़याल नहीं था कि बाद में क्या हुआ।

"किसान मुस्करा रहा था:

"'तुम्हें इससे ज़्यादा याद भी कैसे हो। तुम्हारे घोड़े तक तल में पहुंचने के पहले ही टुकड़े-टुकड़े हो गये थे पर ऐसा लगता है कि किसी अदृष्ट शक्ति ने तुम्हें बचा दिया—तुम मिट्टी की एक सिल पर आ पड़े और उसी पर नीचे फिसल गये जैसे किसी स्लेज-गाड़ी पर हो। हमने तो सोचा कि तुम मर चुके हो। और अब, उठ खड़े होओ यदि उठ सकते हो और जल्दी चलो। काउंट ने तुम्हें दफ़नाने के लिये पैसा छोड़ रखा है यदि तुम मर जाते और यदि नहीं तो तुम्हें वोरोनेश भेजने के लिए कह गये थे।'

"अतः मैं सीधा वोरोनेश गया और पूरे समय में एक भी शब्द नहीं बोला, मैं तो केवल उस किसान को सुनता रहा जो अकॉर्डियन पर 'मेरी बारिन्या' बजाते हुए मुझे लिये चल रहा था।

"जब मैं वोरोनेश पहुंचा तो काउंट ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और काउंटेस से बोले:

"'हमारे प्राण इसी लड़के ने बचाये हैं।'

"काउंटेस ने केवल अपना सिर हिलाया, पर काउंट ने कहा:

"'तुम्हें जो भी चाहिए, मांग, मोटे सिरवाले! और जो मांगेगा तुझे वह मिल जायेगा।'

"मैंने कहा, 'मुझे नहीं मालूम कि किस चीज के लिये कहूं।'

"और उन्होंने कहा, 'अच्छा तो, तुझे क्या चाहिए?'

"मैंने सोचा, फिर सोचा और बोला, 'एक अकार्डियन।'

"काउंट हंसने लगे और कहने लगे:

"'तुम तो वास्तव में एक मूर्ख हो, पर जब समय आयेगा मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगा,' उन्होंने कहा, 'और जाओ, इसे अभी एक अकार्डियन खरीद कर दे दो।'

"एक नौकर दुकान गया और मेरे लिये अस्तबल में अकार्डियन ले आया।

"'यह लो और इसे बजाओ,' उसने कहा।

"मैंने उसे ले लिया और बजाने की कोशिश करने लगा पर जल्दी ही मैं जान गया कि मैं उसे नहीं बजा सकता हूं, उसी वक्त उसे छोड़ दिया। और अगले ही दिन कोई सापुनी छप्पर में से उस अकार्डियन को चुराकर ले गई।

"मुझे वही करना चाहिये था जिसके बारे में मठवासी ने मुझे सलाह दी थी, मुझे काउंट के वचन का लाभ उठाना चाहिये और उनसे कहना चाहिये था कि मुझे मठ में प्रविष्ट करा देवें–मुझे पता नहीं मैंने अकार्डियन की मांग क्यों की थी और मेरी आत्मा की पुकार को क्यों भुला दिया था, जिसकी खातिर मुझे एक के बाद एक कष्ट उठाना पड़ा था, हर नया कष्ट पिछले से अधिक असह्य था। लेकिन किसी से मर नहीं पाया, यद्यपि मठवासी ने मुझे जो सब कुछ पहले ही बता दिया था, वह मेरे सांसारिक जीवन में मेरे अविश्वास के कारण सही सिद्ध होता रहा। और ऐसा मेरी आस्था में कमी के कारण था।

अध्याय ३

"इस प्रकार मालिक का कृपापात्र होते हुए मैं उनके साथ वोरोनेझ में नये खरीदे हुए छह घोड़ों को लिये हुए वापस घर पहुंचा। हम ज्यों ही लौटकर आये तो मेरे दिमाग में एक विचार आया कि कलगीदार कबूतरों का एक जोड़ा लाया जाये और मैंने उन्हें

अस्तबल के एक खाने में लाकर रखा। कबूतर कत्थई रंग का था और कबूतरी सफ़ेद रंग की, बड़ी खूबसूरत थी जिसके लाल-लाल से पांव थे। मुझे इनका बड़ा शौक़ था, खास तौर से जब क़बूतर रात में गुटर-गुटर करने लगता तो मुझे बड़ा प्यारा लगता, दिन के वक़्त ये घोड़ों के निकट उड़कर चले जाते, नांद पर जा बैठते, दाना चुगते या एक दूसरे को चूमते रहते... छोटे बच्चे को इसे देखने से आनंद मिलता है।

"चूमते-चूमते उनके बाल-बच्चे पैदा हुए। छोटे छोटे बच्चे थे, कोमल ऊन से ढंके हुए जैसे, बिना परों के और पीले ऐसे कि मानो घास में पड़े हुए बीज हों, पर चोंचें बड़ी थीं मानो चेरकेसी राजकुमारों के नाक हों... एक दिन इन को देखने की इच्छा से मैंने एक को चोंच पकड़कर उठा लिया और आंखें उस छोटी सी सुंदर चीज़ से न हटा पाया, इसी बीच कबूतर उसे मुझसे छीन लेने के लिये कोशिश करने लगा, अतः मैं उससे खेलने लगा और उसे उसीके बच्चे से चिढ़ाने लगा; पर ज्यों ही मैंने उसे वापस घोंसले में रखा कि देखता हूं कि वह सांस ही नहीं ले रहा है। और कैसी दर्दनाक बात थी वह! मैं उसे अपने हाथों में लिये गर्माता रहा, उस पर अपनी गर्म सांस की फूंकें मारता रहा और काफ़ी देर तक उसमें फिर से प्राण वापस लाने की कोशिश करता रहा, पर इससे कोई लाभ न हुआ—वह मर गया। खेल ख़त्म हो चुका था। मुझे ग़ुस्सा सा आ गया और मैंने उसे खिड़की में से बाहर फेंक दिया! इससे कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं था क्योंकि घोंसले में एक और बच्चा था। मरे हुए को सफ़ेद बिल्ली ला गई! जाने वह वहां कैसे आ गई और उसको झपटकर दौड़ गई। मैंने उसे अच्छी तरह से देखा था कि वह बिल्कुल सफ़ेद बिल्ली थी, उसके सिर पर केवल एक काला दाग़ था जो उसकी टोपी सा लगता था। 'नरक में जाय वह,' मैंने सोचा, 'खाने दो उसे मरा हुआ बच्चा।' पर, उस रात, जब मैं सो गया था, मैंने अचानक कबूतर को किसी से लड़ते हुए सुना। मैं लपककर उठा और देखने लगा—वह चांदनी रात थी और मैंने देखा कि वही सफ़ेद बिल्ली ज़िन्दा बच्चे को भी उठाकर ले गई थी।

"'वह उसे नहीं ले जा पायेगी,' ऐसा सोचकर मैंने अपना जूता . पर वार चूक गया और वह बेचारे बच्चे को उठा ले गई . . कहीं और जाकर उसे खा लिया। मेरे कबूतर काफ़ी

दिनों तक दुखी रहे पर जल्दी ही चुमने लगे और थोड़े ही दिनों में बच्चों का एक और जोड़ा तैयार हो गया, पर वह कमबख्त बिल्ली फिर वहां पहुंच गई... शैतान ही जानता है कि वह वहां कैसे पहुंची पर वह खूब तेज़ धूप में बच्चे को पकड़ती हुई दिखाई दी और उसने इतनी फुर्ती से ऐसा किया कि मुझे उस पर कुछ मारने को नहीं मिला। मैंने फ़ैसला किया कि उसे सज़ा देकर सीधी कर डालूंगा और इसलिये खिड़की में उसे पकड़ने के लिये एक फंदा लगा दिया। वह सख्ती से पकड़ी गई और रात भर ग़म मनाती हुई मिमियाती रही। मैंने उसे फंदे से निकाला और सिर व अगली टांगें एक लंबे बूट में डाल दिये ताकि वह मुझे न नोच सके और उसकी पिछली टांगें और पूंछ को दस्ताने पहने हुए हाथों में पकड़कर व दीवाल पर से चाबुक उतारकर उसे पलंग पर खूब पीटा। मैंने कोई डेढ़ सौ चाबुक उसे पूरे ज़ोर से लगाये होंगे, तब उसने हाथ-पांव मारने छोड़े। फिर मैंने उसे बूट में से निकाला और ताज्जुब से देखने लगा कि वह ज़िन्दा है या मर गई। चलो, ज़रा देखूं ज़िन्दा है या नहीं? मैंने उसे देहलीज़ पर लिटाया और उसकी पूंछ को कुल्हाड़ी से काट डाला। वह चीखी, कंपकंपाई और कुलांचें भरती हुई बिजली की तरह चम्पत हो गई।

"'मैं दावे से कहता हूं कि अब तुम कबूतर चुराने फिर कभी नहीं आओगी,' मैंने मन में सोचा व अगले दिन सुबह उसे और अधिक डराने के लिये उसकी कटी हुई पूंछ को अपनी खिड़की के बाहर कील लगाकर लटका दिया और मन ही मन बहुत खुश हुआ। लेकिन कोई घंटे या दो घंटे बाद मैंने अस्तबल में काउंटेस की नौकरानी को दौड़ती हुई आते देखा जो अपनी ज़िंदगी में वहां कभी पहले नहीं आई थी। उसने अपनी छतरी घुमाते हुए चिल्लाकर कहा:

"'तो यह तुम्हीं थे, तुम्हीं थे!'

"'क्यों, क्या मामला है?' मैंने पूछा।

"'क्यों ये तुम्हीं थे न जिसने ज़ोज़िन्का का अंगभंग किया है?' उसने कहा, 'अब इन्कार करने की ज़रूरत नहीं है, मैं तुम्हारी खिड़की पर उसकी पूंछ टंगी हुई देख रही हूं।'

"'अरे बिल्ली की पूंछ के पीछे इतना हंगामा क्यों मचा रही हो?' मैंने कहा।

अस्तबल के एक खाने में लाकर रखा। कबूतर कत्थई रंग का था और कबूतरी सफेद रंग की, बड़ी खूबसूरत थी जिसके लाल-लाल से पांव थे। मुझे इनका बड़ा शौक़ था, खास तौर से जब क़बूतर रात में गुटर-गुटर करने लगता तो मुझे बड़ा प्यारा लगता, दिन के वक़्त ये घोड़ों के निकट उड़कर चले जाते, नांद पर जा बैठते, दाना चुगते या एक दूसरे को चूमते रहते... छोटे बच्चे को इसे देखने से आनंद मिलता है।

"चूमते-चूमते उनके बाल-बच्चे पैदा हुए। छोटे छोटे बच्चे थे, कोमल ऊन से ढंके हुए जैसे, बिना परों के और पीले ऐसे कि मानो घास में पड़े हुए बीज हों, पर चोंचें बड़ी थीं मानो चेरकेसी राजकुमारों के नाक हों... एक दिन इन को देखने की इच्छा से मैंने एक को चोंच पकड़कर उठा लिया और आंखें उस छोटी सी सुंदर चीज से न हटा पाया, इसी बीच कबूतर उसे मुझसे छीन लेने के लिये कोशिश करने लगा, अतः मैं उससे खेलने लगा और उसे उसीके बच्चे से चिढ़ाने लगा; पर ज्यों ही मैंने उसे वापस घोंसले में रखा कि देखता हूं कि वह सांस ही नहीं ले रहा है। और कैसी दर्दनाक बात थी वह! मैं उसे अपने हाथों में लिये गर्माता रहा, उस पर अपनी गर्म सांस की फूंकें मारता रहा और काफ़ी देर तक उसमें फिर से प्राण वापस लाने की कोशिश करता रहा, पर इससे कोई लाभ न हुआ—वह मर गया। खेल खत्म हो चुका था। मुझे गुस्सा सा आ गया और मैंने उसे खिड़की में से बाहर फेंक दिया! इससे कोई खास फ़र्क़ नहीं था क्योंकि घोंसले में एक और बच्चा था। मरे हुए को सफ़ेद बिल्ली ला गई! जाने वह वहां कैसे आ गई और उसको झपटकर दौड़ गई। मैंने उसे अच्छी तरह से देखा था कि वह बिल्कुल सफ़ेद बिल्ली थी, उसके सिर पर केवल एक काला दाग था जो उसकी टोपी सा लगता था। 'नरक में जाय वह,' मैंने सोचा, 'खाने दो उसे मरा हुआ बच्चा।' पर, उस रात, जब मैं सो गया था, मैंने अचानक कबूतर को किसी से लड़ते हुए सुना। मैं लपककर उठा और देखने लगा—वह चांदनी रात थी और मैंने देखा कि वही सफ़ेद बिल्ली ज़िन्दा बच्चे को भी उठाकर ले गई थी।

"'वह उसे नहीं ले जा पायेगी,' ऐसा सोचकर मैंने अपना बूट उस पर फेंका पर वार चूक गया और वह बेचारे बच्चे को उठा ले गई और शायद उसने कहीं और जाकर उसे खा लिया। मेरे कबूतर काफ़ी

दिनों तक दुखी रहे पर जल्दी ही घूमने लगे और थोड़े ही दिनों
में बच्चों का एक और जोड़ा तैयार हो गया, पर वह कमबख्त
बिल्ली फिर वहां पहुंच गई... शैतान ही जानता है कि वह वहां कैसे
पहुंची पर वह खूब तेज धूप में बच्चे को पकड़ती हुई दिखाई दी
और उसने इतनी फुर्ती से ऐसा किया कि मुझे उस पर कुछ मारने को
नहीं मिला। मैंने फ़ैसला किया कि उसे सजा देकर सीधी कर
डालूंगा और इसलिये खिड़की में उसे पकड़ने के लिये एक फंदा लगा
दिया। वह सख्ती से पकड़ी गई और रात भर ग़म मनाती हुई
मिमियाती रही। मैंने उसे फंदे से निकाला और सिर व अगली टांगें
क लंबे बूट में डाल दिये ताकि वह मुझे न नोच सके और उसकी पिछली
गें और पूंछ को दस्ताने पहने हुए हाथों में पकड़कर व दीवाल पर
चाबुक उतारकर उसे पलंग पर खूब पीटा। मैंने कोई डेढ़ सौ चाबुक
ने पूरे ज़ोर से लगाये होंगे, तब उसने हाथ-पांव मारने छोड़े। फिर मैंने
 बूट में से निकाला और ताज्जुब से देखने लगा कि वह ज़िन्दा है
 मर गई। चलो, ज़रा देखूं ज़िन्दा है या नहीं? मैंने उसे देहलीज़ पर
ाया और उसकी पूंछ को कुल्हाड़ी से काट डाला। वह चीखी,
कंपाई और कुलांचें मरती हुई बिजली की तरह चम्पत हो गई।
"'मैं शर्तिया कहता हूं कि अब तुम कबूतर चुराने फिर कभी नहीं
गी,' मैंने मन में सोचा व अगले दिन सुबह उसे और अधिक डराने
नये उसकी कटी हुई पूंछ को अपनी खिड़की के बाहर कील लगाकर
 दिया और मन ही मन बहुत खुश हुआ। लेकिन कोई घंटे या दो
ाद मैंने अस्तबल में काउंटेस की नौकरानी को दौड़ती हुई आते देखा
पनी ज़िंदगी में वहां कभी पहले नहीं आई थी। उसने अपनी छतरी
 हुए चिल्लाकर कहा:
'तो यह तुम्हीं थे, तुम्हीं थे!'
'क्यों, क्या मामला है?' मैंने पूछा।
'क्यों थे तुम्हीं थे न जिसने ज़ोज़िन्का का अंगभंग किया है?' उसने
'अब इन्कार करने की ज़रूरत नहीं है, मैं तुम्हारी खिड़की पर
पूंछ टंगी हुई देख रही हूं।'
मरे बिल्ली की पूंछ के पीछे इतना हंगामा क्यों मचा रही हो?'
।

"'तुमने ऐसा काम करने की हिम्मत ही कैसे की?' उसने कहा।

"'उसने मेरे कबूतरों को खाने की हिम्मत कैसे की?' मैंने कहा।

"'तुम्हारे कबूतरों का क्या?'

"'तुम तो समझती हो कि यह बिल्ली तुम्हारी कार्डिनल है, क्यों?'

"मेरी भी यह उम्र थी जब बच्चे गाली देने लगते हैं, तो आप लोग जानते ही हैं।

"'अरे कौन तुम्हारी इस मुई बिल्ली की परवाह करता है!' मैंने कहा।

"और वह भी सुनाने लगी:

"'तुमने मुझसे ऐसे बोलने की हिम्मत ही कैसे की? क्या तुम्हें पता नहीं है कि यह बिल्ली मेरी है और खुद कार्डिनल इसे प्यार करते हैं!' और इसके साथ ही उसने मेरे गाल पर जोर से थप्पड़ मार दिया मेरे भी हाथ बचपन से खूब चलते थे सो मैंने दरवाजे की ओर से एक डंडा झाड़ू पकड़ लिया और उसकी कमर पर दे मारा।

"अरे भगवान! इसके बाद तो उसने क्या हंगामा मचाया! लोग मुझे पकड़कर दफ्तर में फैसला कराने ले गये और अर्ध-प्रबन्धक ने ... मेरी सब निकाल ... का हुक्म सुना दिया और फिर मुझे ... भेज दिया... [illegible]

सिर उसमें फंसा दिया। मुझे तो डाली से कूदना भर बाकी था कि पल भर में सब ठीक हो जाता... पर ज्यों ही मैंने डाली पर से छलांग लगाई तो मैंने अपने आपको जमीन पर गिरा हुआ पाया और मेरे पास एक जिप्सी खड़ा था जिसके हाथ में चाकू था—वह हंस रहा था और काली रात में उसके सफेद दांत काले चेहरे पर खूब चमक रहे थे।

"'अरे, तुम ऐसा क्या सोचकर कर रहे थे?'

"'तुम्हें इससे क्या मतलब है?'

"'मतलब हो ही सकता है,' वह कहने लगा, 'जिंदगी अच्छी नहीं लगती क्या?'

"'तुम देख सकते हो कि यह मधुर नहीं है।'

"'फांसी पर झूलने के बजाय तो तुम हमारे साथ आओ व रहो; हो सकता है कि तुम्हें इससे कभी अलग ही किस्म की फांसी मिले!'

"'तुम अपने गुजारे के लिये क्या धंधा करते हो, तुम चोर जैसे लगते हो?'

"'हां हैं, चोर और उचक्के,' उसने हां भरी।

"'मैं यही सोच रहा था और तुम लोगों की हत्या भी करते हो?'

"'यदि हमें करना ही पड़े तो हम ऐसा करते ही हैं।'

"मैंने इस बारे में थोड़ा सोचा... मैं और कर ही क्या सकता हूं? घर पर दिन पर दिन वही बात होगी—घुटनों पर झुके हुए पत्थर तोड़ना। इस धंधे से तो मेरे घुटनों पर गांठें पड़ गई थीं और हर आदमी मेरी हंसी उड़ाता था क्योंकि उस सुथर जर्मन ने तो मुझे पूरा पत्थरों का पहाड़ ही तोड़ने को सदा दे डाली थी और यह सब केवल बिल्ली की पूंछ के लिये था। 'अपने आपको प्राणरक्षक कहता है', वे हंसते थे, 'देखो जरा मालिक की जान बचानेवाले का हाल!' मैं इसे ज्यादा सहन नहीं कर सकता था और यह जानते हुए कि यदि खुद को फांसी न लगाता तो मुझे वापस जाना पड़ता, हताश होकर मैं डाकुओं के साथ जा मिला।

"यह आवारा-जिप्सी बड़ा तेज़तर्रार था और उसने मुझे सोचने का मौक़ा ही नहीं दिया।

"उसने कहा, 'यदि मैं तुम्हारा भरोसा कर सकूँ कि तुम वापस न लौटोगे, इसके लिए तुम मुझे अपने मालिक के अस्तबल से घोड़ों का एक अच्छा सा जोड़ा ला दो जो सबसे बढ़िया हो और ध्यान रखना कि वे ऐसे तेज़ हों कि हमें कल सुबह तक ज़्यादा से ज़्यादा दूर पहुंचा सकें।'

"इससे मुझे बड़ी चिन्ता हुई क्योंकि मुझे चोरी के विचार से ही घृणा थी। लेकिन ज़रूरत सब करा डालती है जब शैतान सिर पर सवार हो जाता है। अस्तबल के सभी भेद जानने के कारण मैं जल्दी ही ऐसे तेज़ घोड़ों का जोड़ा खलियान के पीछे निकाल लाया जो थकान तो जानते ही नहीं थे। जिप्सी ने अपनी जेब से दो भेड़ियों के दांतों की कण्ठियां निकालीं और उन्हें दोनों घोड़ों की गर्दन में लटका दिया और हम इन पर सवार होकर चल पड़े। घोड़े भेड़ियों की हड्डी सूंघते ही हमें लेकर ले चले जिससे तड़का होते-होते हम एक सौ वेर्स्त दूर कराचेव में पहुंचे। हमने तुरंत घोड़ों को किसी नौकर के हाथ बेच दिया, पैसा लिया और एक छोटे से झरने के किनारे पैसा बांटने पहुंचे। हमें तीन सौ रूबल मिले थे, स्वभावतः यह नोट थे जो उन दिनों चालू थे, पर जिप्सी ने मुझे केवल एक चांदी का रूबल दिया और कहा:

"'यह तुम्हारा हिस्सा है।'

"'तुम्हें सील के लिये और कुछ देना होगा, मैं हमेशा लोगों से इसके अलावा लेता हूं, परन्तु मुझे तुम पर दया आ रही है, यह देखकर कि तुम कितने ग़रीब हो, और इसके अतिरिक्त मैं अपने हाथ से प्रमाणपत्र ग़लत तरीके से नहीं देता हूं। चले जाओ तुम और यदि तुम और किसी को प्रमाणपत्र दिलाना चाहो तो मेरे पास भेज देना।'

"'अच्छा भाई, धर्मात्मा,' मैंने सोचा, 'उसने मेरे गले से कांत लेते हुए कहा कि उसे दुख है!' मैंने किसी को उसके पास नहीं भेजा पर जेब में बिना कोपेक के पूरे रास्ते ईसा के नाम को मदद से चलता रहा।

"मैं इस शहर में आ गया और बाजार में नौकरी पाने के लिये गया। वहां थोड़े से लोग नौकरी पाने के लिये खड़े थे, केवल तीन आदमी थे जो मेरी तरह आवारा से थे। वहां कई रोजगार देनेवाले हमें भाड़े पर लेने के लिये तैयार खड़े थे और हम पर झपट रहे थे। एक बड़ा मोटा आदमी वहां था जो मुझसे भी बड़ा था, मुझ पर झपट पड़ा, दूसरों को दूर हटाता हुआ, मुझे दोनों हाथों से पकड़कर खींचता हुआ, दूसरों को अपने मुक्कों से पीटता हुआ और गालियां निकालता हुआ आंखों में आंसू भरे हुए जा रहा था। वह मुझे न जाने किस कचरे से बनी हुई झोंपड़ी में ले गया और कहने लगा:

"'मुझे सच बताओ—तुम एक भागे हुए भूदास हो, हो न?'

"'हां, मैं हूं,' मैंने स्वीकार किया।

"'तुम कौन हो? चोर, डाकू या केवल आवारा?'

"'तुम किस लिए जानना चाहते हो?' मैंने पूछा।

"'इसलिये जानना चाहूंगा कि तुम किस काम के लिये ठीक हो।'

"मैंने उसे हर बात बता दी, कि मैं क्यों भागा था और उसने मेरे गले पर झुककर मुझे चूम लिया।

"'मुझे तुम्हारे जैसा ही आदमी चाहिये,' उसने कहा। 'मेरी इच्छा पूरी हुई। यदि तुम उन कबूतरों के बच्चों के लिये दुखी हुए तो अब मेरे बच्चे की देखभाल करोगे। मैं तुम्हें एक आया के रूप में रखना चाहता हूं।'

"मैं लड़खड़ा गया।

"'आया?' मेरा सांस ही फूल गया, 'ऐसे काम के लिये मैं नहीं हूं।'

"'कोई बात नहीं,' उसने कहा, 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मै समझ सकता हूं कि तुम आया का काम अच्छा कर सकोगे। मैं आफत मे हूं क्योंकि मेरी पत्नी ऊब के कारण एक रिसाले के अफ़सर के साथ भाग गई और मेरे लिये अपनी बच्ची छोड़ गई है; मेरे पास समय नहीं है और उसे खिलाने के लिये भी कुछ नहीं है। तुम्हें उसे पालना पड़ेगा और तुम्हें महीने की तनख्वाह के दो चादी के रूबल दूंगा।'

"' मेरे मालिक, हुज़ूर,' मैंने कहा, 'यह दो रूबल की बात नहीं है! पर मैं यह काम कैसे कर पाऊंगा?'

"'क्यों, भाई, यह कोई कहने की बात नहीं है,' उसने कहा। 'तुम एक रूसी हो, हो न? रूसी कोई भी काम कर सकता है!'

"'हां, मैं रूसी तो हूं ही, पर मैं एक मर्द हूं और प्रकृति ने मुझे इस नवजात बच्ची का पालन करने के लिये कुछ नहीं दिया है!'

"'इसकी चिन्ता तुम मत करो,' वह बोला, 'मैं तुम्हे यहूदी से ख़रीदकर एक बकरी ला दूंगा—तुम तो उसे दोहना और उसका दूध मेरी बच्ची को पिलाना।'

"मैंने इस पर विचार किया।

"'निश्चय ही, बकरी के दूध से बच्ची को पाला भी जा सकता है। फिर भी, मैं सोचता हूं कि तुम इस काम के लिये किसी औरत को ले आओ।'

"'कभी नहीं,' उसने कहा, 'तुम मुझसे औरतों की बात कभी मत करना: वे तो सारी मुसीबत की जड़ होती हैं और मुझे कोई मिल भी नहीं सकती, फिर भी यदि तुम मेरी बच्ची को पालने पर राज़ी नहीं होगे तो मैं सीधा कोज़ाक सिपाहियों को बुला लूंगा और उनसे कहूंगा कि तुमको बांधकर पुलिस चौकी ले जायें और वहां से वे तुम्हें वापस भिजवा देंगे। जो भी तुम्हें अच्छा लगे वही चुन लो—तुम्हारे काउंट के बग़ीचे में पत्थर तोड़ना या मेरी बच्ची को पालना।'

"तब मैंने इस बात पर सोचा तो निश्चय किया कि मैं वापस नहीं जाऊंगा और एक आया के रूप में काम करने को तैयार हो गया। उसी

और राजकुमार बोवा की कहानियों में होते हैं, सभी बड़े बड़े भवरे टोप पहने हुए और धनुष और कमान लिये हुए और जंगली भयंकर घोड़ों पर चढ़े हुए थे। जब मैं यह दृश्य देख रहा था मैंने चिल्लाहटें, हिनहिनाहटें और हंसी सुनी और अचानक... एक चक्रवात आया जिसमें रेत एक बादल में ऊंची चढ़ गई और वहां कुछ भी बाकी नहीं बचा, केवल कहीं पर हलके से घंटा बज रहा था और एक पहाड़ी पर बड़े मठ की सफ़ेद दीवारें सूर्यास्त की लाली से चमक रही थीं, पंखोंवाले ईश्वरीय दूत हाथों में सुनहरे बल्लम लिये हुए उन दीवारों पर चल रहे थे और चारों ओर एक समुद्र था, हर बार जब दूत अपने बल्लम से ढाल पर वार करता तो समुद्र क्रुद्ध हो उठता और झाग उफनते और उसकी गहराइयों से भयंकर आवाजें पुकारतीं, 'हे भगवान!'

"'फिर से मेरे मठवासी होने का धंधा शुरू हो गया है,' मैंने सोचा और मैं चिढ़ से उठा, तो मुझे एक स्त्री रेत में घुटनों पर बैठी हुई दिखाई दी। उसे बड़ी दयालुता की भावना से मेरी छोटी सी बच्ची पर झुककर आंसुओं की नदियां बहाते हुए देखकर मुझे बड़ा अचंभा हुआ।

"स्वभावतः मैं उसको काफ़ी देर तक देखता रहा व उसके बारे में सोचता रहा कि मेरा सपना जारी था, पर चूंकि वह ग़ायब नहीं हुई, इसलिए मैं उठा और उसकी ओर मैंने कुछ क़दम बढ़ाये—फिर मैंने देखा कि उसने बच्ची को रेत में से खोदकर बाहर निकाल लिया व अपनी गोद में ले लिया था और वह उसे चूमते हुए बराबर रो रही थी।

"'तुम्हें क्या चाहिए?' मैंने उससे पूछा।

"वह अपनी छाती पर बच्ची को जोर से लगाये हुए दौड़कर मेरी ओर आई।

"'यह मेरी बच्ची है, मेरी बेटी है, यह मेरी बेटी है,' उसने फुसफुसाया।

"'और यदि है तो क्या हुआ?' मैंने कहा।

"'मुझे इसे वापस दे दो,' उसने कहा।

"'मैं तुम्हें वापस क्यों दे दूं?' मैंने पूछा।

"'क्या तुम इसके लिये ज़रा भी दुखी नहीं हो?' उसने बहते आंसुओं के साथ कहा। 'ज़रा देखो तो सही यह मुझसे कैसे चिपट रही है।'

मूंछोंवाला था या कुछ भी कहो बड़ी अच्छी आदतों का व्यक्ति था। 'और वह मुझे इतना अधिक प्यार करता है,' उसने कहा, 'पर फिर भी मैं पूरी तरह प्रसन्न नहीं हूं क्योंकि मैं बच्ची के लिए इतनी दुखी हूं... अब मैं उसके साथ शहर में वापस आ गई हूं और हम उसके एक मित्र के यहां ठहरे हुए हैं, पर मुझे डर है कि कहीं मेरा पति यह पता न लगा ले। मेरा ख़याल है हम जल्दी ही चले जायेंगे और फिर मैं अपनी प्यारी बच्ची के लिये तड़पती रहूंगी...'

"'क्या किया जाये,' मैंने कहा। 'यदि तुम क़ानून और धर्म की परवाह नहीं करती और तुमने अपनी सौगंध तोड़ दी है तो उसके लिये तुम्हें दुख भोगना ही पड़ेगा।'

"वह पुनः चिल्लाना शुरू कर देती और ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये उसका रोना और अधिक दर्दनाक होने लगा, मैं उसकी शिकायतों से बराबर ऊब गया था। एक दिन अचानक वह मुझे पैसा देने का वादा करने लगी। अंत में एक बार वह हमसे अंतिम विदाई लेने आई।

"'इधर देखो, ईवान' (क्योंकि तब तक वह मेरा नाम जान गयी थी), 'जो मैं तुम्हें कह रही हूं उसे ध्यान से सुनो—वह ख़ुद ही यहां आ रहा है।'

"'वह' कौन है?' मैंने पूछा।

"'रिसाले का अफ़सर,' उसने जवाब दिया।

"'इससे मुझे क्या मतलब है?'

'उसने मुझे एक लम्बी कहानी सुनाई कि किस प्रकार परसों रात उसने ताश के खेल में काफ़ी धन कमाया था और, उसे प्रसन्न करने के लिये मुझे एक हज़ार रूबल देने का फ़ैसला कर लिया था, यदि मैं उसकी बच्ची को उसे वापस दे देता हूं।

"'ऐसा मैं कभी भी नहीं करूंगा,' मैंने कहा।

"'पर क्यों नहीं? क्यों नहीं, ईवान?' वह मुझे बराबर कहती रही। 'पर क्या तुम्हें मुझ पर और उस बच्ची पर अफ़सोस नहीं है जो मुझसे बिछुड़ी हुई है?'

"'मुझे अफ़सोस है या नहीं, मैंने अपने आपको कम या ज्यादा पैसे के लिये कभी भी नहीं बेचा है और न कभी बेचूंगा, इसलिये तुम्हारा रिसाले का अफ़सर अपने हज़ार रूबल रख सकता है और मैं तुम्हारी बच्ची को रखूंगा।'

"वह फिर रोने लगी और मैंने उसे कहा :

"'रोना बंद करो, मुझे किसी बात की परवाह नहीं है।'

"'तुम हृदयहीन हो,' उसने कहा, 'तुम पत्थर से बने हो।'

"'मैं पत्थर से बिलकुल नहीं बना हूं,' मैंने जवाब दिया, 'मैं सब लोगों के बराबर हूं–हड्डियों और नसों से बना हूं, मगर मैं इज्जतदार और वफ़ादार आदमी हूं: मैंने अपने ऊपर बच्ची संभालने की जिम्मेदारी ली है और मैं उसको संभालूंगा।'

"वह मेरा विचार बदलने के लिये मुझे मनाने की बड़ी कोशिश करती रही।

"'क्या तुम यह नहीं देख सकते कि बच्ची मेरे साथ अधिक खुश रहेगी?' उसने पूछा।

"'इससे मेरा कोई सरोकार नहीं है,' मैंने उत्तर दिया।

"'क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मुझे अपनी बच्ची से फिर बिछुड़ना पड़ेगा?' उसने चीखते हुए कहा।

"'अच्छा,' मैंने शुरू किया, 'यदि तुम क़ानून और धर्म की परवाह न करके...'

"मैं पूरी बात कह ही नहीं पाया था कि मैंने एक सजे हुए रिसाले के अफ़सर को मैदान पार करके हमारी ओर आते हुए देखा। उन दिनों में अफ़सर असली फ़ौजी पोशाक पहनते थे और बड़ी अकड़ के साथ चलते थे, आजकल के अफ़सरों की तरह नहीं होते थे जिन्हें रेजीमेंट के क्लर्कों से भिन्न नहीं समझा जा सकता है। वह रिसाले का अफ़सर अकड़ता हुआ आया जो एक खूबसूरत मर्द था वह शस्त्रों से सुसज्जित था और उसका लम्बा कोट कंधों से लटक रहा था... वह ऐसा नहीं था जिसे तुम ताक़तवर कहो पर उसमें एक अदा सी थी। मैंने आगन्तुक की ओर देखा और मन में कहा, 'इस ऊब से हटकर कुछ मज़ाक़ क्यों न किया जाए?' मैंने विचार किया कि यदि वह मुझसे बोले तो मैं जितना असभ्य हो सकता हूं, हो जाऊंगा और ईश्वर की मरज़ी हुई तो उससे लड़ भी लूंगा। यह बात मैंने प्रसन्नता से सोची और जो बातें आंसू बहाते हुए वह औरत कह रही थी, उसको अनसुनी कर रहा था, क्योंकि मैं उस अफ़सर से मज़ाक़ करने पर तुला हुआ था।

"वह केवल हंसकर बोला:

"'अरे भले आदमी, उसकी कोई बात नहीं। सचमुच ही, तुम एक बहुत अच्छे आदमी हो।'

"मैंने उत्तर दिया, 'मैं भला आदमी हो सकता हूं, लेकिन हमें इस बात को ऐसे ही नहीं छोड़ देना चाहिए, इसका असर हमेशा मेरी अंतरात्मा पर रहेगा। आप हमारी पितृभूमि के रक्षक हैं और शायद सम्राट स्वयं आपको "महोदय" कहते हैं।'

"'यह तो सही है, जब हमें नियुक्त किया जाता है तो पत्र में लिखा होता है, 'महोदय, हम आपको नियुक्त करते हैं और आज्ञा देते हैं कि आपका आदर और सम्मान किया जाय।'

"'मुझे माफ कीजिये, मैं इसे अधिक सहन नहीं कर सकता...'

"'अब इस बारे में काफी विलम्ब हो गया है और कुछ किया भी नहीं जा सकता। तुम मुझसे बलवान हो और मुझे पीट चुके हो—वह वापस कैसे लिया जा सकता है?'

"'यह सत्य है कि मैं इसे वापस नहीं ले सकता, पर मेरी अंतरात्मा को प्रसन्न करने के लिये और आप की मरजी कुछ भी हो, लेकिन आप मुझे पीट दीजिये।' और मैं अपने गालों को फुलाकर उसके सामने खड़ा हो गया।

"'किस लिये,' उसने कहा 'मैं तुम्हें क्यों पीटूं?'

"'किसी कारण से नहीं, पर केवल मेरी अंतरात्मा को शांत करने के लिये कि मैं अपने ज़ार के एक अफसर का अपमान करने के लिये बिना सज़ा पाये न रहूं।'

"वह हंस पड़ा और मैंने अपने गाल फिर से खूब फुला लिये और उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"'तुम अपने गाल क्यों फुला रहे हो और चेहरा क्यों बना रहे हो?'

"'एक सैनिक की भांति, नियमों के अनुसार,' मैंने उत्तर दिया, 'कृपया मेरे दोनों गालों पर मारिये।' और मैंने फिर अपने गाल फुला लिये। पर मारने के बजाय वह कूद पड़ा और मुझे अपनी बाहों में थामते हुए चूमने लगा।

"'छोड़ो ये बातें, ईवान, ईसा के लिये, यह सब छोड़ो,' उसने कहा, 'मैं तुम्हें संसार की किसी बात के लिये नहीं मारूंगा, अब तुम मातोन्वा

के उसकी बेटी के साथ आने से पहले चले जाओ, वे निश्चय ही तुम्हारे विदा होने पर चिल्लाना शुरू कर देंगी।'

"'यह दूसरा मामला है,' मैंने कहा, 'उन्हें दुखी क्यों करें?'

"यद्यपि मैं जाना नहीं चाहता था, पर दूसरा रास्ता भी नहीं था इसलिये उनसे बिना मिले ही मैं चल दिया और जैसे ही मैं दरवाजे से निकला, मैं रुक गया और सोचने लगा कि अब कहाँ जाऊं।

"काउंट को छोड़ने के बाद घूमते हुए मुझे एक लम्बा अरसा हो गया था पर मैं कहीं भी टिककर नहीं रह पाया था... अतः मैंने सोचा, 'यहीं पर अंत है और मैं पुलिस के पास जाकर अपने आपको सौंप दूं! पर यह भी तो ठीक नहीं है,' फिर मुझे खयाल आया कि 'मेरे पास जेब में पैसा है पुलिस थाने में जाते ही वे मुझ से पैसा छीन लेंगे, तो मुझे इसमें से कुछ तो खर्च कर ही देना चाहिए। तो चलूं, जरा किसी दुकान में जाकर चाय और रोटी ही खा लूं।' मैं मेले की एक सराय में गया और वहां जाकर मैंने चाय और रोटी मांगी, वहां काफ़ी देर तक चाय पीता रहा, और जब मैं वहां अधिक न बैठ सका तो बाहर घूमने निकल गया। मैं सूरा नदी से आगे चला गया जहां स्तेपी में घोड़ों के झुंड थे और जहां तातारों ने अपने खेमे गाड़ रखे थे। खेमे सभी एक से थे सिवा एक के जो भड़कीले रंगों वाला था और जिसके सामने बहुत से अभिजात लोग सवारी के घोड़ों को देख रहे थे। उनमें सभी प्रकार के लोग थे—शहरी लोग, फ़ौज के अफ़सर और ज़मींदार थे जो मेले में आये थे और पास में खड़े हुए अपने पाइप पी रहे थे। बीच में एक चमकदार रंगीन क़ालीन पर एक लम्बा सा पतला गंभीर सा तातार बैठा हुआ था जो एक लम्बा कामदार चोग़ा और एक सुनहरी गोल टोपी पहने हुए था। चारों ओर देखने पर मैंने एक आदमी को देखा जो सराय में मेरे साथ चाय पी रहा था और मैंने उससे पूछा कि यह अहम सा तातार कौन है, जो सब के बड़े यहां बैठा हुआ है। उसने मुझे बताया:

"'तुम नहीं जानते उसे? यही तो खान जांगर है।'

"'कौन है यह खान जांगर?' मैंने पूछा।

"और उस आदमी ने कहा:

जांगर स्तेपी का सबसे बड़ा घोड़ों का स्वामी है। उसके

हैं, इस बारे में पता था और इन्हें भी उसने यही कहा था कि बेचने के लिये नहीं है और हृदगत है, और रात को उसे दूसरे घोड़ों से अलग करके मोर्दोव्स्की इशीम गांव के जंगल में भिजवा दिया था और उसे एक विशेष चरवाहे से उस जंगल में चरवा रहा था। अब वह उसे पेश करके बेचने की बात कहता है, तुम देखोगे कि इसके कारण अभी अजीब बातें होंगी और इस कुत्ते को, इसके लिये कितना पैसा मिलेगा। यदि तुम चाहो तो हम भी शर्त लगायें कि इसे कौन पायेगा।'

"'मैं नहीं समझ पाया हूं, हम किस बात को शर्त लगायें?' मैंने पूछा।

"'तुम जल्दी ही जोश चढ़ते हुए देखोगे,' उसने उत्तर दिया, 'ये अभिजात लोग तो जल्दी ही पागल हो जायेंगे और इन दोनों एशियाइयों में से कोई यह घोड़ी ले लेगा।'

"'क्या ये इतने धनवान हैं?'

"'धनवान? इनके पास काफ़ी पैसा है, दोनों के पास, और ये घोड़ों के लिये पागल रहते हैं—इनके पास अपने घोड़ों के बड़े बड़े झुंड हैं और इनकी पसंद का घोड़ा दूसरे को देने का सवाल ही नहीं है। यहां के सभी लोग इनको जानते हैं, यह मोटे पेट वाला और फटे हुए मुंह वाला बक्शी श्रोतुचेव है और यह दुबला, हड्डियोंवाला चेपकुन येमगुर्चेव है और ये दोनों घोड़ों के भयंकर शौक़ीन हैं। ये दोनों हमें जल्दी ही कोई तमाशा दिखायेंगे।'

"मैंने बोलना बंद कर दिया और देखने लगा कि जो अभिजात लोग मोल-तोल कर रहे थे, इसे छोड़ चुके और सिर्फ़ देखने लगे हैं, जब कि दोनों तातार एक दूसरे को अपने रास्ते से धकेलने लगे हैं और खान जांगर के हाथों में ताली लगाने लगे परन्तु दोनों ही घोड़ी को पकड़े हुए हैं, कांपते और चीखते हुए।

"'मैं पांच सिर दूंगा' (अर्थात पांच घोड़े) 'पैसे के अलावा,' एक चिल्लाया।

"दूसरा चीखा:

'तुम क्या दोगे, तुम गंदे कूर—मैं दस दूंगा!'

... चिल्लाया:

"'मैं पंद्रह देता हूं।'

"और चेपकुन येमगुर्चेयेव बोला:

"'बीस!'

"और बक्शी बोला:

"'पच्चीस!'

"और चेपकुन:

"'तीस!'

"यह दोनों की शर्त की सीमा लगती थी... चेपकुन ने तीस कहा और बक्शी ने तीस कहा और बस। फिर चेपकुन ने एक जीन और बक्शी ने काठी और चोग़ा भी जोड़ दिया। और चेपकुन ने अपना चोग़ा उतार डाला और फिर दोनों झिझकने लगे, यह सोचते हुए कि उनके पास एक दूसरे पर विजय के लिये कुछ नहीं है। फिर चेपकुन ने चिल्लाकर कहा, 'सुनो ख़ान जांगर, मैं घर पहुंचते ही अपनी बेटी को तुम्हारे पास भेज दूंगा।' पर बक्शी ने भी एक बेटी की शर्त लगायी, जिससे दोनों की बोली फिर बराबर हो गई। फिर सारे तातार लोग जो बाज़ी को देख रहे थे अपनी भाषा में अचानक चीख़ने और चिल्लाने लगे। वे बक्शी और चेपकुन को अलग-अलग करने और अपना सर्वनाश करने से रोकने लगे।

"'यह सब शोर किस बात का है?' मैंने अपने पास वाले आदमी से पूछा।

"'ये तातार राजकुमार जो उन्हें अलग-अलग कर रहे हैं चेपकुन और बक्शी के लिये अफ़सोस कर रहे हैं, वे सोच रहे हैं कि वे काफ़ी आगे बढ़ गये हैं और उन्हें अलग करके कुछ अक्ल की बात सुझाने लगे हैं कि, किसी प्रकार वे दोनों एक दूसरे को इज़्ज़त करके यह घोड़ी त्याग दें।'

"'दोनों ही घोड़ी कैसे छोड़ दें, जब दोनों ही उसे इतना चाहते हैं?' मैंने पूछा, 'वे ऐसा नहीं कर सकते।'

"'अरे नहीं,' उसने उत्तर दिया। 'एशियाई लोग समझदार होते हैं जो हर बात गंभीरता से सोचते हैं, वे जानते हैं कि यह दोनों के लिये उचित नहीं है कि अपने आप को बर्बाद कर दें, वे ख़ान जांगर को मुंहमांगी क़ीमत दे देंगे और चाबुक मारने के द्वंद्व में घोड़ी लेनेवाले का फ़ैसला हो जायेगा।'

"'चाबुक मारने के द्वन्द्व से तुम्हारा क्या अर्थ है?' मैंने पूछा पर उसने कहा:

"'प्रश्न पूछने के बजाय, देखो। यह तो तुम्हें स्वयं देखना है और यह जल्दी ही शुरू होनेवाला है।'

"इसलिये मैंने देखा कि चेपकुन येमगुर्चेयेव और बक्सी श्रोतुचेव दोनों शान्त मुद्रा में थे और जल्दी ही शान्ति समझौता करानेवालों से अलग हट गये, एक दूसरे की ओर झपटे और उन्होंने हाथ मिलाये। 'अच्छा तो,' एक ने कहा, 'यही सौदा है!' और दूसरे ने वैसा ही कहा, 'अच्छा तो, यही सौदा है!"

"और इसीके साथ दोनों ने अपने चोग़े उतारे, अपने लम्बे कोट खोले, जूते उतारे, अपनी सूती कमीज़ें उतारीं, ज़मीन पर अपने ढीले धारीदार पायजामे पहने खड़े रहे और फिर वहां एक दूसरे के सामने टिटहरियों की भांति बैठ गये।

"अपने जीवन में इससे पहले कभी मैंने ऐसे अचम्भे नहीं देखे थे और मैं देखने लगा कि क्या होनेवाला था। उन्होंने एक दूसरे को बायें हाथ से मज़बूती से पकड़ लिया, अपनी टांगें फैला दीं, पांव पर पांव टिका दिये और चिल्लाये:

"'लाओ दो!'

"मुझे कोई अंदाज़ नहीं था कि वे क्या मांग रहे थे परन्तु तातारों की भीड़ में से किसी ने वापस जवाब दिया:

"'अभी के अभी, अभी के अभी!'

"फिर एक रोबदार बूढ़ा तातार अपने हाथ में दो बड़े चाबुक लिये हुए भीड़ में से बाहर निकला और उसने इन दोनों को सावधानी से बराबर नापा और उसने चाबुक जनता को, चेपकुन और बक्सी को दिखा दिये।

"'देखो,' उसने कहा, 'दोनों की लम्बाई एक सी है।'

"'एक सी,' भीड़ चिल्लायी, 'हम देख सकते हैं कि दोनों एक से हैं और दोनों अच्छे बने हुए हैं। शुरू होने दो!'

"बक्सी और चेपकुन दोनों ही उन चाबुकों को पकड़ने के लिये आतुर थे परन्तु गंभीर बूढ़े तातार ने कहा, 'ठहरो!' फिर उसने स्वयं चाबुक उन्हें दिये, एक चेपकुन को और दूसरा बक्सी को और

"'चाबुक मारने के द्वन्द्व से तुम्हारा क्या अर्थ है?' मैंने पूछा ।"
उसने कहा:

"'प्रश्न पूछने के बजाय, देखो। यह तो तुम्हें स्वयं देखना है और यह जल्दी ही शुरू होनेवाला है।'

"इसलिये मैंने देखा कि चेपकुन येमगुर्चेयेव और बख्ती ओतुवेव दोनों शान्त मुद्रा में थे और जल्दी ही शान्ति समझौता करानेवालों से अलग हट गये, एक दूसरे की ओर झपटे और उन्होंने हाथ मिलाये। 'अच्छा तो,' एक ने कहा, 'यही सौदा है!' और दूसरे ने जैसा ही कहा, 'अच्छा तो, यही सौदा है!"

"और इसीके साथ दोनों ने अपने चोगे उतारे, अपने सभ्बे खोले, जूते उतारे, अपनी सूती कमीजें उतारीं, जमीन पर अपने धारीदार पायजामे पहने खड़े रहे और फिर वहां एक दूसरे के सामने टिट्हरियों की भांति बैठ गये।

"अपने जीवन में इससे पहले कभी मैंने ऐसे अचम्भे नहीं देखे थे और मैं देखने लगा कि क्या होनेवाला था। उन्होंने एक दूसरे को बाहें कस से मजबूती से पकड़ लिया, अपनी टांगें फैला दीं, पांव पर पांव टिका दिये और चिल्लाये:

"'लाओ दो!'

"मुझे कोई अंदाज नहीं था कि वे क्या मांग रहे थे परन्तु तातारों की भीड़ में से किसी ने वापस जवाब दिया:

"'अभी के अभी, अभी के अभी!'

"फिर एक रोबदार बूढ़ा तातार अपने हाथ में दो बड़े चाबुक लिये हुए भीड़ में से बाहर निकला और उसने इन दोनों को लम्बवाली बराबर मापा और उसने चाबुक जनता को, चेपकुन और बख्ती को दिखा दिये।

"'देखो,' उसने कहा, 'दोनों की लम्बाई एक सी है।'

"'एक सी,' भीड़ चिल्लायी, 'हम देख सकते हैं कि दोनों एक से हैं और दोनों अच्छे बने हुए हैं। शुरू होने दो!'

"बख्ती और चेपकुन दोनों ही उन चाबुकों को पकड़ने के लिये आतुर थे परन्तु गंभीर बूढ़े तातार ने कहा, 'ठहरो!' फिर उसने स्वयं वे चाबुक बांट दिये, एक चेपकुन को और दूसरा बख्ती को दे

"'ये दोनों ही अब तक एक दूसरे के बराबर चल रहे हैं, ठीक है।' उसने उत्तर दिया, 'परन्तु उनकी चालें एक दूसरे से भिन्न हैं।'

"'मुझे तो ऐसा लगता है कि बक्शी अधिक ज़ोर से मार रहा है।' मैंने कहा।

"'यही तो सारी मुश्किल है,' उसने कहा, 'हां, मैंने जो बीस कोपेक लगाये थे वे डूब गये। चेपकुन उसे हरा देगा।'

"'कैसा अजीब धंधा है,' मैंने सोचा, 'मैं इस व्यक्ति के तर्क के सिर-पैर का भी पता नहीं लगा सकता था, फिर भी,' मैंने मन ही मन कहा, 'उसे इस खेल में कुछ तो समझना ही चाहिए, नहीं तो वह शर्त ही नहीं लगाता।'

"मैं काफ़ी उत्सुक हो गया और अपने परिचित को परेशान करने लगा:

"'बताओ ज़रा, कि तुम बक्शी के बारे में इतने चिन्तित क्यों हो?' मैंने पूछा।

"और उसने कहा:

"'क्या तुम मूर्ख गंवार की तरह नहीं हो? ज़रा बक्शी की पीठ की ओर तो देखो!'

"मैंने देखा—उसमें कुछ ख़राबी नहीं थी—एक अच्छी, मज़बूत पीठ, मोटी और कोमल, एक तकिये की तरह।

"'और क्या तुम अब देख सकते हो वह कैसे मार रहा है?' उसने मुझसे पूछा।

"मैंने पुनः देखा और पाया कि वह बड़ी तेज़ी से चाबुक चला रहा था, उसकी आंखें बाहर को निकलने लगी थीं और हर बार चेपकुन को मारने पर ख़ून निकाल रहा था।

"'अब ज़रा सोचो उसका शरीर भीतर से कैसे काम कर रहा है?'

"'इसका उसके भीतरी भाग से क्या संबंध है?' जो मैं देख सकता था वह तो यही था कि वह सीधा तना बैठा था, उसका मुंह पूरा खुला था और वह काफ़ी सांस ले रहा था।

"मेरे परिचित ने कहा:

"'यही तो बुरी बात है; ज़रा समझो। उसकी पीठ चौड़ी है और हर चाबुक उस पर पड़ता है, वह तेज़ी से चाबुक लगाता है और उसकी

हुए थे... और हमने देखा कि बक्शी ने किस प्रकार चेपकुन को
बीस चाबुक लगाये, हर चाबुक पिछले से कमज़ोर होता
था, जब तक कि वह स्वयं अचानक पीछे हटकर चेपकुन के बायें
से निकल गया और अपना बायां हाथ घुमाता ही रहा
उससे चाबुक लगा रहा था—परन्तु वह तब तक बेहोश हो चुका
फिर मेरे परिचित ने कहा, 'लो वही हुआ और मेरे बीस कोपेक
गये।' फिर सभी तातार आपस में बातें करने लगे और चेपकुन को
देने लगे।

"'कितना बुद्धिमान है वह,' उन्होंने चिल्लाकर कहा।
येमगुर्चेयेव अच्छे दिमाग़ वाला है, उसने बक्शी को सीधा हरा दिया।
तुम्हारी है, चढ़ जाओ उस पर!'

"खान जांगर खुद अपने क़ालीन पर से उठा, अपने होंठ
चटखाता हुआ इधर-उधर चलने लगा और बोला:

"'यह तुम्हारी हुई, चेपकुन, घोड़ी तुम्हारी है! चढ़ो, उस पर
करो, तुम उसकी पीठ पर आराम कर सकते हो।'

"चेपकुन उठा: उसकी पीठ से खून टपक रहा था पर उसने
को यह पता न लगने दिया कि वह कष्ट भोग रहा था। उसने
चोग़ा और लम्बा कोट घोड़ी की पीठ पर रख दिया और उस पर
पेट के बल लेट गया और इसी स्थिति में सवारी कर चला—और मैं
मन में बड़ा दुखी हो गया।

"'अच्छा तो,' मैंने सोचा, 'यह सब समाप्त हुआ और अब
दिक़्क़तें फिर से मेरे दिमाग़ पर हावी हो जायेंगी।' मैं इस बारे में
करने से भी नफ़रत करता था।

"तभी मेरा परिचित मुझसे कहने लगा:

"'थोड़े ठहरो, अभी मत जाओ,' उसने कहा, 'अभी और भी
होगा।'

"'और क्या होनेवाला है?' मैंने कहा। 'सब कुछ समाप्त हो
चुका है।'

"'नहीं, अभी नहीं हुआ,' उसने कहा, 'अब देखो किस तरह खान
अपना हुक्का सुलगा रहा है। देखो, वह उससे कश खींच रहा है, तो
निश्चय है कि अब वह कोई और एशियाई शरारत करेगा।'

लगाई, एक तातार जिसका नाम सवाकिरेई था सबके सामने खड़ा था, जैसे वह उनकी बराबरी का हो—वह एक छोटे क़द का था, सुगठित शरीर का व स्वभाव का क्रोधी, उसका सिर सफ़ाचट और गोल ऐसा था मानो ताज़ा बन्दगोभी हो, उसका चेहरा गाजर की तरह लाल था और काफ़ी फुर्तीला दिखता था। 'पैसा खर्च करना अक़्ल की बात नहीं है,' उसने चिल्लाकर कहा। 'अरे जिसकी मर्जी हो खान के कहने के मुताबिक़ पैसे रख देवे और घोड़े के लिये मुझसे चाबुक की आज़माइश कर लेवे!'

"कहने की आवश्यकता नहीं थी कि अभिजात लोगों में से किसी को मरना स्वीकार नहीं था, अतः वे फ़ौरन मैदान से हट गये—उस तातार से कोई कैसे चाबुक की लड़ाई लड़ सकता था? वह, बर्बर, उन सब को मार सकता था। मेरे रिसाले के अफ़सर के पास भी उस समय धन नहीं था, वह पेन्ज़ा में फिर ताश के खेल में हार गया है, पर समझ सकता था कि वह घोड़ा पाने के लिये पागल है। अतः मैं उसके पीछे जा पहुंचा, मैंने उसकी बांह पकड़कर खींची और उसे कहा कि खान के मांगने से अधिक बोली न लगाए, पर मुझे सवाकिरेई का मुकाबला करने दे। उसको यह विचार अच्छा नहीं लगा पर मैं निवेदन करता रहा।

"'मुझ पर यह अहसान करो,' मैंने कहा, 'मैं आज़माइश करना चाहता हूं।'

"आखिर हम सहमत हुए।"

"तुम और वह तातार... क्या तुमने एक दूसरे को सचमुच चाबुक मारे हैं?"

"हां, हमने मामला चाबुक-बाज़ी से निपटाया और बछेरा मुझे ही मिला।"

"तो तुमने तातार को हरा दिया?"

"हां, मैं जीत गया। यह आसान नहीं था, पर मैं उससे तगड़ा साबित हुआ।"

"यह मुक़ाबला बहुत अधिक दर्दनाक रहा होगा, है न?"

"मैं कैसे कहूं?.. शुरू में इससे दर्द हुआ ही और बड़ा दर्द हुआ, ख़ास तौर से अब मुझे इसकी आदत नहीं थी, और सवाकिरेई

ऐसा चाबुक मारना जानता था जिससे पीठ सूज जाती पर उससे खून नहीं निकलता था। पर मैंने उसकी बारीक कला के विरुद्ध अपनी खुद की ही चाल चली: हर बार ज्यों ही वह मुझे चाबुक मारता मैं अपनी पीठ की खाल को चाबुक लगने की जगह से खींच लेता और मैंने ऐसी चतुराई से किया कि मेरी चमड़ी फट गई, जिससे मेरी पीठ की सूजन से मैं बच गया और मैंने सवाकिरेई को चाबुक लगाकर मार डाला।"

"तुम्हारा मतलब है कि तुमने उसे सचमुच ही मार डाला?"

"हां, मैंने उसे मार ही डाला। उसने हठधर्मिता व बड़ी मूर्खता से काम लिया था जिससे वह संसार से चल बसा।" कहानी कहने-वाले ने बिल्कुल साधारण तरीक़े से बताया जब कि सभी दूसरे यात्री चाहे पूर्णतया आतंकित न हुए हों तो भी उसकी ओर हैरानी से देखते ही रह गये और वह यह महसूस करने लगा कि कुछ और सफाई देने की जरूरत भी थी।

"तो सुनो," उसने कहना जारी रखा, "यह उसी का दोष था, मेरा नहीं। सारे दिन रेगिस्तान में वह सबसे तगड़े आदमी के रूप में प्रसिद्ध था और घमंड के मारे किसी क़ीमत पर मुझसे हार नहीं मान सकता था—उसने यह पीड़ा इज्जत के साथ पाने की ठान ली जिससे एशियाई राष्ट्र बदनाम न हो। पर बेचारा इसे नहीं सह पाया और मेरा मुक़ाबला नहीं कर सका और इसका कारण मेरे खयाल से, मेरे मुंह में तांबे के सिक्के का रखना था। इससे आश्चर्यजनक मदद मिलती है। मैं उसको काटता गया ताकि मुझे कोई दर्द का अनुभव न हो और अपने विचारों को दूसरी तरफ हटाने के लिये, मैंने अपने मन में चाबुकों की गिनती करनी शुरू कर दी जिससे मैं ठीक-ठाक अनुभव करता रहा।"

"तुमने कितने चाबुक गिने?" श्रोताओं में से किसी ने पूछा।"

"मैं निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता पर मुझे याद है कि मैंने दो सौ बयासी तक गिनती की थी, फिर अचानक कुछ धुंधलाहट सी हो गयी थी, एक मिनट गिनती न कर पाया था और बिना गिने ही चाबुक उड़ाने लगा। इसके तुरंत बाद ही सवाकिरेई ने मुझ पर अंतिम बार अपने चाबुक का निशाना साधा पर वह मार न सका। उल्टा मुझ पर ही सिक्के को

तरह आ गिरा और जब सबने उसकी ओर देखा तो वह मर चुका था... अरे! वह कैसा मूर्ख था! उसने इतना कष्ट क्यों उठाया? मैं उसके कारण लगभग जेल भोगने ही वाला था। तातारों ने इसकी कोई परवाह नहीं की – मैंने उसे मार डाला था, उन्होंने यह बहुत अच्छा समझा, नियमों के मुताबिक़ वह भी चाबुकों से मेरी जान ले सकता था, पर ये तो हमारे रूसी लोग थे जिन्होंने मुझे परेशान कर दिया। वे इस मामले को नहीं समझ पाये थे और उन्होंने बड़ा फ़साद खड़ा कर डाला।"

"'आपको क्या चाहिए?' मैंने कहा। 'इससे आपका क्या सरोकार है?'

"'क्योंकि,' उन्होंने कहा, 'तुमने एक एशियाई को मारा है।'

"'तो क्या हुआ यदि मैंने ऐसा किया तो? क्या यह समझौते से नहीं हुआ? शायद आपके लिए मुझे मार डालना अच्छा रहता?'

"'यदि उसने तुम्हें मार डाला होता,' उन्होंने कहा, 'उसे तो कुछ नहीं होता क्योंकि वह एक काफ़िर है, परन्तु तुम पर तो एक ईसाई के नाते मुक़दमा चलाया जायेगा। चलो थाने।' उन्होंने कहा।

"'अरे, नहीं, मेरे प्यारे दोस्तो,' मैंने अपने मन में कहा। 'यह तो उतना ही आसान होगा जितना हवा पर मुक़दमा चलाना।' चूंकि मैं पुलिस से अधिक खराब किसी और को नहीं समझता था, मैं झट से एक तातार के पीछे छिप गया और फिर दूसरे के और मैंने उनसे फुसफुसाकर कहा:

"'मुझे बचाओ! तुमने स्वयं देखा था कि यह एक न्यायपूर्ण बाज़ी थी...'

"उन्होंने मुझ पर रहम किया और एक से दूसरे के पीछे करते हुए मुझे छिपा दिया।"

"माफ़ कीजिये... पर उन्होंने तुम्हें कैसे छिपा दिया?"

"मैं उनके साथ उनकी स्तेपी में भाग गया।"

"उनकी स्तेपी में?"

"हां, दूर रिन [illegible] में।"

"क्या तुम वहां लम्बे अरसे रहे?"

"पूरे दस बरस: जब उन्होंने मुझे [illegible] थी तो मैं [illegible] का था और जब मैं [illegible] में था।"

"तुम्हें स्तेपी में रहना पसंद आया या नहीं ?"

"मुझे पसंद नहीं था। वहां पसंदगी के लायक है ही क्या ? मै तो उस लम्बे समय में ऊब गया लेकिन वहां से निकल ही नहीं सका।"

"क्यों नहीं? क्या तातार तुम्हे किसी खड्डे मे रखते थे या हर वक्त तुम्हारी निगरानी रखते थे ?"

"अरे नहीं, वे बड़े दयालु लोग हैं और मेरे साथ अपमानजनक व्यवहार नहीं करते थे, वे मुझे खड्डे मे या बेडियो मे कैसे रखते? वे तो मुझसे कहते, 'तुम हमारे दोस्त बनो, ईवान, हम तुम्हे बहुत प्यार करते हैं।' उन्होंने मुझे कहा था, 'इसलिये हमारे साथ स्तेपी मे रहो और अपने आपको उपयोगी बनाओ, हमारे घोडो का इलाज करो और हमारी औरतो की मदद करो।'"

"तो क्या तुम उनका इलाज करते थे ?"

"हां, मैं करता था, मैं उनके लिये एक डॉक्टर के समान था, मैं खुद उनका, उनके घोड़ों, पशुओं, उनकी भेडो का इलाज करता था, पर सबसे ज्यादा मैं उनकी औरतों, तातार बेगमो का इलाज किया करता था।"

"क्या तुम रोगों का इलाज करने के बारे मे कुछ जानते हो ?"

"मैं कैसे बताऊं... आखिर इसमे ऐसी कौनसी अजीब बात है ? यदि कोई बीमार पड़ता तो मैं उसे कोई जड़ी-बूटी दे देता और रोग अच्छा हो जाता। सौभाग्य से उनके पास काफ़ी जड़ी-बूटियां थीं – एक तातार को सारातोव में पूरा एक थैला ही मिल गया था, जिसे वह अपने साथ उठाकर ले आया था। जब तक मैं नहीं आया था तो वे नहीं जानते थे कि इनका क्या किया जाय।"

"क्या तुम वहां रहने के आदी हो गये थे ?"

"नहीं, मैं आदी नहीं हो सका, मैं हमेशा वापस जाना ही चाहता रहा।"

"क्या तुम वास्तव में उनके यहा से नहीं भाग पाये ?"

"नहीं, मैं ऐसा न कर सका, यदि मेरे पाव अपनी सही शक्ल मे होते तो मैं जल्दी ही अपनी पितृभूमि मे वापस आ जाता।"

"तुम्हारे पांवों को क्या हो गया था ?"

था और अपने पांव पर खड़ा भी नहीं हो सकता था। मैं अपने जीवन में पहले ऐसा कभी नहीं रोया था पर इस मौके पर मैं पूरे जोर से चिल्लाकर रोया।

"'अरे तुमने मुझे क्या कर डाला है?' मैं चिल्लाया, 'अरे दुष्ट एशियाइयो! यदि तुम मुझे सीधे मार ही डालते तो अच्छा होता, इसके बजाय कि तुमने मुझे अपने शेष जीवन के लिए अपंग बना डाला, जिससे मैं चल भी नहीं सकूंगा!'

"'यह कुछ भी नहीं है, ईवान,' उन्होंने कहा, 'तुम इस मामूली सी बात का इतना हंगामा मत मचाओ!'

"'यह कौनसी मामूली सी बात है?' मैंने कहा, 'तुमने मुझे ऐसे अपंग किया और मुझे हंगामा नहीं मचाना चाहिये?'

"'तुम इसके आदी हो जाओगे,' उन्होंने कहा, 'अपने तलुओं पर मत चलो, टेढ़े पांवों से टखनों की हड्डियों पर चला करो।'

"'ओह, दुष्टो!' मैंने अपने मन मे सोचा, उनसे मुंह मोड़ लिया और कुछ भी नहीं बोला लेकिन मैंने अपने मन मे निश्चय किया कि मै मर जाऊंगा पर उनकी सलाह कभी न मानूगा और टेढ़े पांवो से अपने टखनों की हड्डियो पर नहीं चलूगा। इसके बाद मैं काफी लम्बे समय तक पड़ा रहा, पर जब मैं इससे ऊब गया तो मैंने चलने की कोशिश करनी शुरू की और धीरे-धीरे अपने टखनों पर इधर-उधर चलने लगा मगर वे इसके लिये मुझ पर कभी भी नहीं हंसे बल्कि कहा करते थे:

"'यह बहुत अच्छा हुआ ईवान, तुम अब बड़ी अच्छी तरह चलने लगे हो।'"

"कैसा भयानक दुर्भाग्य था आपका, कृपया हमें बताइये कि आपने भागने की क्या कोशिश की और आप कैसे पकड़े गये।"

"यह सचमुच असंभव था, स्तेपी बिल्कुल सपाट है, न वहां सड़कें हैं और न कुछ खाने को... मैं तीन दिनो तक चलता ही गया, मैं एक लोमड़ी के बच्चे की भांति कमजोर हो गया, फिर मैंने अपने हाथों से एक छोटी सी चिड़िया पकड़ी और उसे कच्चा ही खा गया, पर फिर मुझे खूब जोर से भूख लगी, कहीं पानी का नाम भी नहीं था ... मैं आगे कैसे चल पाता? मैं हारकर गिर गया, उन्होंने मुझे ढूढ़ लिया और मुझे वापस ले आये और मुझे बाल लगा दिये।"

वह जिस प्रकार चलता है, उससे उसकी टांगें टेढ़ी मुड़ जाती हैं और वे वैसे ही रहती हैं। मुड़ी हुई टांगें घोड़े के बगलों से एक छल्ले की तरह जुड़ जाती हैं जिससे उसे फेंका नहीं जा सकता।"

"अच्छा तो, तुम्हारे साथ आगाशी मौला के यहां नये स्तेपी में क्या हुआ?"

"मुझे उससे भी बदतर कष्ट मिले।"

"फिर भी तुम मरे नहीं।"

"जैसा तुम देख रहे हो, मैं खत्म नहीं हुआ।"

"तो कृपा करके हमें बताइये कि आगाशी मौला के साथ आपको क्या तकलीफें उठानी पड़ीं?"

"बड़े शौक से बताऊंगा।"

अध्याय ७

"ज्यों ही आगाशी मौला के तातार लोग खेमों में पहुंचे वे सीधे एक नई जगह पर चले गये और फिर मुझे नहीं जाने दिया।

"'तुम येमगुर्चेयेव के पास वापस क्यों जाना चाहते हो, ईवान', उन्होंने कहा, 'येमगुर्चेयेव चोर है। तुम हमारे साथ रहो, तुम्हें यहां पर अच्छा लगेगा और हम तुम्हें सुंदर नताशाएं देंगे, तुम्हारे पास वहां तो दो ही नताशाएं थीं पर हम तुम्हें और भी देंगे।'

"पर मैंने इन्कार किया।

"'मुझे और अधिक नताशाएं नहीं चाहिए,' मैंने कहा, 'अधिक लेकर क्या करूंगा?'

"पर उन्होंने कहा:

"'अरे तुम नहीं समझते: अधिक नताशाएं रखना अच्छा है, वे तुम्हें बहुत से कोल्का देंगी जो तुम्हें पिता कहकर पुकारेंगे।'

"'मैं तातार बच्चों को कैसे पालूंगा,' मैंने कहा, 'यदि मैं उनका बपतिस्मा करा सकता और उनके पवित्र संस्कार करा देता तो अलग बात होती, पर जैसी स्थिति है, मेरे कितने भी बच्चे हों, वे तुम्हारे ही होंगे और कट्टर ईसाई नहीं हो सकते, और जब वे बड़े होंगे तो हमें

क़यामत के दिन तक नमक लगे गोश्त की तरह वहीं पड़ रहना होता है। जाड़ों में ये घृणित चरागाहें और भी अधिक उकतानेवाली होती हैं, वहाँ बर्फ़ भी अधिक नहीं गिरती; उससे केवल घास ढंक जाती है और सख़्त हो जाती है। तातार लोग अपने तम्बुओं में आग जलाकर बैठ जाते हैं और हुक्का पीते रहते हैं और ऊबने पर अक्सर एक दूसरे को चाबुक मारने लगते हैं। यदि बाहर जाओ तो कुछ देखने को नहीं होता – घोड़े अपने सिर झुकाये सिकुड़े से रहते हैं, उनकी पसलियां दिखने लगती हैं, केवल उनकी पूंछें और अयाल हवा में उड़ते रहते हैं। वे बड़ी मुश्किल से अपने आपको ले जा पाते हैं, पर अपने खुरों से बर्फ़ को कुरेदते हैं और जमी हुई घास को खोदते हैं और यही उन्हें खाने को मिलता है। यह असह्य है... केवल एक ही अंतर आता है जब तातार ये देखते हैं कि कोई घोड़ा बर्फ़ खुरों से कुरेदने में और जमी हुई घास दांत से खाने में अधिक कमज़ोर हो जाता है तो वे उसके गले में चाक़ू घोंप देते हैं, उसकी चमड़ी उतार देते हैं और फिर उसका मांस खा लेते हैं। यह गंदा मांस होता है, चाहे गाय के थन की तरह मीठा हो पर सख़्त होता है; इसे मजबूरन खाना होता है इसलिये इससे जी मचलाता है। यह भी ख़ुशक़िस्मती थी कि मेरी एक पत्नी घोड़े की पसलियों को धुएं से पकाना जानती थी, वह पसली के दोनों ओर मांस लगे हुए टुकड़े लेती और उसे एक बड़ी आंत में भर लेती और आग पर उसे घुमा देती। यह कुछ अधिक अच्छा होता, यह खाने में भी आसान होता क्योंकि यह हैम की भांति सुगन्ध देता था, पर इसमें भी सड़ांध तो आती ही रहती। जब मैं उस गंदे गोश्त को चबाता तो अचानक मुझे अपना गांव याद आ जाता – लोग बड़े दिनों के उत्सव के लिये बत्तखों और हंसों के पर नोच रहे होंगे, सुअरों को काट रहे होंगे और गोभी का शोरबा बना रहे होंगे, जिसमें पक्षियों की मोटी परतें पड़ी हुई होंगी और हमारा पादरी फ़ादर ईल्या, प्यारा बूढ़ा आदमी, जल्दी ही ईसा के गुण गाता जायेगा। वह और उसके सहायक सभी अपनी-अपनी पत्नियों को लेकर धार्मिक विद्यालय के विद्यार्थियों का जुलूस बनाकर चलेंगे; सब के सब मज़े में होंगे, फ़ादर ईल्या अधिक नहीं पी सकेगा, हुज़ूर के घर में ख़ानसामा उसके लिए एक तश्तरी में रखकर वोद्का लायेगा और कर्मचारी दफ़्तर में प्रबंधक बूढ़ी दाया के साथ एक और गिलास वोद्का भिजवायेगा, फ़ादर ईल्या बिलकुल

नशे में होगा जब हमारे नौकरों के मकान के यहां आयेगा, वह इतने नशे में होगा कि सही ढंग से चल भी न सकेगा; जब वह गांव के पहले मकान पर आयेगा वह एक और गिलास पी पायेगा। पर, उसके बाद वह अधिक नहीं पी सकेगा और अपने चोले के भीतर की बोतल में गिलास उड़ेलता रहेगा। वह ऐसा आदमी है जो अपने परिवार को बड़ा प्यार करता है और यदि उसे भोजन में कोई वस्तु स्वादिष्ट लगी तो वह उसे मांग लेता है: 'इसे अखबार में लपेट दो,' वह कहेगा, 'मैं इसे अपने साथ ले जाऊंगा।' पर साधारणतया लोग कहते हैं कि 'हमारे पास अखबार नहीं हैं, फ़ादर।' इससे वह नहीं चिढ़ता बल्कि वैसे ही चीज़ों को बिना लपेटे ही अपने हाथों में लेकर अपनी पत्नी को घर ले जाने के लिये दे देता है और फिर रास्ते में वैसे ही मज़े के साथ, हमेशा की भांति चलता रहता है। अरे, भले आदमियो! जब मेरे बचपन के दिनों की वे सब बातें मेरे दिमाग़ में भर जातीं तो मेरी आत्मा को कष्ट होता और मेरा शरीर भीतर से फटने सा लगता—'कहां आ गये हो तुम? उन सब खुशियों से दूर, इतने बरसों तक तुम बिना पाप-स्वीकृति के और बिना गिरजे में शादी किये जीते रहे हो और बिना पापों से मुक्त हुए ही मर जाओगे'—मेरी उदासीनता इतनी भयंकर होती कि जब रात पड़ जाती तो मैं चुपके से चोरी-चोरी खेमे से बाहर निकल जाता जिससे मेरी औरतें और बच्चे और दूसरे विधर्मी मुझे न देख सकें, और मैं प्रार्थना पर प्रार्थना करने लग जाता और यह भी ध्यान नहीं रखता कि मेरे घुटनों के नीचे कब बर्फ़ पिघली थी, पर जहां मेरे आंसू गिरे होते वहां दूसरे दिन सुबह घास दिखाई देती..."

कहानी कहनेवाला शान्त हो गया और उसने अपना सिर नीचे झुका लिया। किसी ने उसे परेशान नहीं किया—सब लोग उसकी यादों के प्रति गहरा सम्मान दिखाते थे; पर एक मिनट बीता, ईवान सेवेर्यानिच ने स्वयं एक गहरी आह भरी, फिर उसने अपनी साधुवाली टोपी उतारी, क्रास बनाया और कहने लगा:

"अच्छा, यह भी गुज़र चुका है, ईश्वर की मेहरबानी है।"

हमने उसे आराम करने का समय दिया और फिर बहुत से प्रश्न पूछे—उस हमारे विमुग्ध पहलवान ने अपने बाल वाले पांव किस तरह ठीक

किये? वह तातार स्तेपी, अपनी नताशाओं और कोल्कों से कैसे निकल भागा? और फिर मठ में कैसे प्रविष्ट हुआ?

ईवान सेवेर्यानिच ने हमारी जिज्ञासा को उसी पूरी निष्ठा से शांत किया जो उसके स्वभाव का स्पष्ट लक्षण था और जिसमें अंतर नहीं आ सकता था।

अध्याय ८

हम लोगों को ईवान सेवेर्यानिच की दिलचस्प कहानी का तर्कसंगत विकास बहुत पसंद आया इसलिये हमने उसे पहले वालों से छुटकारा पाने के असाधारण तरीक़े के बारे में और फिर क़ैद से भागने के बारे में पूछा। उसने हमें निम्न कहानी सुनाई:

"मुझे घर वापस पहुंचने और अपनी मातृभूमि के फिर से दर्शन करने का विचार असंभव सा लगता था और मेरी ऊब भी मिटने लगी थी। मैं एक मूर्ति की तरह रहता था और इसके अलावा कुछ भी नहीं था। कई बार मुझे यह ख़याल आते ही कि घर में, हमारे गिरजे में वही फ़ादर ईल्या जो अख़बारों की मांग किया करता था, उपासना के दौरान उन सबके लिये प्रार्थना किया करता था जो 'धरती या सागर पर यात्रा करते हों, जिनका दिल ऊब गया हो या जो क़ैदी हों'। जब मैं वह प्रार्थना सुनता तो मुझे कई बार अचंभा होता कि वह क़ैदियों के लिये प्रार्थना क्यों करता था, जब कोई युद्ध हो नहीं था। अब मैं यह समझ सकता हूं कि वे प्रार्थनाएं क्यों की जाती हैं, लेकिन जो मैं नहीं समझ पाया वह था कि ये प्रार्थनाएं मेरे लिये क्यों नहीं उपयोगी सिद्ध हो पायी थीं। इस बारे में, मैं तो कम से कम घबराया हुआ हो था, चाहे मैं धर्मविरोधी नहीं था, पर मैंने प्रार्थना करना छोड़ दिया।

"'प्रार्थना करने से क्या लाभ है,' मैं विचार किया करता, 'जब इसका कोई परिणाम न निकले।'

"फिर एक दिन मैंने देखा कि तातार लोग किसी बात के बारे में परेशान हो रहे थे।

"'क्या मामला है?' मैंने पूछा।

"'उनके आगे गिड़गिड़ाने से क्या होगा?' मैंने अपने मन में सोचा, 'वे यहां राजकीय सेवा पर आये हैं और शायद तातारों के सामने मेरे साथ यही वर्ताव करना चाहते हैं।' इसलिये मैंने उन्हें छोड़ दिया। फिर ऐसा समय चुना जब वे अपने तम्बू में अकेले थे और मैंने उनसे अपना पूरा क़िस्सा ईमानदारी से कह सुनाया कि मुझे कितनी निर्दयता का व्यवहार सहन करना पड़ा था।

"मैंने उनसे निवेदन किया, 'हमारे महान गोरे ज़ार का भय उन पर डालो, आदरणीय पिताओ! उन्हें बताओ कि एशियाइयों द्वारा उसकी प्रजा को क़ैद में डालने की सख्त मनाही है। अच्छा तो यह होगा कि आप उन्हें मेरा एवज़ाना देकर मुझे छुड़ा लें, मैं आपके पीछे चलता रहूंगा और सेवा करूंगा। इनके साथ रहते हुए मैंने इनकी भाषा अच्छी तरह सीख ली है और मैं आप लोगों के लिये उपयोगी होऊंगा।'

"पर उन्होंने उत्तर दिया:

"'बेटे, हमारे पास तुम्हें छुड़ाने के लिये कुछ भी नहीं है और हमें विधर्मी को धमकाने की आज्ञा नहीं है क्योंकि वे बड़े चालाक और धोखेबाज़ होते हैं, इसलिये हमें उनके साथ नीति के अनुसार सभ्यता का व्यवहार करना है।'

"'क्या इसका यही अर्थ है कि मुझे अपने पूरे जीवन यहीं रहना और यहीं मरना होगा, क्योंकि आपकी यही नीति है?'

"'बेटे, इससे क्या अंतर पड़ता है कि एक आदमी कहां रहता है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रार्थना करो, क्योंकि ईश्वर सर्वव दयालु है और शायद तुम्हें इनसे छुड़ा देगा।'

"'मैंने प्रार्थना तो की, पर मुझमें न तो शक्ति ही है और न कोई आशा शेष रही है।' मैंने कहा।

"'निराश मत होओ,' उन्होंने कहा, 'क्योंकि यह एक भयंकर पाप है।'

"'मैं निराश नहीं होता,' मैंने उन्हें कहा, 'लेकिन... आप यह कैसे कहते हैं... मुझे दुख है कि आप, रूसी और हमवतन होते हुए भी मेरी सहायता करने से इन्कार करते हैं।'

"'बेटे,' उन्होंने कहा, 'हमें इसमें मत फंसाओ, क्योंकि हम तो ईसा में विश्वास करते हैं और ईसा के विश्वासी के लिये यहूदी या यूनानी

किसी का कोई फ़र्क़ नहीं है, क्योंकि हमारे देशवासी सब ईसा की आज्ञा का पालन करते हैं। हम सभी बराबर हैं, सभी बराबर हैं।'

"'सभी?' मैंने पूछा।

"'हां,' उन्होंने जवाब दिया, 'सभी। ऐसा ही ईसा के शिष्य संत पॉल का उपदेश है। जहां भी हम जायें, हम झगड़ों से बचते हैं क्योंकि ये हमारे लायक़ नहीं होते। तुम एक गुलाम हो और दुख भोगना तुम्हारा काम है, क्योंकि क्या संत पॉल ने नहीं कहा है कि गुलाम को हमेशा विनम्र रहना चाहिए? हमेशा याद रखो कि तुम एक ईसाई हो—तुम्हें हम से बीचबचाव नहीं कराना चाहिए क्योंकि हमारी मदद के बिना ही स्वर्ग के दरवाज़े तुम्हारी आत्मा को लेने के लिये तैयार हैं पर ये दूसरे लोग अंधेरे में रहेंगे जब तक हम उनका धर्मपरिवर्तन नहीं कर देते, इसलिये उनके लिये हम बीचबचाव करते हैं।'

"और उन्होंने मुझे एक किताब दिखाई।

"'तुम्हीं देखो इस रजिस्टर में कितने लोग हैं?' उन्होंने कहा, 'इसी प्रकार हमने कितने ही लोगों का धर्मपरिवर्तन किया है।'

"मैं उनसे और अधिक नहीं बोला और न मैंने उन्हें फिर से देखा ही, सिवा एक दफ़ा अचानक ही मैंने उनमें से एक को देखा—एक दिन मेरे एक लड़के ने दौड़ते हुए आकर मुझे कहा:

"'बापू, हमारी झील के पास एक आदमी पड़ा हुआ है!'

"मैं उसे देखने पहुंचा। उसके हाथों और पांवों की चमड़ी उतरी हुई थी—तातार ऐसे कामों में बड़े चालाक लोग होते हैं, वे हाथों और पांवों के पास से चमड़ी काटकर और झटके से खींचकर उतार देते हैं। आदमी का सिर पास ही पड़ा था जिसके ललाट पर एक क्रॉस का निशान बना हुआ था।

"'अरे, मेरे हमवतन!' मैंने सोचा, 'तुमने मेरी मदद करने से इन्कार किया था और मैंने तुम्हें इसके लिये दोषी ठहराया था। पर अब तुम मर गये हो और तुमने कष्टों का मुकुट स्वीकार कर लिया है। मुझे अब क्षमा करना, ईसा के लिये।'

"मैंने उसके ऊपर क्रॉस का निशान बनाया, उसका सिर शरीर के साथ रखा और नीचे झुककर प्रणाम किया और उसे गाड़ दिया और उसके ऊपर 'पवित्र ईश्वर' की प्रार्थना की—मैं उसके साथी के बारे में कुछ भी

नहीं जान पाया—निस्संदेह वह भी इसी भांति कष्टों का मुकुट पहन चुका होगा, क्योंकि बाद में हमारे खेमे को तातार औरतों के पास काफी छोटी प्रतिमाएं थीं, जिन्हें पादरी लोग अपने साथ लाये थे।"

"तो पादरी वहां रिन रेगिस्तान में भी पहुंचते हैं?"

"हां, वे वहां जाते हैं अवश्य, पर उनसे कुछ भला नहीं हो पाता।"

"क्यों नहीं?"

"वे यह नहीं जानते कि उन्हें कैसा बर्ताव करना चाहिए। एशियाई तो केवल भय से धर्म बदल सकता है—उसे आतंक के मारे कांपना चाहिए, और ये पादरी तो ईश्वर के विनम्र प्रेम का उपदेश देते हैं। यह बात शुरू से ग़लत है, क्योंकि कोई भी एशियाई ईश्वर को किसी धमकी के बिना स्वप्न में भी आदर नहीं देगा बल्कि वे उपदेशकों को मार डालेंगे।"

"मुख्य बात यह है, जैसा मेरा ख़याल है कि जब तुम एशियाइयों से मिलो तो तुम्हारे पास कोई पैसा, आभूषण या कोई अन्य मूल्यवान वस्तु नहीं होनी चाहिए।"

"यह आप ने सही कहा, यद्यपि वे इस बात का कभी भरोसा नहीं करेंगे कि कोई उनके पास आनेवाला अपने साथ कुछ भी नहीं लायेगा। वे तो सोचेंगे कि उसने कहीं स्तेपी में धन गाड़ रखा होगा और वे उसे कष्ट पर कष्ट देंगे, जब तक वह मर नहीं जायेगा।"

"कैसे दुष्ट हैं!"

"हां, यही बात एक यहूदी के साथ हुई थी जब मैं वहां था—एक बूढ़ा यहूदी जाने कहां से आया था और उसने अपने धर्म का प्रचार करना शुरू कर दिया। वह एक अच्छा आदमी था और स्वभावतः एक कट्टर धर्मात्मा था और ऐसे फटे हुए चिथड़े पहने रहता था कि तुम उसके नंगे शरीर को देख सकते थे, पर वह ऐसे जोश से उपदेश देता था कि मन करता था बस सुनता ही जाऊं। पहले तो मैंने उससे बहस करने की कोशिश की, 'तुम्हारा भी कैसा धर्म है कि तुम्हारे संत भी नहीं होते?' मैंने उसे पूछा। 'हमारे भी संत हैं,' उसने कहा। और उसने तालमुद से अपने संतों के बारे में पढ़ना शुरू किया जो बड़ा दिलचस्प था। तालमुद के बारे में उसने बताया कि यह रब्बी जोनाथन बिन लेवी का लिखा हुआ था जो ऐसा विद्वान था कि पापी आदमी उसके चेहरे को

तरफ़ देख भी नहीं सकते थे क्योंकि केवल उसकी एक नजर से ही वे मर जाते और इसी कारण ईश्वर ने उसे अपने सिंहासन के पास बुलाया और कहा, 'हे, विद्वान रब्बी जोशुआ बिन लेवी! यह बहुत अच्छी बात है कि तुम ऐसे विद्वान हो पर यह अच्छा नहीं है कि मेरे सभी यहूदी तेरे कारण मर जायें, मैंने इसलिये उन्हें मूसा के मार्गदर्शन में वीरान जगहों और समुद्र पार नहीं भेजा था। अतः तुम अपनी पितृभूमि से चले जाओ और ऐसे स्थान पर जाकर रहो जहां कोई आदमी तुम्हारी ओर न देख सके।' इसलिये रब्बी लेवी भटकता रहा, जब तक वह उस स्थान पर न पहुंचा जहां स्वर्ग था और वहां उसने अपने आपको गर्दन तक रेत में गाड़ दिया और तेरह बरस इसी तरह बिताये। हर शनिवार को वह अपने लिये एक मेमना तैयार करता जिसे स्वर्ग से उतरती हुई आग द्वारा पकाया जाता। यदि कोई मच्छर या मक्खी उसके नाक पर उसका खून पीने के लिये बैठता तो उसे तत्काल ही स्वर्ग की अग्नि निगल जाती... एशियाइयों को विद्वान रब्बी की कहानी पसंद आई और वे उस यहूदी की बातें काफी देर तक सुनते रहे, आखिर वे पूछने लगे कि उनके पास आते समय उसने अपना धन कहां छिपाया है। यहूदी ने क़सम खाई कि उसके पास कोई धन नहीं था और ईश्वर ने उसे उनके पास केवल अपनी बुद्धिमत्ता देकर भेजा था जिसका उन्हें विश्वास नहीं हुआ—उन्होंने आग के अंगारे निकाले और उन पर एक घोड़े की खाल फैला दी जिस पर यहूदी को लिटा दिया और उसे जलती हुई खाल पर घुमाने लगे और हर बार यही पूछते थे, 'कहां है तुम्हारा धन, कहां है तुम्हारा धन?' जब उन्होंने देखा कि वह पूरा का पूरा काला-स्याह पड़ गया है, उसने चिल्लाना बंद कर दिया है तो वे भी ठहर गये और बोले:

"'तो चलो। उसे हम गर्दन तक रेत में गाड़ दें, शायद इससे वह अच्छा हो जाय।'

"इसलिये उन्होंने उसे गाड़ दिया और उसी तरह गड़ा हुआ वह मर गया। वहां काफी दिनों तक उसका काला सिर जमीन से निकला हुआ रहा परन्तु इससे बच्चों को डर लगने लगा जिससे उन्होंने उसे काट डाला और एक सूखे कुएं में डाल दिया।"

"तो उन्हें उपदेश देने का यही फल होता है!"

"हां, यह बड़ा मुश्किल काम है, पर तुम्हें मालूम होना चाहिए कि उस यहूदी के पास आखिर कुछ पैसा तो था ही।"

"उसके पास धन था क्या?"

"हां, बात ऐसे थी: फ़ौरन ही भेड़ियों व गीदड़ों ने उसकी लाश को फाड़ना शुरू कर दिया और उसे थोड़ा-थोड़ा करके रेत में से बाहर निकाल लिया और आखिर उसके जूतों तक पहुंचे। जब उन्होंने जूतों को फाड़ा तो उनके तलुओं से सात सिक्के गिरे। वे बाद में वहां मिले थे।"

"अच्छा, तो तुम तातारों से किस तरह बच निकले?"

"एक जादू से।"

"वह जादू किसने किया जिससे तुम्हें छुटकारा मिला?"

"तलाफ़ा ने।"

"और वह तलाफ़ा कौन था? तातार था?"

"नहीं, वह एक भिन्न प्रकार का आदमी था, एक हिंदुस्तानी था। कोई मामूली हिंदुस्तानी नहीं, पर उनका देवता था जो धरती पर चलता था।"

अपने श्रोताओं के निवेदन पर ईवान सेवेर्यानिच फ़्लागिन ने अपने दुख-सुख की कहानी का अगला भाग निम्न प्रकार कहा:

अध्याय ६

"तातारों द्वारा धर्मप्रचारकों को मारने के साल भर बाद सर्दी का मौसम शुरू होते ही हम अपने घोड़ों के झुंडों को नये चरागाहों की ओर दूर दक्षिण में, कास्पियन सागर के किनारे पर ले गये। वहां एक दिन शाम के समय दो आदमी घोड़ों पर चढ़े हुए हमारे खेमों के पास आये। कोई भी यह नहीं जानता था कि वे कैसे आदमी थे, कहां से आये थे, किस जाति के थे और उनके क्या नाम थे। वे कोई वास्तविक भाषा तो बोलते नहीं थे, न रूसी, न तातार पर एक शब्द हमारी बोली में, दूसरा तातार में और आपस में ईश्वर ही जाने किस भाषा में बात करते थे। दोनों में से कोई बूढ़ा नहीं था, एक के काले बाल और लम्बी दाढ़ी थी और वह तातार ढंग का चोग़ा पहना हुआ था, चोग़ा रंगबिरंगा न होकर पूरे लाल रंग का था और उसके सिर पर एक नुकीली फ़ारसी टोपी थी;

दूसरा आदमी लाल सिर वाला था और उसके भी लम्बा चोगा था पर वह अजीब था, उसके पास कई छोटे-छोटे संदूक थे, समय पड़ने पर जब कोई नहीं देख रहा होता तो वह अपना चोगा उतारता जिसके नीचे उसने एक छोटा कुरता और पायजामा पहन रखा था, जैसा जर्मन लोग इसी कारखानों में काम करते समय पहना करते हैं। वह अपने संदूकों को चीज़ें उथलपुथल करता रहता पर किसी को यह पता नहीं लग पाया था कि इनमें क्या है। वे कहते थे कि वे खीवा से घोड़े खरीदने आये हैं और अपने देश में किसी से युद्ध करना चाहते थे। किसे किससे युद्ध करना था–यह नहीं बताते थे पर वे तातारों को रूसियों के खिलाफ़ भड़काया करते थे। मैंने लाल सिरवाले की बातें सुनी थीं, वह ज्यादा नहीं बोल सकता था। वह रूसी भाषा के 'मुसिया' शब्द ही का उच्चारण करता और फिर थूक देता। पर उनके पास पैसा नहीं था, क्योंकि एशियाई होने के कारण वे जानते थे कि स्तेपी में यदि कोई पैसा लेकर आता है, तो वह अपने सिर को अपने कंधों पर सही-सलामत नहीं ले जा सकता। वे तातारों को अपने घोड़े 'दरिया' नदी के किनारे ले जाने के लिये कहा करते थे और उनके साथ हिसाब साफ़ करने का वादा करते थे। तातार इनसे सहमत होने या न होने का फ़ैसला नहीं कर पाते थे। वे इस तरह सोचते थे मानों उन्हें सोता खोदकर निकालना है पर मैं देख सकता था कि वे किसी बात से डरते थे।

"शुरू में तो अजनबियों ने तातारों को मनाने की कोशिश की पर बाद में वे उन्हें डराने लगे।

"'घोड़ों को ले चलो,' उन्होंने कहा, 'या तुम्हारे साथ कुछ बुरा बीतेगा। हमारा देवता है तमाशा, जिसने हमारे साथ अपनी जान भेजी है। ईश्वर न करे वह नाराज़ हो जाय।'

"तातार उनके देवता के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, वे इस बात से डरते थे कि उनका देवता अपनी जान से स्तेपी में आने के बदले उनका कुछ बिगाड़ देगा। पर लम्बी दाढ़ी वाले आदमी ने जो लाल चोगा पहने हुए था और खीवा से आया था, बोला, 'यदि तुम तातारों से डरते हो तो वह अपनी ताकत तुम्हें अभी तुरत ही दिखा देगा, पर जब तुम कुछ देखो और सुनो तो अपने कंधों के ऊपर न निकालना, नहीं तो वह तुम्हें कुचल डालेगा।' कहने की ज़रूरत नहीं है कि इससे इन

सब को बड़ा भयंकर रोमांच सा हुआ, क्योंकि हम स्ते
जीवन की उदासी में कुछ फेर-बदल चाहते थे और यद्यपि
धमकी से कुछ सहम गये थे पर यह जानना चाहते थे
देवता सचमुच क्या कर सकता था, कैसे और किस तर
अपने आपको प्रकट करेगा?

"उस दिन शाम को हम जल्दी ही अपने तम्बुओं
बच्चों को लेकर चले गये और वहां हम इंतजार क
की तरह उस रात में भी खामोशी और अंधेरा छाया
मुझे नींद आने लगी तो स्तेपी में एक ज़ोरदार तूफान
हुई और नींद में मुझे ऐसा लगा कि आकाश से चिनगारि

"मैं जाग पड़ा। मेरी औरतें परेशान हो गईं और
शुरू कर दिया।

"मैंने कहा:

"'चुप रहो! इनके मुंह बंद कर दो, इन्हें चूसने
ये न चिल्लायें।'

"बच्चे चटकारे भरने लगे और फिर खामोशी छ
ही आग फुफकारती हुई आकाश की ओर बढ़ी और

"'अच्छा,' मैंने सोचा, 'तो यह तमाशा भी
नहीं है!'

"थोड़ी देर बाद वह फिर शोर मचाने लगा प
तरह की आवाज़ थी और एक आग्नेय पक्षी की तरह
साथ उड़ गया और आग भी असाधारण थी,
और जब वह लपकती हुई फूटी तो सभी कुछ पी
हो गया।

"मैंने देखा कि डेरा कब्र की तरह खामोश था
सकता था कि किसी को ये धमाके सुनाई न दिये हों।
इससे डर गये और अपने भेड़ों को लाल के सबार
गये थे। अब तो हरेक सुन सकता था कि किस प्रक
डोलने और कांपने लगी और फिर खामोशी छा ग
कि घोड़े हिनहिना रहे थे और घबराकर एक साथ इ

अपने ख़याल बदलने के लिए वक्त ही क्यों देता? मैंने बर्फ़ के एक ढेर में से पानी लेकर उनके सिरों पर छिड़का और 'पिता और पुत्र के नाम' की प्रार्थना की, फिर धर्मप्रचारकों द्वारा छोड़े गये क्रॉसों को लिया और उनके गलों में पहना दिया, उनको हत्या किये गये धर्मप्रचारक का शहीद के रूप में आदर करने के लिये और उसकी प्रार्थना करने के लिये कहा और उन्हें उसकी क़ब्र दिखाई।"

"और क्या उन्होंने प्रार्थना की?"

"हां, की।"

"पर वे तो ईसाई प्रार्थनाएं नहीं कर सकते होंगे, या क्या तुमने उन्हें सिखाया था?"

"मेरे पास उन्हें सिखाने का समय कहां था, क्योंकि मैंने देखा कि यह वक्त तो भाग जाने का था इसलिये मैंने उन्हें कहा, 'अपनी पुरानी प्रार्थनाओं को जारी रखो, केवल अब अल्लाह का नाम कहने की हिम्मत न करो, तुम केवल ईसा मसीह की उपासना करो!' और उन्होंने यही धर्म स्वीकार किया था।"

"पर तुम इन नये बने ईसाइयों के बीच में से अपने लंगड़े पांवों से किस तरह निकल भागे और तुमने अपना इलाज किस तरह किया?"

"बाद में मुझे उस आतिशवाजी के गोलों में कुछ कड़ू मिट्टी सी मिली, जिसे शरीर पर लगाते ही तेज़ी से जलन शुरू हो जाती है। मैंने इसी से काम लिया और बीमार होने का बहाना कर लिया और कंबल में लेटे हुए मैं उसे अपनी एड़ियों पर रगड़ता रहा; दो हफ़्तों तक लगाने पर इतना अच्छा असर हुआ कि मेरे पांवों का पूरा मांस सूज गया और तातारों ने दस बरस पहले जो बाल डाले थे वे मवाद के साथ बाहर निकल आये। मैं जितना जल्द संभव था अच्छा हो गया पर मैंने किसी को इस बारे में नहीं बताया, बल्कि तबीयत बराबर बिगड़ने का बहाना बनाता रहा और औरतों व बूढ़े आदमियों को मेरे लिये ध्यानपूर्वक प्रार्थना करने का हुक्म दे दिया क्योंकि मैं मर रहा हूं। फिर मैंने उन्हें सजा के रूप में कम व उपवास धारण करने का आदेश दिया और उन्हें तीन दिन तक अपने खेमे न छोड़ने का हुक्म दिया—इसको दुबारा पक्का करने के लिये मैंने बहुत बड़ी आतिशबाज़ी छोड़ी और मैं निकल पड़ा..."

"और क्या वे तुम्हें नहीं पकड़ पाये?"

"नहीं, वे मुझे नहीं पकड़ सके क्योंकि मैंने उन्हें डरा रखा था और उपवास कराकर कमज़ोर बना दिया था। इसलिये मेरा ख़याल है कि उन्हें मेरे भाग जाने से ख़ुशी ही हुई होगी और तीन दिन तक खेमों से बाहर नहीं निकले थे और जब वे बाहर निकले होंगे तब तक मैं उनकी पकड़ से बहुत दूर आगे निकल गया होऊंगा। मेरे पांव बाल निकलने के बाद जल्दी ही अच्छे हो गये और इतने हलके हो गये थे कि एक बार दौड़ना शुरू करने पर मैं स्तेपी के एक सिर से दूसरे तक बराबर दौड़ता ही चला गया।"

"पूरे रास्ते पैदल ही?"

"और कैसे? स्तेपी में कोई सड़क तो है नहीं और यहां आपको कोई मिलनेवाला भी नहीं हो सकता। यदि कोई मिल भी जाता तो उससे मिलकर कोई ख़ुशी नहीं होती। मेरी यात्रा के चौथे दिन मुझे पांच घोड़े ले जाता हुआ एक चरवाहा मिला।

"'मेरी किसी भी एक घोड़ी पर सवार हो जाओ,' उसने मुझे कहा।

"पर मुझे डर था और मैं नहीं चढ़ा।"

"तुम्हें किस बात का डर था?"

"मैं नहीं जानता... पर वह मुझे ईमानदार नहीं लगा, फिर मैं यह भी पता नहीं लगा सका कि उसका मज़हब क्या था, और जब तक तुम यह न जानो तो स्तेपी में किसी के साथ रहना ख़तरे से ख़ाली नहीं होता। वह एक मूर्ख की तरह चिल्लाता ही रहा:

"'जल्दी करो, हम दोनों एक दूसरे का साथ दे सकते हैं।'

"पर मैंने कहा:

"'तुम कौन हो? हो सकता है तुम किसी ईश्वर को न मानते हो?'

"'अवश्य ही, हमारे ईश्वर है,' उसने कहा। 'ये तो तातार हैं जिनके कोई ईश्वर नहीं होता और वे घोड़े का मांस खाते हैं, पर मेरे तो ईश्वर है।'

"'तुम्हारा ईश्वर कौन है?' मैंने पूछा।

"'सभी कुछ,' उसने कहा, 'हर चीज़ में मेरा ईश्वर है, सूरज मेरा ईश्वर है, चंद्रमा मेरा ईश्वर है, तारे मेरे ईश्वर हैं, हर वस्तु में मेरा ईश्वर है। यह तुम कैसे कह सकते हो–ईश्वर नहीं है?'

"'हर चीज़ में? हूं... हर चीज़ में, तुम कहते हो? और ईसा मसीह?' मैंने पूछा, 'क्या वह तुम्हारा ईश्वर नहीं है?'

"मैंने कहा :

"'धन्यवाद, मेरे दोस्तो, पर मैं बहुत बरसों तक तातारों के साथ रहकर इसकी कोई आदत नहीं रही है।'

"'कोई बात नहीं,' उन्होंने उत्तर दिया, 'तुम यहां अपने देश में हो और तुमको फिर से जल्दी ही इसे पीने की आदत हो जायगी : पियो!'

"मैंने अपने लिये एक गिलास भर लिया और सोचा, 'ईश्वर का शुक्र है, मैं सुरक्षित वापस लौट आया हूं!' और उसे पी गया। मछुए बहुत अच्छे लोग थे और उन्होंने मुझे दूसरा गिलास पीने के लिये मजबूर किया।

"'दूसरा गिलास भरो,' उन्होंने कहा, 'देखो तुम इसके बिना कितने ऊब गये हो।'

"तो मैं दूसरा गिलास भी पी गया और काफ़ी बातें करने लगा—मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया कि मैं कहां से आया हूं, मैं कहां रहता था—मैं आग के पास बैठा सारी रात कहता गया, वोद्का पीता रहा और खुश था कि पवित्र रूस में फिर से आ गया था। सुबह होते होते आग ठंडी हो गई और बहुत से मछुए सो गये, पर उनमें से एक ने मुझे कहा :

"'क्या तुम्हारे पास पासपोर्ट है?'

"'नहीं,' मैंने कहा, 'मेरे पास नहीं है।'

"'यदि तुम्हारे पास पासपोर्ट नहीं है तो तुम्हें यहां जेल में जाना पड़ेगा।'

"'तो फिर मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा,' मैंने कहा। 'मेरा ख़याल है कि मैं तुम्हारे साथ बिना पासपोर्ट भी रह सकता हूं, नहीं क्या?'

"'अवश्य ही तुम रह सकते हो,' उसने कहा, 'तुम हमारे साथ बिना पासपोर्ट के रह सकते हो, पर तुम उसके बिना मर नहीं सकते।'

"'ऐसा क्यों?' मैंने पूछा।

"'यह बहुत सरल बात है,' उसने जवाब दिया, 'पादरी तुम्हारी मृत्यु को बिना पासपोर्ट के कैसे दर्ज करेगा?'

"'तो फिर मेरा क्या होगा?' मैंने पूछा।

"क्या, चुम्बकत्व?!"

"हां, एक व्यक्ति का चुम्बकीय असर।"

"और तुम्हें यह असर कैसे मालूम हुआ?"

"दूसरे आदमी की इच्छा मुझ पर राज करती रही और मैंने दूसरे आदमी की भाग्य पूर्ति की।"

"क्या, वहीं पर तुम्हारा खुद का पतन हुआ और फिर तुमने निर्णय किया कि तुम्हें अपनी मां के वचन को पूरा करने के लिये मठ में प्रविष्ट होना चाहिए, क्यों यही न?"

"नहीं, यह सब बाद में हुआ, उससे पहले मेरे साथ विभिन्न घटनाएं हो चुकी थीं, उसके बाद ही मुझे यह समझ में आया।"

"अपने साहसी कार्यों के बारे में बताने में आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?"

"बिल्कुल नहीं, इससे तो मुझे प्रसन्नता ही होगी।"

"तो ऐसी कृपा कीजियेगा।"

अध्याय १०

"जब मुझे अपना पासपोर्ट मिला और मैं चल पड़ा तो मेरी कोई निश्चित योजना नहीं थी। मैं एक मेले में जा पहुंचा जहां एक जिप्सी एक किसान के साथ घोड़े अदलबदल कर रहा था और बड़ी बेहयाई से उसे ठग रहा था। अपने घोड़े की ताक़त दिखाने के लिये उसने उसे तो एक अनाज की गाड़ी में जोत दिया था और किसान के घोड़े को उसने सेबों की गाड़ी में जोत दिया। दोनों में वज़न बराबर था पर किसान के घोड़े को पसीना छूट गया था क्योंकि घोड़ा इस प्रकार की सुगंध सहन नहीं कर सकता है। जिप्सी के घोड़े को चक्कर आते थे। उसके सिर पर ऐसा निशान था जिससे पता चलता था कि कारण उसका आग से इलाज किया गया था, यद्यपि जिप्सी यही कह रहा था कि यह मस्सा है। मुझे किसान पर दया आई क्योंकि वह चक्कर आनेवाले और गिर पड़नेवाले घोड़े से काम नहीं ले सकता था और उस वक़्त मुझे सभी जिप्सी लोगों से बड़ी घृणा हो गई क्योंकि वे ही पहले लोग थे जिन्होंने मुझे आवारा जीवन बिताने का प्रलोभन दिया। और आगे

भी मुझे उनसे बुराई होने का आभास था जो बाद में पुष्ट भी हो गया। इसलिये मैंने किसान को उस छल के बारे में बताया और जब जिप्सी मुझसे बहस करने लगा कि घोड़े के सिर के ऊपर वाला निशान मस्सा था और आग के कारण नहीं था तो मैंने अपनी बात सिद्ध करने के लिये घोड़े के गुरदों में एक सुआ चुभाया तो वह तुरंत चक्कर खाता हुआ नीचे गिर गया। किसानों के लिये मैंने अपने ज्ञान के अनुसार एक अच्छा घोड़ा छांटा जिसके लिये उन्होंने मुझे वोद्का और अच्छा भोजन परोसा और बीस कोपेक के सिक्के दिये जिससे हम लोगों का अच्छा समय बीता। और इस तरह यह सब शुरू हुआ—मेरी पूंजी और मेरी वोद्का की खुराक दोनों ही बढ़ती चली गयीं और एक माह बीतने पर मैंने यह देखा कि मैं ठीक हालत में था! मैंने कई तरह के पीतल के बिल्ले अपने कोट पर लटका लिये और एक घोड़ों के डॉक्टर का सामान लिये एक मेले से दूसरे में घूमता-फिरता रहा, हर जगह में ग़रीबों को राय देता था और काफी फीस लेता था, इस फीस के अलावा हमेशा वोद्का से इनाम लिया करता था। इसी बीच मैं घोड़े बेचनेवाले जिप्सियों के लिये सचमुच ईश्वरीय क्रोध का प्रतीक बन गया था और मुझे किसी ने गुप्त रूप से बताया कि वे मुझे पीटने की साजिश कर रहे थे। मैं उनका खूब ध्यान रखने लगा क्योंकि मैं तो अकेला था और वे लोग कई थे और यदि उन्हें मुझे अकेले को पकड़ लेने का मौका मिलता तो वे खूब धुनाई कर सकते, पर ऐसा वे किसानों के होते हुए नहीं कर सकते थे क्योंकि वे मेरे कामों में हमेशा मेरा पक्ष लेते थे। फिर भी मुझे पीटने के बजाय उन्होंने इस तरह की अफवाह फैला दी कि मैं एक जादूगर था और मेरा घोड़ों के बारे में ज्ञान अपनी शक्ति द्वारा प्राप्त नहीं था परन्तु यह तो सब बकवास ही थी। जैसा मैंने आप लोगों को पहले ही बताया कि घोड़ों की जानकारी के बारे में मुझे कुदरती वरदान मिला हुआ था और यह मैं हर किसी को देने को सदा तैयार रहता था—पर मुसीबत यह थी कि मेरी सीख किसी के ज़रा भी काम नहीं आई।"

"यह किसी के काम क्यों नहीं आई?"

"क्योंकि कोई इसे समझ नहीं सकता था, यह तो कुदरत की देन होती है, कई बार ऐसे मामले हुए थे जब मैंने सीख दी पर यह सब व्यर्थ हो गया, जिनके बारे मे मैं आपको बाद में बताऊंगा।"

"जब सभी मेलों में यह ज्ञात हो गया कि मैं एक ऐसा आदमी हूं जो घोड़ों के बारे में सब कुछ जानता है तो एक रिसाला अफसर ने, जो अभिजात कुल का था, मेरी गुप्त बातें जानने के लिये मुझे सौ रूबल देने चाहे।

"'तुम मुझे अपनी गुप्त बात बताओ जो तुम्हारी समझ के बारे में है। यह मेरे लिये बहुत मूल्यवान सिद्ध होगी।'

"और मैंने उत्तर दिया:

"'मेरे पास कोई गुप्त बात नहीं है,' मैंने कहा। 'मेरे पास तो केवल कुदरत की देन है।'

"पर वह मुझे बराबर तंग करता रहा।

"'मुझे बताओ,' उसने कहा, 'अपनी उस समझ के बारे में, यह लो सौ रूबल ताकि तुम यह समझ सको कि मैं यह ज्ञान यों ही लेना नहीं चाहता हूं।'

"मैं भी क्या करता? मैंने अपने कंधे सिकोड़े, पैरों को एक कतार में बांधा और बोला, 'मैं आपको वह सब कुछ बता दूंगा जो मैं जानता हूं और आप कृपा करके ध्यान से सुनें और सीखें; यदि आप मेरी दी हुई शिक्षा को न समझ सके और उससे कोई लाभ न उठा सके तो इसके लिये मैं जिम्मेदारी नहीं लेता।'

"वह इस बात से संतुष्ट हो गया और उसने कहा, 'इस बारे में चिन्ता मत करो कि मैं कितना सीखता हूं। तुम तो केवल मुझे अपना ज्ञान दे दो।'

"मैंने कहना शुरू किया, 'यदि कोई आदमी घोड़े के बारे में सब कुछ जानना चाहता हो तो पहली बात तो यह है कि उसे हर चीज की ठीक रीति से जांच करनी चाहिए और उसके क्रम को नहीं बदलना चाहिए। उसे घोड़े को सिर से अच्छी तरह देखना शुरू करना चाहिए और फिर घोड़े के सारे शरीर को, सिर से पूंछ तक देखना चाहिए और इस बात में कभी भी कोई गड़बड़ नहीं करनी चाहिए जैसे फौजी अफसर किया करते हैं। वे साधारणतया उसकी गर्दन, सामने की गरदन, सुम, उनकी ... को ... और कभी भी उनका हाथ पड़ जाय छूते हैं पर उनमें कोई ... सिलसिला। घोड़ों के व्यापारी इन सिपाहियों के अफसरों की इस ... की ... को ... करते हैं। जब घोड़े का व्यापारी इस तरह

व्यापारी घोड़े के पेट या पसली पर मुक्के से धक्का देता है। यदि वह धीरे से भी उसको थपथपाए तो अपने दस्तानों में एक कील छिपाए रहता है जिसे वह चुभा देता है जब वह उसे थपकाने का बहाना करता है।' मैंने आप लोगों को कही हुई यह बात अपने रिसाला अफसर को इससे दस गुना अधिक ब्योरे से समझायी थी पर उससे उसे कोई लाभ नहीं हुआ- दूसरे ही दिन मैंने देखा कि उसने ऐसे रद्दी घोड़े खरीद लिये थे जो एक से एक बदतर थे और उसने खुद मुझे जांचने के लिए यह कहते हुए बुलाया था:

"'देखो, उस्ताद, मैंने घोड़ों को कैसे बढ़िया ढंग से समझना शुरू कर दिया है।'

"मैं केवल उनकी ओर देखकर हंस पड़ा और बोला कि दरअसल इसमें देखने को रखा ही क्या है।

"'इसके कंधे तो,' मैंने कहा, 'बड़े मांसल हैं, यह लड़खड़ाता और यह घोड़ी लेटती है, तो इसके खुर ठीक इसके पेट के नीचे लगते हैं, उसे साल भर के भीतर ही चर्म रोग हो जायेगा और यह जई खाते हुए जमीन खोदता है और सांड को अपने घुटनों से मारता है--और इस प्रकार मैंने उसकी सारी खरीद के दोष बता दिये और हर बात जैसे मैंने बतायी ठीक उसी प्रकार हुई।

"अगले दिन राजकुमार ने मुझसे कहा:

"'अच्छा, ईवान, मैं समझ गया हूं कि मैं तुम्हारे गुण कभी प्राप्त नहीं कर सकता, तुम मेरे साथ पारखी की नौकरी कर लो। तुम घोड़े छांटना और मैं पैसा दूंगा।'

"मैं राजी हो गया और पूरे तीन साल तक ज़िंदगी अच्छी तरह कटी, गुलाम की तरह नहीं और न एक भाड़े के आदमी की तरह बर उसके एक दोस्त और मददगार की तरह से। यदि मैं नौकरी में न लगता तो [illegible] अच्छी रकम इकट्ठी कर सकता था, क्योंकि उन दिनों की [illegible] की बात थी कि [illegible] का [illegible] खर्च करके ही रिसाला अफसर के [illegible] [illegible] है और अपने [illegible] के पारखी को पारखी के [illegible] देता है क्योंकि [illegible] यह जानता है कि यदि पारखी [illegible] है, तो [illegible] [illegible] [illegible] है न कि रिसाला अफसर की। जैसा मैंने [illegible] [illegible] कि [illegible] एक [illegible] [illegible] ढंग के कारण, मैं [illegible] ही

"'नहीं,' वह कहता, 'तुम मुझे चाबुक मत मारो पर मुझे थोड़ा खर्चे के लायक पैसा दे दो जिससे मैं अपनी ताश की बाजी का कर्ज चुका सकूं। हो सकता है कि मेरा भाग्य बदल जाय और मैं उन सब के कर्ज से छूट जाऊं।'

"'अरे नहीं,' मैं कहता, 'इसके लिये आपको धन्यवाद, यदि आपको खेलना ही है तो खेलें पर बदले की बाजियां न खेलें।'

"'तो ऐसे तुम मेरा अहसान चुकाते हो,' वह हंसकर कहता हुए करता और अंत में सचमुच नाराज हो जाया करता, 'अपनी हैसियत मत भूलो,' वह कहता। 'छोड़ो यह संरक्षक का धंधा और मुझे कुछ पैसा दे दो!'"

हमने ईवान सेवेर्यानिच से पूछा कि क्या उसने राजकुमार को कभी धन दिया था।

"कभी नहीं," उसने जवाब दिया, "या तो मैं उसे झूठ कह देता कि मैंने सब पैसे जई पर खर्च कर दिये हैं या मैं घर से ही भाग जाता।"

"पर इससे तो वह और अधिक नाराज हो जाता होगा, नहीं क्या?"

"हां, नाराज तो होता ही था। कभी-कभी वह कहता, 'चलो, सब कुछ खत्म हुआ, तुम अब मेरी नौकरी में नहीं हो, मेरे अर्थ-संरक्षक-महोदय।'

"'बहुत अच्छा,' मैं जवाब देता। 'सर्वश्रेष्ठ, क्या मैं अपना पासपोर्ट ले सकता हूं?'

'अच्छा तो, बांधो अपना सामान,' वह कहता, 'कल तुम्हें अपना पासपोर्ट मिल जायेगा।'

"पर अगले दिन इस बारे में कोई बात ही नहीं होती क्योंकि एक घंटे या उतने ही समय में वह मेरे पास अलग ही विचार लिये आता और कहता:

"'धन्यवाद, मेरे महान-उदार-महत्वपूर्ण महोदय, आपकी कृपा के लिये और मुझे अपनी करने की बाजी के लिये धन न देने के लिये।'

"वह हमेशा अन्त में इसी तरह महसूस किया करता। और यदि मुझे कुछ ही कहना तो वह भी मेरे साथ एक भाई की तरह व्यवहार करता।"

"और तुम्हें क्या ही कहना था?"

"मैंने आपको बताया तो था कि मैं सैर किया करता था।"

"हां, पर आपका सैर से क्या मतलब है?"

"मैं बाहर तफरीह करने जाया करता था। मैंने पीने का शौक अपना लिया था पर मैं हर रोज नहीं पिया करता था बल्कि सीमा में रहता था। जब कभी किसी बात से मैं बेचैन हो जाता तो मुझे पीने की भयानक इच्छा होती और मैं कुछ दिनों के लिये सैर पर निकल जाता और लापता हो जाता। मैं नहीं कह सकता कि किस कारण से मेरा मिज़ाज ऐसा हो जाता, उदाहरणार्थ, जब हम अपने घोड़ों को बेच देते—भले ही वे मेरे भाइयों जैसे न हों पर मुझे ऐसा लगता कि मैंने कुछ खो ही दिया है और मैं उनके ग़म में पीने लग जाता। यह विशेषतया तब सच होता जब मुझे किसी खूबसूरत घोड़े से बिछुड़ना होता, वह कमबख्त मेरे मन पर छा जाता, हर वक्त भूत की तरह सिर पर सवार रहता, मेरी आंखों के ठीक आगे घूमता, यहां तक कि मैं उसके भूत से बचने की कोशिश करता और इसीलिये सैर पर निकल जाया करता था।"

"तुम्हारा यह अर्थ है कि तुम पीने लग जाते?"

"हां, मैं पीने लग जाता था।"

"क्या यह दौर काफी देर तक चलता?"

"यह जिस क़िस्म की सैर होती उस पर निर्भर करता था: कभी तो मेरे पास जो कुछ धन होता वह सब पीने में चला जाता था कोई मुझे पीट देता या मैं किसी को पीट देता। पर, दूसरे अवसरों पर यह ज़्यादा लम्बे समय तक नहीं चलता, मैं या तो किसी पुलिस थाने में बंद किया जाता या किसी खाई में नींद भर सो लेता व खुश होता और मेरा मिज़ाज वैसे ही ठंडा हो जाता। ऐसे मामलों में मेरा एक नियम था कि जब मैं यह महसूस करता कि सैर होनेवाली है तो मैं राजकुमार के पास चला जाता और कहता:

"'ऐसा-ऐसा मामला है, महाभाग्य, कृपया अपने पैसे ले लो और मैं अब लापता हो रहा हूं।'

"वह कभी बहस नहीं करता, वह मुझसे पैसा ले लिया करता था और कहता:

"'क्या, आप हुज़ूर, लम्बे अरसे तक बाहर रहनेवाले हैं?'

"मैं जैसा चाहता जवाब दे देता—मेरी मनसा छोटी या लम्बी सैर की होती, वही बता देता।

"मैं चला जाता और वह घर पर सब इंतजाम संभाले रहता जब तक मेरी सैर खत्म न हो जाती और सब ठीक-ठाक रहता था। पर मैं अपनी इस कमजोरी से बड़ा परेशान हो गया और उससे छुटकारा पाने का मैंने पक्का निश्चय कर लिया। तभी मैं एक ऐसी अंतिम सैर पर निकला जिसका खयाल आते ही मैं भयभीत हो जाता हूं।"

अध्याय ११

कहने की जरूरत नहीं है कि हमने ईवान सेवेर्यानिच से आग्रह किया कि वह अपने जीवन के इस नये और अप्रिय प्रसंग का पूरा ब्योरा हमें बताये। अपने दिल की अच्छाई के कारण उसने हमें इन्कार नहीं किया और हमें अपनी अंतिम सैर की नीचे लिखी कहानी कही:

"हमने घोड़ों के फ़ार्म से एक दिदोना नामक घोड़ी ली थी, जो एक जवान, सुनहरी-लाल रंगवाली घोड़ी थी जो किसी अफ़सर के लायक़ थी। वह आश्चर्यजनक रूप से सुंदर थी, एक सुंदर सिर, प्रिय आँखें, कोमल से, चौड़े खुले हुए नथुनों से सहज रूप से सांस लेती, उसकी हलकी सी अयाल, कंधों के बीच में किसी जहाज के अग्रभाग के समान सीना, उसकी पतली सी कमर, और उसके सफ़ेद मोजोंवाले पांव इतने हलके उठते थे कि जब वह दौड़ती तो ऐसा लगता मानो खेल रही हो... कोई घोड़ों का प्रेमी जिसे सौंदर्य का थोड़ा भी ज्ञान हो इस जानवर को देखने के बाद उसे कभी भी नहीं भूल सकता था। मुझे वह इतनी पसंद थी कि अस्तबल में मैं उसे कभी अकेली नहीं छोड़ सकता था। मैं स्वयं ही उसके बाल संवारता और उसे एकदम सफ़ेद रूमाल से रगड़ता ताकि उस के बालों पर धूल का एक भी दाग न रहे और मैं उसके ललाट पर सुनहरे बालों की छोटी सी घुंघराली लट पर चुम्बन भी लिया करता था... उन दिनों हम दो मेलों में एक साथ काम कर रहे थे जिनमें एक म० में और दूसरा क० में था और रामकुमार व मैं दोनों बिछुड़े हुए थे, एक मेले में मैं था और रामकुमार दूसरे मेले में

था। अचानक मुझे उसका एक पत्र मिला जिसमें यह लिखा था: 'मुझे फ़लां-फ़लां घोड़े भेजो और दिदोना भी भेज दो।' मुझे पता नहीं कि उसने मेरी सुंदरी घोड़ी जिसे देखकर मुझे इतनी प्रसन्नता होती थी क्यों चाहा। स्वाभाविक ही था कि मैं यह सोचता कि उसने मेरी प्रिय घोड़ी को किसी दूसरे घोड़े के बदले ले लिया है या बेच दिया है या बहुत संभव है कि उसे ताश के खेल में खो दिया है। इसलिये मैंने दिदोना को अस्तबल के आदमियों के साथ भेज दिया और मैं उसके लिये बुरी तरह तड़पने लगा। फिर मेरे दिल में सैर करने की ज़बरदस्त इच्छा हो गयी। मेरी स्थिति उस समय बड़ी अजीब थी: जैसा मैंने तुम्हें बताया कि जब भी मुझे सैर करने की इच्छा होती, मैं राजकुमार के पास जाता और चूंकि मेरे पास हमेशा काफ़ी पैसा रहता था, इसलिये पैसा उसके हवाले करने की मेरी आदत हो पड़ गई थी, मैं उससे कहता, 'मैं इतने दिनों के लिए ग़ायब हो रहा हूं।' पर अब मैं यह प्रबंध कैसे करता था जब कि राजकुमार वहां पर नहीं था? 'नहीं, सचमुच, मैं नहीं पिऊंगा,' मैंने अपने मन में सोचा, 'क्योंकि मेरा राजकुमार दूर है और मैं अपना पैसा किसी के पास छोड़े बिना सैर पर नहीं जा सकता था—मेरे पास बहुत अधिक पैसा है, पांच हज़ार रूबल से अधिक।' मैंने निश्चय किया कि सैर वाली बात नहीं हो सकती और मैं अपने निर्णय पर अटल रहा और शराब पीने की और खूब सैर करने व मज़ा करने की इच्छा को हावी नहीं होने दिया, लेकिन वह कमज़ोर नहीं हो पाई थी, इसके विपरीत सैर पर जाने की मेरी इच्छा अधिक बलवती होती गई। आख़िर मेरे दिमाग़ में एक ख़याल आया—मुझे इस तरह इन्तज़ाम करना चाहिए कि मैं अपनी सैर की तीव्र इच्छा को भी पूरा कर सकूं और राजकुमार के पैसे की रखवाली भी कर सकूं। इसी विचार से मैं धन को ऐसी असाधारण जगहों पर छिपाने लगा, जहां पर किसी आदमी को पैसा रखने का सपना भी नहीं आ सकता था। 'मैं क्या कर सकता हूं?' मैं सोच में पड़ गया। 'स्वाभाविक ही था कि मैं अपनी इस इच्छा पर क़ाबू नहीं पा सकता, इसलिये मुझे पैसा ऐसी जगह पर रखना चाहिए था जहां वह सुरक्षित रह सके और तभी मैं अपनी इस इच्छा को पूरा कर सकता था और सैर पर जा सकता था।' पर मैं बहुत भारी परेशानी में पड़ गया कि
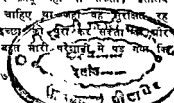
"'क्या तुम नहीं जानते, मैं कौन हूं? मैं तुम्हारी बराबरी का नहीं हूं; मेरे अपने गुलाम थे और तुम्हारे जैसे मुर्खों को अस्तबल में कोड़े लगाकर मैं अपना सनक पूरी किया करता था। यह ईश्वर की मरजी है कि मेरा भाग्य मुझसे रूठ गया है और मैं उसके क्रोध का निशान अब भी धारण करता हूं, इसीसे मुझे कोई भी छू नहीं सकता है।' दुकान के नौकर उसका विश्वास नहीं करते थे और हंसते थे पर वह उन्हें यह बताता कि वह कैसे रहता, कैसे गाड़ियों पर चढ़ा करता था, कैसे पैरफोज लोगों को सार्वजनिक बगीचों से बाहर निकालता रहता था और किस प्रकार वह बिल्कुल नंगा होकर राज्यपाल की पत्नी से मिलने गया था। 'और अब,' उसने कहा, 'मुझे अपने मनमौजीपन के लिये शाप मिल गया है और मेरा सारा शरीर पत्थर का हो गया है और मुझे उसे मुलायम करना पड़ता है इसलिये मुझे कुछ वोद्का दो। मैं इसके लिये पैसा तो नहीं दे सकता पर इसके बजाय इसके साथ ही गिलास को खा जाऊंगा।'

"इसलिये मेहमानों में से एक ने उसके लिये वोद्का का एक गिलास यह देखने के लिये मंगवाया कि वह कांच कैसे खा जाता है। उसने एक घूंट में गिलास खाली किया और जैसे उसने वादा किया था बड़े चाव से गिलास को अपने दांतों से चबाने लगा और सबके सामने उसे खा गया। लोग उसकी ओर ताज्जुब में देखते ही रह गये और खूब हंसने लगे। मुझे उस पर दया आ गई क्योंकि वह उच्च कुल का था और पीने का इतना आदी हो गया था कि वह अपने भीतरी अंगों का भी बलिदान किया करता था। इसलिये मैंने सोचा कि मुझे कम से कम उसके टूटे हुए कांच को धोने के लिये ही सही, अपना कुछ पैसा तो खर्च कर ही देना चाहिए और मैंने उसके लिए एक गिलास वोद्का मंगवाया पर मैंने उस पर कांच खाने के लिये ज़ोर नहीं डाला। मैंने कहा:

"'नहीं, नहीं! इसे मत खाओ!' उसका उस पर गहरा असर हुआ और उसने मेरे आगे अपना हाथ बढ़ाया।

"'मेरा ख़याल है कि पहले तुम किसी ज़मींदार के गुलाम थे।'

"'हां, मैं रहा हूं,' मैंने कहा।

"'मैं तुरंत ही समझ सकता था कि तुम उन मुर्खों से बिल्कुल अलग हो। तुम पर इसके लिये भगवान की दया हो,' उसने कहा।

"मैंने कहा:

"'इसकी जरूरत नहीं, तुम अपने रास्ते आगे बढ़ो।'

"'नहीं,' उसने कहा, 'मुझे तुमसे बात करके बड़ी खुशी होगी। जरा सरको, मैं तुम्हारे साथ बैठना चाहता हूं।'

"'खैर, बैठो,' मैंने कहा।

"इसलिये वह मेरे पास बैठ गया और मुझे बताने लगा कि वह कैसे ऊंचे कुल का था, उसे कितनी शानदार शिक्षा मिली थी और फिर उसने कहा:

"'यह तुम क्या पी रहे हो? चाय?'

"'हां,' मैंने कहा, 'चाय। यदि तुम पीना चाहो तो मेरे साथ पी सकते हो।'

"'धन्यवाद,' उसने कहा, 'पर मैं चाय नहीं पी सकता।'

"'क्यों नहीं?'

"'क्योंकि,' उसने कहा, 'मेरा सिर चाय के लिये नहीं बना है, मेरा सिर तो सिरतोड़ चीजों के लिये है; मेरे लिये एक और शराब का गिलास मंगवाओ!'

"इस तरह उसने मुझसे एक गिलास मांगा, फिर दूसरा और फिर तीसरा और मैं उससे ऊबने लगा। उससे मुझे अरुचि हो गई थी, कारण, उसने जो कुछ कहा वह बहुत कम सही था। वह पूरे समय डींगें मार रहा था और डींग हांक रहा था। फिर वह अपने आप को कोसने लगा और अचानक ही रोने लगा।

"'जरा सोचें तो सही कि मैं कैसा आदमी हूं,' उसने कहा, 'ईश्वर ने मुझे उसी वर्ष में जन्म दिया था जो हमारे सम्राट का है, इसलिये मैं ठीक उनकी उम्र का हूं।'

"'तो इससे क्या हुआ?' मैंने पूछा।

"'इससे यह हुआ—इतना सब होते हुए भी मेरी क्या स्थिति है? मैं किसी महत्त्व का नहीं रहा और एक नगण्य व्यक्ति हूं जैसा तुमने अभी देखा है, मुझसे सभी लोग घृणा करते हैं।' ऐसा कहते हुए उसने और वोद्का के लिये कहा, इस बार एक पूरी सुराही और मुझे एक लम्बी दास्तान सुनाने लगा कि किस प्रकार भटियारखानों में व्यापारी लोग उसका मजाक उड़ाते हैं और ऐसा कहते हुए उसने बात खत्म की:

"'ये अनपढ़ लोग हैं। वे सोचते हैं कि पीते रहना और गिलास

खाना बड़ा आसान काम है पर यह बड़ा ही मुश्किल काम है, भाई, कई लोगों के लिये असंभव सा है, पर मैंने अपने शरीर को इसका आदी बना लिया है क्योंकि मैं महसूस करता हूं कि आदमी को अपनी क़िस्मत का लिखा सहन करना चाहिए और मैं उसे बरदाश्त करता हूं।'

"'पर क्यों,' मैंने कहा, 'क्यों तुम इस आदत के गुलाम हो गये हो? इसे छोड़ क्यों नहीं देते?'

"'इसे छोड़ दूं!' उसने आश्चर्य से कहा, 'मेरे प्यारे साथी, यह तो असंभव है।'

"'पर क्यों?' मैंने पूछा।

"'यह दो कारणों से असंभव है। पहला तो इसलिये कि जब तक मैं शराब से भर न जाऊं तब तक मैं पलंग तक पहुंचना नहीं चाहता और मैं गलियों में भटकता रहता हूं और दूसरे खास तौर से यह कि मेरे ईसाई जज़बात मुझे ऐसा नहीं करने देते।'

"'तुम किस बात के बारे में कह रहे हो?' मैंने विस्मय से कहा। 'मुझे यह भरोसा तो हो सकता है कि तुम्हें नींद नहीं आती क्योंकि तुम पीने के लिये इधर-उधर टोह लगाते रहते हो परन्तु मैं यह विश्वास नहीं करना चाहता कि इस हानिकारक बुराई को छोड़ने में तुम्हारे ईसाई जज़बात इजाज़त नहीं देते।'

"'हां तो तुम इसका विश्वास नहीं करना चाहते,' उसने कहा। 'हर आदमी यही करता है। परन्तु सोचो कि यदि मैं पीने की आदत को छोड़ दूं तो क्या कोई और इस आदत को नहीं पकड़ लेगा? और वह मुझे इसके लिये धन्यवाद देगा या नहीं देगा?'

"'ईश्वर बचाये,' मैंने कहा, 'मैं अवश्य यह नहीं मानता कि वह इस बात को पसंद करेगा।'

"'अहा, तो तुम आखिर समझ गये कि बात किस तरह से है और क्योंकि यह आवश्यक है कि कम से कम मुझे इसके लिये कष्ट भोगने चाहिए तो इसके लिये तुम्हें मेरा आदर करना चाहिए और वोद्का की एक और सुराही मेरे लिये मंगवाई जानी चाहिए।'

"मैंने उसे दूसरी सुराही मंगवा दी और बैठा उसकी बातें सुनता रहा क्योंकि मुझे वह बड़ा मनोरंजक लग रहा था, वह निम्न रीति से कहता गया:

"'इसकी जरूरत नहीं, तुम अपने रास्ते आगे बढ़ो।'

"'नहीं,' उसने कहा, 'मुझे तुमसे बात करके बड़ी खुशी होगी। जरा सरको, मैं तुम्हारे साथ बैठना चाहता हूं।'

"'खैर, बैठो,' मैंने कहा।

"इसलिये वह मेरे पास बैठ गया और मुझे बताने लगा कि वह कैसे ऊंचे कुल का था, उसे कितनी शानदार शिक्षा मिली थी और फिर उसने कहा:

"'यह तुम क्या पी रहे हो? चाय?'

"'हां,' मैंने कहा, 'चाय। यदि तुम पीना चाहो तो मेरे साथ पी सकते हो।'

"'धन्यवाद,' उसने कहा, 'पर मैं चाय नहीं पी सकता।'

"'क्यों नहीं?'

"'क्योंकि,' उसने कहा, 'मेरा सिर चाय के लिये नहीं बना है। मेरा सिर तो निरमोड़ चीजों के लिये है; मेरे लिये एक और शराब का गिलास मंगवाओ!'

"इस तरह उसने मुझसे एक गिलास मांगा, फिर दूसरा और फिर तीसरा और मैं उससे ऊबने लगा। उससे मुझे अरुचि हो गई थी, कारण, उसने जो कुछ कहा वह बहुत कम सही था। वह पूरे समय शेखी मार रहा था और डींग हांक रहा था। फिर वह अपने आप को कोसने लगा और अचानक ही रोने लगा।

"'सब लोगों को लगे कि मैं कैसा आदमी हूं,' उसने कहा, 'ईश्वर ने मुझे उसी वर्ग में जन्म दिया था जो हमारे [illegible] का है, इसलिये मैं ठीक उनकी तरह का हूं।'

"'तो इससे क्या हुआ?' मैंने पूछा।

"'इससे यह हुआ—इतना सब होते हुए भी मेरी क्या स्थिति है? मैं [illegible] का [illegible] और एक [illegible] व्यक्ति हूं जैसा तुमने अभी देखा है, [illegible] अभी [illegible] पूछा करते हैं।' ऐसा कहते हुए उसने [illegible] के लिए [illegible], इस [illegible] [illegible] और [illegible] बताने लगा कि किस प्रकार [illegible] में [illegible] उसका [illegible] हूं और [illegible] कहते हुए [illegible] [illegible] थी;

"'मैं [illegible] हूं। मैं [illegible] हूं कि [illegible] और [illegible]

"'यह ठीक ही है कि इस कष्ट का अंत भी मेरे ही साथ हो जाना चाहिए, न कि यह किसी और को मिले, क्योंकि मैं,' उसने कहा, 'एक अच्छे कुल का और अच्छी शिक्षा प्राप्त आदमी हूं। जब मैं एक छोटा सा बालक था तो मैं अपनी प्रार्थनाएं फ्रांसीसी में कर सकता था। पर मुझमें कोई दया नहीं थी, मैं लोगों को कष्ट देता था, मैं अपने किसानों को ताश के खेल में हार जाता, मैं माताओं को बच्चों से अलग कर देता, मैंने एक धनिक स्त्री से विवाह कर लिया और उसे सता-सताकर मार डाला और अंत में यद्यपि मैं ही अपनी सब मुसीबतों का कारण था, मैं ईश्वर को ही मेरी ऐसी प्रकृति बनाने के लिये कोसता रहता था। इसलिये उसने मुझे दूसरी प्रकृति देने की सजा दे दी और मेरा सब घमंड चकनाचूर हो चुका है। तुम मेरी आंख पर थूक सकते हो या मेरे मुंह पर थप्पड़ मार सकते हो, मुझे केवल एक बात की चिंता है कि मैं नशे में होऊं और अपने आप को भूल जाऊं।'

"मैंने पूछा: 'क्या तुम कभी इसके विरुद्ध शिकायत नहीं करते कि तुम्हारी मौजूदा प्रकृति ऐसी हो गई है?'

"'नहीं, यद्यपि यह बहुत ही बुरी स्थिति है, फिर भी बेहतर ही है।'

"'मैं तुम्हें नहीं समझ पा रहा हूं, मुझे पता नहीं तुम किस बारे मे बात कर रहे हो—बदतर फिर भी बेहतर!'

"'और फिर भी यह इतना सरल है,' उसने जवाब दिया, 'अब मैं केवल एक ही बात जानता हूं कि चाहे मैं अपने आपको बर्बाद कर रहा हूं, मैं दूसरों को तो बर्बाद नहीं करता हूं क्योंकि मुझसे हर कोई दूर भागता है। आज मैं जोब की भांति फोड़ों से पीड़ित हूं और इसी में मेरा सुख और मेरी मुक्ति निहित है।' यह कहकर उसने अपनी वोद्का पी ली और यह कहते हुए, एक और सुराही की मांग की:

"'याद रखना, मेरे दोस्त, कभी भी किसी आदमी से घृणा मत करना, क्योंकि यह कोई भी नहीं बता सकता कि वह आदमी जाने किस लालसा से पीड़ित है और इसका कष्ट भोग रहा है। हम, जो ऐसी इच्छा के शिकार हैं, इसके कष्ट भोग रहे हैं ताकि यह दूसरों के लिये आसान हो सके। यदि तुम भी किसी तीव्र इच्छा के कारण दुखी हो तो इसे . छोड़ो क्योंकि कोई दूसरा इसे ले लेगा और इससे पीड़ित होगा

पर इसके बजाय किसी ऐसे आदमी का पता करो जो इस कमजोरी को तुम से अपने पर ले सके।'

"'परन्तु मैं ऐसा आदमी कहां पाऊंगा?' मैंने पूछा, 'कोई भी व्यक्ति कभी इसके लिये तैयार नहीं होगा।'

"'क्यों नहीं?' उसने उत्तर दिया, 'तुम्हें इसके लिये दूर नहीं जाना है क्योंकि ऐसा आदमी तुम्हारे सामने ही बैठा है। वह आदमी मैं हूं।'

"मैंने कहा:

"'तुम अवश्य ही मजाक़ कर रहे हो?'

"पर वह अचानक उठा और बोला:

"'नहीं, मैं मजाक़ नहीं कर रहा हूं और यदि तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो मेरी परीक्षा ले लो।'

"'मैं तुम्हारी परीक्षा कैसे लूं?' मैंने पूछा।

"'बहुत आसानी से। क्या तुम यह जानना चाहते हो कि मेरे पास क्या गुण है? क्योंकि, भाई, मेरे पास एक महान शक्ति है: जैसा तुम्हें पता है, मैं नशे में हूं... मैं पिये हुए हूं या नहीं?'

"मैंने उसकी ओर देखा—उसका चेहरा बैंगनी हो गया था, वह बिल्कुल उन्मत्त दिखता था और उसकी टांगें अस्थिर हो रही थीं।

"'हां, अवश्य ही, तुम पिये हुए हो,' मैंने कहा।

"परन्तु उसने जवाब दिया:

"'तो अब उस प्रतिमा की ओर देखो और ईश्वर की प्रार्थना करो।'

"मैं प्रतिमा की ओर देखते हुए केवल एक बार ही प्रार्थना कर पाया था, जबकि उस पियक्कड़ सज्जन ने मुझे फिर कहा:

"'अब मेरी ओर देखो: मैं पिये हुए हूं या नहीं?'

"मैं फिर घूम गया: वह वहां मुस्कराता हुआ खड़ा था और इतना संजीदा दिखने लगा मानो उसने कभी पिया ही न हो।

"मैंने कहा:

"'इसका क्या अर्थ हुआ? इसका क्या रहस्य है?'

"'यह कोई गोपनीय बात नहीं है,' उसने उत्तर दिया, 'यह कुछ ऐसी चीज है जिसे चुम्बकत्व कहते हैं।'

"'यह क्या होता है?' मैंने पूछा।

"'यह एक निश्चित इच्छा-शक्ति होती है जो किसी आदमी को मिली हुई होती है,' उसने कहा, 'और इसे वह शराब पीने से अथवा नींद में भी नहीं खो सकता है क्योंकि यह एक वरदान है। मैंने तुम्हें इसका दर्शन करा दिया है, ताकि तुम यह समझ सको कि यदि मैं चाहूं तो इसी मिनट पीना बंद कर सकता हूं और कभी भी पिऊंगा नहीं परन्तु मैं नहीं चाहता हूं कि कोई आदमी मेरे बजाय पीना शुरू करे, जब कि मैं अपने सुधरे आचरण से ईश्वर को फिर भूल जाऊंगा। पर मैं एक ही मिनट में किसी आदमी की पीने की लालसा को मिटा सकता हूं।'

"'तो फिर मुझ पर कृपा करो और मुझको इस ऐब से मुक्त कर दो।'

"'क्या तुम पीते हो?'

"'हां, वास्तव में मैं पीता हूं,' मैंने कहा, 'कभी कभी मैं बहुत पी लेता हूं।'

"'कोई डरने की बात नहीं है,' उसने कहा, 'यह तो मेरे हाथ की बात है और मैं तुम्हारे इस पिलाने के बदले में तुम्हें कुछ वापस देना भी चाहता हूं। मैं तुमसे इस ऐब को बिल्कुल हटा दूंगा।'

"'हां जी, ऐसी ही कृपा कीजिये, मेरा तुमसे यही निवेदन है। मुझे इससे मुक्त करा दीजिये।'

"'बड़ी खुशी से, मेरे प्यारे साथी,' उसने कहा, 'बहुत खुशी से मैं ऐसा करूंगा क्योंकि तुमने मेरी खातिरदारी की है। मैं इस इच्छा को तुमसे हटाकर अपने पर ले लूंगा।'

"इसके साथ ही उसने शराब के और दो गिलास मंगाये।

"'तुम दो गिलासों का क्या करोगे?' मैंने पूछा।

"'एक मेरे लिये और एक तुम्हारे लिये,' उसने उत्तर दिया।

"'पर मैं तो पीनेवाला नहीं हूं,' मैंने कहा।

"'खामोश! एक शब्द भी नहीं! तुम कौन हो, तुम एक बीमार आदमी हो।'

"'जो तुम्हारी मरजी,' मैंने कहा, 'मैं तुम्हारा मरीज हूं।'

"मुझे ऐसा लगने लगा कि यह वही आवाज नहीं थी और घोर अंधेरे में उसका चेहरा भी अजीब सा लगता था।

"'नजदीक आओ,' मैंने कहा और ज्यों ही उसने ऐसा किया, मैंने उसको कंधो से पकड़ लिया और उसकी ओर देखने लगा, परन्तु मैं यह पता न लगा सका कि वह कौन था। जब मैंने उसे छुआ तो अचानक अकारण ही मेरी स्मृति खो गई। फिर जो सब मैं सुन सका वह फ्रांसीसी भाषा में बड़बड़ा रहा था, 'दी-का-ती-ली-का-तो-पे,' और मैं इसमें कुछ भी न समझ पाया।

"'तुम क्या बड़बड़ा रहे हो?' मैंने पूछा।

"और उसने अपनी फ्रांसीसी में दोहराया:

"'दी-का-ती-ली-का-तो-पे।'

"'बंद करो यह मूर्खता व रूसी में मुझे बताओ कि तुम कौन हो क्योंकि मैं तो तुम्हें भूल चुका हूं।'

"उसने फिर कहा:

"'दी-का-ती-ली-का-तो-पे, मैं हूं चुम्बकत्व वाला जादूगर।'

"'अरे, तो यह तुम हो, दुष्ट कहीं के!' मैंने कहा। क्षण भर के लिये मैं यह याद करनेवाला ही था कि वह कौन है, पर ज्यों ही मैंने उसको और ध्यान से देखा तो पाया कि उसके दो नाक थे, बिल्कुल सही बात है, और जब मैं यह अचरज करने लगा था कि ऐसा क्यों है तो, यह भूल गया कि वह कौन था।

"'तुम्हारा नाश हो,' मैंने मन ही मन सोचा, 'तुम्हारे जैसा बदमाश कहां से यहां आ टपका?' मैंने फिर पूछा:

"'तुम कौन हो?'

"फिर उसने कहा:

"'चुम्बकत्व वाला जादूगर।'

"'शायद ही जाओ,' मैंने कहा, 'क्योंकि तुम स्वयं शैतान ही लगते हो।'

"'मैं बिल्कुल शैतान नहीं हूं,' उसने जवाब दिया, 'पर उससे कुछ-कुछ मिलता हूं।'

"मैंने उसके सिर पर घूंसा मारा जो उसे धक्का नहीं लगा और दूसरे कहा:

"यह कहता और मुझे थोड़ी देर में यह याद आता और ऐसा करते हुए मैं उसे पूछता:

"'ऐसा क्यों है कि मैं यह भूलता जाता हूं कि तुम कौन हो?'

"'यह तो मेरे चुम्बकत्व का प्रभाव है, पर तुम्हें इससे डरना नहीं चाहिए, यह जल्दी ही हट जायगा, पर इसी बीच में मुझे इसे एक बड़ी खुराक देने दो।'

"उसने मुझे मोड़ा, अपनी तरफ़ पीठ करते हुए मुझे घुमा डाला, मुझे गर्दन के पीछे से पकड़ लिया और मेरे बालों में अंगुलियां चलाने लगा। यह मुझे अटपटा सा लगा: मुझे ऐसा लगा कि वह मेरे सिर में घुसना चाहता था।

"'इधर देखो,' मैंने कहा, 'तुम जो भी हो, मेरे सिर के पीछे यह खुराफ़ात किसलिये कर रहे हो?'

"'चुपचाप खड़े रहो और एक मिनट इंतज़ार करो, करोगे न तुम?' उसने उत्तर दिया। 'मैं तुम्हारे में अपनी शक्ति का चुम्बकत्व भर रहा हूं।'

"'तुम्हारा बड़ा अहसान है कि तुम अपनी ताक़त मुझे सौंप रहे हो,' मैंने कहा, 'पर इस बात का क्या भरोसा है कि तुम मुझे लूटना नहीं चाहते हो?'

"इस बात से उसने इन्कार किया।

"'तो फिर मैं देखूंगा कि मेरा पैसा सही-सलामत तो है,' मैंने कहा।

"मैंने देखा—पैसा सुरक्षित था।

"'तो अब, मैं समझ सकता हूं कि तुम चोर नहीं हो,' मैंने कहा, पर इतने समय में मैं फिर यह भूल गया था कि वह कौन है और मैं यह भी याद न रख सका कि मैं उसे कैसे पूछता, क्योंकि वह मेरे अंतर में घुस गया था, और वह मेरी आंखों के द्वारा संसार को देख रहा था और मेरी आंखें उसके लिये साधारण शीशे थीं।

"'जाने उसने मुझे कैसी चाल में फंसाया है?' मैंने सोचा और उससे पूछा:

"'मेरी दृष्टि को क्या हो रहा है?'

"'तुम्हारे पास अपनी कोई दृष्टि नहीं है,' उसने कहा।

"'ऐसा क्या है जिसे मैं सहन नहीं कर सकूंगा?'

"'वही जो आकाशीय क्षेत्रों में घटित हो रहा है।'

"'*क्या है ऐसा!*' मैंने कहा, '*मुझे कुछ खास तौर से सुनाई नहीं दे पा रहा है।*'

"उसने जोर देकर कहा जिसे मैं सही तरीके से नहीं सुन पा रहा था और वह ईश्वरीय वाणी में बात करने लगा:

"'इसे सुनने पर,' उसने कहा, 'तुम उसीके क़दमों पर चलोगे जो सारंगी बजा रहा है, जो अपना सिर नीचा झुकाये संगीत पर अपने कान लगाये हुए है। और जो अपने हाथ से तार झनझना रहा है।'

"'यह तो कुछ नया है,' मैंने सोचा। 'वह जिस भांति बात कर रहा है यह तो पिये हुए आदमी को आवाज नहीं है।'

"फिर उसने मेरी ओर देखा और चुपचाप मुझ पर हाथ लहराता रहा और हर बार अपना विचार थोपता हुआ जोर देकर कहता रहा।

"'*सभी तार साथ में बज रहे हैं,*' *उसने कहा,* '*क्योंकि वे बड़ी कुशलता से बजाये जाते हैं जिससे सारंगी का संगीत बजता चला जाता है और वादक उसकी मधुरता का आस्वादन करता है।*'

"आप मेरी बात मानेंगे कि यह ऐसा ही था मानो मुझे कोई शब्द ही सुनाई न दिये हों पर जैसे मेरे कान के पास से जीवनदायी पानी बह रहा हो और मैंने अपने आप से कहा, 'क्या यह आदमी पियक्कड़ है? अरे, यह कैसी ईश्वरीय वाणी बोलता है।' उसी बीच मेरे सज्जन साथ ने मुलाक़ात करना छोड़कर मुझे कहा:

"'अभी इतना ही काफी है। जाओ और कुछ लाओ,' उसने कहा

"ऐसा कहते हुए वह झुक गया और काफी देर तक अपनी पतलून के जेब में कुछ ढूंढता रहा और आखिर उसने कोई चीज निकाली। मैंने उसे देखा तो वह एक छोटी सी चीनी की डली थी, पूरी मैल में भरी हुई, जो मेरा खयाल है कि उसके जेब में पड़े रहने से मैली हो गई थी। उसने अपने नाखूनों से उसका मैल साफ किया, उस पर फूंक मारी और मुझसे

खोलो।'

:' मैंने पूछा पर साथ ही अपना मुंह भी पूरा खोल

ऊपर अद्भुत शीशे के छोटे तारोंवाले मोमबत्तीदान थे। 'वाह,' मैं अचंभे में पड़ गया, 'यह किस तरह का मकान है? यह दुकान की तरह तो नहीं दिखता पर मेहमान-घर जैसा है,' पर यह किस ढंग का मकान था, यह अब तक मुझे पता नहीं लग पाया। ज्यों ही मैंने कान लगाया, मुझे एक दरवाजे में से एक गीत सुनाई दिया, एक कोमल मधुर गायन सीधा हृदय से आ रहा था और गानेवाले की आवाज घंटी की तरह स्पष्ट थी। मैं बिना हिले सुनता रहा और क्षण भर बाद ही दूर का एक दरवाजा खुला जिसमें से एक लम्बा सा जिप्सी निकला जो एक चौड़ा रेशमी पायजामा और एक छोटी मखमली जाकेट पहने हुए था। वह किसी को दूरवाले लालटेन के पास खास दरवाजे से जिसे मैंने पहले नहीं देखा था, पहुंचाने जा रहा था। फिर भी मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि मुझे पूरा भरोसा नहीं था कि वह घर के बाहर किसे पहुंचाने गया था, पर मुझे ऐसा ही लगा था कि वह मेरा चुम्बकत्व वाला जादूगर ही था और जिप्सी ने उसे जाते समय कहा:

"'अच्छा तो, मेरे प्यारे मित्र, पचास कोपेक के लिये नाराज मत होना, कल फिर आना और यदि हमें उससे कुछ लाभ हुआ, तो तुम्हें और मिलेगा।'

"इन शब्दों के साथ ही उसने दरवाजे को सिटकिनी लगायी और मेरी ओर तेजी से आया मानो उसने मुझे पहले देखा हो—उसने आईने के नीचे वाला दरवाजा खोला और कहा:

'हमारे घर में आपका स्वागत है, सेठ साहब। आइये और हमारे गाने सुनिये। हमारे यहां कुछ सुंदर गायक हैं।'

"उसने मेरे सामने चौड़ा दरवाजा खोल दिया और... मुझे न मालूम क्या हो गया, वहां सभी चीजें ऐसी जानी-पहचानी लगीं कि मुझे वह बिलकुल घर की तरह लगने लगा। कमरा बड़ा सा था, पर ऊंचाई में कम था, छत झुकी हुई-सी लग रही थी और बीचोंबीच एक बड़ा फ़ानूस सा लटक रहा था। चारों ओर अंधेरा और धुंधला सा हो रहा था, कारण तम्बाकू का धुंआ इतना घना था कि छत के नीचे के बड़े झाड़ की मोमबत्तियां टिम-टिम जलती हुई सी दिखाई दे रही थीं। गहरे धुएं के नीचे लोगों की एक बड़ी भारी भीड़ थी और उनके सामने एक जवान जिप्सी लड़की उसी आश्चर्यजनक आवाज में गा रही थी जो मैंने बाहर

"'पूसा!' और अपनी आँखों से मेरी ओर इशारा किया। उसने जिप्सी की ओर पलकें उठाईं। हाय राम! क्या पलकें थीं वे! वे लम्बी व काली पलकें अपने ढंग की निराली ही थीं जो उसके मुख पर नन्हीं चिड़ियों की भांति फड़फड़ा रही थीं। जब बूढ़े आदमी ने उसे चिल्लाकर हुक्म दिया तो उसकी आँखें भड़कती हुई सी दिखाई दीं मानों उसका सर्वस्व क्रुद्ध हो उठा हो। वह नाराज तो थी ही क्योंकि उसे मेरी मनुहार करने का हुक्म मिला था, पर उसने अपना फ़र्ज़ अदा किया, मेरे पास कुर्सियों की आख़िरी क़तारों के पीछे आई, नीचे झुकी और बोली:

"'मेरे प्यारे मेहमान, मेरे स्वास्थ्य के लिये पियो।'

"मुझे उसने ऐसा पूर्ण बंदी बना डाला कि मेरे पास उसे जवाब देने के लिये शब्द ही नहीं मिले—उसने मुझे तुरंत मोहित कर लिया अर्थात जब वह मेरी ओर थाली लिये झुकी तो मैंने उसके बालों में से चमकती हुई मांग को चांदी की लकीर की भांति उसके माथे पर देखा जो उसकी पीठ की ओर जाकर अदृष्ट हो गयी थी, मैं तो बिल्कुल पागल हो उठा और हतप्रभ सा रह गया। मैंने उसकी मनुहार पी और जाम में से देखता रहा पर यह नहीं कह सकता कि उसकी चमड़ी का रंग सांवला था या गोरा; मैं तो केवल यही देख पाया कि उसकी पतली चमड़ी के नीचे से लाल ख़ून का निखार धूप में एक बेर के भीतर की चमक की तरह लगता था और उसकी सुंदर कनपटी पर एक नस कंपकंपा रही थी।

"'तो यह है,' मैंने सोचा, 'वह वास्तविक सौंदर्य जिसे प्रकृति की पूर्णता कहते हैं। चुम्बकत्व वाले जादूगर ने सत्य ही कहा था—ऐसी सुंदरता एक घोड़े जैसी नहीं होती जो एक क्रयविक्रय का जानवर मात्र होता है।'

"मैं जाम ख़ाली कर गया और उसे ज़ोर से थाली पर रख दिया जब कि वह खड़ी देखती रही कि मैं उसके चुम्बन की क्या क़ीमत रखता हूं। मैंने अपने जेब में हाथ डाला पर उसमें बीस-पच्चीस पैसे के चांदी के सिक्कों के सिवा कुछ भी नहीं था, केवल कुछ छोटी रेज़गारी थी। 'यह काफ़ी नहीं होगा,' मैंने सोचा, 'ऐसी सुंदरी के लिये यह अनुपयुक्त उपहार होगा, साथ ही मैं भी दूसरों की नज़र में अपने आपको गिरा दूंगा।' मैंने कुछ सज्जनों को उस बूढ़े जिप्सी से कुछ कहते सुना, जो अपनी बात को धीमे से कहने की चेष्टा भी नहीं करते थे:

"'वासीली इवानोव, तुमने इस गंवार को पिलाने के लिये पूशा को क्यों हुक्म दिया? यह तो हमारी बेइज्जती है!'

"पर उसने उन्हें जवाब दिया:

"'सज्जनो, हमारे यहां हरएक मेहमान का स्थान है और उसे आदर मिलता है और मेरी बेटी अपने जिप्सी बुजुर्गों के रिवाज भली-भांति जानती है। आपको इससे कोई नाराजगी नहीं होनी चाहिए क्योंकि आप लोग अभी यह नहीं जानते कि एक आम आदमी सुंदरता और गुण की कितनी क़द्र कर सकता है। मैंने ऐसे कई उदाहरण देखे हैं, महोदय।'

"जब मैंने यह सुना तो मन ही मन सोचा:

"'तुम्हारा सत्यानाश हो! तुम क्या सोचते हो कि तुममे मुझसे अधिक अनुभूति है क्योंकि तुम अधिक धनी हो? जो होना है, वह होगा ही। मैं राजकुमार को पैसा बाद में दे दूंगा, परन्तु अभी मैं अपना अपमान न होने दूंगा और न मैं इस सुंदरी का अपनी कंजूसी से निरादर ही करूंगा।'

"इसी विचार के साथ मैंने अपने कोट के भीतर हाथ डाला, एक सौ रूबल का सफेद हंस गड्डी में से निकाला और उसे थाली पर रख दिया। जिप्सी लड़की ने फिर एक हाथ से थाली उठाते हुए दूसरे हाथ वाले सफेद रूमाल से मेरे होंठ पोछ दिये और उसने मेरे होठों को चूमा तो क्या बस थोड़ा सा छुआ और मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे होंठो पर कोई जहर लगा दिया हो और फिर वह चली गई।

"उसके जाने के बाद मैं वहीं खड़ा रह जाता पर वह बूढ़ा जिप्सी, पूशा का पिता, और दूसरा जिप्सी मुझे बांहों से खींचते हुए सबसे आगे ले आये और मुझे पुलिस के कप्तान और दूसरे बड़े आदमियों के पास लाकर बिठा दिया।

"मैं स्वीकार करता हूं कि यह मुझे अच्छा नहीं लगा और मै जाना चाहता था, पर वे मुझे नहीं जाने देते थे, उन्होंने मुझे ठहरने के लिये निवेदन किया और पूशा को बुलाया:

"'पूशा, प्यारे मेहमान को हमें छोड़कर न जाने दो।'

"वह मेरे पास आई और... केवल शैतान ही जानता है उसने अपनी उन आंखो से क्या किया: एक ही नज़र से उसने मुझे आसक्त सा कर डाला।

पर अचानक ही उसका स्वर बदल गया जब उसने तारे से
नय की:

"'दिवस के हे दूत प्यारे! ओ प्रभाती रम्य तारे! मानवी दुख तू
तारे। ओ सदा मेरे सहारे!..' फिर एक और गाना हुआ:

ज-ला-ला, ज-ला-ला,
ज-ला-ला, भ्रिंगाला!
ज-ला-ला, भ्रिंगाला।
हे वा चेपुरींगाला!
हे होप-हो, ता हारा!
हे होप-हो, ता हारा!..

फिर पूशा प्याली लिये शराब की मनुहार करती हुई घूमने लगी
चुम्बन देने लगी, इसलिये मैंने उसे एक और हस निकालकर
। लोग मेरी तरफ कनखियों से देखने लगे, क्योंकि मेरी शानदार
ने उनकी ग्राबरू को लज्जित कर दिया था, और मेरे बाद वे
रखते हुए शरमाने लगे, पर मुझे इसका कोई भी पछतावा नहीं
मैं तो वही दिखाना चाहता था जो मैं अपने दिलोजान से महसूस
रहा था और मैंने वही किया। हर बार जब पूशा ने गाना गाया
उसके गाने के लिये हंस दिया करता, जल्दी मैं हस नोटों की गिनती
भूल गया और एक के बाद एक हस देता गया जिससे जब भी कोई
उससे गाने के लिये कहता तो वह यही कहकर टाल देती थी कि
थक गई' है, पर मैं बूढ़े जिप्सी को सिर से इशारा करता तो उसका
होता 'क्या तुम उसका गाना नहीं सुनवा सकते?' और वह उसकी
अपनी नज़र घुमाता और वह दूसरा गाना गा देती। उसने खूब
हर गाना पिछले से अधिक मोहक, और मैं उस पर बिना गिने
की वर्षा करता ही गया, जबकि आखिर–न मालूम वह क्या वक्त
होगा, पर रात बीत चली थी–वह सचमुच थककर चूर हुई सी
थी। उसने कुछ सार्थक सी नज़र मेरी ओर फेंकी और गाना शुरू
'चले आओ ना, सताओ ना, देखो ना, ज़रा नज़रों से दूर मेरी
ओ ना।' ये शब्द मुझे रवाना करने के लिये ही लगते थे, पर लगे
कर उसने पूछते हुए कह डाला: 'लेलो ज़रा मेरे सिंह जैसे दिल

से, जरा आजमाओ यह शोख ताकत जो तुम्हीं पर सितम ढा रही है।' इसलिये मैंने उसे एक और हंस दिया! उसने मुझे फिर से चुम्बन दिया, मानों अनिच्छा से वह मुझे डस रही थी और उसकी आंखें शोले जैसी भड़क रही थीं! इस नापाक घड़ी में दूसरे जिप्सी एक विदाई के सहगान में मशगूल हो गये थे:

> अरे, समझो मेरे प्यार को, संभालो मेरे प्यार को,
> मेरे प्यारे मान लो है जादू तेरा यार वो...

और सब वही सहगान गाने लगे, ग्रूशा की ओर देख रहे थे और मैंने भी मन में गुनगुनाते हुए उसकी ओर देखा, 'अरे, समझो मेरे प्यार को...' और फिर जिप्सियों ने जोर से शुरू किया, 'नाचे घर! नाचे झोंपड़ी! नहीं जगह सोने की उस्ताद को यार...' और तभी वह सहगान एक सामूहिक नाच में बदल गया—जिप्सी लोग व उनकी लड़कियां सभी नाचने लगे, सभी बड़े लोग नाचने लगे, एक दायरे में सभी घूमने लगे मानो सारा घर ही सचमुच नाचने लगा हो। जिप्सी लड़कियां अभिजात लोगों के आगे नाच रही थीं और वे उनके पीछे दौड़ने लगे, नौजवान सीटी बजाते हुए और बूढ़े आदमी खांसते हुए... मैंने चारों ओर देखा कि कोई भी आदमी अपनी जगह पर नहीं बैठा था। पक्की उम्र वाले लोग भी, जिनसे ऐसे मसखरेपन की आशा नहीं थी कि वे इस हुल्लड़ में शरीक होंगे, उन्होंने भी अपनी जगहें छोड़ दी थीं। कुछ ही कुछ अधिक अभिजात लगनेवाले लोग बैठे रहे जो शायद उस हुल्लड़ में शामिल होने में लज्जा का अनुभव करते थे—वे केवल उनके करतब को देखते हुए अपनी आंखें नचाते रहे या अपनी मूंछों को चबाते रहे जब तक कोई भूत उनके कंधों को हिलाने लगा और दूसरा उनके हाथ खींचने लगा और वे उछलकर अपने पांव ऐसे फेंकने लगे जो बड़ा अजीब लगता था चाहे वे नाचना न जानते हों। पुलिस का कप्तान जिसकी कमर बहुत चौड़ी थी और जिसकी दो विवाहित लड़कियां थीं, वह अपने आसामियों के साथ नाच में शामिल हो गया और कमरे में जोर से उसके तलवे पटकता हुआ मछली की तरह सांस भर रहा था; इस ही एक बनावटी दिखावे का अफसर, एक सुन्दर छरहरा नौजवान कप्तान अपने करतब दम के साथ रहा था: उनके पांव हवा में जाते थे

लग रहे थे, वह दूसरों के आगे डींग मार रहा था, वह नृत्य में बैठता और उठता जा रहा था, प्रदर्शन करता हुआ, हर बार जब पूशा के पास पहुंचता अपने माथे को ज़ोर से हिलाकर अपनी टोपी उसके पांवों में फेंकता और चिल्लाता, 'इस पर क़दम रखो, इसे कुचलो, मेरी सुंदरी!' और वह... कैसी नर्तकी थी वह! मैंने अभिनेत्रियों को रंगमंच पर नाचते हुए देखा है पर उनके नाच किसी कल्पनाशून्य परेड के मैदान में दिखावट के लिये उछल-कूद करते हुए अफसर के घोड़े से लगते थे! पर यह रानी कैसे नाचती थी—एक हंसिनी की भांति तैरती हुई सी, एक दफ़ा भी न चूकती हुई, और यदि तुम उसके अंतर में सुनते, उस नागिन के अंतर में, उसके तन्तु चटख रहे थे और उसका अनुमस्तिष्क एक हड्डी से दूसरी हड्डी तक बहता हुआ सा लग रहा था और फिर वह एकदम रुक जाती, उसकी कमर सीधी, एक कांपता हुआ सा कंधा और उसकी आंख की पलक उसके पांव के अंगूठे की सीध में। कैसा चित्र था वह! उसके नृत्य से कमरे में हर आदमी अपनी सुध-बुध खोये जा रहा था, सभी तो उसकी ओर खिंचे जा रहे थे, कुछ लोगों की आंखों में आंसू थे, कुछ दांत पीस रहे थे, पर सभी चिल्ला रहे थे:

"'हमारा सर्वस्व ले लो पर नाचो!'—वे अपना पैसा उसके पैरों में फेंकते, कुछ सोने के सिक्के फेंक रहे थे, दूसरे नोट। नाचनेवाली की भीड़ लगातार बढ़ती ही गई, केवल मैं ही बैठा रह गया था लेकिन मैं नहीं जानता था कि कितनी देर तक यह सह सकता था कि वह उस रिसाला अफसर की टोपी पर किस तरह क़दम रखती जा रही थी। वह उस पर क़दम रख रही थी और शैतान मेरे दिल को नसें खींच रहा था, वह फिर से उस पर क़दम रखती और वह उसे फिर खींच लेता, आखिर मैंने मन ही मन यह कहा, 'मैं स्वयं को इतना क्यों सताऊं? मैं अपनी आत्मा को उसकी मरज़ी के मुताबिक़ खुश होने दूंगा।' इसलिये मैं उछल पड़ा व रिसाला अफसर को मैंने रास्ते में से हटा दिया और नाच करता हुआ पूशा के सामने आ बैठा। यह पक्का करने के लिये कि वह रिसाला अफ़सर की टोपी पर दुबारा क़दम नहीं रखेगी मैंने एक तरकीब निकाली, 'तुम सब लोग केवल चिल्ला रहे हो कि तुम अपना सर्वस्व लुटाने की फ़िक्र नहीं करोगे,' मैंने सोचा, 'इससे मुझे कोई विस्मय नहीं होता है, पर मैं आपको दिखा दूंगा कि सचमुच इसका क्या अर्थ होता

लग रहे थे, वह दूसरों के आगे डींग मार रहा था, वह नृत्य में बैठता और उठता जा रहा था, प्रदर्शन करता हुआ, हर बार जब पूशा के पास पहुंचता अपने माथे को जोर से हिलाकर अपनी टोपी उसके पांवों मे फेंकता और चिल्लाता, 'इस पर क़दम रखो, इसे कुचलो, मेरी सुंदरी!' और वह... कैसी नर्तकी थी वह! मैंने अभिनेत्रियों को रंगमंच पर नाचते हुए देखा है पर उनके नाच किसी कल्पनाशून्य परेड के मैदान में दिखावट के लिये उछल-कूद करते हुए अफ़सर के घोड़े से लगते थे! पर यह रानी कैसे नाचती थी–एक हंसिनी की भांति तैरती हुई सी, एक दफ़ा भी न चूकती हुई, और यदि तुम उसके अंतर में सुनते, उस नागिन के अंतर में, उसके तन्तु चटख रहे थे और उसका अनुमस्तिष्क एक हड्डी से दूसरी हड्डी तक बहता हुआ सा लग रहा था और फिर वह एकदम रुक जाती, उसकी कमर सीधी, एक कांपता हुआ सा कंधा और उसकी आंख की पलक उसके पांव के अंगूठे की सीध में। कैसा चित्र था वह! उसके नृत्य से कमरे में हर आदमी अपनी सुध-बुध खोये जा रहा था, सभी तो उसकी ओर खिंचे जा रहे थे, कुछ लोगों की आंखों में आंसू थे, कुछ दांत पीस रहे थे, पर सभी चिल्ला रहे थे:

"'हमारा सर्वस्व ले लो पर नाचो!'–वे अपना पैसा उसके पैरों में फेंकते, कुछ सोने के सिक्के फेंक रहे थे, दूसरे नोट। नाचनेवालों की भीड़ लगातार बढ़ती ही गई, केवल मैं ही बैठा रह गया था लेकिन मैं नहीं जानता था कि कितनी देर तक यह सह सकता था कि वह उस रिसाला अफ़सर की टोपी पर किस तरह क़दम रखती जा रही थी। वह उस पर क़दम रख रही थी और शैतान मेरे दिल की नसें खींच रहा था, वह फिर से उस पर क़दम रखती और वह उसे फिर खींच लेता, आखिर मैंने मन ही मन यह कहा, 'मैं स्वयं को इतना क्यों सताऊं? मैं अपनी आत्मा को उसकी मरजी के मुताबिक़ लुप्त होने दूंगा।' इसलिये मैं उछल पड़ा व रिसाला अफ़सर को मैंने रास्ते मे से हटा दिया और नाच करता हुआ पूशा के सामने आ बैठा। यह पक्का करने के लिये कि वह रिसाला अफ़सर की टोपी पर दुबारा क़दम नहीं रखेगी मैंने एक तरकीब निकाली, 'तुम सब लोग केवल चिल्ला रहे हो कि तुम अपना सर्वस्व लुटाने की फ़िक्र नहीं करोगे,' मैंने सोचा, 'इससे मुझे कोई विस्मय नहीं होता है, पर मैं आपको दिखा दूंगा कि सचमुच इसका क्या अर्थ होता

है।' और मैं उसके सामने कूदकर जा पहुंचा और उसके पांवों के नीचे मैंने एक हंस निकालकर फेंका और चिल्लाया, 'कुचल डालो इसे, इस पर क़दम रखो!' पर वह नहीं कर रही थी, नहीं, यद्यपि मेरा हंस उसकी रिसाला टोपी से कहीं अधिक मूल्यवान था, फिर भी वह उसकी ओर नहीं देख रही थी पर अफ़सर के पीछे जाने की कोशिश कर रही थी; परन्तु बूढ़ा जिप्सी—मैं उसका धन्यवाद करता हूं—इसे बस पर देख चुका था और उसने अपना पांव पटका। ग्रूशा ने इशारा समझा और वह मेरे पीछे हो गई। वह मेरे पीछे जमीन पर आंखें गाड़े हुए चल दी पर ग़ुस्से से इतनी भभक रही थी कि उसने दंतकथा के अजगर की भांति सारी धरती को ही आंच पर चढ़ा दिया था, जब कि मैं उसके आगे एक भूत की तरह कूदता ही रहा और हर बार कूदते हुए मैं उसके पांवों के नीचे हंस फेंकता जाता था। मैं उसे इतने आदर से मानता था कि मैं अपने मन में यही दोहराता रहा, 'क्या तुमने ही, ओ अभिशप्ता, धरती और स्वर्ग की रचना नहीं की?' और मैं साहस के साथ उसकी ओर चिल्लाता, 'तेज़ी से चलो आओ, और तेज़ी से!' पूरे समय मैं उसकी ओर हंस फेंक रहा था जब तक अंत में मुझे अपने कोट की जेब में लगा कि अब लगभग दस हंस बच गये हैं। 'अच्छा,' मैंने सोचा, जहन्नुम में जायें ये!' और मैंने उनकी एक गेंद सी बनाई और उन्हें एक ढेर में उसके पांवों में फेंक दिया, मेज पर से एक शेम्पेन शराब की बोतल उठाई, उसकी टोंटी तोड़ डाली और चिल्लाया:

"'मेरे रास्ते से हट जाओ, मेरी प्राण-प्रिये, या मैं इसे तुम पर उंडेल दूंगा!' और एक ही बार में उसके स्वास्थ्य के लिये पी गया क्योंकि मैं नाच के बाद भयंकर रूप से प्यासा हो गया था।'"

अध्याय १४

"और उसके बाद क्या हुआ?" हमने ईवान सेवेर्यानिच से पूछा।

"इसके बाद सब कुछ उसके वादे के अनुसार होता गया।"

"किसके वादे के अनुसार होता गया?"

"कम्बख्त बाले आउंगर, के, जिस आदमी ने मुझ पर यह जादू

या था। उसने वादा किया था कि मुझे पीने की बुराई से छुटकारा ला देगा और उसने वैसा ही किया। उसने यह कमाल का काम किया क्योंकि तबसे मैंने एक बूंद भी शराब नहीं पी है।"

"पर आपने अपने राजकुमार से उन हंसों के लुटाने के बारे में क्या फैसला किया?"

"मैं खुद भी इस बारे में सही नहीं जानता हूं, पर यह सब बड़ी सरलता से हुआ। मुझे याद नहीं है कि मैं जिप्सी लोगों के यहां से घर कैसे वापस पहुंचा और न यही पता है कि मैं कैसे सोया पर मुझे याद है कि राजकुमार मेरे दरवाजा खटखटाये मुझे बुलाने आया। मैं लकड़ी की तिजोरी पर से उठना चाहता हो था जिस पर मैं सोया था, पर उसका सिरा नहीं पा सका और इसलिये उस पर से नहीं उठ सका। मैं लोटकर एक किनारे रेंगा, पर कोई सिरा नहीं था, मैं दूसरे किनारे पर मुड़ा, पर फिर सिरा नहीं मिला। राजकुमार मुझे पुकारता रहा, 'ईवान सेवेरियानिच' और मैंने जवाब दिया, 'अभी आया' और एक किनारे से दूसरे तक लोटता रहा फिर भी मुझे सिरा नहीं मिला। आखिर मैंने मन ही मन कहा, 'यदि मैं नहीं उतर सकूं तो मुझे कूद हो जाना चाहिए।' मैंने एक लम्बी हुई छलांग भरी, जहां तक संभव हो दूर कूदने के लिये, और कोई चीज मेरे चेहरे पर लगी, मेरे चारों ओर सब कुछ गूंजने लगा और जमीन पर गिरकर चकनाचूर हो गया और वही मेरे पीछे की ओर भी हुआ, अभी भी सब कुछ झनझना रहा था और जमीन पर चकनाचूर हो गया और राजकुमार की आवाज ने नौकर से कहा, 'रोशनी लाओ, जल्दी करो!'

"मैं चुपचाप खड़ा रहा क्योंकि मैं नहीं जानता था कि मेरे साथ यह सब वास्तव में हुई थी या सपने में – मेरा विश्वास था कि मैं अभी अपनी तिजोरी के सिरे पर नहीं पहुंचा, पर जब नौकर रोशनी लेकर आया तो मैंने देखा कि मैं फर्श पर खड़ा था और मैंने मालिक की अलमारी के शीशे में अपना सिर दे दिया था और उसका सारे बिल्लौरी काच के बर्तन तोड़ डाले थे..."

"आप इस तरह कैसे खो गये थे?"

"बड़ी सरलता से: मैंने सोचा, मैं हमेशा की तरह तिजोरी पर सोया था, पर जब मैं जिप्सी लोगों के यहां से लौटकर आया, मैं फर्श

पर ही लेट गया था और सिरे ढूंढने के लिये इधर-उधर लोट रहा था और तब, मैंने जो छलांग लगाई तो अलमारी से जा टकराया था। मेरा कमरे में घूमना उस कुम्बकरण वाले जादूगर के कारण था: उसने मेरे पियक्कड़ शैतान को खदेड़ दिया था और उसकी जगह पर मुझमें आवारा शैतान घुसा दिया था। तब मुझे उसके ये शब्द याद आये, 'ध्यान रखना' उसने कहा था, 'कहीं यह तुम्हारे लिये अधिक बुरा न हो यदि तुम पीना छोड़ दोगे,' और मैं उसे ढूंढता हुआ बताने गया कि अच्छा होगा यदि वह मुझे अपनी पुरानी हालत में कुम्बकरण का प्रभाव हटाकर ला देता, पर मुझे बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपने पर बहुत कुछ जिम्मा ले लिया था और उसे सहन करना असंभव सिद्ध हो चुका था, उसने उस रात जिप्सी लोगों के घर के सामने वाले शराबखाने में इतनी अधिक पी ली थी कि वह मर ही गया।"

"तो आप कुम्बकरण के प्रभाव में ही रह गये?"

"हां, मैं ऐसे ही रह गया।"

"और क्या कुम्बकरण का असर आप पर लम्बे समय तक रहा?"

"लम्बे समय तक ही क्यों? यह असर तो सम्भवतः आज तक भी कुछ पर है।"

"यह जानना काफी दिलचस्प होगा कि आपने राजकुमार से पैसे [illegible] किया। अवश्य ही तुम उन हंसों की वजह से बड़ी मुसीबत में रहे हो?"

"यह कोई खास बात नहीं थी। राजकुमार भी ताश में हारने के [illegible] था और उसने मुझसे पैसे के लिये पूछना शुरू किया ताकि फिर से अपना भाग्य आजमाये।

"'यह बात छोड़ दीजिये,' मैंने कहा, 'मेरे पास अब नहीं है।'

"[illegible], मैं [illegible] कर रहा हूं कि मैंने कहा:

"'यह सच है, [illegible] हुए [illegible] तो मैं [illegible] कर [illegible]।'

[illegible] में [illegible] ?' उसने पूछा।

[illegible] किसी लड़की के लिये [illegible]...' मैंने कहा।

[illegible] नहीं किया, तब मैंने कहा:

"'यदि आप चाहें तो मत करें विश्वास मेरा, परन्तु मैं आपसे सही
ह रहा हूं।'

"इस पर उसे क्रोध आया और वह बोला :

"'दरवाजा बंद करो और मैं तुम्हें दिखाता हूं कि सरकारी पैसा
र्द करना कैसा होता है।' पर अचानक उसका दिमाग़ बदल
ा और उसने कहा, 'कोई बात नहीं, मैं भी तुम्हारे जैसा ही
निवाला हूं।'

"वह अपने कमरे में सोने के लिये वापस चला गया और मैं घास
कोठी में जाकर सो गया। जब मैं दुबारा अपने होश में आया तो मैंने
ने आपको अस्पताल मे पाया और मुझे कहा गया कि मुझे मद्यज प्रलाप
दौरे आते रहे थे और मैंने अपने आपको फांसी देने की कोशिश की
, पर भगवान का धन्यवाद है कि लोगों ने मुझे जकड़जामे में बांध
ा। जब मैं ठीक हुआ तो राजकुमार से मिलने उसके गांव मे गया,
कि तब तक वह सेना से अवकाश प्राप्त कर चुका था और मैंने उसे
:

"'महाराज, मैं जब तक आपकी रक़म वापस न चुका दूं, आपके
काम करना चाहता हूं।'

"पर उसने कहा :

"'तुम जाओ जहन्नुम में।'

"मैंने देखा कि वह मुझसे बड़ा नाराज़ था, इसलिये मैं उसके निकट
और सिर नीचा किये हुए उसके सामने खड़ा रहा।

"'इसका क्या मतलब है?' उसने पूछा।

"'कम से कम मेरी अच्छी पिटाई तो कर डालिये,' मैंने कहा।

"पर उसने जवाब दिया :

"'पर तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मैं तुम से नाराज़ हूं? शायद
ह सोचता ही नहीं हूं कि इसमें तुम्हारा कोई दोष था।'

"'दया करो,' मैंने कहा, 'यदि मैंने वह सब पैसा ऐसे फेंक दिया
मैं कैसे दोषी नहीं हूं? मैं खुद जानता हूं कि मेरे जैसे बदमाश का
पर लटकाना ही ठीक होगा।'

"परन्तु उसने जवाब दिया :

पर ही लेट गया था और सिरे ढूंढ़ने के लिये इधर-उधर लोट रहा था और तब, मैंने जो छलांग लगाई तो अलमारी से जा टकराया था। मेरा कमरे में घूमना उस चुम्बकत्व वाले जादूगर के कारण था: उसने मेरे पियक्कड़ शैतान को खदेड़ दिया था और उसकी जगह पर मुझमें आवारा शैतान घुसा दिया था। तब मुझे उसके ये शब्द याद आये, 'ध्यान रखना' उसने कहा था, 'कहीं यह तुम्हारे लिये अधिक बुरा न हो यदि तुम पीना छोड़ दोगे,' और मैं उसे ढूंढ़ता हुआ बताने गया कि अच्छा होता यदि वह मुझे अपनी पुरानी हालत में चुम्बकत्व का प्रभाव हटाकर ला देता, पर मुझे बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपने पर बहुत कुछ जिम्मा ले लिया था और उसे सहन करना असंभव सिद्ध हो चुका था, उसने उस रात जिप्सी लोगों के घर के सामने वाले शराबखाने में इतनी अधिक पी ली थी कि वह मर ही गया।"

"तो आप चुम्बकत्व के प्रभाव में ही रह गये?"

"हां, मैं ऐसे ही रह गया।"

"और क्या चुम्बकत्व का असर आप पर लम्बे समय तक रहा?"

"लम्बे समय तक ही क्यों? यह असर तो सम्भवतः आज तक भी मुझ पर है।"

"यह जानना काफ़ी दिलचस्प होगा कि आपने राजकुमार से कैसे फ़ैसला किया। अवश्य ही तुम उन हंसों की वजह से बड़ी मुसीबत में रहे हो?"

"वह कोई खास बात नहीं थी। राजकुमार भी ताश में हारने के बाद आया था और उसने मुझसे पैसे के लिये पूछना शुरू किया ताकि फिर से अपना भाग्य आजमाये।

"'यह बात छोड़ दीजिये,' मैंने कहा, 'मेरे पास धन नहीं।'

"उसने सोचा, मैं मज़ाक कर रहा हूं पर मैंने कहा:

"'यह सच है, जब आप बाहर गये हुए थे तो मैंने ढेर कर डाली।'

"'तुम एक ही खेल में पांच हज़ार पैसे

"'हैं! पर अब तक किसी आदमी के

"मुझे खेद विश्वास नहीं किया

"'यदि आप चाहें तो मत करें विश्वास मेरा, परन्तु मैं आपसे सही कह रहा हूं।'

"इस पर उसे क्रोध आया और वह बोला :

"'दरवाज़ा बंद करो और मैं तुम्हें दिखाता हूं कि सरकारी पैसा बर्बाद करना कैसा होता है।' पर अचानक उसका दिमाग़ बदल गया और उसने कहा, 'कोई बात नहीं, मैं भी तुम्हारे जैसा ही लुटानेवाला हूं।'

"वह अपने कमरे में सोने के लिये वापस चला गया और मैं घास की कोठी में जाकर सो गया। जब मैं दुबारा अपने होश मे आया तो मैंने अपने आपको अस्पताल में पाया और मुझे कहा गया कि मुझे मद्यज प्रलाप के दौरे आते रहे थे और मैंने अपने आपको फांसी देने की कोशिश की थी, पर भगवान का धन्यवाद है कि लोगों ने मुझे जकड़जामे मे बांध दिया। जब मैं ठीक हुआ] तो राजकुमार से मिलने उसके गांव मे गया, क्योंकि तब तक वह सेना से अवकाश प्राप्त कर चुका था और मैंने उसे कहा :

"'महाराज, मैं जब तक आपकी रक़म वापस न चुका दूं, आपके यहां काम करना चाहता हूं।'

"पर उसने कहा :

"'तुम जाओ जहन्नुम में।'

"मैंने देखा कि वह मुझसे बड़ा नाराज़ था, इसलिये मैं उसके निकट गया और सिर नीचा किये हुए उसके सामने खड़ा रहा।

"'इसका क्या मतलब है?' उसने पूछा।

"'कम से कम मेरी अच्छी पिटाई तो कर डालिये,' मैंने कहा।

"पर उसने जवाब दिया :

"'पर तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मैं तुम से नाराज़ हूं? शायद मैं यह सोचता ही नहीं हूं कि इसमें तुम्हारा कोई दोष था।'

"'दया करो,' मैंने कहा, 'यदि मैंने वह सब पैसा ऐसे फेंक दिया तो मैं कैसे दोषी नहीं हूं? मैं खुद जानता हूं कि मेरे जैसे बदमाश का फांसी पर लटकाना ही ठीक होगा।'

"परन्तु उसने जवाब दिया :

"'हम इसके बारे में कर ही क्या सकते हैं, मेरे प्यारे दोस्त, यदि तुम एक कलाकार हो?'

"'मैं क्या हूं?' मैंने पूछा।

"'हां, मेरा मतलब यही है, मेरे प्यारे ईवान सेवेर्यानिच, मेरे सर्व-सम्मानित महोदय, तुम एक कलाकार हो।'

"'मैं नहीं समझ सका कि आप क्या बात कह रहे हैं?' मैंने कहा।

"'ऐसा न समझो कि मैं कुछ बुरी बात कह रहा हूं,' उसने कहा, 'मैं भी तो एक कलाकार हूं।'

"'मैं यह सही समझ सकता हूं,' मैंने मन में ही सोचा, 'केवल मैं ही तो ऐसा नहीं हूं जिसने इतनी पी हों कि मद्यज प्रलाप की हालत तक पहुंच गया हो।'

"पर वह उठ खड़ा हुआ, अपने पाइप को फ़र्श पर फेंक दिया और उसने कहा:

"'इससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि तुमने उस पर सारा पैसा न्योछावर कर दिया, जब मैंने, मेरे प्यारे दोस्त, मैंने तो उसके लिये मेरे पास जो कुछ भी है या कभी था उससे कहीं अधिक दे डाला।'

"मैं उसकी ओर केवल ताज्जुब में ही देखता रह गया।

"'पर मुझ पर दया करो, महाराज,' मैंने कहा, 'आप यह क्या कह रहे हैं? मुझे तो आपसे यह बात सुनते हुए भी डर लगता है।'

"'तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है,' उसने कहा, 'क्योंकि ईश्वर दयालु है और मैं इसका कोई न कोई रास्ता निकालूंगा ही, पर सच तो यह है कि मैंने जिप्सियों को उस ग्रूशा के लिये पचास हजार रूबल दे डाले हैं।'

"यह सुनकर मैं भौंचक्का सा रह गया।

"'क्या?! एक जिप्सी लड़की के लिये पचास हजार रूबल?! क्या थी वह नागिन इस लायक़?'

"'तो अब मेरे सर्व-सम्मानित महोदय,' उसने कहा, 'तुम कलाकार के बजाय मूर्ख की तरह अधिक बोल रहे हो। इसके लायक़ नहीं! क्यों स्त्री का मूल्य तो है समूचा संसार, क्योंकि वह तुम्हें ऐसा दाग दे

सकती है कि पूरा राज लुटाकर भी उसका कोई इलाज नहीं हो सकता, पर वह तुम्हारा इलाज एक मिनट में कर सकती है।'

"'हां,' मैंने सोचा, 'यह काफी सही है।' पर फिर भी मैंने अपना सिर हिलाते हुए कहा:

"'यह तो बड़ी भारी रकम है—पचास हजार।'

"'हां, हां,' उसने कहा, 'और इसे मत दुहराओ, क्योंकि मुझे इससे खूब खुशी हुई थी कि उन्होंने उसके लिये इतना ही स्वीकार किया क्योंकि मैं तो इससे भी अधिक दे सकता था। मैं उन्हें जो वे चाहते वह सब कुछ दे सकता था।'

"'आपको केवल जमीन पर थूक देना चाहिए था, बस यहीं सब खत्म हो जाता।'

"'मैं नहीं कर सकता था, मेरे प्यारे साथी,' उसने कहा, 'मैं जमीन पर नहीं थूक सकता था।'

"'क्यों नहीं?'

"'क्योंकि मैं उसकी सुंदरता और गुणों से इतना प्रभावित हो गया था कि या तो मैं अपना इलाज कराता या पागल हो जाता। पर मुझे सच-सच बताओ, वह सुंदर है, नहीं है क्या? अरे, यह सही है, नहीं है क्या? उसमें किसी आदमी को पागल करने की कुछ बात है, नहीं है क्या?'

"मैंने अपने होंठ काट लिये और खामोशी से सिर हिला दिया: यह काफी सही था।

"'क्या तुम जानते हो,' राजकुमार ने पूछा, 'कि मैं स्त्री के लिये स्वेच्छा से मर सकता हूं? क्या तुम यह समझ सकते हो कि मैं स्त्री के लिये मर मिट सकता हूं?'

"'क्यों, इसमें समझने की क्या बात है,' मैंने कहा। 'सौंदर्य तो प्रकृति की पूर्णता है।'

"'इससे तुम्हारा क्या अर्थ है?'

"'जैसे मैं समझता हूं, सौंदर्य प्रकृति की पूर्णता है,' मैंने कहा, 'और किसी आदमी पर यदि इसका जादू हो गया है तो उसके लिये मरना भी एक खुशी हो सकती है।'

"'तुम बड़े अच्छे आदमी हो, मेरे लगभग अर्ध-सम्मानित और महान-लघु-महत्वपूर्ण ईवान सेवेर्यानिच!' मेरे राजकुमार ने हर्ष से अभिभूत होकर कहा। 'यही तो बात है — मरना भी एक खुशी है और इसी कारण मैं इतना खुश हूं कि उसके लिये मैंने अपने जीवन को पूरा बदल दिया है: मैं सेना से अवकाश ले चुका हूं और मैंने अपनी जायदाद गिरवी रख दी है और भविष्य में मैं यहीं रहनेवाला हूं और किसीसे नहीं मिलूंगा बस केवल उसीका मुंह देखता रहूंगा।'

"यह सुनकर मैंने अपनी आवाज़ मंद कर ली और फुसफुसाते हुए कहा:

"'उसका मुंह देखता रहूंगा' से आपका क्या अर्थ है? क्या वह यहां है?'

"और उसने जवाब दिया:

"'तुम क्या सोचते हो? अवश्य ही, वह यहां है।'

"'क्या यह संभव है?' मैंने सांस खींचते हुए कहा।

"'ज़रा यहीं ठहरो और मैं अभी उसे यहां लाता हूं,' उसने कहा, 'तुम एक कलाकार हो और मैं उसे तुमसे नहीं छिपाऊंगा।'

"इसके साथ ही वह मुझे छोड़कर गया। मैं वहीं इंतज़ार करता रहा और मन ही मन सोचता रहा:

"'यह तो बुरा लक्षण है यदि तुम उसके सिवा किसी और का चेहरा भी न देखना चाहो: इससे तो तुम जल्दी ही उससे ऊब जाओगे।' मैंने ब्योरेवार विचार नहीं किया पर ज्यों ही मुझे पता लगा कि वह इसी घर में है मेरा शरीर ठंडा और गर्म होने लगा। 'क्या मैं सचमुच ही उसे देख सकूंगा?' मैं अचरज करने लगा। अचानक वे दोनों वहां आये: आगे-आगे राजकुमार था, एक हाथ में लाल फीते से बंधा हुआ गिटार लिए हुए और दूसरे हाथ से ग्रूशा को खींचते हुए, जिसके दोनों हाथ उसके हाथ में जकड़े हुए थे — अपना सिर झुकाये हुए वह आई, उसका प्रतिरोध करती हुई और उसकी ओर न देखती हुई, केवल उसकी लम्बी काली बरौनियां कुछ तितलियों के पंखों की तरह हिल रही थीं।

"राजकुमार इसे कमरे में लेकर आया, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लिया और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] से [illegible] दिया — उसकी [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिया और [illegible] [illegible]

उसकी बायीं कोहनी के नीचे लगा दिया था, गिटार का फीता उसके कंधों पर डाल दिया और उसने अंगुलियां तारों पर रखलीं। वह खुद फ़र्श पर नीचे उसके पास बैठ गया और उसने अपना सिर उसके साफ़, मुलायम चमड़े की जूती पर लगा लिया और मुझे भी बैठ जाने का इशारा किया।

"मैं दरवाजे के पास ही चुपचाप फ़र्श पर बैठ गया और वहां से मैं उसे देखता हुआ बैठा रहा। इतनी खामोशी थी कि मैं बीमार सा होने लगा और मैं चुपचाप उसी हालत मे बैठा रहा, जब तक मेरे घुटनों में दर्द होने लगा, पर हर बार मैंने जब देखा तो वह उसी तरीक़े से बैठी हुई थी और मैंने राजकुमार की ओर देखा तो पाया कि उसने भारी मानसिक दुख के मारे अपनी मूंछों के सिरे चबा डाले थे—परन्तु वह उससे एक शब्द भी नहीं बोल रहा था।

"मैंने सिर हिलाया, यह बताते हुए कि वह उसे गाने के लिये कहे और उसने मूक इशारे से कहा कि वह उसका कहना नहीं मानेगी।

"इस तरह हम दोनों फ़र्श पर बैठे ही रहे, जब वह अचानक रोने लगी मानो किसी प्रलाप में थी, उसकी बरौनियों मे आंसू भरे हुए थे और उसकी अंगुलियां गिटार के तारों पर भिड़ों की तरह छा और गूंज रही थीं। इतने में वह कोमल स्वर में गाने लगी जो ऐसा लगा मानो वह गा न रही हो बल्कि रो रही हो—'भले मानसो, मेरे दिल के दुखों को सुनो...'

"राजकुमार मुझसे फुसफुसाया, 'अच्छा?'

"जवाब में मैं फ़्रांसीसी में फुसफुसाया:

"'प्ती-बोमन्यो,' मैंने कहा और कुछ न कह सका, और उसी क्षण वह जोर से चिल्ला उठी, 'मेरी सुंदरता के लिये मुझे बेच डालेंगे, मुझे बेच देंगे,' और उसने घुटनों पर से गिटार को कमरे में दूर फेंक दिया, अपने सिर का रूमाल फाड़ डाला और खुद सोफ़े में औंधी गिर गई, उसका चेहरा उसके हाथों में था और वह फूट-फूटकर रोने लगी। राजकुमार व मैं, उसको रोते देखकर रोने लगे। राजकुमार ने हाथ में गिटार ले लिया पर वह गीत गाने के बजाय मानो एक भजन गाता हुआ कराहने लगा, 'यदि तुम प्यार की आग को पहचानो, मेरी

आत्मा विरह में व्याकुल है...' वह चीख पड़ा और रोने लगा। फिर वह सुबकते हुए गाने लगा, "मेरे बेचैन दिल को सहारा दे दो, अरे, दुखिया को जरा आराम चाहिए...' वह इतना अधिक दुखी हो गया था कि मैंने देखा कि वह उसके गाने और आंसुओं का खयाल करने लगी और कुछ अधिक शान्त व उदार हो गई—फिर अचानक उसने अपने चेहरे से हाथ हटा लिया और अपनी बांह एक मां की तरह कोमलता से उसके सिर पर रख दी...

"स्वाभाविक ही था कि मैं उस क्षण यह जान गया कि वह अपने दिल में दुखी हो रही थी व उसे आराम देने के लिये और राजकुमार के बेहद तड़प के मारे जलते हुए दिल को अच्छा करने के उपाय करने लगी थी, इसलिये मैं चुपचाप कमरे के बाहर चला गया।"

"फिर, मेरा खयाल है कि आखिर आप मठ में प्रविष्ट हो गये?" श्रोताओं में से एक ने पूछा।

"नहीं, तब नहीं, पर बाद में," ईवान सेवेर्यानिच ने जवाब दिया यह जोड़ते हुए कि उसे इस औरत के बारे में बहुत कुछ देखना व समझना बाक़ी था, अतः वह इस प्रपंच में फंसा रहा, अर्थात जब तक उसके भाग्य में जो बदा था वह गुज़र न चुका और उसकी क़िस्मत के लेखे पूरे न हुए।

श्रोताओं ने उससे पूरी की कहानी सुनाने के लिये निवेदन किया, चाहे रूपरेखा ही में ही सही और ईवान सेवेर्यानिच ने उनके निवेदन को मान लिया।

अध्याय १५

ईवान सेवेर्यानिच ने कहानी शुरू की, "आप जानते हैं कि मेरा राजकुमार दिल से एक भला आदमी था परन्तु उसका चरित्र अस्थिर था। यदि वह कोई चीज चाहता तो वह उसे तुरंत ही मिल जानी चाहिए थी, अन्यथा वह पागल सा हो उठता था और उस हालत में वह अपनी चाही हुई चीज पाने के लिये सब कुछ दे डालता परन्तु एक बार उसे पाने पर वह अपने सद्भाग्य का कोई मूल्य नहीं करता था। यही बात [illegible] के मामले में हुई; ग्रूशा के पिता और बाक़ी ज़िप्सी

लोगों को राजकुमार के चरित्र की काफी अच्छी जानकारी थी, जब उन्होंने उसकी इतनी भयंकर क़ीमत लगाई थी, जो उसकी जायदाद से कहीं अधिक थी, यद्यपि उसकी जागीर काफी अच्छी थी पर वह नष्ट हो रही थी। राजकुमार से जिप्सी लोगों ने जो नकद धन पूशा के लिये चाहा था, वह उसके पास नहीं था इसलिये उसे क़र्ज़ में डूबना पड़ा और सेना से इस्तीफ़ा करना पड़ा।

"उसकी आदतें जानते हुए मैंने यह अपेक्षा नहीं की थी कि इससे पूशा के लिये कुछ अच्छा हो सकेगा और वही हुआ। एक निश्चित समय तक तो वह उसके प्रति विनम्र और उदार रहा व उसे अपनी आंख से ओझल नहीं होने देना चाहता था और उसके बिना रहना मंज़ूर नहीं कर सकता था पर अचानक वह उसकी उपस्थिति में ही जम्हाइयां लेने लगा और वह मुझसे उसका साथ देने के लिये कहने लगा।

"'बैठ जाओ, वह कहा करता, 'और सुनो।'

"मैं एक कुरसी ले लेता, दरवाज़े के पास ही कहीं बैठ जाता और सुनता रहता। और यह प्रायः हुआ करता था कि जब वह उसे गाने के लिये कहता तो वह कह देती:

"'मैं किस के लिये गाऊं? तुम तो ठंडे से होने लगे हो और मैं अपने गाने से किसी आत्मा को भड़काना व फिर उसे सताना चाहती हूं।'

"इसलिये राजकुमार मुझे बुलवा लेता था और हम साथ-साथ सुनते थे—थोड़े समय के बाद पूशा उसे मुझको बुलवाने के लिये याद दिलाने लगी, वह मुझसे काफ़ी दोस्ती दिखाने लगी और उसके गाने के बाद मैं अक्सर उसके कमरों में राजकुमार के साथ चाय पीने के लिये बैठा रहता, यद्यपि मैं हमेशा किसी अलग मेज़ पर या कहीं खिड़की के पास बैठता था, जब कि राजकुमार के वहां न होने पर वह मुझे सरल भाव से अपने पास बिठा लेती थी। कुछ समय इसी ढंग से बीत गया पर मैं देख रहा था कि राजकुमार बहुत ज़्यादा चिन्तित सा रहने लगा था, जब एक दिन उसने मुझसे कह दिया:

'तुम जानते हो, ईवान सेवेर्यानिच, मेरे हालात ख़राब हो रहे

मैंने कहा:

"'आओ, हम कुछ घोड़ों के सौदे ही कर डाले,' उसने कहा। 'मै घोड़े पालनेवालों और रिसाले के अफसर को फिर से अपने घर पर बुलाना चाहता हूं।'

"घोड़ों का धंधा अच्छा तो है नहीं और न किसी सभ्य व्यक्ति के लिये ही है पर मैंने सोचा कि कोई हर्ज की बात नहीं है जब तक वह स्वयं ही इससे दुखी न हो जाय, ऐसा सोचकर फिर मैंने कहा:

"'जैसी आपकी इच्छा।'

"हम घोड़े खरीदने लगे, पर ज्यों ही हमने काम शुरू किया, राजकुमार अपने नये शौक मे फंस गया, वह धन इकट्ठा करके जल्दी ही घोड़ों की खरीद करने में लग गया, और बिना मेरी सलाह माने मनमानी करने लगा। हमने पूरा झुंड का झुंड ही खरीद डाला पर कोई बिक्री नहीं हुई। राजकुमार जल्दी ही इससे ऊब गया और उसने घोड़ो का व्यापार बंद कर दिया और जो भी उसके दिमाग़ मे आया वही करने लगा – पहले तो वह एक असाधारण आटे की कलचक्की बनाने के आवेश मे आ गया, फिर उसने एक घोड़ों के साज़-सामान की दुकान खोली, सभी मे उसे और ज्यादा नुकसान उठाने पड़े और क़र्ज़ बढ़ते ही गये पर अधिक गंभीर बात तो यह थी कि उसकी चिन्ताएं भी बढ़ती गई। वह कभी घर पर नहीं ठहरता था, एक जगह से दूसरी पर दौड़ता रहता, हर जगह हमेशा किसी चीज़ की फिराक में रहता, जब कि ग्रुशा अकेली बुरी हालत मे रहती थी, क्योंकि वह गर्भवती थी व उकता रही थी। 'मैं उन्हें शायद ही कभी देख पाती हूं,' उसने शिकायत की, पर उसने हमेशा ऊपरी हिम्मत दिखाने की कोशिश ही की: जैसे ही वह देखती कि वह घर पर एक दो दिन में ही ऊबने लगा है, वह खुद ही सुझाव दे देती:

"'तुम्हें कहीं जाना चाहिए, मेरे अमूल्य हीरे, और अपना मनोरंजन करना चाहिए। मेरे पास क्यों बैठते हो, मैं तो एक गंवार अनपढ़ स्त्री हूं।'

"ऐसे शब्दों से राजकुमार खुद ही लज्जित हो जाता और वह उसके हाथ चूमने लगता और फिर दो-तीन दिन उसे सहलाता रहता, लेकिन फिर ऊबकर चला ही जाता व कई दिनों तक ग़ायब हो जाता और उसे मेरे देखभाल में छोड़ जाता।

"'इसकी अच्छी तरह देखभाल करना, मेरे अर्ध-सम्मानित ईवान सेवेर्यानिच,' वह कहता। 'तुम एक कलाकार हो, मेरी तरह फ़िजूलखर्च नहीं हो, और ऊंचे स्तर के कलाकार हो, इसीसे तुम जानते हो कि उससे कैसे बातें करनी चाहिए और तुम एक दूसरे के साथ प्रसन्न भी रहते हो, पर उसकी उन "अमूल्य हीरे" वाली बातों से मैं ऊब गया हूं।'

"मैंने कहा:

"'आप इन बातों से क्यों ऊबते हैं? ये तो प्यार की बातें हैं।'

"'चाहे ये प्यार की बातें क्यों न हों पर साथ ही फूहड़ और उकतानेवाली हैं,' उसने कहा।

"मैंने इसके बाद कुछ भी न कहा पर ग्रूशा को बराबर संभालते जाता रहा: जब भी राजकुमार बाहर होता, मैं उसे मिलने के लिये दिन में दो बार जाता, उसके साथ चाय पीता और जितना मैं उसका दिल बहला सकता था, बहलाता।

"उसे मन-बहलाव की जरूरत थी, क्योंकि जब भी वह बात करती केवल शिकायतें ही किया करती।

"'मेरे प्यारे ईवान सेवेर्यानिच,' वह कहती, 'मेरे दोस्त, मुझ पर ईर्ष्या बुरी तरह हावी हो रही है।'

"मैं उससे किसी न किसी तरह की इधर-उधर की बातें करता रहता था।

"'इतनी चिन्ता क्यों करती हो?' मैं उसे कहता, 'चाहे वे कहीं भी जायं, वापस तुम्हारे पास आ तो जाते ही हैं न?'

"फिर वह चिल्ला उठती और अपनी छाती पीटती हुई कहती:

"'कृपा करके, मुझे सच बताइये, मेरे दोस्त, मुझसे कुछ भी मत छिपाओ—वे अपना समय कहां बिताते हैं?'

"'बड़े लोगों के साथ,' मैं कह देता, 'पड़ोसियों के साथ और शहर में।'

"'पर क्या कोई स्त्री नहीं है जो उन्हें मुझसे दूर रखती है?' वह पूछ बैठती। 'जरा बताओ मुझे, शायद मुझे जानने से पहले वे किसी औरत से प्यार करते हों और उसके पास वापस चले गये हों, या उससे विवाह करना चाहते हों।' और जैसे ही उसने यह बात कही, उसकी ... चमकने लगीं जिससे वह मुझे भयावनी सी लगी।

"इसलिये जब मैं शहर पहुंचा तो सीधा उसी दयालु स्त्री के पास गया और मैंने कहा:

"'येवगेन्या सेम्योनोव्ना, महोदया, यदि आप आज्ञा दें तो मैं आपके घर में ठहरना चाहता हूं।'

"'मुझे बड़ी खुशी होगी,' उसने जवाब दिया, 'पर तुम राजकुमार के घर में क्यों नहीं ठहरते हो?'

"'क्या वे यहां शहर में हैं?' मैंने पूछा।

"'हां,' उसने जवाब दिया, 'वे यहां एक सप्ताह से अधिक समय से हैं, कुछ न कुछ काम कर रहे हैं।'

"'उन्होंने अब क्या सोचा है?' मैंने कहा।

"'वे एक कपड़े का कारखाना,' उसने कहा, 'किराये पर लेना चाहते हैं।'

"'हे ईश्वर!' मैंने चिल्लाकर कहा, 'उनके दिमाग में यह क्या खब्त सवार हुई है?'

"'क्यों,' उसने पूछा, 'क्या यह बुरा है?'

"'यह बुरा तो नहीं है,' मैंने कहा, 'मुझे आश्चर्य जरूर हुआ है।'

"वह मुस्कुराई।

"'यह कोई सचमुच अचरज की बात नहीं है,' उसने कहा, 'पर उससे भी अनोखी बात तो यह है: राजकुमार ने आज मुझे एक पत्र भेजा है जिसमें मुझे लिखा है कि आज मैं उनकी अगवानी करूं और वे अपनी पुत्री को भी देखना चाहेंगे।'

"'और महोदया, येवगेन्या सेम्योनोव्ना, क्या आपने उन्हें आने की अनुमति दे दी?'

"उसने अपने कंधे हिला दिये।

"'क्यों नहीं? उन्हें आना ही चाहिए और अपनी बेटी को देखना ही चाहिए।' उसने आह छोड़ी और अपना सिर झुकाकर बैठी रही, विचारों में खोई हुई। वह अब भी काफी जवान, सुंदर और तगड़ी थी और उसका व्यवहार भी पूजा से कितना भिन्न था... अपने 'अमूल्य हीरे' के सिवा पूजा कुछ भी नहीं जानती थी, और वह कितनी प्यारी थी। पूजा के कारण मुझे इससे जलन होने लगी।

"'ओह!' मैंने मन में ही सोचा, 'मुझे संदेह है कि अब वह अपनी

बेटों से मिलने आयेगा तो कहीं वह तुम्हारी ओर नजर उठाकर न देखे। क्योंकि तब पूशा के लिए कुछ भला होनेवाला नहीं है।' मैं बच्चों के कमरे में बैठा हुआ इस पर विचार कर ही रहा था कि जब येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने आया से कहा था कि मुझे चाय पिला दे; तभी अचानक मैंने दरवाजे की घंटी की आवाज सुनी और एक नौकरानी भीतर आकर आया से बोली:

"'राजकुमार आ गये हैं!'

"मैं रसोई में जाने ही वाला था पर आया, तत्याना याकोव्लेव्ना, जो मास्को की एक बातूनी बुढ़िया थी और जो गप्प लगाना पसंद करती थी और किसी श्रोता को छोड़ना नापसंद करती थी, मुझसे बोली:

"'मत जाओ, ईवान मोटे सिरवाले, चलो वहां शृंगार के कमरे में, वहाँ आलमारी के पीछे बैठे तुम चाय पीते रहना। वह उसको भीतर नहीं लायगी और हम दोनों आपस में घुल-मिलकर बातें करेंगे।'

"मैं इसके लिये राजी हो गया क्योंकि मैं इस बुढ़िया तत्याना याकोव्लेव्ना से पूशा के लिये उपयोगी कुछ बातें मालूम कर सकता था। येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने रम शराब की एक छोटी सुराही मुझे दी थी तो मैंने निश्चय किया कि चूंकि मैंने पीना छोड़ दिया है, तो इसे प्यारी बुढ़िया को उसकी चाय के साथ दूंगा, ताकि भगवान उसका भला करे, वह मुझे कुछ बता दे जिसे वह अन्यथा कभी बतानेवाली नहीं थी।

"हम बच्चों के कमरे से आकर शृंगार के कमरे की आलमारी के पीछे बैठ गये, जो बड़ी संकरी थी, सच कहा जाय तो वह एक गलियारा सा ही था जिसके एक सिरे पर दरवाजा था जो सीधा उस कमरे में जाने के लिये था जहाँ येवगेन्या सेम्योनोव्ना राजकुमार का स्वागत कर रही थी और उसके ठीक पीछे थी और सोफा था जिस पर वे बैठे हुए थे। संक्षेप में, यह बंद दरवाजा ही मुझे उनसे अलग किये हुए था जिसकी दूसरी तरफ परदा लगा हुआ था, इसलिये मैं उनकी बातचीत का एक-एक शब्द सुन सकता था।

"राजकुमार भीतर आये और कहने लगे:

"'नमस्ते, मेरी पुरानी और विश्वासपात्र दोस्त!'

"और उसने जवाब दिया:

"'नमस्कार, राजकुमार! आपका पधारने का क्या उद्देश्य है?'
"और वह बोला:
"'हम इस बारे में बाद में बात करेंगे, पर पहले मेरा अभिवादन स्वीकार करो और मुझे तुम्हारा मस्तक चूमने दो।' और मैं उसके माथे पर किया हुआ चुम्बन सुन सकता था और फिर उसने अपनी बेटी के बारे में पूछा। येव्गेन्या सेम्योनोव्ना ने उसे बताया कि वह घर में ही है।
"'कैसी है?'
"'अच्छी है।'
"'अवश्य बड़ी हो गई होगी?'
"वह हंस पड़ी और बोली:
"'यह तो स्वाभाविक ही है कि वह बड़ी हो गई है।'
"'आशा है तुम उसे मुझे दिखानेवाली हो?' राजकुमार ने कहा।
"'क्यों नहीं,' उसने कहा, 'मुझे बड़ी खुशी होगी!' और वह उठी, बच्चों के कमरे में गई और उसने आया तत्याना याकोव्लेव्ना को बुलाया, जो मेरे साथ चाय पी रही थी।
"'आया मेहरबानी करके लूदा को राजकुमार के पास लाओ,' उसने कहा।
"तत्याना याकोव्लेव्ना ने खीझकर थूक दिया और वह तश्तरी मेज पर रखती हुई बोली:
"'तुम सब का नाश हो, मैं तो अभी अच्छे आदमी से मीठी बातें कर रही थी और तुमने मुझे बुला लिया और मेरा सारा मज़ा किरकिरा कर दिया।' उसने मुझे जल्दी से अपनी मालकिन की कुछ पोशाकों से ढांप दिया जो दीवार पर लटक रही थीं और बोली, 'चुपचाप बैठे रहो।' फिर वह बच्ची को लाने चली गई जब कि मैं आलमारी के पीछे बैठा सब सुन रहा था कि किस तरह राजकुमार ने बच्ची का दो दफा चुम्बन लिया और उसे अपनी गोद में बिठाया।
"'क्या मेरी बिटिया, मेरी गाड़ी में सैर करेगी?' उसने उसे पूछा।
"लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया और राजकुमार ने येव्गेन्या से कहा:

"'ज़रा मेहरबानी करके,' उसने कहा, 'इसे मेरी गाडी मे आया के साथ बाहर जाने के लिये कहिये।'

"येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने उसे कुछ फ्रासीसी मे कहा, कि क्यो और किस लिये पर उसने कुछ ऐसा ही कहा—'अत्यंत आवश्यक' और इस प्रकार कुछ फ़िकरे कहते हुए येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने उदासीन भाव से आया से कहा:

"'इसे कपड़े पहनाकर घुमा के लिये ले जाओ।'

"आया और बच्ची सवारी के लिये चल दिये और वे दानो वहीं रहे और मैं भी छिपकर उनकी बातें सुनता रहा, क्योंकि मै अपनी छिपने की जगह को नहीं छोड़ सकता था। इसके अलावा मैंने अपने आप से कहा, 'अब वह समय आ गया है जब मैं सारी बात का पता लगा लूंगा कि तूशा के लिये कौन बुरी बातें सोचता है।'

अध्याय १६

"एक बार उनकी बातें सुनने का विचार होने पर मैं नहीं रुका। मैंने अपनी आंखों से यह प्रत्यक्ष देखने का निश्चय कर लिया और सब प्रबंध कर लिया—मैं एक तिपाई पर चुपचाप चढ़ गया और मैंने दरवाज़े की चौखट में एक सूराख पाया जिस पर मैंने बड़ी उत्सुकता से अपनी आंख लगा ली। मैंने राजकुमार को सोफे पर बैठे हुए देखा और महिला खिड़की के पास खड़ी हुई थी, जो शायद अपनी बच्ची को गाड़ी में बैठते हुए देख रही थी।

"गाड़ी चल दी और वह राजकुमार की ओर बढ़ी और बोली:

"'राजकुमार, आपने मुझे जिस बात को करने के लिये कहा था मैंने सब कर दिया है, इसलिये अब आप बताइये आप किस काम से आये हैं।'

"और उसने उत्तर दिया:

"'छोड़ो काम—काम कोई भालू तो है नहीं जो जंगल में भाग जायगा। इधर आओ और मेरे पास बैठो और ज़रा बातें करें जैसे हम पहले किया करते थे।'

"येवगेन्या सेम्योनोव्ना अपने हाथों को अपनी पीठ के पीछे लगाये

खड़ी रही, खिड़की का सहारा लेती हुई और भौंहें सिकोड़ती हुई। राजकुमार ने निवेदन किया:

"'ऐसी भी क्या बात है? आओ, मेरा निवेदन है, मैं तुमसे बातें करना चाहता हूं।'

"उसने मान लिया और उसकी ओर बढ़ी, यह देखकर उसने मज़ाक करते हुए कहा:

"'आओ ज़रा मिलकर बैठें जैसे पहले बैठा करते थे,' और उसने उसका आलिंगन करने की कोशिश की पर उसने उसे एक ओर हटा दिया और बोली:

"'राजकुमार, मुझे आप अपना काम बताइये। आपको क्या चाहिए? मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं?'

"'हे भगवान!' राजकुमार ने कहा, 'क्या तुम बिना किसी भूमिका के मेरी सारी बात कहलवा लेना चाहती हो?'

"'अवश्य ही,' उसने कहा, 'सीधी तरह बताइये जो आपको चाहिए। हम तो पुराने दोस्त हैं, हैं न?'

"'मुझे पैसा चाहिए,' राजकुमार ने कहा।

"येवगेन्या सेम्योनोव्ना उसकी ओर देखती रही पर कुछ भी नहीं बोली।

"'पर बहुत ज्यादा पैसा नहीं,' राजकुमार ने कहा।

"'कितना?'

"'अभी हाल, बीस हज़ार।'

"येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया और राजकुमार बड़ी बहादुरी से यह सब बताने लगा कि वह एक कपड़ा मिल खरीदना चाहता है, यद्यपि उसकी जेब में एक भी कोपेक नहीं है। 'लेकिन,' उसने कहा, 'यदि मैं इसे खरीद लेता हूं तो मैं करोड़पति हो जाऊंगा; मैं उसे दुबारा बनाऊंगा, सारा पुराना सामान हटा दूंगा और भड़कीले रंगों के कपड़े बनाना शुरू कर दूंगा जो निज़्नी नोवगोरोद में एशियाई लोगों को बेचूंगा। यदि मैं उन्हें कचरे से चमकदार रंगों में बुनवा देता हूं तो वे बड़ी जल्दी बिकेंगे और खूब पैसा बना लूंगा, पर अभी मुझे फ़ैक्टरी खरीदने के लिये बीस हज़ार रूबल चाहिए।'

मैं कहा:

"'और तुम्हें यह पैसा कहां मिलेगा?'

"राजकुमार ने उत्तर दिया·

"'मुझे पता नहीं, पर मुझे मिलना ही चाहिए, क्योंकि मेरी योजना एकदम निश्चित है—मेरे पास एक आदमी है, ईवान मोटे सिरवाला, वह घोड़ों का अच्छा पारखी है, कुछ बुद्धू तो है, पर एक बहुत अच्छा आदमी है, ईमानदार है और वह कई वर्षों तक एशियाइयों का बंदी रह चुका है और उनकी पसंद भी जानता है। अभी मकार्येव कस्बे में एक मेला चल रहा है, इसलिये मैं मोटे सिरवाले को ठेके लेने को भेजूंगा ताकि मुआहिदे तय करा सके और मुआहिदों पर अग्रिम बयाने का पैसा भी मिलेगा और तब... पहले मैं वे बीस हजार रूबल वापस दे दूंगा ..'

"वह रुक गया पर महिला ने थोड़ी देर तक कुछ भी नहीं कहा; आखिर उसने आह भरी और कहा:

"'हां, राजकुमार, आपकी योजना पक्की है।'

"'हां, है न?'

"'एकदम पक्की,' उसने कहा, 'और आप यह ऐसा करेंगे, आप फैक्टरी का बयाना दे देंगे, सब लोग आपको मिल का मालिक मान लेंगे, समाज के लोग कहेंगे कि अब आपके हालात सुधर गये है .'

"'हां।'

"'हां, और तब...'

"'और तब मोटे सिरवाला मकार्येव के मेले में से आर्डर और बयाना ले आयेगा और मैं अपना क़र्ज़ चुका दूंगा और मैं एक धनी आदमी हो जाऊंगा!'

"'कृपया मुझे बीच में न रोकिये; पहले तो यह धधा अभिजातवर्गीय दुनिया को ऐसा चकमा देगा कि वह सोचेगा कि आप धनवान हैं। आप किसी लड़की से शादी कर लेंगे और जब आप को दहेज मिलेगा तो आप वास्तव में धनवान हो जायंगे!'

"'तुम ऐसा सोचती हो, मेरी प्यारी?'

"येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने उत्तर दिया:

"'क्या आप अलग ढंग से सोच रहे हैं?'

"'तुम स्थिति को सही समझ चुकी हो, हम सब को इससे खुशी मिलेगी।'

"'हमें?'

"'हां, अवश्य ही,' राजकुमार ने कहा, 'हम लोगों को सबसे ही फ़ायदा होगा, तुम अपने घर को मेरे लिये गिरवी रख दोगी और मैं हमारी बच्ची को बीस हज़ार पर दस हज़ार स्टल ब्याज दे दूंगा!'

"'घर आपका है। आप ही ने उसे दिया था और आप को ज़रूरत हो तो आप इसे वापस भी ले सकते हो,' महिला ने उत्तर में कहा।

"वह कहने लगा कि घर उसका नहीं है, 'पर मैं तुमसे उसकी माता होने के नाते कह रहा हूं... अर्थात, अवश्य ही, यदि तुम्हें मेरा विश्वास हो...'

"'राजकुमार, क्या मैंने आपका विश्वास नहीं किया है?' उसने कहा, 'क्या मैंने अपनी आबरू और ज़िन्दगी को आपके सुपुर्द नहीं कर दिया था?'

"'अरे, मैं समझा,' वह बोला, 'आपका मतलब है... अच्छा, धन्यवाद, धन्यवाद, सर्वश्रेष्ठ... क्या मैं कल दस्तख़त के लिये गिरवी के काग़ज़ात भेज दूं?'

"'भेज दीजिये और मैं दस्तख़त कर दूंगी,' उसने कहा।

"'पर तुम्हें कोई डर तो नहीं लगता है?'

"'पहले ही अपना सब कुछ खो देने के बाद, अब मुझे किस चीज़ का डर हो सकता है?'

"'पर क्या तुम्हें कोई दुख तो नहीं है? मुझे बताओ, तुम दुखी तो नहीं हो? मुझे भरोसा है कि तुम मुझे अब भी थोड़ा प्यार करती हो, है न? या केवल यह क्या दिखा रही हो!'

"वह उसके शब्दों पर हंसकर रह गयी और बोली:

"'छोड़ो बेकार की बातें, राजकुमार! क्या आप कुछ रसदार स्ट्रॉबेरियां और शक्कर नहीं लेंगे? ये इस साल बड़ी स्वादिष्ट हैं।'

"राजकुमार शायद इस पर नाराज़ ही हुआ होगा। उसे शायद इस तरह की किसी चीज़ की अपेक्षा नहीं थी, वह उठ गया और मुस्कराया।

"'नहीं,' उसने कहा, 'तुम स्वयं ही स्ट्रॉबेरी खाती रहो, मुझे मिठाइयों से कोई रुचि नहीं है। धन्यवाद और नमस्ते,' और वह उसका हाथ चूमने के लिये झुका ही था कि गाड़ी वापस आई।

"येवगेन्या सेम्योनोव्ना उठी और उसने अपना हाथ उसे दिया और कहा :

"'आप अपनी काली आंखों वाली जिप्सी लडकी का क्या करना चाहते हैं?'

"राजकुमार ने अपने मस्तक को ठोका और कहा :

"'तुम हमेशा कैसी चतुर रही हो! इसका विश्वास करो या नहीं, मैं कभी नहीं भूल सकता कि तुम कितनी होशियार हो और धन्यवाद कि तुमने मुझे इस हीरे की याद दिला दी।'

"'क्या आपका कहने का यह मतलब है कि आप उसके बारे में बिलकुल भूल ही गये थे?' उसने कहा।

"'ईमानदारी से, मैं भूल ही गया था,' उसने कहा, 'यह मेरे दिमाग से ही निकल गया था। अवश्य ही, मुझे उस मूर्ख छोकरी के बारे में कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा।'

"'कुछ कीजियेगा और कुछ अच्छा ही कीजियेगा,' येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने कहा, 'वह रूसी लडकी तो है नहीं, जो शीतल खून और ताजे दूध का मिश्रण है। वह इसे सहज ही नहीं मानेगी और आपको गुजरे वक्त के लिये कभी माफ भी नहीं करेगी।'

"'कोई बात नहीं, वह शान्त हो जायगी।'

"'राजकुमार, क्या वह आपको प्रेम करती है? मुझे बताया गया है कि वह आपको बहुत अधिक चाहती है।'

"'मैं तो उससे ऊब चुका हूं। ईश्वर का धन्यवाद है, वह मोटे सिरवाले से बड़ी दोस्ती रखती है।'

"'इससे आपको क्या फ़ायदा?' येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने पूछा।

"'मैं उन्हें एक मकान खरीद दूंगा, ईवान का नाम व्यापारियों के संघ में दर्ज करवा दूगा और वे शादी करके सुख से रहेंगे।'

"येवगेन्या सेम्योनोव्ना ने अपना सिर हिलाया और मुस्कुराई। 'आप कैसे बेवक़ूफ़ हो रहे हैं, मेरे दुलो राजकुमार,' उसने कहा, 'कहां है आपकी अंतरात्मा?'

"'मेरी अंतरात्मा की बात छोडो,' उसने कहा, 'मेरे पास उसके लिये अभी कोई समय नहीं है: यदि संभव हुआ तो मैं मोटे सिरवाले को आज ही शहर में भिजवा दूंगा।'

"फिर महिला ने उसे कहा कि ईवान मोटे सिरवाला पहले ही से शहर में है और उसके ही घर में ठहरा हुआ है। राजकुमार यह जानकर बड़ा खुश हुआ, उसने मुझे अपने यहां जितना जल्द हो सके भेजने के लिये कहा और वहां से तुरंत रवाना हो गया।

"इसके बाद घटनायें तेजी से बढ़ने लगीं, जैसे परीकथा में होता है। राजकुमार ने मुझे अधिकारपत्र दे दिये और इस तरह के प्रमाणपत्र भी दे दिये जिससे यह ज्ञात हो कि वह मिल का मालिक है। उसने मुझे यह कहना सिखाया कि वह किस प्रकार के कपड़े तैयार करता है और मुझे उसने शहर से सीधा मकार्येव भेज दिया इसलिये मुझे पूशा को देखने का मौक़ा ही न मिला — पर पूरे समय में राजकुमार से नाराज रहा कि वह कैसे कह सकता था कि उसे मेरी पत्नी हो जाना चाहिए? मेले में मेरा सद्भाग्य रहा, मुझे एशियाइयों से आर्डर, नमूने और पैसा मिला — मैंने सब पैसा तो राजकुमार को भेज दिया पर जब मैं जागीर पर वापस आया तो मैं उसे पहचान न सका। सब कुछ ऐसा लगता था मानो किसी जादू से बदल गया हो, वह सब जैसे त्योहार के लिये सजाया हुआ झोंपड़ा बन गया था और उस छोटे से मकान का कोई नामोनिशान नहीं था जिसमें पूशा के कमरे थे। उस मकान को गिराकर, जमीन को बराबर कर दिया गया था और उस जगह एक नई इमारत खड़ी थी। मैं अवाक सा रह गया और पूशा का पता करने को निकल पड़ा, पर किसी को उसका कुछ पता नहीं था — सभी नौकर नये थे, सभी भाड़े के टट्टू थे जो इतने इतराते थे कि मुझे राजकुमार के पास ही नहीं फटकने देते थे। इससे पहले मैं और राजकुमार दो नियमित फ़ौजी आदमियों की तरह थे, हमारे संबंध साधारण थे, पर अब तो सब कुछ बड़े रोबदाब के ढंग से था और यदि मैं राजकुमार से कोई बात कहना चाहता तो वह उसके निजी नौकर के मारफ़त ही हो सकती थी!

"मैं इस तरह की बात को सहन नहीं कर सकता था व वहां एक क्षण के लिए नहीं ठहरता और तुरंत ही वहां से चल देता, यदि मैं पूशा के लिये दुखी न होता। मैं केवल यह पता लगाना चाहता था कि वह कहां है। मैंने जिस किसी पुराने नौकर से पूछा, कोई भी उत्तर नहीं देता था, उन सब को इस विषय में सख्त हुक्म मिले हुए होंगे। काफ़ी दिक़्क़त के बाद एक नौकरानी ने मुझे बताया कि थोड़े समय पहले पूशा कोई दस दिन

मनोरंजन देख सकता था; मेहमान लोग आनंद ले रहे थे, बैंड बज रहा था और गायन बहुत दूर तक सुनाई दे रहा था। मैं वहाँ घर की ओर बिना देखे बैठा रहा पर मेरी नजर लहराते हुए जल में प्रतिबिम्बित रोशनी पर जमी हुई थी, जो किसी नये जल-महल के खम्भों की तरह दिखाई दे रही थी। मैं दुखी हो गया था और मेरा दिल बीमार सा हो रहा था कि मैंने वही किया जो पहले कभी नहीं किया था, क़ैदी होने के समय भी नहीं, मैंने अदृष्ट शक्तियों से बात करना प्रारंभ कर दिया—मानो भगिनी अलोनुश्का की कहानी में जैसे उसका भाई उसे बुलाता ही रहा, उसी तरह मैं भी उसे, मेरी तिनमा पूशा को शोकाकुल आवाज में पुकारता ही रहा:

"'ओ बहिन, मेरी बहिन,' मैं चिल्लाया, 'प्यारी पूशा, मुझे जवाब दो, मुझसे बोलो, मुझसे एक शब्द तो कहो, मेरे पास एक क्षण के लिये तो आ जाओ।'

"और आप क्या सोचते हो? मैंने इस प्रकार तीन बार दुखभरी आवाज में पुकारा और फिर मैं भयभीत हो गया—मुझे ऐसा लगा मानो कोई मेरी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था, मेरे पास पहुंच गया था, मेरे चारों ओर घूमने लगा था, मेरे कानों में फुसफुसा रहा था, मेरे कंधों पर से मेरे चेहरे में ताक रहा था और तभी एकदम रात्रि के अंधकार में मुझ पर कुछ झपटा... और मेरी गर्दन से लटक गया...

अध्याय १७

"मैं इतना डर गया था कि ज़मीन पर गिरते-गिरते रह गया, पर मैं बेहोश नहीं हुआ, मैंने महसूस किया कि जैसे कुछ हलका व कोमल स[illegible] मुझमें एक [illegible] की भाँति [illegible] रहा हो, बाहें भरे हुए [illegible] बिना कुछ कहे।

"मैंने तब ही मन प्रार्थना की और अपने सामने पूशा का चेहरा देखा!

"'मेरी प्यारी,' मैंने कहा, 'मेरी [illegible], [illegible] [illegible]! तुम कोमल हो या किसी दूसरे लोक से मेरे पास आई हो? मुझसे कुछ तो [illegible] मुझे माफ़ कर दो, मैं तुमसे नहीं डरूंगा [illegible] तुम [illegible]

"उसने एक गंभीर, चिर गंभीर सी श्राह अपने वक्ष की गहराई से भरी।

"'मैं जीवित हूं,' उसने कहा।

"'ईश्वर का धन्यवाद है इसके लिये!'

"'पर मैं यहां पर मरने को भाग आई हूं।'

"'हे भगवान! पूशा,' मैंने कहा, 'तुम क्यों मरना चाहती हो? आओ हम आनंद से साथ में रहें: मैं तुम्हारे लिये काम करूंगा, तुम्हारे लिये एक छोटा सा स्थान बनाऊंगा और तुम मेरी एक बहिन की तरह रहोगी।'

"पर उसने उत्तर दिया:

"'नहीं, ईवान सेवेर्यानिच, नहीं, मेरे प्यारे दोस्त, तुम्हारे दया भरे शब्दों के लिये मेरा आखिरी आशीर्वाद स्वीकार करो, परन्तु मैं, एक दुखिया जिप्सी लड़की, जो नहीं सकती क्योंकि मैं एक दोषरहित आत्मा की मृत्यु का कारण बन सकती हूं।'

"'तुम किस बारे में कह रही हो?' मैंने उसे पूछा, 'तुम किसकी आत्मा की इतनी चिन्ता कर रही हो?'

"'मैं उसके लिये दुखी हूं, मेरे उस दुष्ट की युवा पत्नी के लिये,' उसने उत्तर दिया, 'क्योंकि उसकी आत्मा दोषरहित है, पर इतने पर भी, मेरा ईर्ष्यालु दिल उसे सहन नहीं कर सकेगा और मैं उसे व अपने आपको मार डालूंगी।'

"'क्रॉस का निशान बनाओ,' मैंने कहा, 'तुम्हारा बपतिस्मा हुआ है, है न? तुम्हारी अपनी आत्मा का क्या होगा?'

"'मैं अपनी आत्मा के लिये तो इतनी चिन्ता नहीं करती, इसे चाहे नरक मिले—क्योंकि यहां तो नरक से भी बुरा है!'

"मैं देख सकता था कि यह स्त्री अपनी सही दिमागी हालत में नहीं थी, वह बड़े भयंकर रूप से बेचैन थी, इसलिये मैंने उसको हाथों से थाम लिया और उसकी ओर देखा—मैं उसमें भयावह परिवर्तन देखकर अचंभित हो गया कि उसका सौंदर्य कहां चला गया था? उसका शरीर सूखकर कांटा हो गया था, उसके काले चेहरे में केवल उसकी आंखें रात में किसी भेड़िये की आंखों की तरह चमक रही थीं, आंखें जो पहले से दुगुनी बड़ी दिखाई दे रही थीं और उसका पेट भयानक ढंग से उभर गया था क्योंकि उसका

प्रसव-काल नजदीक था। उसका चेहरा मेरी मुट्ठी से बड़ा नहीं था और उसके काले बाल उसके गालों पर झूम रहे थे। मैंने उसकी पहनी हुई पोशाक की ओर देखा तो पाया कि वह छींट के काले कपड़े से बनी, फटी हुई सी थी और जूते उसके बिना मोजों के पांवों में थे।

"'मुझे बताओ, तुम कहां से आ रही हो,' मैंने कहा, 'तुम कहां पर रही हो और तुम इस बुरी हालत में क्यों हो?'

"अचानक वह मुस्कुरा उठी और बोली:

"'क्या? मैं सुंदर नहीं हूं? सुंदर! यही तो फल है जो मेरे प्रियतम ने मुझे उसे किये गये बड़े भारी प्रेम के बदले दिया है! मैंने उसके लिये ऐसे को छोड़ा जिसे मैं उससे भी अधिक प्यार करती थी, मैंने उसे अपना सर्वस्व, तन और आत्मा देना चाहा! उसने मुझे एक दुर्गम स्थान पर छिपा दिया और अपने चौकीदारों से मेरी सुंदरता की देखभाल करने हेतु आज्ञा दी..."

"वह अचानक जोर से हंसने लगी और फिर बड़े गुस्से में उसने कहा:

"'ओ राजकुमार! तुम कितने मूर्ख दिमाग के हो! मानों एक जिप्सी स्त्री तुम्हारी युवा महिलाओं में से हो जिसे कहीं भी ताला मारकर रखा जा सकता है। क्यों, यदि मैं चाहूं तो इसी क्षण तुम्हारी दुल्हन पर गिर सकती हूं उसके गले में अपने दांत गड़ा सकती हूं।'

"मैंने देखा था कि डाह के इस दौर से उसका सारा शरीर कांप रहा था और मैंने अपने मन में सोचा, 'मुझे उसके विचारों को मधुर स्मृतियों से भ कि नरक की धमकियों से दूर हटाना है,' इसलिये मैंने उसे कहा:

"'पर वह तो वास्तव में तुम्हें प्रेम करता था। अरे, वह कैसा प्यार करता था तुम्हें, वह तुम्हारे पांव कैसे चूमा करता था... जब तुम गाती थी तो वह सोफे के सामने घुटने टेके रहता था और तुम्हारी सांवली-सी उंगलियों को ऊपर नीचे से चूमा करता था...'

"वह मेरे शब्दों का ध्यान करने लगी और उसकी लम्बी लम्बी बरौनियां उसके सूखे गालों पर उड़ने लगीं। धरती की ओर देखते हुए उसने कोमल व रिक्त सी आवाज में कहा:

"'वह मुझे प्रेम करता था, वह, दुष्ट, मुझे प्रेम करता था और मेरे लिये किसी अन्य को कबूल नहीं करता था जब तक मैं उसे प्रेम नहीं करती थी, पर जिस क्षण से मैं उसे प्रेम करने लगी वह मुझे छोड़ने लगा।

और किसलिये? क्या मुझे वियोग दिलानेवाली मुझसे अच्छी है? क्या वह मुझसे अधिक प्यार कर सकेगी जैसा मैं करती थी? वह कितना मूर्ख है, कितना मूर्ख!.. जैसे शीत ऋतु का सूर्य ग्रीष्म के समान गर्म नहीं होता है, उसी भांति उसे मेरे जैसा प्यार नहीं मिलेगा। तुम उसे ऐसा कहना, उसे कहना कि पूसा ने अपनी मृत्यु से पहले भविष्यवाणी की थी कि उसका भाग्य ऐसा ही होगा।'

"मैं प्रसन्न था कि वह बात करने लगी थी और मैं उससे पूछने लगा।

"'तुम दोनों के बीच क्या घटना घटी थी? इस सब का क्या कारण था?'

"वह बोली:

"'किसी भी कारण से यह घटना नहीं हुई, इसके सिवाय कि वह मेरे प्रति विश्वासघाती था... वह मुझे फिर नहीं चाहने लगा यही एक मात्र कारण है।' ज्योंही उसने यह कहा, उसके आंसू बुरी तरह से बरस पड़े। 'उसने मेरे लिये अपनी पसंद की पोशाकें बनवाई थीं, पोशाकें पतली कमर वाली, जो गर्भवती स्त्री के लिये अच्छी नहीं थीं। यदि मैं उन्हें उसके लिये पहनती तो वह नाराज हो जाता और कहता, 'इसे उतार दो, यह तुम्हें नहीं जचती है।' पर यदि मैं नहीं पहनती और उसके पास ढीले वस्त्रों में आती तो वह उससे भी दुगुना नाराज हो जाता। 'सोचती हो तुम कैसी लगती हो?' वह कहता। तभी मैंने समझा कि मैं उसे सदा के लिये खो बैठी हूं और मैंने उसे ऊबा दिया है...'

"अब वह लगातार रो पड़ी, अपने ठीक सामने देखती हुई।

"'एक लम्बे अरसे तक,' उसने फुसफुसाकर कहा, 'मैंने महसूस किया कि मैं उसे अच्छी नहीं लगती थी, पर मैं यह जानना चाहती थी कि उसकी अंतरात्मा कैसी है। मैं उसे क्यों बुरी कहूं, मैंने सोचा, मुझे इस बात की प्रतीक्षा करनी चाहिए कि वह मुझ पर दया करे, और मुझ पर उसने दया की!'

"उसने राजकुमार से अपनी अंतिम विदा की एक ऐसी अजीब, दिलचस्प कहानी कही कि मैं उसका कुछ अर्थ न निकाल सका और अब तक इसे नहीं समझ पाता हूं—किस प्रकार अकारण ही एक मक्कार व्यक्ति एक स्त्री से सदा के लिये अलग हो सकता है?

"'आपके जाने और गायब हो जाने के बाद,' पुशा ने कहना शुरू किया—अर्थात जब मैं मकार्यव मेले में गया था, 'राजकुमार एक लम्बे अरसे तक घर नहीं आये पर मैंने अफ़वाहें सुनीं कि वह विवाह करनेवाले हैं। मैं उन अफवाहों को सुनकर खूब ज़ोर से चिल्लाई और मैं काफ़ी दुबली हो गई। मेरा दिल दर्द करने लगा और मैं अपने शरीर में बच्चे की हलचल महसूस कर रही थी, मैंने सोचा, यह गर्भ ही में मर जायगा। फिर एक दिन, मैंने अचानक लोगों को कहते सुना कि 'वे आ रहे हैं।' मेरा सारा शरीर कांप उठा और मैं अपने कमरे में जाकर उनके लिये अपना जितना सुंदर शृंगार कर सकती थी करने लगी, मैंने अपने पन्ने के कर्णफूल पहने और दीवार पर परदे के पीछे लटकी हुई उसकी मनपसंद सागर जैसी नीली पोशाक पहनी जिस पर लेस लगा हुआ था और एक नीची काटी हुई चोली थी, पर मैं जल्दी में अपनी पीठ पर बटन न लगा सकी, जिससे मैं जैसे थी वैसे ही रह गई और मैंने अपने कंधों पर एक लाल रूमाल डाल लिया ताकि कोई यह न देख पाये कि चोली बंद नहीं थी और घर की ड्योढ़ी में उन्हें मिलने के लिये भागी। मैं तब तक कांप ही रही थी और इससे पहले कि मैं जान पाती कि मैं क्या कर रही थी, मैं चिल्ला उठी, 'ओह, मेरे प्रियतम, मेरे अच्छे, मेरे प्यारे, मेरे अमूल्य हीरे!' और मैंने उनकी गर्दन में अपने हाथ डाल दिये और बेहोश हो गई...

"'जब मैं होश में आयी,' वह कहती गई, 'मैं अपने कमरे में थी, सोफ़े पर लेटी हुई और यह याद करने की कोशिश कर रही थी कि क्या मैंने उन्हें सचमुच ही आलिंगन किया था या मैं सपना देख रही थी। मैं बहुत ज़्यादा कमज़ोर हो गई थी।' इसके बाद उसने राजकुमार को काफ़ी अरसे से नहीं देखा, वह बुलावे भेजती रही पर वह उसके पास नहीं आया।

"आखिर वह आया और उसने उसे कहा:

"'क्या आप मुझे बिल्कुल ही छोड़ चुके हैं और भुला चुके हैं?'

"'मुझे बहुत काम है,' उन्होंने कहा।

"'आप अब इतने व्यस्त क्यों रहते हैं जब कि, मेरे अमूल्य हीरे, पहले आप कभी भी व्यस्त नहीं रहते थे?' और उसने अपने हाथ उसका आलिंगन करने के लिये फैला दिये पर राजकुमार ने नाक-भौंह सिकोड़

रखी थी और उसने अपनी पूरी ताक़त से उसके गर्दन पर लटके क्रॉस वाल
डोरी को झटके से खींचा।

"'क़िस्मत से,' उसने मुझे कहा, 'रेशमी डोरी अधिक मज़बूत नहं
थी, वह कमज़ोर पड़ गई थी और आसानी से टूट गई क्योंकि में उस
पर काफ़ी बरसों से एक तावीज़ पहना करती थी, नहीं तो वे मुझे दम
घोटकर मार डालते, उनकी मंशा शायद यही थी क्योंकि वे बिल्कुल सफ़ेद
पड़ गये थे और मेरी ओर देखकर सीत्कार करते हुए बोले:

"'तुम इतनी गंदी डोरी क्यों पहना करती हो?'

"'आप मेरी डोरी के बारे में क्यों चिन्ता करते हैं? यह तो साफ़
थी पर गंदी तो इसलिये हो गई थी कि मैं इतना दुख करती हूं कि मेरे
पसीना छूटता रहता है।'

"'हाय, हाय,' कहते हुए उन्होंने थूका और बाहर चले गये पर
शाम को वापस आये, नाराज़ से दिखाई दिये और मुझसे बोले:

"'आओ, गाड़ी में घूमने चलें।' और उन्होंने मेरे साथ बड़ा अच्छा
व्यवहार करने का बहाना किया, मुझे सिर पर चूमा और मुझे कुछ संदेह
नहीं हुआ। मैं गाड़ी में उनके साथ बैठ गई और हम चल दिये। हम
काफ़ी देर तक आगे जाते रहे, दो दफ़ा घोड़े बदले पर हम कहां जा रहे
थे, यह मैं उनसे नहीं जान सकी। मैंने देखा कि हम एक वनप्रान्त मे
पहुंच गये थे, जो पूरा दलदल सा था, जंगली और भयावना इलाका।
जल्दी ही उस जंगल में हमें मधुमक्खियों का फ़ार्म मिला और उसके
पीछे एक घर था जिसमें से तीन तगड़ी किसान लड़कियां अपने लाल-सुर्ख
कपड़ों में हमें मिलने आईं और मुझे उन्होंने 'श्रीमती' कहकर पुकारा।
मैं गाड़ी में से बाहर उतरी और तुरत ही वे मुझे अपनी बांहों मे
पकड़कर एक कमरे में ले गईं, जो मेरे लिये तैयार करके रखा गया था।

"'इससे मुझे बड़ा कष्ट हुआ, ख़ासकर उन लड़कियों से मेरा दिल
और भी दुख के मारे सिकुड़ने लगा।

"'यह कौनसा पड़ाव है?' मैंने राजकुमार से पूछा।

"'यही वह जगह है जहां तुम्हें अब रहना होगा,' उन्होंने जवाब
दिया।

"'मैं चिल्लाने लगी और उनके हाथ चूमने लगी, उनसे निवेदन करने
लगी कि मुझे यहां न छोड़ें, पर उन्होंने कोई दया नहीं दिखाई, मुझे
धक्का दिया और वहीं छोड़ गये।'

"उस वक़्त पूशा रुकी, उसने अपना सिर झुकाया, फिर आहें भरने लगी और उसने कहना जारी रखा:

"'मैं भाग जाना चाहती थी। मैंने सैकड़ों बार निकल भागने की कोशिश की, पर वे लड़कियां मुझ पर पूरी निगरानी रखती थीं और मुझे अपनी नज़र से कभी ओझल नहीं होने देती थीं। मुझे ऐसा बहुत कष्टप्रद लग रहा था जिससे आख़िर मैंने उन्हें धोखा देने का विचार किया और प्रसन्न व चिन्ताहीन होने का बहाना बनाया और उनसे कहा कि मैं वन में घूमना चाहती थी। वे मुझे घुमाने तो ले गयीं पर उन्होंने मुझ पर से अपनी आंखें नहीं हटाईं। मैं पेड़ों की ओर देखती रही, शाखाओं के ऊपर और पेड़ों की छाल पर देखती रही कि किस ओर दक्षिण था और पूरे वक़्त में लड़कियों को चकमा देने के ढंग के बारे में सोचती रही। कल, मैंने सोचकर एक योजना बनाई। खाना खाने के बाद मैं उनके साथ जंगल के एक खुले मैदान में गई।

"'आओ, लड़कियो,' मैंने उनसे कहा, 'हम इस मैदान में आंखमिचौली खेलें।'

"'वे राजी हो गईं।

"'पर अपनी आंखें मींचने के बजाय,' मैंने कहा, 'हम अपने हाथों को बांध लेवें और अपनी पिछाड़ी से एक दूसरे को पकड़ें।

"'इस पर भी उन्होंने कोई एतराज़ नहीं किया।

"'जैसा मैंने बताया, हम सभी ने किया। मैंने उनमें से एक के हाथों को पीछे की ओर कसकर बांध दिया और दूसरी के साथ एक झाड़ी के पीछे भागकर चली गई और उसे भी बांध दिया और तीसरी को मैंने दोनों के सामने ही बांध डाला–वे चिल्लाती ही रहीं पर यद्यपि मैं गर्भवती हूं, मैं एक तेज़ घोड़े से भी अधिक तेज़ी से भागी और मैं जंगल में सारी रात भागती रही जब कि सुबह, मैं कुछ काटे व गिराये हुए पेड़ों के बांध के पीछे पुराने मधुमक्खी के छत्तों के पास आकर बेहोश हो गई। यहां पर एक बूढ़ा आदमी मेरे पास आया और मुझे कुछ अस्पष्ट सा बुदबुदाकर कहने लगा जो मैं न समझ सकी, वह मधुमक्खी के मोम से सना हुआ था और उससे शहद की गंध आ रही थी और मधुमक्खियां उसकी पीली भौंहों पर लोट रही थीं। मैंने उसे कहा कि मैं तुम्हें, ईवान सेवेर्यानिच को देखना चाहती हूं, जिस पर उसने कहा:

"'बेटी, उसे एक बार हवा के रुख के साथ पुकारो और एक बार
रुख के खिलाफ आवाज दो और वह उदास हो जायेगा और तुम्हें ढूंढ़ने
आ जायेगा और आखिर तुम एक दूसरे से मिल जाओगे।' उसने मुझे
पीने को कुछ पानी दिया और एक खोरे पर कुछ शहद लगाकर दिया
ताकि मुझे कुछ ताक़त मिले। मैंने पानी पिया और खोरा खा लिया
और अपने रास्ते पर चलना जारी रखा तथा तुम्हें पुकारती रही–एक
बार हवा के रुख में और दूसरी बार उसके विरुद्ध जब तक कि हम आ
मिले। 'धन्यवाद,' उसने कहा और मुझे गले लगाकर चूम लिया। 'तुम
मेरे भाई के समान हो।'

"'और तुम मेरी बहिन के समान हो,' मैंने कहा और भावनाओं
से सराबोर होकर मैंने रोना शुरू कर दिया।

"वह भी रोने लगी और बोली:

"'मैं जानती हूं, ईवान सेवेर्यानिच, मैं सब कुछ जानती हूं। मैं
जानती हूं कि तुम्हीं अकेले मुझे सच्चाई के साथ प्यार करते हो, मेरे
प्यारे दोस्त। मेरे प्रति अपना अंतिम प्रेम प्रकट करो और इस भयानक
घड़ी में मैं जो तुमसे चाहूं वही करना।'

"'मुझे बताओ कि तुम मुझसे क्या कराना चाहती हो,' मैंने
कहा।

"'पहले तो तुम्हें मेरे सामने संसार की सबसे भयंकर चीज की
सौगंध खानी पड़ेगी कि तुम वही करोगे जो मैं तुमसे चाहूं।'

"इसलिये मैंने अपनी आत्मा की मुक्ति की सौगंध खा ली।

"'यह काफ़ी नहीं है,' उसने कहा, 'मेरे लिये क्या तुम यह
सौगंध नहीं तोड़ सकोगे? मेरे लिये तुम किसी और अधिक भयावह चीज
की सौगंध खाओ।'

"'पर,' मैंने कहा, 'मैं इससे अधिक भयकर सौगंध नहीं जानता।'

"'अच्छा,' उसने कहा, 'मैंने तुम्हारे लिये कुछ और सोच रखा
है। इसे जल्दी-जल्दी मेरे साथ कहो और इसके बारे में कुछ मत सोचो।'

"मूर्खतावश मैंने उससे वादा कर लिया कि मैं वैसे ही कहूंगा जैसे वह
चाहेगी और उसने कहा:

"'तुम सौगंध खाओ कि मेरी आत्मा को भी वैसा ही शाप मिले जैसा
तुम्हारी आत्मा को यदि तुम मेरी आज्ञा न मानोगे।'

१५*

"'बहुत अच्छा,' मैंने कहा और मैंने सीधे उसकी दिखाई हुई सौगंध ले ली।

"'अब मेरी बात सुनो,' उसने कहा, 'क्योंकि तुम्हें मेरी आत्मा की रक्षा करने में जल्दी करनी है। धोखे के और अपमानजनक व्यवहार के कारण, मुझमें दुख के कारण जीने की ताक़त शेष नहीं रही है। मैं एक दिन और ज़िन्दा रह गई तो उस महिला को मार डालूंगी और यदि मैं उन पर दया करूंगी तो मैं अपनी हत्या स्वयं कर लूंगी जो मेरी आत्महत्या होगी। इसलिये, प्यारे भाई! मुझ पर दया करो और मेरे दिल में चाकू भोंक दो।'

"मैं कूदकर दूर हट गया और मैंने उस पर क्रॉस का निशान बनाया और फिर उससे दूर हटता गया परन्तु वह अपनी बांहों से मेरे घुटनों को घेरकर पकड़े हुए रोने लगी और मेरे पांवों में झुक गई।

"'तुम,' उसने कहा, 'ज़िन्दा रहोगे और हम दोनों की आत्माओं को क्षमा देने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करोगे पर मेरा नाश मत करो, मुझे आत्महत्या मत करने दो ...'

"ईवान सेवेर्यानिच अपनी मूंछें चबाने लगा और अपनी सांस से फूलती हुई छाती में से शब्द बाहर निकालने की कोशिश सी करने लगा:

"'उसने मेरी जेब में से चाकू निकाला, उसे खोला और उसके फल को सीधा किया... फिर मेरे हाथों में थमा दिया... और इतने भयानक ढंग से कहने लगी कि मैं इसे सहन न कर सका।'

"'यदि तुम मुझे नहीं मारोगे,' उसने कहा, 'तो मैं तुम सब लोगों से ऐसा बदला लूंगी कि अत्यंत हेय वेश्या बनकर जिऊंगी।'

"मेरा समूचा शरीर कांप उठा और मैंने उसे प्रार्थना करने के लिये कहा, परन्तु मैंने उसे चाकू नहीं भोंका। मैंने उसे उस ढालू किनारे पर से नदी में धकेल दिया..."

ईवान सेवेर्यानिच की इस अंतिम आत्मस्वीकृति को सुनकर हम पहली बार उसकी कहानी की सच्चाई के बारे में संदेह करने लगे–हमने कुछ समय तक पूर्ण खामोशी रखी, आखिर किसी ने खांसते हुए पूछा:

"क्या वह डूब गई थी?"

"हां, डूब गई थी," ईवान सेवेर्यानिच ने उत्तर दिया।

"आपने इसके बाद क्या किया?"

इसके लिये काफी कष्ट उठाया होगा?"
विक ही है।"

अध्याय १६

ा सोचे-समझे उस स्थान से दूर भागता गया, मुझे केवल इतना
कि मानो कोई मेरा पीछा कर रहा था, जो खूब बड़ा और
ा और नग्न भी था। उसका सारा शरीर काला था और
ी तरह छोटा सा था और बदन खूब झबरा था। मैंने भापा
पापी केन नहीं, तो स्वयं हत्यारा भूत ही होगा, इसलिये मैं
और अपने संरक्षक देवदूत को पुकारता रहा। मैं राजमार्ग
ो जाकर एक पेड़ के नीचे होश मे आया। पतझड का
ला हुआ दिन था, पर कुछ ठंड थी, हवा से धूल उड़
पीली पत्तियां इधर उधर जमा हो रही थीं। मुझे समय
कोई अंदाज नहीं था और न यह पता था कि रास्ता
ता है। मुझे अपने भीतर भयंकर सूनापन सा लग रहा था
को भावनाशून्य व विचारशून्य स्थिति मे पा रहा था।
क ही बात का विचार घर कर गया कि प्रूशा को
त थी व मेरा यह कर्तव्य था कि उसके लिये कष्ट सहन
नरक में जाने से बचाऊं। मुझे यह पता नहीं था कि यह
कता था, इस कारण मुझे बड़ा भारी कष्ट था, पर अचानक
कंधे पर से छुआ। मैंने ऊपर देखा तो पाया कि यह
डाली थी जो बेत के पेड से गिरी थी और हवा द्वारा दूर
और अचानक मैंने प्रूशा को आते हुए देखा, केवल यही
ह बहुत छोटी थी, छह या सात साल की और उसके कं
ोटे से पंख थे। पर ज्यों ही मैंने उसे देखा तो वह मुझ
ा की तरह तेज उड़ गई और केवल धूल का वातचक्र ऐ
सूखी पत्तियां उड़ती हुई दिखीं।
ा कि उसकी आत्मा जरूर मेरे पीछे चलती होगी औ
पुकारती हुई मार्ग दिखा रही थी। इसलिये मैं उसके पी

चल पड़ा। मैं पूरे दिन भर बिना किसी विचार के चलता रहा कि मैं कहां जा रहा था और थककर चूर हो चुका था, जितने में कुछ लोग मेरे बराबर आ पहुंचे—एक बूढ़ा और बूढ़ी—गाड़ी में बैठे हुए सफ़र कर रहे थे।

"'आ जाओ, दुखी आदमी,' उन्होंने कहा, 'हम तुम्हें बिठा लेंगे।'

"मैंने मान लिया। वे चल पड़े और मैंने देखा कि वे बड़े दुख में थे।

"'हम लोग बड़ी मुसीबत में फंसे हुए हैं,' उन्होंने कहा, 'हमारा लड़का फ़ौज में भरती किया जा रहा है और हमारे पास उसकी जगह दूसरे आदमी को भरती कराने के लिये पैसा नहीं है।'

"मैं उस बूढ़े जोड़े के लिये बहुत दुखी हुआ और मैंने कहा:

"'मैं तुम्हारे लिये बिना किसी पैसे के जाने के लिये तैयार हूं, पर मेरे पास कोई पासपोर्ट नहीं है।'

"पर उन्होंने कहा:

"'कोई बात नहीं। यह सब हम पर छोड़ दो और तुम केवल हमारे लड़के के नाम से अपने आपको बताना, प्योत्र सेर्दुयुकोव।'

"'बहुत अच्छा,' मैंने कहा, 'यह मेरे लिये ठीक होगा, मैं अपने दुख के संत जॉन बैप्टिस्ट की प्रार्थना करूंगा और अपने आपको अंत तक बाहरी बनाऊंगा।'

"आगे इस प्रकार हुआ: वे मुझे दूसरे शहर में ले गये, उन्होंने मुझे अपने बेटे की जगह फ़ौज में भरती करा दिया, मुझे रास्ते के खर्च के लिये पच्चीस रूबल के सिक्के दिये और उन्होंने आमरण मेरी मदद करने का वादा किया। मैंने उनके द्वारा दिया हुआ पैसा एक साधारण मठ में जमा करा दिया—जो पूजा की आत्मा के लिये उपहार माना जाय और मैंने अधिकारियों से मुझे काकेशिया भेज देने के लिये निवेदन किया जहाँ मुझे अपने धर्म के लिये प्राण बलिदान करने का अवसर मिल सके। उन्होंने ऐसा ही किया और मैंने काकेशिया में पंद्रह वर्ष से अधिक का समय बिता दिया—मैंने अपना असली नाम और धंधा भी किसी को कभी नहीं बताया और मुझे प्योत्र सेर्दुयुकोव के नाम से जाना जाता था, पर केवल ईवान के दिवस पर मैंने गुरु के नाम से अपने लिये बैकुंठ की विनती में प्रार्थना करता था। अपना पूर्व जीवन और धंधा तो मैं अपना भूल ही चुका था और सेना में अपने आखिरी वर्ष की सेवा कर रहा था

ईवान के दिवस ही हमें तातारों का पीछा करना पड़ा जो

लूटमार करके और कोइसू नदी के पार भाग गये थे।

कोइसा कहलाती है और तीसरी और चौथी कोरीकुमुइस्काया
स्काया कहलाती हैं और सबको सब मिलकर मुलाक नदी
। ये चारों ही बड़ी तेज बहनेवाली ठंडी नदियां हैं,
स्काया कोइसा, जिसके पार तातार चले गये थे। हमने
र मार डाले थे पर उनमें से जो कोइसा नदी को पार
हो गये थे, वे चट्टानों के पीछे छिप गये थे और ज्यों ही
ते, वे हम पर गोली चलाते थे। वे इतने होशियारी से
कि उनका एक भी वार व्यर्थ नहीं जाता था। अपनी
निशाने के लिये रोके रखते थे, क्योंकि वे जानते थे कि
अधिक बारूद था—वे इस बात की फिक्र में थे कि हमें
हुंचायें, इसीसे वे हमारी दिशा में कभी गोली नहीं चलाते
न्हें पूरी तरह दिखाई देते थे। हमारा कर्नल मुबोरोव को
ाना चाहता था और हमेशा कहता था 'ईश्वर दया करे'।
किनारे पर बैठ गया, अपनी टांगें उघाड़कर उन्हें घुटनों
नी में डाले हुए कहने लगा:
ा करें, मेरे अच्छे जवानो!' पानी ऐसा गर्म है, जैसे
ताजा दूध हो। हितैषियो, तुम में से कौन स्वेच्छा से
के दूसरे किनारे पर तैरकर जायगा जिससे हम इसमें
बना सकें?'
ल वहां बैठा हुआ हमसे इस तरह बातें कर रहा था और
ार में दो बन्दूकें निकाल रखी थीं पर उन्हें नहीं दाग रहे थे।
आदमी स्वेच्छा से पार तैरने लगे, उनकी बन्दूकों ने आग
सिपाही कोइसा के पानी में गायब हो गये। हमने रस्सा
ाल लिया और दूसरा जोड़ा रवाना हुआ जबकि हम
उनके पीछे तातार छिपे हुए थे, गोलियां बरसा रहे थे,
नुकसान नहीं पहुंचा रहे थे क्योंकि हमारी गोलियां तो
कर रही थीं—पर उन दुष्टों ने तो हमारे तैराकों पर
ायी, तो पानी खून से लाल हो चला और दूसरा
र भी गायब हो गया था। तीसरा जोड़ा चल पड़ा,

परन्तु वे कोइसा के बीच के भाग तक भी नहीं पहुंचे थे कि तातारों ने उन्हें नदी के तल में भेज दिया। इस तीसरे जोड़े के बाद बहुत कम लोग स्वेच्छा से आगे आ रहे थे क्योंकि हर एक यह देख सकता था कि यह युद्ध न होकर सीधी हत्या थी और उन हत्यारों को सजा दी जानी चाहिए थी। कर्नल ने कहा:

"'मेरे अच्छे जवानो, सुनो, क्या तुम में कोई ऐसा नहीं है जिसकी अंतरात्मा पर अक्षम्य पाप चढ़ा हुआ हो? ईश्वर दया करे, कैसा मौक़ा है ऐसे आदमी के लिये कि वह ऐसा अधर्म खून से धो पाये।'

"और मैंने मन ही मन सोचा:

"'मेरे जीवन का अंत करने का इससे अधिक अच्छा कौनसा मौका मुझे अभीष्ट हो सकता था? ईश्वर मेरे इस हिम्मत के कार्य को आशीर्वाद दें!' मैंने आगे क़दम बढ़ाया और अपने कपड़े उतार दिये! मैंने प्रभु की प्रार्थना की, सभी दिशाओं में अपने मुखिया और साथियों से वंदना की, और अपने मन में कहा, 'अच्छा, पूगा, जिसे मैं अपनी बहिन कहता हूं, लो अब मेरा खून, जो उस पाप को धो डालेगा' और फिर मैंने एक रस्सी अपने मुंह से थाम ली जिसका एक सिरा रस्से से बंधा हुआ था, और किनारे से एक उड़न-कूद भरते हुए मैं नदी में घुस गया।

"पानी बेहद ठंडा था: मेरी बग़लों में बड़ा तेज दर्द शुरू हो गया, मेरी छाती सिकुड़ रही थी और मेरी टांगों में ऐंठन होने लगी, पर मैं तैरता गया। हमारी गोलियां ऊपर से चल रही थीं और तातारों की गोलियां मेरे चारों ओर पानी पर छपछपा रही थीं, पर वे मुझे नहीं छू पा रही थीं और मुझे यह भी पता नहीं था कि मैं घायल हुआ था कि नहीं, पर मैं दूसरे किनारे पर जा पहुंचा। वहां पर तातार मुझ पर गोली नहीं चला सकते थे क्योंकि मैं चट्टान के नीचे खड़ा था और मुझ पर गोली मारने के लिये उन्हें उस छिपाव को छोड़कर दूसरे किनारे से हमारे सिपाहियों की गोलियों की भारी बौछार का सामना करना पड़ता। इसलिये मैं पत्थरों के नीचे खड़ा रहा और मैंने रस्से को खींच लिया और हमने नदी पर पुल फेंक दिया—हमारे आदमी तुरंत ही पार आ रहे थे, परन्तु मैं वहां खड़ा रहा बुत बना सा, क्योंकि मैं पूरे वक़्त यही आश्चर्य कर रहा था कि 'क्या किसी दूसरे ने भी वह देखा जो मैंने देखा था?' जब मैं तैर रहा था मैंने पूगा को अपने ऊपर

उड़ते हुए देखा था और वह अब एक सोलह वर्ष की कुमारी थी और उसके पंख विशाल और चमकीले थे, जिससे पूरी नदी ढक गई थी और वह उनसे मेरी रक्षा कर रही थी। क्योंकि किसी और ने मुझे इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा था, मैंने सोचा कि इस विषय में मुझे स्वयं ही बताना होगा ... कर्नल खुद ही मुझे गलबांही डालकर, चूमते हुए मेरी तारीफ करने लगा:

"'ईश्वर दया करे, प्योत्र सेर्द्युकोव, तुम कितने बहादुर हो!'

"'महोदय, मैं कोई बहादुर नहीं हूं,' मैंने कहा, 'मैं तो एक बड़ा भारी पापी हूं जिसको धरती या जल भी लेना नहीं चाहते हैं।'

"वह मुझसे प्रश्न करने लगा:

"'तुम्हारा पाप किस प्रकार का है?'

"'मैं अपने जीवन में कई निर्दोष आत्माओं के नाश का कारण रहा हूं,' मैंने उत्तर दिया और उसके तम्बू में रात को मैंने उसे वह सब कुछ बताया जो मैंने आप लोगों को अभी बताया है।

"वह काफी समय तक सुनता रहा, एक उधेड़बुन में फंस गया और फिर बोला:

"'ईश्वर दया करे, कैसे हालात में से तुम गुजरे हो! पर फिर भी, मेरे भाई, चाहे यह तुम्हें पसंद हो या न हो, तुम्हें एक अफसर बना दिया जाना चाहिए। मैं अपनी सिफारिश अभी सीधी भेज दूंगा।'

"'जैसी आपकी इच्छा,' मैंने कहा, 'पर क्या आप वहां भी यह पता नहीं लगवायेंगे कि क्या सचमुच ही मैंने उस जिप्सी लड़की की हत्या की थी?'

"'हां, मैं यह पूछताछ भी करूंगा,' उसने कहा।

"उसने ऐसा किया पर कर्नल के निवेदन का वह शायद इनकारी के साथ वापस मिला। उसमें लिखा था कि किसी जिप्सी लड़की के साथ उस गुबेर्निया में कोई ऐसी घटना नहीं हुई थी और यद्यपि ईवान सेवेर्यानोव राजकुमार की नौकरी में था, उसने इसके बाद अपनी आज़ादी एवज में प्राप्त कर ली थी और वह राज्य के किसान सेर्द्युकोव के यहां मर गया था।

"मैं अपना दोष सिद्ध करने के लिये और क्या कर सकता था?

"इस पर कर्नल ने मुझसे कहा:

"'मेरे दोस्त, अब तुम अपने बारे में और अधिक झूठ मुझसे न कहो।

जब तुम श्रोडसा में तैर रहे थे तो बर्फीले पानी व डर से तुम्हारा दिमाग कुछ फिर गया दिखता है। मुझे लगती है,' उसने कहा, 'कि जो तुमने अपने बारे में कहा है वह सही नहीं है। अब तुम एक अफ़सर हो जाओगे और ईश्वर दया करे, यह शानदार बात है।'

"इसके बाद मैं खुद भी उलझन भरा सा हो गया था। मैं यह भी नहीं जानता था कि क्या सचमुच मैंने फ़्रूमा को पानी में धकेला था उसके दुख के कारण भारी कल्पना ही की थी।

"उन्होंने मुझे मेरी बहादुरी के लिये एक अफ़सर बना दिया, परन्तु मैं बराबर अपने पूर्व जीवन का सत्य खोलने पर ज़ोर देता रहा, इसलिये मुझे सेना में संत गेओर्गी क्रास के साथ पुरस्कार दे दिया गया और मेरा इस्तीफा मंज़ूर कराया गया ताकि मैं इससे किसी मुसीबत में न पड़ूं।

"'हमारी बधाई स्वीकार करो,' कर्नल ने कहा, 'अब तुम अभिजात वर्ग के सदस्य हो गये हो और एक प्रशासकीय नौकरी प्राप्त कर सकते हो। ईश्वर दया करे, कैसा शान्त जीवन मिला है।' उसने मुझे पीटर्सबुर्ग में एक विशिष्ट आदमी के नाम पत्र दिया और कहा, 'जाओ और उनसे मिलो, वे तुम्हारी नौकरी के लिये मदद करेंगे और कोशिश करेंगे कि तुम ठीक प्रकार रह सको।'

"'मैं वह पत्र लेकर पीटर्सबुर्ग पहुंचा परन्तु नौकरी के बारे में भाग्य ने साथ नहीं दिया।"

"क्यों नहीं?"

"मैं एक लम्बे अरसे तक नौकरी नहीं पा सका और फिर मुझे नौकरी मिली तो फ़िता में मिली जिससे और भी बुरा हो हुआ।"

"फ़िता? इससे आपका क्या आशय है?

"जिस प्रतिपालक के पास मुझे भेजा गया, उसने मुझे पता बताने के ब्यूरो में एक सूचना बाबू की नौकरी दी और उस दफ़्तर में हरेक बाबू को वर्णमाला का एक अक्षर मिलता था, जिससे सूचना देने का काम उसे करना होता था। कुछ अक्षर अच्छे होते हैं, उदाहरणार्थ, बूकी या पोकोई या काको जिनसे नाम शुरू होते हैं, और जिस बाबू के पास ये अक्षर हों उसे अच्छी कमाई हो सकती है, परन्तु उन्होंने ~ . दिया, जो सब से तुच्छ अक्षर है, जिसमें विरले नाम ही

थो'; और दूसरे जो भूमिका मुझे अदा करनी होती थी वह बड़ी ही कठिन थी।"

"कौनसी भूमिका?"

"मुझे शैतान की भूमिका अदा करनी पड़ती थी।"

"तो इसमें इतनी क्या कठिनाई थी?"

"काफ़ी—मुझे दो मध्यान्तरों में नाचना और शीर्षासन करने होते थे: जो बड़े कष्टप्रद होते थे, क्योंकि मुझे सिर से पैर तक एक बिखरे हुए बालों वाले सफ़ेद बकरे की खाल से ढक दिया जाता और एक तार पर लम्बी पूंछ रहती जो मेरी टांगों के बीच लटकी रहती और मेरे मस्तक पर सींग लगे होते जो हर चीज़ में उलझते जाते। इसके अलावा मैं उम्र में भी बूढ़ा हो रहा था और अब चुस्त और फुर्तीला नहीं रहा था—इस पर भी सबसे बुरा तो यह था कि पूरे अभिनय के समय कथानक के अनुसार मुझे पीटा जाता था। यह भयंकर ढंग से थकानेवाली बात थी। चाहे मुझे पीटने के लिये असली लाठियां न होकर कैनवास से बनी छड़ियां होतीं जिनमें रूई व ऊन भरी होतीं, पर फिर भी मैं इस लगातार पिटाई से ऊब जाता, कुछ अभिनेता या तो सर्दी से या केवल मज़ाक के लिये ही सही, मुझे अभ्यस्त होकर काफ़ी ज़ोर से मारने की कुचेष्टा करते थे। ऐसा विशेषकर न्यायिक अधिकारों के मामले में होता था जो इसमें काफी अनुभवी थे और लगातार एक दूसरे के बचाव के लिये तैयार रहते थे, पर जब सेना के लोग उनसे अड़ जाते थे तो वे उसका भयंकर हंगामा खड़ा कर देते—वे लोग मुझे जनता के सामने दोपहर में ही पीटने लगते, ज्यों ही झंडा उठता और ऐसा आधी रात तक चलता रहता, उनमें से हरेक अपनी लटकार जितनी ज़ोर से हो सकता गुंजाकर जनता का मनोरंजन कराता। यह नौकरी मिलना भी कोई ख़ुशी की बात नहीं थी। इस पर भी एक बार एक ऐसी अप्रिय घटना हो गई जिसके कारण मुझे यह नौकरी भी छोड़नी पड़ी थी।"

"आपके साथ क्या हुआ?"

"मैंने एक राजकुमार के बाल नोच लिये।"

"एक राजकुमार के?"

"वह कोई असली राजकुमार तो था नहीं, अवश्य ही नाटक का अभिनेता था, एक न्यायिक अधिकारी ने यह भूमिका हमारे थियेटर में की थी।"

"आपने उसे किस लिये पीट डाला ?"

"उसे तो इससे अधिक सज़ा मिलनी चाहिए थी। वह एक चालाक आदमी था, और हर किसी से भद्दे मज़ाक़ कर बैठता था।"

"आप से भी ?"

"हां, मुझसे भी बहुत से मज़ाक करता: उसने मेरी पोशाक बिगाड़ दी—एक छोटे कमरे में जहां हम गर्म होने के लिये कोयले की अंगीठी के सामने बैठकर चाय पीते रहते थे, वह मेरे पीछे छिपकर चोरी-चोरी मेरी पूंछ को मेरे सींगों से बांध देता था या इसी तरह और कोई मूर्खता लोगों को हंसाने के लिये कर बैठता। मुझे इसका पता न लगता और मैं रंगमंच पर लोगों के सामने यों ही पहुंचता तब हमारा मैनेजर मुझसे नाराज़ हो जाता। जब तक वह मुझसे चालें खेलता रहा मैंने उसे कुछ न कहा, पर जल्दी ही वह एक अप्सरा को नाराज़ करने लगा। वह एक ग़रीब अभिजात परिवार की बहुत छोटी उम्र की लड़की थी, जिसने भाग्य देवी की भूमिका अदा की थी और जिसे राजकुमार को बचाना था। उसकी भूमिका में उसे मंच पर चमकीली जालीदार पोशाक में अपने पंख लगाये हुए जाना होता था और उन दिनों बड़ी तेज़ ठंड थी और बेचारी के हाथ ठंड के मारे नीले पड़ गये थे—वह उसे सताता रहता और उसे ज़बर्दस्ती तंग करता रहता। एक बार जब हम नाटक के उत्कर्ष में एक फ़र्शी दरवाज़े में से होकर एक तलघर मे गिरे थे तो उसने उसकी बदन को चुटकी भर ली थी। मैं उसके प्रति बहुत दुखी हुआ और उसे खूब पीट डाला।"

"इस का अंत कैसा रहा ?"

"कुछ भी नहीं हुआ, क्योंकि तलघर मे सिवा अप्सरा अभिनेत्री के कोई गवाही तो थी नहीं, परन्तु न्यायिकों की भीड़ ने हड़ताल कर दी और मुझे नाटक-मंडली में रखने से एतराज़ किया और क्योंकि वे ही मुख्य अभिनेता थे, मैनेजर ने उन्हें खुश करने के लिये मुझे हटा दिया।"

"उसके बाद आप कहां गये ?"

"शायद मैं खाने और मकान के बिना कष्ट पाता, यदि वह अभिजात अप्सरा एहसान के कारण मुझे न खिलाती परन्तु मेरी अंतरात्मा उसका भोजन खाने के लिये मुझे कचोटती थी जब कि उसको खुद को भी पूरा खाने को नहीं मिलता था। मैंने भी रास्ता निकालने के लिये अपना दि-

मार लगाया, मैं फिर से त्रिता में जानेवाला तो था नहीं और वह जगह भी दूसरे आदमी से भर गई थी, इसलिये मैं एक मठ में प्रविष्ट हो गया।"

"क्या इसका केवल यही कारण था?"

"और मैं कर ही क्या सकता था? मेरे लिये कोई ठौर भी तो नहीं था और यहां भी अच्छा ही हूं।"

"तो आपको मठ का जीवन पसंद है?"

"हां, बहुत अधिक। हर वस्तु इतनी शांत है, जैसे वह रेजीमेंट में थी। वास्तव में इन दोनों में बड़ी समानता है—सब वस्तुएं तैयार रहती हैं—कपड़े, जूते, और खाना और अधिकारीगण मेरी देखभाल भी करते हैं और बदले में केवल पूर्ण आज्ञापालन चाहते हैं।"

"पर क्या आज्ञापालन कुछ कष्टप्रद नहीं होता?"

"क्यों होना चाहिए? जितना ही अधिक कोई आदमी आज्ञाकारी होता है, उसके लिये जीवन उतना ही आसान भी हो जाता है। मेरे लिये आज्ञापालन करना विशेष कष्टप्रद भी नहीं है: मुझे इसमें कोई बुराई दिखाई नहीं देती, मैं गिरजे में तभी जाता हूं जब मैं चाहूं और काम भी वही करता हूं जिसका मैं आदी हूं। मुझे कहते हैं, 'फ़ादर इस्माइल (मुझे अब इस्माइल कहा जाता है) घोड़े जोत दो' तो मैं उन्हें तुरंत जोत देता हूं और यदि कहते हैं 'घोड़े खोल दो, फ़ादर इस्माइल' तो मैं उन्हें तुरंत खोल देता हूं।"

"तो फिर," हमने कहा, "आप के पास मठ में भी घोड़े ही हैं?"

"हां, मेरी स्थायी नौकरी एक कोचवान की है। मेरे अफ़सरी के पद की मठ में कोई परवाह नहीं है, क्योंकि मुझे एक वास्तविक साधु ही माना जाता है और मैं सब के बराबर हूं, यद्यपि मैंने अपनी अंतिम शपथ नहीं ली है।"

"क्या इसमें काफी समय लगेगा?"

"मैं तो शपथ लूंगा ही नहीं।"

"नहीं? क्यों नहीं?"

"मैं अपने आपको इसके योग्य नहीं समझता।"

"अपने पूर्ववर्ती पापों और भ्रमों के कारण क्या?"

"हं-हं-हां। और फिर मैं शपथ क्यों लूं? मैं एक साधारण साधु भाई के रूप में काफ़ी संतुष्ट हूं और मेरा जीवन शान्त है।"

"पर क्या आपने अपने जीवन को पूरी कहानी किसी और को भी सुनाई थी जैसे आपने हमें कही है?"

"हां, मैंने इसे कई बार दोहराया है, पर इसका क्या उपयोग है यदि इसे सिद्ध करने को कुछ भी नहीं है? लोग मेरा विश्वास नहीं करते, इसलिये मैं मठ में भी इस सांसारिक असत्य को अपने साथ ले आया हूं और वे सोचते हैं कि मैं जन्म से एक अभिजात हूं। खैर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि अब मैं बूढ़ा हो चला हूं।"

विमुग्ध यायावर की कहानी वस्तुतः समाप्त सी हो रही थी और इसमें हमारे लिये केवल एक ही दिलचस्प बात बच गई थी—मठ में उसका जीवन किस प्रकार चल रहा था?

अध्याय २०

हमारे यायावर की जीवन-यात्रा उसे अपने शरण स्थल, मठ में ले आई थी जो उसकी पूरी आस्था के अनुसार था व जन्म से यही उसका भाग्य था। हमने यही सोचा कि अब ईवान सेवेर्यानिच की क़िस्मत के रास्ते में अधिक अभागापन नहीं बचा है, पर बात ऐसी नहीं थी। यात्रियों में से एक व्यक्ति को कुछ दंतकथाएं याद थीं जिनके अनुसार साधारण साधु भाइयों को शैतान लगातार सताया करता था।

"हमें बताइयेगा," उसने कहा, "क्या शैतान तुम्हें मठ में प्रलोभन नहीं देता रहा है? मुझे यह बताया गया था कि वह साधुओं को हमेशा ही लुभाया करता है।"

ईवान सेवेर्यानिच ने उसकी ओर अपनी भौंहों के नीचे से शान्ति के साथ देखा और कहा:

"अवश्य ही उसने प्रलोभन दिये थे। यदि ईसा के शिष्य पॉल जैसे संत भी उससे नहीं बच पाये थे—क्या उन्होंने अपने संदेश में नहीं कहा है, 'वहां मेरे शरीर में शैतान का दूत बस गया था,' तो फिर मेरे जैसा एक कमज़ोर पापी उससे बचने की आशा कैसे कर सकता था?"

"आपको उसने कैसे सताया?"

"कई प्रकार से।"

"किस प्रकार से

"अरे विभिन्न घृणित बातें और गुरु के दिनों में, जब तक मैं उस पर क़ाबू न कर पाया था, उसने मुझे सुभाने की भी कोशिश की।"

"क्या तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि तुमने शैतान तक को क़ाबू में कर लिया है?"

"स्वाभाविक ही, यह तो मठ में हमारा धंधा ही है। लेकिन अगर ईमानदारी के साथ कहूं तो मैं अकेला ही यह नहीं कर सकता था, एक आदरणीय बूढ़े मठवासी ने मेरी मदद की थी क्योंकि उसे बड़ा अनुभव था और वह इन सब प्रलोभनों के उपाय जानता था। ज्यों ही मैंने उसे बताया कि घृणा मेरे सामने इतनी स्पष्ट रूप से प्रकट होती है कि हवा भी उसकी सांस से भर जाती है, तो उसने सोचकर कहा:

"'ईसा के शिष्य जेम्स ने कहा है, 'शैतान का विरोध करो और वह तुम्हें छोड़कर भाग जायेगा', इसलिये तुम उसे रोकते रहो।' उसने मुझे ऐसा करने के आदेश दिये: 'जैसे ही तुम अपने भीतर दिल का दुर्बल होना अनुभव करो,' उसने कहा, 'और तुम उसके बारे में सोचने लगो तो यह सोचना कि शैतान का दूत तुम पर हावी हो रहा है और तुम्हें कोई मुक़ाबला करना हो तो सबसे पहले तुम अपने घुटने टेक लो। आदमी के घुटने शैतान के ख़िलाफ़ पहला औज़ार है क्योंकि जब तुम घुटने टेकते हो तो तुम्हारी आत्मा ऊपर की ओर उड़ती है और इस तरह आत्मा के उठने पर परमात्मा को साष्टांग प्रणाम करते जाओ जब तक कि तुम थक न जाओ, और अपने आप को उपवास करके सुखा डालो क्योंकि जब शैतान यह देखे कि तुम शहादत के लिये तैयार हो गये हो तो वह इसे सहन नहीं कर पायेगा और तुरंत भाग जायेगा क्योंकि वह अपनी बुरी चालों से किसी आदमी के ईसा की गोद में शीघ्रता से पहुंच जाने से बड़ा डरता है और स्वयं से कहता है, 'यदि मैं इसे अकेला छोड़ देता हूं और इसे और अधिक नहीं सुभाता हूं तो बहुत संभव है कि यह शान्त हो जायगा।' मैंने उसी के कहने के अनुसार किया और सब शांति से निपट गया।"

"क्या तुम्हें इसी प्रकार लम्बे समय तक कष्ट उठाने पड़े जब तक शैतान के दूत ने आपको छोड़ दिया?"

"बहुत लम्बे अरसे तक। स्वयं को पूर्ण कमज़ोर बनाकर ही मैं शत्रु पर विजय पा सका था क्योंकि यही एक चीज़ है जिससे शैतान डरता

है: पहले तो मैंने लगभग हजार बार साष्टांग प्रणाम किये और लगातार चार दिनों तक भूखा और प्यासा रहा और फिर वह समझ गया कि मुझसे उसका क्या मुक़ाबला था, वह हताश और कमज़ोर हो गया और ज्यों ही उसने मुझे खिड़की में से खाने का भांडा फेंकते हुए देखा और मेरे हाथों को माला के मनकों से प्रणामों की गिनती करते हुए पाया तो वह जान गया कि मैं गंभीरता के साथ सब काम कर रहा था और शहादत के लिये बिलकुल तैयार था तो वह भाग गया। शैतान किसी आदमी के आत्मापर आनन्द की स्थिति पर पहुंच जाने से बड़ा घबराता है।"

"अच्छा, तो आपने उस पर क़ाबू पा लिया, पर आपको भी उससे काफी कष्ट उठाने पड़े होंगे, नहीं क्या?"

"यह कोई महत्त्व की बात नहीं थी—मैं तो कष्टदाता को कष्ट पहुंचा रहा था और इससे मुझे कोई असुविधा नहीं हुई।"

"क्या आपको उससे बिलकुल छुटकारा मिल गया है?"

"पूर्णतया।"

"और वह आपके सामने कभी नहीं आता है?"

"वह अब कभी भी एक आकर्षक स्त्री के रूप में सामने नहीं आता और यदि कभी मेरे कमरे के कोने में कहीं आ भी जाता है तो उसकी हालत बड़ी ख़राब होती है—वह एक मरते हुए सूअर के बच्चे की तरह चीखता और मैंने भी उस दुष्ट को सताना छोड़ दिया है, मैं तो केवल उस पर क्रॉस का निशान बना देता हूं और साष्टांग प्रणाम करता हूं और वह चीखना बंद कर देता है।"

"अच्छा, ईश्वर को धन्यवाद कि आपने इस सब पर क़ाबू पा लिया है।"

"हां, मैंने बड़े शैतान के प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर ली है परन्तु यद्यपि यह नियमों के विरुद्ध है तो भी मुझे स्वीकार करना चाहिए कि छोटे भूत मुझे अपनी बुरी चालों से इससे भी अधिक परेशान करते रहते थे।"

"ऐसी बात है? छोटे भूत भी आपको चिढ़ाते थे क्या?"

"अवश्य हो, चाहे वे नीच से नीच वर्ग के क्यों न हों, वे मुझे चैन नहीं लेने देते थे..."

"वे आपके साथ क्या कर सकते हैं?"

"निश्चय ही अभी तो वे बच्चे ही हैं पर वे नरक में बहुत बड़ी संख्या में हैं। उनके खाने का पूरा प्रबंध है और उन्हें कुछ भी तो नहीं करना पड़ता है, इसलिये वे धरती पर आने की आज्ञा मांगते रहते हैं और यहां सोचते हैं कि वे किस तरह शरारतें कर सकेंगे और किसी आदमी का जितना महत्वपूर्ण पद होता है उसे वे उतना ही सताते हैं।"

"किस प्रकार? हमें कोई उदाहरण तो दीजिये, वे लोगों को किस प्रकार सताते हैं?"

"अरे, वे आपके रास्ते में कुछ डाल देते हैं, या आपके पैरों के नीचे कुछ चीज डाल देते हैं जिसे आप गिरा देते हैं या तोड़ देते हैं जिससे किसी दूसरे आदमी को नाराजगी या गुस्सा चढ़ आता है—इससे उन्हें बड़ा संतोष मिलता है और वे बड़े खुश होते हैं, खूब तालियां बजाते हैं और अपने बुजुर्ग के पास दौड़कर जाते हैं, 'देखो, हमने यहां कितना ऊधम मचाया। इसके लिये हमें कौड़ी दीजियेगा।' और इसी तरह वे हर वक्त करते हैं... आखिर वे शैतान के बच्चे ही तो हैं।"

"वे आपको किस तरह चिढ़ाते थे?"

"उदाहरण के लिए कहा जाता था कि एक चुड़ैल ने हमारे मठ के पास जंगल में अपने आपको फांसी लगा ली थी और सभी साधु भाइयों ने कहा कि वह [illegible] था जो हर रात में मठ में चक्कर लगाता व कराहता रहता था और कई लोगों ने उसे देखा था। उसका मुझे कोई अनुभव न था क्योंकि मैंने मन ही मन इतना ही कहा था कि क्या हमारे यहां सब तरह [illegible] हुए नहीं हैं? पर एक रात में जब मैं कम्बल में सोता हुआ था, मैंने किसी का आना सुना और दरवाजे के पास [illegible] ने कराहना [illegible] हुए सुना। मैंने तुरन्त ही एक प्रार्थना की, पर वह नहीं रुका रहा। फिर मैंने [illegible] का निशान बनाया लेकिन तब भी वह नहीं [illegible] रहा और फिर उसने [illegible]। 'मैं तुम्हारी [illegible] हूँ!' मैंने तब [illegible], 'मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना नहीं कर सकता क्योंकि तुम एक चुड़ैल हो और यदि तुम चुड़ैल न भी होते तो भी आत्महत्यारा के लिए [illegible] प्रार्थना करने का नियम नहीं है, इसलिये [illegible] [illegible]।' मैंने [illegible] [illegible] देखा, वह [illegible] और [illegible] — [illegible] [illegible] था... वह [illegible] नहीं [illegible]।

मुझमें कोई सहन-शक्ति बाक़ी नहीं रही। 'धत् तेरे की, जानवर!' मैंने मन ही मन कहा, 'क्या जंगल मे काफ़ी जगह नहीं है या गिरजे की ड्योढ़ी में ठौर नहीं है कि तुम घसलबस मे ग्राकर अपना सिर मार रहे हो? ऐसा लगता है कि इसका कोई उपाय नहीं है और मुझे तुम्हारा कोई सही इलाज सोचना ही पड़ेगा।' अगले दिन सुबह मैंने दरवाज़े पर एक कोयले से बड़े क्रॉस का निशान बना दिया – रात मे मै सोने के लिये शांति से लेटा हुआ सोच रहा था कि अब वह नहीं आयेगा, पर मुझे उस ख़याल मे नींद आई ही थी कि वह दरवाज़े पर खड़ा हो गया और कराहने लगा। 'धत् तेरे की, गंदी चिड़िया', मैंने कहा। 'क्या उससे छुटकारा पाने का कोई उपाय है?' वह रात भर मुझे डराता रहा और सुबह में जैसे ही प्रातः प्रार्थना के लिये घंटा बजने लगा, मै उछल पड़ा और इसकी शिकायत करने मठाधीश के पास दौड़ा हुआ जाने लगा, पर रास्ते में ही मुझे घंटा बजानेवाला, भाई दिम्रोमीद मिल गया।

"'तुम इतने डरे हुए से क्यों हो?' उसने मुझसे पूछा।

"'फ़लां-फ़लां का,' मैंने कहा, 'मुझे रात भर सामना करना पड़ा, इसलिये मैं मठाधीश को यह बताने जा रहा हूं।'

"पर भाई दिम्रोमीद ने कहा:

"'इसकी कोई जरूरत नहीं है भाई, कल मठाधीश ने अपने नाक पर जोंक लगाई थी और अभी उनका मिजाज गर्म है और वे तुम्हारी इस मामले में कोई मदद नहीं करेंगे, यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारी उनसे कहीं अधिक मदद कर सकता हूं।'

"'मेरे लिये सब समान हैं,' मैंने कहा, 'कृपा करके मेरी मदद करें और मैं इसके लिये तुम्हें अपने पुराने गर्म दस्ताने दूगा – वे तुम्हारे लिये बड़े काम के होंगे जब तुम्हें सर्दियों मे घंटा बजाना होगा।'

"'बहुत अच्छा,' उसने कहा। मैंने उसे दस्ताने दे दिये और घटाघर से वह मेरे लिये एक पुराने गिरजे का दरवाज़ा लाया जिस पर संत पीटर का चित्र था जिसमें वे अपने हाथ मे स्वर्ग के राज्य की चाबियां पकड़े हुए थे।

"'यही बड़ी महत्त्व की चीज़ है, मेरा मतलब इन चाबियों से है,' भाई दिम्रोमीद ने कहा। 'तुम यह दरवाज़ा परदे की तरह खड़ा कर लो और कोई भी इसके पार नहीं आ सकेगा।'

"मैं खुशी से इतना फूल गया कि मैं उसके पांव छूते-छूते रह गया पर मन में सोचने लगा, 'इस दरवाज़े को एक परदे की तरह ही क्यों लगाया जाय और इसे रोज़ क्यों हटाया जाय, जब कि इसे अच्छी तरह लटकाया जा सकता है ताकि वह हमेशा एक आड़ की तरह काम दे सके?' इसलिये मैंने उसे मज़बूत क़ब्ज़ों से लटका दिया और पूर्ण सुरक्षा के लिये उसे रस्सी के सिरे पर रास्ते के पत्थर की भारी घिरनी बांधकर लटका दिया। मैंने यह सब काम खामोशी में एक दिन में ही कर लिया था और शाम तक जब सब कुछ तैयार था, मैं सोने के लिये लेटा ही था कि आपका क्या ख़याल है? मैंने उसकी सांस फिर से सुनी! मैं अपने कानों का भरोसा न कर सका पर अवश्य ही यह कोई कल्पना ही नहीं थी—वह वहां खड़ा हुआ था और मैं उसकी सांस सुन रहा था। वह केवल सांस ही नहीं ले रहा था, पर दरवाज़े पर धक्का भी मार रहा था। पुराने दरवाज़े पर तो अंदर की तरफ़ एक ताला लगा हुआ था पर मैं तो नये दरवाज़े की पवित्रता पर ही विश्वास किए हुए था और उसमें कोई ताला नहीं लगाया। और इसके लिये कोई समय भी नहीं था। वह मेरे दरवाज़े पर बारबार अधिक साहस से धक्का मारता रहा, तभी मुझे उसका थूथना सा दिखाई दिया, फिर घिरनी से दरवाज़ा बंद हो गया और उसे पूरे ज़ोर से धक्का लगा... वह कूदकर भाग गया था, और शायद अपने आपको खरोंच रहा था, थोड़ी देर रुका और फिर दरवाज़े को पूरी ताक़त से धकेलने लगा, तो उसका थूथन फिर अंदर दिखाई दिया और घिरनी से दरवाज़ा फिर बड़े धमाके के साथ बंद हो गया। इससे उसे चोट लगी होगी क्योंकि वह खामोश हो गया था और फिर कोशिश नहीं कर रहा था। मुझे नींद आ गई पर जल्दी ही मैं जग गया और देखा कि वह बदमाश फिर वहीं आ गया था और इस बार बड़ी चालाकी से काम ले रहा था—वह केवल दरवाज़े को धकेलकर सीधा भीतर आने की कोशिश नहीं कर रहा था पर अपने सींगों से उसे धीरे-धीरे खोल रहा था और मैं सिर तक भेड़ की खाल के कोट से ढका हुआ था, उसने कोट को उतार डाला और मेरे कान को चाटने लगा... यह बड़ी ढिठाई थी जिसे मैं बर्दाश्त न कर सका—मैंने अपने बिस्तर के नीचे हाथ डालकर एक कुल्हाड़ी उठाई और... धड़ाम!... मैंने उसे बहाड़ने वह जहां खड़ा था वहीं गिर पड़ा। 'सही जवाब है

अंधे व बूढ़े सन्यासी सिसोई ने जो अकेले में तहखाने में रहा करता था, मेरे लिये सोचविचाव किया।"

"'इस पर मुकदमा क्यों चलाया जाय?' उसने कहा, 'इसे तो शैतान के नौकरों ने भटका दिया था।'

"मठाधीश ने उसकी बात सुनी और बिना मुकदमा चलाये ही उसने मुझे एक खाली तहखाने में उतारने का आशीर्वाद दे दिया।"

"क्या उन्होंने आपको उस तहखाने में लम्बे समय तक रखा?"

"मठाधीश ने मुझे किसी निश्चित समय तहखाने के लिये तो कहा नहीं था, उसने केवल यही कहा था, 'उसे वहां रखो,' इसलिये मुझे पूरी गर्मियों में वहां रखा गया जब तक पहले पाला शुरू नहीं हुआ।"

"मेरा खयाल है कि तहखाने में स्तेपी के समान दुखदायी और भयानक हालत रही होगी?"

"अरे नहीं, इनकी तुलना कैसे की जा सकती है—वहां पर मैं गिरजे के घंटों की आवाज सुन सकता था और दोस्त मुझसे मिलने के लिये आते थे। वे आते और तहखाने के ऊपर खड़े हो जाते और हम बात करते। मठ के खजांची ने मुझे तहखाने में एक चक्की रस्से से उतारने की आज्ञा दी ताकि मैं रसोई के लिये नमक पीस सकूं। इसकी स्तेपी या अन्य किसी स्थान से क्या तुलना कर सकते हैं?"

"फिर उन्होंने आपको कब निकाला? मेरा खयाल है, जाड़ा शुरू होने पर क्योंकि काफी ठंडक हो गई थी?"

"नहीं, इसका कारण ठंड नहीं थी, इसका अलग ही कारण था—मैंने भविष्यवाणी करनी शुरू कर दी थी..."

"भविष्यवाणी?"

"हां, जब मैं उस तहखाने में बैठा था तो मैं ध्यानमग्न हो गया और मेरी आत्मा की तुच्छता पर और इसके लिये मिले जिन कष्टों को मैंने सहन किया था, उन पर मैं यह विचार करने लगा कि मुझमें कभी सुधार क्यों नहीं हो रहा है। मैंने उस बूढ़े गुरु मठवासी के पास एक मौतिलिये-साधु भाई को भेजा व यह पुछवाया कि क्या मैं ईश्वर से अच्छी आत्मा के लिये प्रार्थना करूं। बूढ़े ने मुझे उत्तर भेजा—'खूब लगन से प्रार्थना करो और जिसकी अपेक्षा करने की तुम्हें कोई आशा नहीं है उसका इंतजार करो।'

"मैंने उसकी आज्ञा के अनुसार ही किया—तीन रातों तक मैं तहखाने में घुटने टेके प्रार्थना करता रहा और अपनी आत्मा की पूर्णता का इंतज़ार करने लगा। वहां गेरोन्ती नामक एक साधु था, जो पढ़ालिखा आदमी था जिसके पास पुस्तकें और समाचारपत्र थे। एक दफ़ा उसने मुझे पवित्र संत तीख़ोन ज़ोन-पार-वाली की जीवनी पढ़ने को दी और जब वह मेरे लट्ठे के पास से गुज़र रहा था तो उसने अपने वस्त्रों के नीचे से समाचारपत्र निकाला और उसे मेरे लिये गिरा दिया।

"'इसे पढ़ो,' वह कहता, 'और ढूंढ़ो जो तुम्हारे काम का हो, इससे इस लट्ठे में तुम्हारा वक़्त कट जायेगा।'

"जब मैं अपनी प्रार्थना की असंभव पूर्ति का इंतज़ार कर रहा था तो समय काटने के लिये पढ़ने में दिमाग़ लगाने लगा। ज्यों ही मेरा दिन का नमक पीसने का काम पूरा होता, मैं किताब पढ़ने में लग जाता, ज़्यादातर तीख़ोन की जीवनी ही और उसमें पढ़ता कि पवित्रतम कुमारी, देवदूत पीटर और पॉल उसके लट्ठे में कैसे आये थे। उसमें लिखा हुआ था कि ईश्वरीय संत तीख़ोन ने पवित्रतम कुमारी को निवेदन किया था कि धरती पर शांति का समय बढ़ा देवे, परन्तु देवदूत पॉल ने ज़ोर से कहा था, 'जब प्रत्येक व्यक्ति शान्ति का दावा करेगा, तभी संसार पर विनाश छा जायगा।' मैं ईसा के देवदूत की वाणी पर विचार करने लगा परंतु, पहले तो उसे नहीं समझ पाया—ईसा के शिष्य द्वारा बताये गये शब्दों में रहस्य होना चाहिए, संत का आकस्मिक सत्य समझना चाहिए! पर मैंने समाचारपत्रों में पढ़ा कि हमारे देश में लोग और विदेशों के लोग यह कहने से कभी नहीं थकते कि संसार में सब जगह शांति है। तभी मेरी यह प्रार्थना स्वीकार की गई थी और मुझे यह विचार आया कि विनाश के लक्षण पूर्ण दिखाई दे रहे हैं—'जब प्रत्येक व्यक्ति कहेगा "यह शांति है", तभी अचानक संसार पर विनाश छा जायगा।' मैं अपने रूस राष्ट्र के लिये विह्वल हो उठा था और मैंने प्रार्थना करना शुरू कर दिया—जो मुझसे मिलने आते मैं उनसे आंसू भरे हुए निवेदन करता, 'प्रार्थना करो ताकि अपने सम्राट के हरेक शत्रु को कुचल दिया जाय, क्योंकि हमारा सर्वनाश समीप आ रहा है।' और मुझे ख़ूब आंसू मिल गये थे... मैं अपने देश के लिये लगातार रोता रहता। फिर मठाधीश को इस बारे में बताया गया, 'हमारा इस्माइल तहख़ाने में आंसू बहा

रहा है और वह युद्ध की भविष्यवाणी कर रहा है।' मठाधीश ने तब मुझे सब्जी की बाड़ी में एक खाली झोंपड़ी में बंद करने का और 'भले मौन' की प्रतिमा रखी जाने का आदेश दिया—प्रतिमा में ईसा मसीह शान्त पंखों वाले देवदूत के रूप में थे, ताज के बदले सर्वशक्तिमत्ता का चिह्न था, लेकिन हाथ शांतिपूर्ण मुद्रा में उनकी छाती पर रखे हुए थे। मुझे प्रतिमा के आगे रोज दंडवत प्रणाम करने की आज्ञा हुई थी जब तक मेरी भविष्यवाणी की प्रतिभा मुझे न छोड़ देवे। मुझे झोंपड़ी में ताला बंद करके रखा गया था और मैं उसमें वसंत आने तक रहा, पूरे समय 'भले मौन' की प्रार्थना करता रहा, परन्तु ज्यों ही मैंने एक आदमी को देखा, मेरी प्रतिभा जाग उठी और मैं बोलने लगा।

"मठाधीश ने मुझे देखने के लिये एक डॉक्टर को भेजा कि वह पता लगाये कि मेरा दिमाग़ सही था या नहीं। डॉक्टर लम्बे समय तक मेरी झोंपड़ी में रहा और मेरी कहानी सुनता रहा, जिस तरह आप लोग सुन रहे हैं, परन्तु उसने केवल थूका और बोल पड़ा:

"'तुम तो एक ढोल की तरह हो मेरे भाई, तुम्हें पीटते रहते हैं पर तुम्हें पीटकर मार नहीं सकते।'

"मैंने कहा:

"'मैं क्या कर सकता हूं? मैं तो यही ख़याल करता हूं कि सब ऐसे ही होगा।'

"जब डॉक्टर ने वे सारी बातें सुन लीं तो वह मठाधीश के पास गया और बोला:

"'मैं यह ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि वह क्या है, एक भली आत्मा वाला, एक पागल या वास्तव में एक भविष्यवक्ता है, यह तो आपका काम है, क्योंकि मैं तो इस बारे में कुछ भी नहीं जानता, पर मैं आपको सलाह देता हूं कि आप उसे दूर के स्थान देखने के लिये भेजें, शायद ऐसा उसके एक ही जगह पर काफ़ी दिनों से रहने के ही कारण हुआ है।'

"उन्होंने मुझे यात्रा पर भेज दिया और अब मैं सोलोवेत्स्की मठ पर ज़ोसीमा और सव्वाती* की प्रार्थना करने जा रहा हूं जिसके लिये मुझे

---

*ज़ोसीमा और सव्वाती—सोलोवेत्स्की मठ के संस्थापक (१५ वीं सदी की पहली तिहाई)।—सं०

मठाधीश ने आशीर्वाद दिया है। मैं कई जगहों पर गया हूं, जो मैंने अब तक नहीं देखी थीं और मैं मरने से पहले उनके आगे शीश नवाना चाहता हूं।"

"आप मरने की बात क्यों करते हैं? क्या आप बीमार हैं?"

"नहीं, मैं बीमार नहीं हूं पर जल्दी ही मुझे लड़ना होगा।"

"एक क्षण रुकिये, क्या आप फिर युद्ध के बारे में बात कर रहे हैं?"

"हां।"

"तो 'भले मौन' से कुछ भी सिद्ध नहीं हुआ?"

"मुझे पता नहीं है—मैं कोशिश करता हूं, पर भविष्यवाणी की प्रतिभा मुझ पर हावी हो जाती है।"

"आपकी प्रतिभा क्या कहती है?"

"सदैव एक ही बात—युद्ध के लिये तैयार हो जाओ।"

"क्या आप खुद जाकर लड़ने का विचार रखते हैं?"

"अवश्य ही, मेरा विचार है। मैं अपनी जनता के लिये मरना चाहता हूं।"

"आप अपने इस साधु के वेश को पहने युद्ध में कैसे लड़ सकते?"

"नहीं, मैं साधु का वेश छोड़कर फौजी वर्दी धारण कर लूंगा।"

इसके साथ ही विमुग्ध मायावर पर भविष्यवाणी की प्रतिभा का प्रभाव होने लगा और वह एक शान्त ध्यान में मग्न हो गया, जिसे उसके साथियों में से कोई भी आगे प्रश्न करके भंग करने की हिम्मत नहीं रखता था। सच तो यह है कि हम वास्तव में उसे आगे क्या पूछ सकते थे? उसने हमें अपने जीवन के अतीत की कहानी अपनी सारी आत्मा की ईमानदारी के साथ सुनाई थी। पर उसकी भविष्यवाणियां निश्चित समय तक उस के अधीन हैं जो विद्वानों व बुद्धिमानों से अपने लिखे भाग्यों को छिपाता है और जो केवल कभी-कभी शिशुओं को अनुभूति कराता है

प्रसाधन कलाकार

(क़ब्र पर बतायी गयी कहानी)

उन आत्माओं को संतों में स्थान मिलेगा।
—एक शोकगीत

(१९ फ़रवरी १८६१ के पावन दिवस की स्मृति में*)

अध्याय १

हम लोगों में से बहुतों की यह मान्यता है कि कलाकारों में चित्रकारों अथवा मूर्तिकारों की ही गणना होनी चाहिए और इनमें भी केवल वही लोग हो सकते हैं जिनको कला अकादमी ने उपाधि प्रदान की हो, दूसरों को इसके योग्य नहीं माना जा सकता। कई लोगों के मतानुसार साज़िकोव और अविचिन्निकोव** केवल "सुनार" ही थे। दूसरे देशों में ऐसा नहीं है। हाइने ने एक दर्ज़ी को "कलाकार" के रूप में याद किया क्योंकि वह एक "विचारसम्पन्न" व्यक्ति था और वर्थ*** द्वारा तैयार की गयी महिलाओं की पोशाकें आज भी "कलाकृतियों" के रूप में मान्य हैं। अभी हाल ही में किसी ने दावा किया है कि "वह चोली की कटाई में गिरफ्त कल्पना लगाता है"।

अमरीका में कला का क्षेत्र कहीं अधिक व्यापक अर्थ में समझा जाता है। प्रसिद्ध अमरीकी लेखक ब्रेट हार्ट ने एक ऐसे व्यक्ति का उल्लेख किया है जो "मुर्दों को सजाता था" और उसने "कलाकार" के रूप में बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। वह दिवंगत हुए व्यक्तियों के चेहरों को विभिन्न "सुखद मुद्राएं" प्रदान करता था, जिनसे लगता था कि उनकी दिवंगत आत्माएं आख़िरी समय न्यूनाधिक ख़ुशी की हालत में थीं।

---

*उस दिन रूस में भूदास-प्रथा रद्द की गयी थी। —अनु॰

**द॰ इ॰ साज़िकोव और प॰ प॰ अविचिन्निकोव — मास्को के सुविख्यात सुनार थे (१९वीं शताब्दी) —सं॰

***चार्ल्स वॉर्थ — पेरिस के सुप्रसिद्ध दर्ज़ी थे। —सं॰

इस कला की कई श्रेणियाँ थीं – जिनमें से मुझे केवल तीन का स्मरण है: "१) मानसिक स्थिरता, २) उच्च चिन्तन और ३) ईश्वर से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होने का ग्रानन्द।" कलाकार का यश उसकी कृतियों की पूर्णता व उत्कृष्टता के अनुरूप ही माना जाता था, परन्तु दुर्भाग्यवश कला के सृजन की स्वतंत्रता नहीं मिल पाती थी, फलत उसे असभ्य भीड़ के कोप का शिकार होना पड़ा था। पूरे शहर को लूटनेवाले एक फ़र्जी साहूकार के चेहरे पर "ईश्वर के साथ ग्रानन्दपूर्ण सम्बध का भाव" दिखाने पर कलाकार को पत्थरों के प्रहार से मार डाला गया था। उस बदमाश मुनाफ़ाखोर के सुखी उत्तराधिकारियों ने ग्रपने प्यारे दिवंगत सम्बन्धी के प्रति कृतज्ञता दिखानी चाही थी लेकिन इस माग को पूरा करने के लिये कलाकार को ग्रपने जीवन से ही हाथ धोना पड़ा...

हमारे यहां रूस में भी एक ऐसा कलाकार हुग्रा था जो ग्रपनी ग्रनोखी कला के लिये प्रसिद्ध था।

ग्रध्याय २

मेरे छोटे भाई की ग्राया एक ऊंचे क़द की, दुबली-पतली, पर राजसी ठाट वाली वृद्धा स्त्री थी जिसका नाम लुबोव ग्रनीसिमोव्ना था। वह ग्रोर्योल नगर की नाटकमंडली में एक ग्रभिनेत्री थी जिसका मालिक काउंट कामेन्स्की था।

मेरा भाई मुझसे सात वर्ष छोटा है, इसलिये जब वह लुबोव ग्रनीसिमोव्ना के संरक्षण में केवल दो साल का ही था तो मैं नौ साल का हो चुका था ग्रौर जो कहानियां मैं सुनता था वे मुझे फ़ौरन समझ में ग्रा जाती थीं।

लुबोव ग्रनीसिमोव्ना उन दिनों पक्की उम्र की नहीं थी, पर उसके बाल बिल्कुल सफ़ेद हो चुके थे; उसकी मुखाकृति नाटक ग्रौर तराशी हुई सी थी ग्रौर उसका शरीर ऊंचा व एक जवान लड़की की तरह छरहरा ग्रौर तना हुग्रा था।

उसे पहली बार देखने पर मेरी मां ग्रौर चाची ने कहा कि निस्सन्देह वह ग्रपने समय की एक सुंदरी रही होगी।

वह बड़ी ईमानदार, विनम्र व भावुक थी; उसे जीवन के दुखान्त प्रसंग अच्छे लगते थे... वह कभी-कभी मद्यपान भी करती थी।

वह हमें पवित्र त्रिमूर्ति गिरजाघर के क़ब्रिस्तान में घुमाने-फिराने ले जाती थी जहां एक साधारण सी कच्ची क़ब्र के टीले पर एक पुराना क्रास लगा हुआ था। अक्सर वह उस टीले पर बैठकर कहानियां सुनाया करती थी।

यहीं पर मैंने उससे "प्रसाधन कलाकार" की कहानी सुनी।

अध्याय २

नाटकमंडली में वह हमारी आया का साथी था: दोनों में अंतर इतना ही था कि हमारी आया "मंच पर अभिनय और नृत्य करती थी" और वह "प्रसाधन कलाकार" था अर्थात् बाल संवारने और शृंगार करनेवाला, जो काउंट की सभी दासी अभिनेत्रियों के "चेहरों को रंगने और बालों को संवारने का काम" किया करता था। वह कोई मामूली सा नाई तो था नहीं जो कान के पीछे कंघा लटकाये और हाथ में चर्बी मिली सुर्खी की तश्तरी लिये फिरता हो बल्कि एक विचारशील व्यक्ति अथवा दूसरे शब्दों में एक कलाकार था।

सुबोध अनोसिमोव्ना के शब्दों में उसके समान "चेहरे को अधिक मुखरित करनेवाला" व्यक्ति कोई दूसरा नहीं था।

मैं पूरे विश्वास से तो नहीं कह सकता कि कौनसे काउंट कामेन्स्की की सेवा में इन दो गुणवान कलाकारों को प्रतिष्ठा मिली थी। ओर्योल के बड़े-बूढ़ों को तीन कामेन्स्की काउंटों की याद है और तीनों ही "अन्तरात्माहीन अत्याचारियों" की ख्याति पा चुके थे। फ़ील्ड मार्शल मिखाईल फ़ेदोतोविच को उसकी क्रूरता के कारण सन् १८०६ में उसकी प्रजा ने मार डाला था; उसके दो पुत्रों में से निकोलाई की मृत्यु सन् १८११ में और सेर्गेई की मृत्यु सन् १८३२ में हो

पांचवें वराक में
मटमैले रंग का
खिड़कियां बनी
थी। यहीं

यहीं बना हुआ था। यह ऐसी जगह स्थित था कि पवित्र त्रिमूर्ति के गिरजाघर के क़ब्रिस्तान से बहुत अच्छी तरह दिखता था और इसी कारण जब कभी लुबोव अनीसिमोव्ना मुझे कहानी कहना चाहती तो इन्हीं शब्दों से शुरू करती :

"उस ओर देखो, मेरे प्यारे... क्या यह स्थान भयानक नहीं है ?"

"हां, आया मां," मैं कहता, "यह तो बड़ा भयानक है।"

"तो मैं अभी तुझे जो बताऊंगी वह इससे कहीं भयानक है।"

उसकी कही हुई कहानियों में से एक प्रसाधक अरकादी नामक, एक बहादुर और उदारमना युवक की कहानी यहां प्रस्तुत है, जिसे वह बहुत प्रेम करती थी।

अध्याय ४

अरकादी अभिनेत्रियों के बाल "संवारता और उनको रंगों से रंगता" था। अभिनेताओं के लिये अलग केश-प्रसाधक था और यदि अरकादी कभी पुरुषों के कमरों में दिखता तो वह केवल काउंट की आज्ञा से "किसी को पूर्ण भद्र पुरुष के रूप में रंगने हेतु" ही वहां जाता। इस कलाकार के प्रसाधन की प्रमुख विशेषता उसकी कला में निहित वह विचार था जिससे वह अभिनेताओं व अभिनेत्रियों के चेहरों पर बड़े विलक्षण और विचित्र भाव भर दिया करता था।

"वे उसे बुलाते," लुबोव अनीसिमोव्ना ने कहा, "और कहते कि 'इस चेहरे पर अमुक प्रकार का भाव प्रकट होना चाहिए'; वह कुछ पीछे सरक जाता व अभिनेता या अभिनेत्री को सामने खड़े होने अथवा बैठ जाने को कहता और खुद हाथ बांधे सोचने लग जाता। उस समय वह खुद किसी भी छैले से अधिक सुंदर दिखाई देता था। वह मंझले क़द का था पर उसका शरीर ऐसा छरहरा और सीधा था जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, उसकी नाक तीखी व गर्वपूर्ण थी, आंखें देवदूत जैसी दयामय थीं और एक मोटी सी घुंघराली लट उसकी आंखों के सामने हमेशा झूलती रहती थी जिससे ऐसा भ्रम होता कि वह किसी धुंधले बादल में से झांक रहा है।"

संक्षेप में, प्रसाधन कलाकार बहुत ही सुंदर था जिससे "हर आदमी उसे चाहता था"। काउंट स्वयं भी उसे पसंद करता था। वह दूसरों के

बजाय उस पर विशेष कृपा रखता और उसे बढ़िया पोशाकें पहनवाता पर साथ ही उसके प्रति बड़ा कठोर भी था। वह नहीं चाहता था कि अरकादी उस के सिवाय किसी दूसरे आदमी की हजामत करे या बाल काटे और हमेशा उसे अपने प्रसाधन कक्ष के पास ही रखता था। अरकादी को नाटकघर के अलावा कहीं और जाने की आज्ञा नहीं थी।

वह गिरजाघर भी नहीं जा सकता था और कंफ़ेशन या यूकरिस्ट भी धारण नहीं कर सकता था क्योंकि काउंट को स्वयं भगवान में विश्वास नहीं था और वह पादरियों की सूरत देखना भी पसंद नहीं करता था। एक बार ईस्टर पर्व के मौक़े पर उसने अपने शिकारी कुत्तों का झुंड बोरीस व ग्लेब गिरजाघर के पादरियों पर छोड़ दिया था।*

लुबोव अनीसिमोव्ना के अनुसार काउंट की शकल-सूरत उसके बराबर क्रोधित होने के कारण जंगली जानवरों की क्रूरता ली हुई सी लगती थी। किंतु अरकादी उसके चेहरे के पशु-भाव को चाहे थोड़े समय के लिये ही सही, बदलना जानता था ताकि शाम को थियेटर में बैठते समय वह अधिकांश उपस्थित लोगों से अधिक प्रभावशाली दिखाई दे।

काउंट स्वयं अपने स्वभाव में सैनिक रोबदाब की कमी के कारण असंतुष्ट सा रहता था।

अरकादी जैसे बेजोड़ कलाकार की सेवाओं का कोई दूसरा उपयोग न कर पाये, इसलिये काउंट उसे हमेशा चहारदीवारी में ही बंद रखता था और उसके हाथ में कभी नक़द पैसा नहीं देता था, चाहे उन दिनों वह पच्चीस वर्ष का हो चुका था और लुबोव अनीसिमोव्ना को उन्नीसवां वर्ष लगा ही था। वे एक दूसरे को जानते थे और जैसा उनकी उम्र

---

*यह घटना ओर्योल के कई लोगों को ज्ञात है। मैंने अपनी दादी मलफ़्रेयेवा से और व्यापारी ईवान ईवानोविच अंद्रोसोव से जो अपनी सच्चाई के लिये प्रसिद्ध था और जिसने खुद "अपनी आंखों से शिकारी कुत्तों को पादरी लोगों को चीरते" देखा था इसके बारे में सुना था। अंद्रोसोव ने "पाप करके ही" जैसे तैसे अपनी जान बचाई थी। जब काउंट ने उसे बुलाया और पूछा, "क्या तुम्हें उनके लिये खेद है?" तो उसने उत्तर दिया, "नहीं, ईश्वर की कृपा से, उन्हें यही दंड मिलना चाहिए था, उन्हें इधर-उधर नहीं घूमते फिरना चाहिए।" कामेन्स्की ने इस उत्तर के लिए उसे क्षमा कर दिया था। (लेखक की टिप्पणी)।

के लोगों के साथ होता है, वे प्रेमपाश में बंध गये थे। चाहे वे प्या
प्यार की बातें न कर पाते थे पर दूसरों के सामने भी गुप्त इशारों
दूसरे के मन की बात समझ जाते।

उनकी मुलाक़ात तो असंभव सी थी क्योंकि सचमुच ही इसकी
गुंजाइश नहीं थी...

"मैं लोग हम अभिनेत्रियों पर बड़े घर की आया की तरह नि
रखते थे," लुबोव अनीसिमोव्ना ने कहा, "हम पर देखभाल के
बच्चों वाली बूढ़ी औरतें तैनात थीं और ईश्वर न चाहे, यदि हमें
हो जाता तो इन औरतों के सभी बच्चों को उस अत्याचारी के
दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता।"

हम अभिनेत्रियों का कौमार्य भंग भी केवल वही व्यक्ति कर
था जिसने इसे हम पर थोप रखा था।

अध्याय ५

उन दिनों लुबोव अनीसिमोव्ना न केवल अपने कुंवारेपन के
शिखर पर ही थी पर उसके विभिन्न गुणों के विकास की दृष्टि
यह समय अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। वह कोरस दल में गीत गाती, "
बगिया की कुमारी" नृत्यरूपक में वह "प्रमुख नाच" नाचती और
नाटकों की "सभी अभिनय भूमिकाएं देखने मात्र से ही
जाती थी।"

मुझे पता नहीं है कि यह घटना किस साल हुई पर वही वर्ष
बार ओर्योल में से होकर गुज़रे थे, मैं ठीक से नहीं कह सकता कि
अलेक्सान्द्र पावलोविच थे या निकोलाई पावलोविच*। ज़ार ने वह
ओर्योल में बिताई थी और शाम को काउंट कामेन्स्की के नाटक
को देखने के लिये उनके आने की आशा थी।

काउंट ने कुलीन वर्ग के सभी लोगों को नाट्य कार्यक्रम में आ
किया था (टिकट नहीं बेचे गये थे) और सर्वश्रेष्ठ नाटक खेला गया
लुबोव अनीसिमोव्ना को गीत गाने थे और "बौनी बगिया की कुम

*यानी अलेक्सान्द्र प्रथम और निकोलाई प्रथम। – अनु०

का भाव करना था पर अंतिम पूर्वाभ्यास के समय दृश्यपट के गिर जाने से "डचेस द'बुर्वेलियां" की भूमिका अदा करनेवाली अभिनेत्री की टांग में चोट आ गई।

मैंने इस प्रकार की भूमिका के विषय में पहले कभी नहीं सुना था पर लुबोव अनीसिमोव्ना ने ऐसा ही उच्चारण किया था।

जिन कारीगरों ने दृश्यपट गिराया था उन्हें अस्तबल में चाबुक लगाये जाने के लिये भेज दिया गया और घायल अभिनेत्री को उसके कमरे में पहुंचाया गया लेकिन डचेस द'बुर्वेलियां की भूमिका अदा करनेवाली कोई न थी।

"मैंने अपनी मरज़ी से ही हामी भर ली", लुबोव अनीसिमोव्ना ने कहा, "क्योंकि मैं अभिनय का वह भाग पसंद करती थी जब डचेस द'बुर्वेलियां अपने पिता के पावों में माफ़ी मांगने के लिये गिरती थी और बालों को खोले हुए वहीं मर जाती थी। मेरे बाल कितने सुंदर, लम्बे और हल्के रंग के थे, फिर अरकादी की संवारने की कला से तो वे और भी शानदार लगते थे।

लड़की के अनायास भूमिका अदा करने को तैयार होने की बात सुनकर काउंट बहुत खुश हुआ, फिर नाटक के निर्देशक से यह आश्वासन मिलने पर कि "लूबा भूमिका नहीं बिगाड़ेगी," काउंट ने उत्तर दिया:

"अच्छा हो, नहीं तो तुम्हारी पीठ इसका जवाब देगी। और लो, उसके लिये मेरी ओर से नीलम के बुन्दे ले जाओ।"

नीलम के बुन्दों की भेंट खुशामदभरी और घिनौनी दोनों तरह की थी। यह मालिक की विशेष कृपादृष्टि की पहली सूचना थी जिसके थोड़े समय के लिए उसे बांदी होने का ऊंचा रुतबा मिलता था। इसके तुरंत बाद ही, लगभग उसी समय, अरकादी को इस विवश लड़की को, "संत सेसिलिया की पोशाक" में सजाने का हुक्म मिलता था; पोशाक पूरी सफ़ेद हो, सिर पर फूलों का छल्ला हो और हाथ में एक कुमुद का फूल, और फिर इस अक्षता को काउंट के कमरों में ले जाया जाय।

"तुम इस बात को समझने में बहुत छोटे हो," लुबोव अनीसिमोव्ना ने मुझसे कहा, "पर लड़की के साथ तो यह बहुत ही बुरी बात होती, ख़ास तौर से मेरे साथ जो अरकादी से इतना प्रेम करती थी। मेरे आंसुओं

की झड़ी सी लग गई व मैंने बुन्दों को मेज पर फेंक दिया और चिल्लाती रही। मैं यह कल्पना भी न कर सकती थी कि शाम को अपनी भूमिका कैसे अदा कर पाऊंगी।"

अध्याय ६

इन्हीं अभागी घड़ियों में अरकादी को भी किसी कम अभागे और मुश्किल दौर से होकर नहीं गुजरना पड़ा था।

उसी दिन काउंट का भाई अपने गांव से वहां जार से मुलाक़ात करने आ पहुंचा था; वह तो काउंट से भी ज्यादा बदसूरत था और लम्बे अरसे से गांव ही में रहता था, जहां न तो कभी फौजी पोशाक पहनता और न कभी हजामत बनवाता था क्योंकि "उसका पूरा चेहरा फुन्सियों से भरा हुआ था"। उस खास मौक़े के लिये उसे भी फ़ौजी पोशाक पहनाई जानेवाली थी और उसे साज-संवारकर स्वच्छ "सैनिक तौर पर" तैयार होना था।

और ढंग से तैयार होना उन दिनों आसान नहीं था।

"आज लोग यह नहीं समझ पाते कि उन दिनों हर बात में कितनी सख्ती बरती जाती थी," आया ने कहा, "हर काम एक सा निर्दोष रीति से होना चाहिए था। इसके भी विशेष नियम थे कि अभिजात लोगों को अपने बाल किस प्रकार संवारने चाहिए, चाहे यह कई लोगों की सूरत पर सुंदर जचता हो न हो; यदि किसी व्यक्ति के बालों की लट नियम के अनुसार सिर के सामने खड़ी हुई और छोटी गलमुच्छ लटकती हुई बनती तो उसका चेहरा बिना तारों के बालालाइका जैसा दिखाई देता था। अभिजात लोग इससे बड़ा भय खाते थे। यह सब केशविन्यास कौशल पर निर्भर था–नाई को गलमुच्छ और मूंछों के बीच छोटे से रास्ते से बनाने पड़ते थे और यह समझना पड़ता था कि बालों को किस प्रकार घुंघराला बनाया जाय या उन पर कंघी कैसे की जाय, क्योंकि कंघी के जरा से मोड़ से चेहरे पर अनोखे ही भाव दिखने लगते थे।" हमारी आया के कहने के मुताबिक़ नागरिक अधिकारियों के लिए यह आसान था क्योंकि उन पर बहुत कम ध्यान दिया जाता था तथा उनके चेहरों से केवल विनम्रता के भाव प्रकट होना ही काफ़ी था; सेना के लोगों को कई बातों का ध्यान रखना पड़ता था, उन्हें अपने से उच्च अधिकारियों के सामने

विनम्रता धारण करनी पड़ती थी और बाक़ी सब लोगों के सामने अकड़कर बड़ी बहादुरी दिखानी होती थी।

अरकादी ही अपनी आश्चर्यजनक कला से काउंट के भद्दे व मामूली चेहरे पर वांछित भाव प्रकट कर सकता था।

अध्याय ७

गांव वाला भाई तो अपने शहर वाले भाई से भी कहीं ज्यादा बदसूरत था। फिर गांव में तो वह अपने बाल बढ़ाये रखता था और अपनी शक्ल-सूरत की परवाह भी नहीं करता था और "अपने चेहरे को गंवार जैसा दिखने देता था।" कंजूस स्वभाव का होने से उसके यहां कोई नाई नहीं था, पहले जो निजी नाई था उसे मास्को में काम करने की छूट देकर उसकी कमाई से वह चौथाई भाग वसूल किया करता था। इस काउंट का चेहरा दाग़ और फुन्सियों से भरा हुआ था और उसकी हजामत बिना एकाध फुन्सी कटे होना असंभव सा था।

ओर्योल पहुंचते ही उसने शहर के सभी नाइयों को बुलाकर कहा: "यदि कोई मेरा चेहरा मेरे भाई काउंट कामेन्स्की जैसा संवार देगा तो उसे दो सोने के सिक्के मिलेंगे। पर, उसने मुझे थोड़ा भी काट दिया तो मेरी मेज पर दो तमंचे हरदम तैयार रहते हैं। काम अच्छी तरह करो और सोना ले लो पर यदि एक भी फुन्सी कट गई या मेरी गलमुच्छ बुरी तरह कट गई तो उस व्यक्ति को वहीं मार डालूंगा।"

वह उनको डराने की ही कोशिश कर रहा था क्योंकि उसके तमंचों में खाली कारतूस ही थे।

उन दिनों ओर्योल में कोई ज्यादा नाई तो थे नहीं और जो थे भी वे अक्सर स्नानघरों के आसपास डोलते रहते थे जहां वे खराब खून निकालने और जोंकें लगाने का काम करते थे। इनमें से कोई सूझबूझ वाला हुनरमंद नहीं था। वे सारी बात समझ गये और कामेन्स्की की सूरत "बदलने" से इन्कार कर गये। वे मन ही मन कहने लगे, "अपना सोना अपने पास रखिये और हमें अपना रास्ता लेने दीजिये।"

फिर प्रकट में सभी लोग कहने लगे, "आपकी फ़रमाइश के मुताबिक हम नहीं कर पायेंगे क्योंकि हम आप जैसे बड़े आदमी को छूने के क़ाबिल

ही नहीं हैं और न हमारे उस्तुरे ही अच्छे हैं। हमारे पास तो साध
सी उस्तुरे हैं फिर आपके चेहरे के लिए तो अंग्रेज़ी उस्तुरे की ज़र
। केवल काउंट का नौकर अरकादी ही ऐसा आदमी है जो इस
ो कर सकता है।"

काउंट ने नाइयों को फ़ौरन बाहर निकालने का हुक्म दिया
ई लोग भी आसानी से पीछा छूटने पर काफ़ी खुश हो गये। फिर
अपने भाई के पास जाकर बोला:

"भाई साहब, मैं आप से एक ख़ास निवेदन करना चाहता हूं कि आ
तीसरे पहर अरकादी को मेरे पास भेज दीजिये ताकि शाम से पहले
मुझे साज-संवार कर तैयार कर देवे। मैंने काफ़ी अरसे से हजामत न
बनवाई है और क़स्बे वाले नाई तो इस काम को अच्छी तरह कर
नहीं सकते।"

"हां, कहना न होगा कि यहां के नाई तो बिल्कुल अच्छे नहीं हैं,
काउंट ने अपने भाई को उत्तर दिया, "मुझे तो यह भी मालूम नहीं कि
यहां कोई नाई है भी, क्योंकि मेरे यहां के कुत्तों के बाल भी मेरे आदमी
ही काटते हैं। जहां तक तुम्हारे निवेदन का सवाल है, तुम्हारी मांग पूरी
करना असंभव है, क्योंकि मैंने सौगंध ले रखी है कि जब तक मैं जिन्दा
अरकादी मेरे सिवा किसी और की हजामत नहीं बनायेगा। तुम
सोचो कि क्या मैं अपने गुलाम के सामने अपना वचन तोड़
सकता हूं?"

काउंट के भाई ने कहा:

"क्यों नहीं? आप ही ने तो फ़ैसला किया था और आप ही इसे
भी कर सकते हैं।"

काउंट ने कहा कि यह तर्क उसे बड़ा अजीब लगता है।

"अगर मैं ही ऐसे करने लगा तो अपने नौकरों से फिर क्या सौदा
सकता हूं? अरकादी को इस हुक्म की ख़बर दो हुई है और हर
को इस बात को जानता है और इसी कारण उसको दूसरों से ज़्यादा
वेतन मिलता है। लेकिन यदि वह अपनी कला का उपयोग मेरे
किसी और के लिये करने की हिम्मत करेगा, तो मैं उसे कोड़े
कर मार डालूंगा और उसे फ़ौज में भरती करा दूंगा।"

"इन दोनों में से तो एक ही बात हो सकती है," उसके भाई

ने कहा, "या तो आप उसे कोड़े लगवाकर मार सकते हैं या उसे फ़ौज में भेज सकते हैं। दोनों बातें तो एक साथ आप कर ही नहीं सकते।"

"अच्छी बात है," काउंट ने कहा, "जैसी तुम्हारी मरज़ी। मैं कोड़ों से उसकी जान नहीं लूंगा पर केवल अधमरा करके उसे फ़ौज में भरती करवा दूंगा।"

"क्या यह आपका आख़िरी वचन है, भाई साहब?"

"हां, बिल्कुल आख़िरी है।"

"तो क्या केवल यही सारी बात है?"

"बिल्कुल ठीक।"

"अच्छा तो फिर, सब कुछ ठीक हुआ," काउंट के भाई ने कहा, "नहीं तो मैं सोचने लगा था कि आपके सगे भाई की क़द्र एक गुलाम से भी कम होगी। अब अपना वचन भंग न कीजियेगा और अरकादी को मेरे कुत्ते के बाल काटने के लिये भेज दीजिये। वह क्या करेगा, यह मेरा अपना मामला है।"

काउंट इससे इन्कार नहीं कर पाया।

"ठीक है," उसने कहा, "मैं उसे तुम्हारे कुत्ते के बाल काटने भेज दूंगा।"

"मेरी यही मांग थी," भाई ने कहा और वह काउंट से हाथ मिलाकर चल दिया।

अध्याय ८

सर्दियों के दिन थे। दिन ढलने लगा था और धुंधलका हो गया था— चिराग़ बत्ती करने का समय था।

काउंट ने अरकादी को बुलाकर कहा:

"मेरे भाई के घर जाओ और उसके कुत्ते के बाल बना दो।"

"क्या मुझे इतना ही काम करना है?" अरकादी ने पूछा।

"और कुछ नहीं," काउंट ने कहा, "और हां, अभिनेत्रियों के शृंगार के लिये जल्दी ही वापस आ जाना। लूबा को तीन प्यारी-प्यारी भूमिकाओं के लिये संवारना है•और नाटक के बाद उसे संत सेसिलिया की तरह सजाकर मेरे पास ले आना।"

अरकादी [illegible] गया।

"क्या बात है?" काउंट ने पूछा।

"माफ़ी चाहता हूं हुजूर, ज़रा कालीन से रपट गया था," अरक ने कहा।

"देखो, यह अपशकुन न हो," काउट ने संकेत किया।

अरकादी इतना घबरा गया था कि उसे सगुन-असगुन की कोई परव ही नहीं थी।

ज्यों ही उसे मुझे सेसिलिया की भांति संवारने की बात कही गई उसने अपने सामान की चमड़ेवाली पेटी उठाई और ऐसे चल पड़ा जैसे अंधा व बहरा हो गया हो।

अध्याय ६

काउंट के भाई के यहां जाने पर अरकादी ने देखा कि उसने आईने के सामने मोमबत्तियां जलवा रखी हैं, मेज़ पर दो तमंचे रखे हैं और वहीं पास में केवल दो ही नहीं दस सोने के सिक्के पड़े हुए हैं; इस बार तमंचों में खाली कारतूसों के बजाय चेरकेसियन गोलियां भरी हुई थीं।

"मेरे पास कोई भी कुत्ता नहीं है," काउंट के भाई ने कहा, "पर मेरी इच्छा है कि तुम मुझे सजा-संवार दो ताकि मैं बड़ा बहादुर आदमी दिखने लगूं और फिर तुम्हें ये दस सोने के सिक्के मिल सकते है। पर मुझे कहीं से काट दिया तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।"

अरकादी उसकी ओर थोड़ी देर तक ताकता रहा और फिर अचानक—भगवान जाने उसे क्या सूझा कि वह काउंट के भाई की हजामत बनाने लगा और उसके बाल संवारने लगा। एक मिनट में ही उसने सब कुछ अच्छी तरह कर डाला और जेब में सोना डालते हुए बोला:

"अलविदा।"

काउंट के भाई ने कहा: "तुम जा सकते हो पर मैं केवल यही जानना चाहता था कि तुमने इतनी जोखिम क्यों उठाई?"

"मैंने ऐसा क्यों किया यह तो मेरी छाती और मेरी आत्मा ही जानती है," अरकादी ने उत्तर दिया।

"हो सकता है, तुम पर गोली से जादू किया हुआ है और तुम तमंचे से डरते नहीं?"

"तमंचा क्या चीज है," अरकादी ने उत्तर दिया, "इस पर मैंने कभी विचार ही नहीं किया।"

"ऐसा कैसे हुआ? क्या सचमुच ही तुमने यह सोचने की हिम्मत की थी कि मैं अपनी बात का उतना पक्का नहीं हूं जितना तुम्हारा काउंट है, यदि तुम मुझे कहीं काट भी देते तो मैं तुम्हें गोली से नहीं उड़ाता? यदि तुम पर जादू किया हुआ न होता तो तुम अपने जीवन से हाथ धो बैठते।"

काउंट का नाम लेते ही अरकादी कांप उठा और उसने घबराते हुए उत्तर दिया:

"गोलियों से बचने के लिये मुझ पर कोई जादू नहीं किया गया था, पर ईश्वर ने मुझे थोड़ी बुद्धि भी दी है: जैसे ही आप मुझे मारने के लिये तमंचा उठाते मैं उस्तुरे से आपका गला काट डालता।"

इसके साथ ही वह बाहर निकल पड़ा और नाटकघर में ठीक समय मेरा शृंगार-प्रसाधन करने के लिये पहुंच गया पर काम करते समय उसका सारा शरीर कांप रहा था। वह हर लट को संवारता और नीचे झुककर उस पर फूंक मारता और मेरे कान में कह देता:

"डरो मत, मैं तुम्हें ले जाऊंगा!"

अध्याय १०

नाटक अच्छा चल रहा था क्योंकि हम सब पत्थर की मूर्तियों की तरह थीं, हमें डरना व कष्ट उठाना सिखाया गया था चाहे अभिनय करते समय हमारी भावनाएं कैसी भी क्यों न रही हों, कभी किसी को हमारे दिल का पता नहीं चल सकता था।

मंच से हमें काउंट और उसका भाई दोनों एक जैसे दिखाई दे रहे थे। बाद में जब वे मंच के पीछे की ओर आये तब भी उनको ठीक सेपहचानना मुश्किल था। सिर्फ हमारा मालिक बहुत विनम्र दिखाई दे रहा था और ऐसा लग रहा था कि वह अचानक दयालु हो गया है। बड़े अशिष्ट और निर्दयतापूर्ण काम करने से पहले वह हमेशा ऐसा ही देता था।

हम सभी भयभीत होकर क्रास का निशान बनाने लगे:

"भगवान रक्षा करे, अगला शिकार कौन होनेवाला है?"

उस समय तक हमें बरकादी के पागलपन के काम के बारे में कुछ पता नहीं था, चाहे वह खुद यह जानता था कि अब उसे दया की कोई आशा नहीं करनी चाहिए। जब काउंट के भाई ने उसकी ओर झांककर काउंट के कान में कुछ फुसफुसाया तो बरकादी पीला पड़ गया। मेरी श्रवण-शक्ति बड़ी तेज थी जिससे मैंने उसे यह कहते हुए सुना:

"सुनो, मैं आपको भाई होने के नाते सावधान करता हूं – जब वह हजामत करे तो उस पर ध्यान रखना!"

हमारा काउंट मंद-मंद मुस्कुराया।

मेरा अंदाज है कि बरकादी ने भी यह फुसफुसाहट सुन ली थी क्योंकि मुझे आखिरी दृश्य के लिये डचेस के रूप में संवारते समय उसने ऐसा कुछ किया जो पहले कभी न किया था: उसने मेरे चेहरे पर इतना पाउडर लगा दिया कि हमारे फ्रांसीसी पोशाकनवीस को उसे झाड़ना पड़ा था।

"बहुत ज्यादा, बहुत ज्यादा!" उसने मुझे बुरश से साफ करते हुए कहा।

अध्याय ११

जब नाटक समाप्त हुआ तो उन्होंने मेरी डचेस द'बुर्बेलिया वाली पोशाक उतार दी और मुझे संत सेसिलिया जैसा एक बिना बाहों का सफेद चोगा पहना दिया जो केवल कंधों पर बंधा हुआ था – हम उस पोशाक को सहन नहीं कर सकते थे। बरकादी संत सेसिलिया के चित्रों में बने हुए बालों की तरह मेरे बालों को संवारने व सिर पर पतला सा फीता बांधने के लिये भीतर आया; आते समय उसने छः आदमियों को मेरे कमरे के पास खड़े हुए देखा।

इसका अर्थ था कि ज्यों ही वह मेरी साज-सज्जा करके बाहर निकलेगा, उसे पकड़ लिया जायगा और कहीं दूसरी जगह यातना के लिये ले जाया जायगा। हमें ऐसी यातनाएं दी जाती थीं कि उससे तो मौत की सजा भी सौगुनी अधिक अच्छी होती। हमारे यहां एक तो शिकंजा होता था

और दूसरा एक यातनायंत्र (कठघरे जैसा) होता था जिससे शरीर को तानपूरे के तार की तरह तान दिया जाता और सिर को रस्सी से बांधकर फिर इस रस्सी को लाठी से सिर के इर्द-गिर्द पेच जड़े जाते थे—हां हमारे यहां ये सब सजाएं हुआ करती थीं। सरकारी अधिकारियों द्वारा दी गई सजाएं इनके आगे कुछ भी नहीं थीं। पूरे मकान के नीचे गुप्त कोठरियां थीं जिनमें लोगों को जंजीरों से भालुओं की तरह बांधकर रखा जाता था। जब कोई मकान के पास से निकलता तो उसे जंजीरों और बेड़ियों में जकड़े हुए क़ैदियों की कराहें सुनाई देती थीं। ऐसा लगता था कि वे अधिकारियों को अपने बारे में संकेत देना चाहते थे पर अधिकारी लोग सपने में भी इन मामलों में बीचबचाव करने की बात नहीं सोच पाते थे। लोगों को इन कालकोठरियों में लम्बे अरसे तक यातना भोगनी पड़ती थी, कुछ को तो आजीवन क़ैद की सजा भी मिलती थी। लम्बे अरसे तक वहां क़ैद रहे हुए एक आदमी ने यह तुक जोड़ डाली थी:

अरे रेंगते सांप घुसने आंखों को तेरी आयें।
जहर बिच्छुओं का रिस-रिस कर मुख में तेरे भर जाये।

मैं कभी-कभी जब इन पंक्तियों को मन ही मन दुहराती तो डर के मारे कांपने लग जाती। मनुष्यों को भालुओं के साथ जंजीरों से बांधकर भी रखा जाता, भालुओं के पंजे उनके शरीर से इंच भर दूर रह जाते।

पर उनको अरकादी इल्योच के साथ इस तरह का व्यवहार करने का मौक़ा भी नहीं मिल पाया क्योंकि ज्यों ही वह मेरे कमरे में आया उसने छोटी मेज अपने हाथों में उठाई और पूरी खिड़की को ही तोड़ डाला। बस मुझे तो इतना ही याद है...

मुझे होश आना शुरू हुआ था क्योंकि मेरी टांगें बहुत सर्द हो गई थीं। मैंने अपने पांवों को ऊपर खींचने की कोशिश की पर पाया कि मैं एक भालू या भेड़िये की खाल में लिपटी हुई थी और चारों ओर घोर अंधेरा था और जाने कहां तीन मनचले घोड़े दौड़ते जा रहे थे। उस बर्फ़गाड़ी (स्लेज) में मेरे अलावा दो आदमी और आपस में भिड़े हुए बैठे थे; इनमें से एक ने मुझे पकड़ रखा था जो अरकादी इल्योच ही था—और दूसरा अपनी पूरी ताक़त से घोड़ों को चाबुक उड़ा रहा था...

घोड़ों के खुरों से बर्फ के पिंड उड़ रहे थे; बर्फगाड़ी एक ओर से दूस
ओर तेज़ी से झकोले खा रही थी और यदि हम गाड़ी के फर्श पर बै
में न बैठे होते और उसे मज़बूती से पकड़े न रखते तो कोई जिन्दा न
बच पाता।

मैं भरकादी और कोचवान की बातें सुन रही थी और ऐसी दुवि
में लोग जिस प्रकार उत्तेजित हो जाते हैं वैसे ही वे हो रहे थे, पर जित
मैं समझ पाई वह ऐसे था, "वे हमारा पीछा कर रहे हैं... तेज़ी से.
और अधिक तेज़ी से..." और कुछ नहीं समझी।

जब भरकादी इल्यीच ने देखा कि मुझे होश आ गयो तो मेरी ओ
झुकते हुए उसने कहा:

"लुबुश्का प्रिये, वे हमारा पीछा कर रहे हैं... यदि हम भाग
सकें तो क्या तुम मरने के लिये तैयार हो?"

मैंने उसे कहा कि मैं बड़ी खुशी से मरने को तैयार हूं।

उसे तुर्की सीमा में रुश्चुक* नामक स्थान तक पहुंचने की आ
थी जहां कामेन्स्की के यहां से भागे हुए बहुत से लोग थे।

हम एक छोटे से झरने की बर्फ को पार कर आगे निकले और
सामने एक गांव का हलका खाका दिखाई दिया जहां कुत्ते भोंक रहे
कोचवान ने घोड़ों को और ज़ोर से चाबुक लगाये और फिर बर्फगाड़ी
एक ओर पूरी ताक़त से झुक गया जिससे वह उलट गई और भरक
और मैं दोनों बर्फ पर फेंक से दिये गये और सब कुछ ग़ायब हो ग

"डरो मत", भरकादी ने कहा, "ऐसा ही तय हुआ था क्योंि
मैं कोचवान को जानता हूं और न वह मुझे जानता है। मैंने तुम्हें
के लिये तीन सोने के सिक्के उसे दिये हैं और वह अब अपनी आत्मा
फ़िक्र करेगा। जो कुछ भी हो वह ईश्वर की मरज़ी। यह सुहाया ओि
गांव है जहां एक निर्भीक पादरी रहता है जो भागकर आए हुए जोड़
विवाह करा देता है। उसने कई लोगों को भाग निकलने में मदद
है। हम उसे पैसा देंगे और वह हमें शाम होने तक छिपाये हुए
और फिर हमारा विवाह कर देगा। हमारा कोचवान रात में वापस
आयेगा और हम लोग भाग निकलेंगे।"

---

*रुश्चुक—डेनयूब नदी के किनारे एक शहर और ज़िला—स०

अध्याय १२

हमने दरवाजा खटखटाया और ड्योढ़ी के भीतर आ गये। बूढ़े पादरी ने हमें दरवाजा खोला—वह एक बूढ़ा आदमी था, नाटे क़द का, उसका अगला दांत गिरा हुआ था। उसकी पत्नी एक बहुत बूढ़ी औरत थी जिसने हमारे लिए आंच जलाई। हम उनके पांवों में पड़े और उनसे याचना करने लगे:

"हमारी रक्षा करो, हमें आग सेंकने दो और शाम तक छिपने दो।"

"तुम कौन हो भलेमानसो?" पादरी ने पूछा, "क्या तुमने कोई चोरी की है या केवल भागकर आये हुए ग़ुलाम हो?"

"हमने किसी की कोई चोरी नहीं की," अरकादी ने कहा, "पर हम काउंट कामेन्स्की की क्रूरता से डरकर भागे हुए हैं और हम त्मुत्चूक जाना चाहते हैं जहां हमारे बहुत से लोग पहले से ही रह रहे हैं। वे हमारा पता नहीं लगा सकेंगे और हमारे पास अपना पैसा भी है; हम रात में ठहरने के लिए आपको एक सोने का सिक्का देंगे और हमारी शादी करना मंजूर करने पर तीन सिक्के और देंगे और यदि नहीं करेंगे तो हम त्मुत्चूक जाकर शादी कर लेंगे।"

"क्यों न करूंगा मैं तुम्हारी शादी?" पादरी बोला, "मैं तुम्हारा गठबंधन कर ही दूंगा, आख़िर त्मुत्चूक जाने तक तुम्हें इंतज़ार क्यों करना पड़े। मुझे इस सारे काम के लिए पांच सोने के सिक्के दे दो और मैं यहीं तुम्हारी शादी कर दूंगा।"

अरकादी ने उसे पांच सोने के सिक्के दिये और मैंने अपने कानों के नीलम के बुन्दे उतारकर उसकी पत्नी को दे दिये।

पादरी ने पैसा लिया और बोला:

"मेरे बच्चो, सब कुछ काफ़ी आसानी से हो जायेगा, मैं ऐसी बहुत सी शादियां करा चुका हूं पर मुझे एक ही संकट है कि तुम काउंट के आदमी हो। यद्यपि मैं पादरी हूं पर उसकी निर्दयता से घबराता हूं। पर ज़रा देखें, फिर जो ईश्वर की इच्छा होगी वही होगा; एक सोने का सिक्का और दे दो चाहे कटा हुआ ही हो, और फिर तुम लोग सब छिप सकते हो।"

भरकादी ने उसे बिना कटा हुआ सोने का सिक्का दिया और पादरी ने अपनी पत्नी से कहा:

"तुम वहां क्यों खड़ी हो, बूढ़ी औरत? इस लड़की को लहंगा, कोट या और कुछ पहनने को दो। मुझे उसे इस तरह देखने पर शर्म आती है, अरे वह तो लगभग नंगी सी है।"

वह हमें गिरजाघर ले जाना चाहता था और वहां किसी बड़े संदूक में जहां वह अपने चोले रखता था हमें छिपाना चाहता था। पर, परदे के पीछे ज्यों ही उसकी पत्नी मुझे कपड़े पहना रही थी, हमने किसी के दरवाजे का छल्ला खटखटाने की आवाज सुनी।

अध्याय १३

हमारे दिल बैठने लगे पर पादरी ने भरकादी के कान में फुसफुसाकर कहा:

"अब इतना समय तो है नहीं कि तुम मेरे चोलों के संदूक में छिप सको, इसलिये इस परों की गद्दी में घुस जाओ, जल्दी करो!"

मेरी ओर घूमते हुए उसने कहा

"और तुम उसमें चली जाओ, मेरी बिटिया।"

उसने मुझे एक लम्बी सी दीवार घड़ी के केस में प्रवेश दिया व चाबी लगाकर अपनी जेब में डाल ली; जब वह दरवाजा खोलने गया तो घर के बाहर बहुत से लोगों को खड़े पाया, कुछ दरवाजे पर थे और कुछ खिड़कियों में से देख रहे थे।

चार आदमी भीतर आये जो काउंट के शिकारी थे, वे लोहे की छड़ों, चाबुकों और बटे हुए रस्सों को अपनी कमर-पेटियों में बांधे हुए थे; उनके पीछे आठवां आदमी जो काउंट का मैनेजर था, एक लम्बा सा भेड़िये की खाल का कोट पहने हुए था जिसके ऊंचा सा कॉलर था।

घड़ी के जिस केस में मैं छुपी हुई थी उस पर लकड़ी का काम था और वह झांझरी वाला था जिसमें से मैं देख सकती थी।

बूढ़ा पादरी ज्यों ही काउंट के मैनेजर के सामने खड़ा हुआ वह डर के मारे थरथराने लगा क्योंकि उसने महसूस किया होगा कि उस पर उल्लम

आनेवाली है। वह अपने पर बराबर क्रॉस के निशान बना रहा था और ऊंचे सुर में जल्दी-जल्दी बोल पड़ा:

"अरे भलेमानसो, अरे मेरे प्यारो, मुझे मालूम है कि तुम क्या ढूंढ़ रहे हो, पर माननीय काउंट के आगे मैं बिल्कुल निर्दोष हूं, बिल्कुल निर्दोष!"

जैसे ही उसने क्रॉस का निशान बनाया वैसे ही उसने अपने कंधे के ऊपर से घड़ी की ओर इशारा किया जिसमें मैं छुपी हुई थी।

"मेरी आफ़त आई", मैंने सोचा, ज्यों ही उसकी चाल मैंने देखी।

मैनेजर ने भी यह देख लिया था और बोला:

"हमें सब मालूम है। मुझे इस घड़ी की चाबी दो!"

पादरी फिर हाथ हिलाने लगा।

"अरे भलेमानसो, मुझे कुछ मत करना, मैं चाबी कहीं रखकर भूल गया हूं, मैं भूल गया हूं, बिल्कुल भूल गया हूं।"

ज्यों ही वह यह बात कह रहा था उसने दूसरे हाथ से अपनी जेब टटोली थी।

उस चालाकी को मैनेजर समझ गया और पादरी की जेब से चाबी निकालकर उसने घड़ी का केस खोल लिया।

"बाहर निकल मेरी प्यारी", उसने कहा, "और अब तुम्हारा प्रेमी भी अपने आप निकल आयेगा।"

लेकिन करतूतों तो पहले ही प्रकट हो गया था—उसने पादरी का परों वाला बिस्तर फ़र्श पर फेंक दिया था और खुद खड़ा हो गया था।

"ऐसा लगता है कि अब मुझे कुछ भी नहीं करना—तुम जीते! मुझे लगा कि निरे से बच्चो पर वह निर्दोष है, मैं उसे जबरदस्ती उठाकर लाया था।"

फिर उसने पादरी की ओर घूमकर देखा और उसके मुंह पर थूक डाला।

"भलेमानसो," पादरी ने कहा, "देखते हो न इसने मेरे घर और पादरीपने का कैसा अपमान किया है? इसकी खबर माननीय काउंट के ऊपर करना।"

"कोई फ़िक्र मत करो," मैनेजर ने उत्तर दिया, "वह भी अभी में वर्णित हो जायेगा", और उसने अपने कार्यकर्ताओं को मुझे और बन्दूकों को अन्दर ले चलने का हुक्म दिया।

हम तीन बर्फगाड़ियों में बैठे हुए थे: बंधा हुआ अरकादी और शिकारी लोग पहली में, मैं तीसरी में इसी तरह की निगरानी में थी और बाकी सब लोग बीच वाली गाड़ी में थे।

रास्ते में जो भी लोग मिले हमें रास्ता देते गये: उन्होंने शायद यह सोचा होगा कि यह शादी का जुलूस था।

अध्याय १४

हमारा सफर बड़ी तेजी से पूरा हो गया और जब हम काउंट के अहाते में घुसे, मैं उस बर्फगाड़ी को नहीं देख पाई जिस पर अरकादी था पर मुझे अपने कमरे में ले जाया गया और बारबार मुझसे एक ही सवाल किया गया–मैं अरकादी के साथ कितनी देर अकेली रही थी?

सभी सवालों के जवाब में मैंने यही कहा:

"एक पल भर भी नहीं!"

ऐसा लगता है कि मेरा भाग्य उस आदमी से जुड़ा हुआ था जिसे मैं घृणा करती थी न कि जिसे मैं प्यार करती थी और मैं इस दुर्भाग्य से बच न सकी। जब मैं अपने कमरे मे वापस आई तो मैं अपना चेहरा तकिये में डालकर अपने दुर्भाग्य पर खूब रोई और तभी अचानक मैंने फर्श के नीचे से आती हुई भयंकर कराहें सुनीं।

उस लकड़ी के मकान मे हम लड़कियां ऊपर की मंजिल मे रहती थीं और नीचे की मंजिल में एक बड़ा व ऊंचा कमरा था जिसमें हम गाना और नाचना सीखती थीं। ऊपर की मंजिल से हम नीचे की सब बातें सुन सकती थीं। नरक के बादशाह शैतान ने उन क्रूर पशुओं को मेरे कमरे के ठीक नीचे अरकादी को त्रास देना सुझाया।

जब मैंने यह जाना कि वे अरकादी को कष्ट दे रहे हैं... तो मैं उस दरवाजे की ओर दौड़ी और उसे धक्का देने लगी... ताकि उसे पा सकूं... पर वह बंद था... मुझे यह पता नहीं था कि मैं क्या करना चाहती थी... मैं नीचे गिर गई... फर्श पर और भी तेज आवाजें आ रही थीं... न यहां कोई चाकू था... न कोई कील ही दिखाई देती थी... कुछ भी तो नहीं था जिससे इस सारे दुखड़े को समाप्त कर सकती... मैं अपने बालों की चोटी को अपनी गर्दन के चारों ओर बड़ी

मजबूती से मरोड़कर कसती रही, जब तक मेरे कानों में एक अजीब सी गूंज सुनाई न दी और मेरी आंखों के सामने काले गोल चक्कर से घूमने लगे और मैं बेहोश हो गई... जब मैं होश में आई तो मैंने अपने आपको एक अनजान जगह में एक लट्ठों से बने बाड़े में पाया, जहां खूब धूप थी... यहां बहुत से बछड़े थे, एक दर्जन से अधिक छोटे छोटे सुंदर बछड़े जो बड़े भोले व प्यारे थे... वे मेरे हाथों को अपने ठंडे होंठों से चाटते हुए ऐसा सोचते थे जैसे अपनी मां का दूध पी रहे हों... मेरी नींद टूटी क्योंकि वे अपने होंठों से मुझे सहला रहे थे। मैं कमरे में नजर दौड़ाती हुई अचरज करने लगी कि मैं कहां आ गई। तभी एक लम्बी सी बुजुर्ग औरत धारीदार कपड़े पहने हुए आई। उसके सिर पर भी कपड़ों जैसा ही लाल रूमाल बंधा हुआ था और उसका चेहरा बड़ा दयालु था।

वह औरत जान गई थी कि मैं सचेत हो गई हूं। वह मेरे साथ बड़ी दया का बर्ताव करने लगी; उसने मुझे बताया कि मैं काउंट के बछड़ों के बाड़े में थी। "वह इमारत वहां पर थी," लुबोव अनीसिमोव्ना ने बहुत दूर एक कोने में अर्धभग्न भूरी सी इमारत की ओर इशारा करते हुए बताया।

अध्याय १५

लड़की को पशुशाला भेजने का कारण उस पर पागल होने का संदेह था। जिन लोगों के मस्तिष्क खराब हो जाते थे उनको पशुशाला में अक्सर भेज दिया जाता था क्योंकि वहां पर सभी लोग गंभीर स्वभाव के होते और बुजुर्ग होते थे और ऐसा समझा जाता था कि ये लोग मानसिक रोगियों की "देखभाल करने में" योग्य हैं।

जिस धारीदार कपड़ों वाली औरत के सायबान में लुबोव अनीसिमोव्ना को होश आया था वह एक दयालु बुढ़िया थी जिसका नाम द्रोमीदा था।

शाम को अपना काम समाप्त करके, आया ने कहना जारी रखा, मेरे लिये ताजे घास के तिनकों का बिछौना ऐसा संवारकर बिछा देती मानो परों का बिस्तर हो। फिर वह कहती, "मैं तुम्हें सब ... , मेरी बेटी, यदि तुम मेरी बात मानती रहोगी। जो होना ... मैं भी तो तुम्हारे जैसी ही हूं और मैंने भी हाथ से

रते हुए धारीदार कपड़े हमेशा नहीं पहने थे। मेरी भी एक अलग ही जिंदगी थी, लेकिन भगवान, मुझे उसे फिर से याद न करने दें! फिर तुम्हें बताऊंगी—गौशाला में निर्वासन की कोई चिन्ता मत करो। ऐसा निर्वासन तो अच्छा ही है पर केवल उस भयकर शीशी से सावधान रहना..."

उसने अपने गुलूबंद के पीछे से एक छोटी सी सफेद शीशी निकाली और मुझे दिखाई।

"यह क्या है?" मैंने पूछा।

"यही वह भयंकर शीशी है, इसी में खुद को भुला देनेवाला जहर है," उसने कहा।

"मुझे दो यह भुलानेवाला जहर, मैं सब कुछ भूल जाना चाहती हूं।" उसने कहा:

"इसे मत पीना: यह वोद्का है। मैं एक बार अपने आपको न रोक सकी और इसको पी गई... किन्हीं भलेमानसों ने मुझे दिया था... अब इसके बिना मेरा काम ही नहीं चलता, मुझे इसकी जरूरत रहती है, जब तक तुम इसके बिना काम चला सको इसे मत पीना और यदि मुझे बोतल से पीते देखो तो मेरे बारे में बुरा मत सोचना, क्योंकि मुझे भयकर पीड़ा है। तुम्हें संसार में कुछ सुख है—ईश्वर ने उसे अत्याचार से छुटकारा दिला दिया है!.."

मैं चीख पड़ी, "मर गया!" और मैंने अपने बाल नोच डाले, पर मैंने देखा कि ये मेरे बाल नहीं थे, ये तो सफेद थे... यह क्या था?

पर उसने मुझे कहा:

"डरो मत, डरो मत, तुम्हारे बाल तो तभी सफेद हो गये थे जब उन्होंने तुम्हारी चोटी को तुम्हारे गले पर से हटाया था। वह अभी जीवित है और उसे सब अत्याचारों से मुक्ति मिल गई है: काउंट ने उस पर दया कर दी है जैसी उसने किसी पर कभी नहीं की... मैं तुम्हें आज रात को बताऊंगी पर अब मुझे अपनी बोतल से चुसकी लेनी है... मेरा दिल जल रहा है..."

और फिर वह अपनी बोतल से पीती ही चली गई जब तक उसे नींद न आ गई।

रात में, जब सब लोग सो रहे थे, चाची द्रोसीदा चुपके से उठीं, खिड़की के पास बिना चिराग़ जलाये गईं और मैंने उसे बोतल से चुसकी लेते हुए देखा। उसने फिर से पी और मुझे धीरे से कहा:

"तकलीफ़ सो गई कि नहीं?"

और मैंने जवाब दिया:

"तकलीफ़ नहीं सो गई है!"

वह मेरे बिस्तर के पास आई और मुझसे कहने लगी कि काउंट ने सजा के बाद अरकादी को अपने पास बुलाया और उससे कहा:

"मेरे हुक्म के मुताबिक़ तो तुम्हें पूरी सजा भोगनी पड़ती पर चूंकि तुम मुझे प्रिय हो इसलिये मैंने तुम्हें क्षमा किया है: मैं कल ही तुम्हें सेना में रंगरूटों के नियमित संख्या से ऊपर भेज रहा हूं। पर, चूंकि तुमने मेरे भाई का, काउंट और अभिजात व्यक्ति का, कोई भय नहीं माना जो तमंचों से लैस था, अतः मैं तुम्हारे लिये सम्मानपूर्ण जीवन का मार्ग खोल रहा हूं क्योंकि तुमने जिस अभिजात प्रवृत्ति का परिचय दिया है, मैं तुम्हें उससे कम ओहदा नहीं दिलाना चाहता। मैं कल ही एक पत्र भिजवाऊंगा जिसमें तुम्हें सीधे युद्ध-सेवा में नियुक्त करने के लिये लिखूंगा ताकि तुम्हें साधारण सिपाही की नौकरी न करनी पड़े बल्कि रेजीमेण्ट में सार्जेण्ट बनाया जाय जिससे तुम अपनी बहादुरी दिखा सको। अब से तुम मेरी आज्ञा के बजाय ज़ार की आज्ञा पालन करोगे।"

द्रोसीदा ने कहना जारी रखा, "अब उसका जीवन काफ़ी आसानी से चल रहा है और उसे अब किसी का भी भय नहीं है; युद्ध में मृत्यु के अलावा उसे अब किसी का कोई ख़ौफ़ नहीं है।"

मैंने उसका विश्वास किया और तीन साल तक मैं केवल एक ही सपना देखती रही कि अरकादी इल्यीच युद्ध के मैदान में किस तरह जूझ रहा है।

तीन साल बीत गये और इस पूरे अरसे में ईश्वर की मुझ पर पूरी कृपा रही कि मुझे वापस नाटक में काम करने नहीं ले जाया गया बल्कि गौशाला के बछड़ाघर में द्रोसीदा चाची की सहायक के रूप में रखा गया। मैं वहां बहुत प्रसन्न थी और केवल उस बुढ़िया के लिये ही दुखी होती थी। जब वह अधिक पिये-हुए नहीं होती तो मुझे उसकी बातें सुनने में बड़ा मज़ा आता। उसे अच्छी तरह याद था कि किस प्रकार हमारी जनता ने बूढ़े काउंट को मारा था—उसके निजी नौकर ने उनकी सहायता की थी—

क्योंकि लोग उसकी नरक जैसी दुखदायी निर्दयता को और अधिक सहन नहीं कर सकते थे। मैं नहीं पिया करती थी और ड्रोसीदा चाची के लिये सभी कुछ करने में मुझे बड़ी खुशी होती। बछड़े मेरे बच्चों की तरह थे और मैं उनसे इतनी घुलमिल गई थी कि जब भी कोई बछड़ा अधिक मोटा हो जाता और उसे काटने को ले जाया जाता तो मैं उस पर मांस का निशान बना देती और बराबर तीन दिनों तक रोती रहती... अब मैं नाटक के लिये उपयोगी नहीं थी क्योंकि मेरे पांवों का संतुलन बिगड़ गया था और मैं ठीक ढंग से चल भी नहीं सकती थी। पहले मैं बड़ी हलकी-फुलकी थी पर उस ठंडी रात में बेहोशी की हालत में जब मुझे अरकादी इल्यीच ले गया था तो मेरे पांवों में सर्दी लग गई होगी और फिर मेरे पांव के पंजे नाच के लिये मजबूत नहीं रहे थे। मैं ड्रोसीदा जैसे धारीदार कपड़े पहनती थी और ईश्वर जाने उस उदासावस्था में न जाने कितने समय तक मुझे और रहना होता। एक दिन शाम को मैं अपनी कोठरी में बैठी हुई थी: सूरज डूब रहा था और मैं खिड़की में बैठी सन के रेशे का गोला खोल रही थी कि अचानक एक छोटा सा पत्थर कागज में लिपटा हुआ खिड़की मे से होकर मेरे पास आ गिरा।

अध्याय १६

मैंने खिड़की से बाहर झांका, इधर-उधर नजर फैलाई पर कोई प्राणी दिखाई नहीं दिया।

'किसी ने चहारदीवारी के पार बाहर से ही यह फेंका होगा, मैं ऐसा सोचती रही, शायद यह वहां पर न गिरा हो जहां इसे फेंकनेवाला पहुंचाना चाहता हो, यह मेरे और बुढ़िया के पास आ गिरा था। सोचने लगी कि पत्थर पर से कागज उतारूं या नहीं। पर अच्छा यही लगा कि इसे उतार लूं क्योंकि इस पर कुछ तो लिखा ही होगा। हो सकता है किसी आदमी को किसी चीज की जरूरत हो, जिसका मैं पता लगा सकूं और इसे गुप्त रख सकूं और फिर से पत्थर के साथ उसी के पास फेंक दूं जिसके लिये यह आया हो।"

इसलिये मैंने कागज खोला और उसे पढ़ने लगी और मैं अपनी ही आंखों पर विश्वास न कर पाई...

अध्याय १७

उस में लिखा था :

"मेरी वफ़ादार लूबा, मैं ज़ार के लिये युद्ध में लड़ता रहा था व नौकरी करता रहा था। मैं कई बार घायल हुआ था, मुझे अफ़सर बना दिया गया है और एक शरीफ़ आदमी के रूप में सम्मान मिला है। अभी मैं घर पर छुट्टी लेकर एक आज़ाद व्यक्ति की तरह अपने घाव अच्छे करने के लिये आया हूं। मैं पुस्कारस्काया गांव में एक सराय के दरबान के यहां ठहरा हुआ हूं और कल ही मैं अपने सारे तमग़े व क्रॉस लगाकर काउंट के पास जाऊंगा। अपने इलाज के लिये मिले हुए पांच सौ रूबल भी साथ ले जाऊंगा और काउंट से कहूंगा कि वह मुझसे पैसा लेकर तुम्हें आज़ाद कर देवे ताकि मैं उस सर्वशक्तिशाली प्रभु, हमारे रचयिता के सिंहासन के सामने जाकर तुमसे विवाह करने की इच्छा पूरी कर सकूं..."

उसने यह भी लिखा, लुबोव अनीसिमोव्ना ने अपनी भावना को दबाने की कोशिश करते हुए कहा, कि "तुम्हें कितना भी कष्ट उठाना पड़ा हो और कुछ भी करने के लिये मजबूर किया गया हो मैं इस सब को तुम्हारी यातना मान लेता हूं, पाप अथवा कमज़ोरी नहीं। मैं इसे ईश्वर पर ही छोड़ रहा हूं और मेरे दिल में तुम्हारे प्रति उच्चतम आदर की भावना के सिवाय और कोई भावना नहीं है।" पत्र पर हस्ताक्षर था "अरकादी इल्यीन"।

लुबोव अनीसिमोव्ना ने इस पत्र को तुरंत अंगीठी में डाल दिया और इसके विषय में किसी से चर्चा नहीं की यहां तक कि बुढ़िया द्रोसीदा से भी नहीं कहा। वह रात भर प्रार्थना करती रही, अपने लिये नहीं बल्कि उसके लिये ही। क्योंकि, उसने कहा, यद्यपि उसने लिखा था कि वह एक अफ़सर है जिसके पास तमग़े और घाव दोनों ही हैं, मैं यह कल्पना नहीं कर पाती थी कि काउंट के बर्ताव में उसके प्रति पहले से कुछ भी अंतर आयेगा।

दूसरे शब्दों में उसे भय था कि अरकादी को फिर से कोड़े लगाये जायेंगे।

अध्याय १८

दूसरे दिन प्रातः जल्दी ही लुबोव अनीसिमोव्ना ने बछड़ों को धूप में छोड़ दिया और रोटी के छिलके दूध में भिगोकर उन्हें दूध पिला रही थी, तभी अचानक चहारदीवारी के दूसरे ओर से उसने लोगों को बड़ी तेजी के साथ वहाँ दौड़कर जाते हुए और आपस में आवेशपूर्ण बातें करते हुए सुना।

मुझे उनकी बातों का कुछ भी पता न लग सका, लुबोव अनीसिमोव्ना ने मुझे कहा, पर मेरे शरीर में अचानक एक दर्द उठा मानो किसी ने तेज चाकू से मेरा दिल चीर डाला हो। ज्यों ही खाद वाला फिलीप गाड़ी लेकर आया ही था, मैंने उसे पूछा:

"फ़िलीप, क्या तुमने कुछ सुना है कि लोग इतने आवेश में क्या बातें कर रहे हैं?"

"वे पुस्तारस्काया गांव की ओर भाग रहे हैं", उसने कहा, "जहां शराब के दरबान ने एक सोये हुए अफ़सर की हत्या कर दी है। उसका गला काटकर उसने पांच सौ रूबल लूट लिये हैं। लोगों ने दरबान को रंगे हाथों खून से सने धन के साथ पकड़ लिया है।"

जैसे ही उसने यह कहा मैं धड़ाम से बेहोश होकर गिर पड़ी..

यह सही था कि दरबान ने सरकारी इल्यीच की हत्या कर डाली... और उसको यहीं गाड़ दिया गया, यही उसकी क़ब्र है जिस पर हम अभी बैठे हैं... वह अब नीचे गड़ा है, इसी मिट्टी के नीचे लेटा हुआ है... तुम अचंभा करते थे कि मैं तुम्हें घुमाने के लिये हमेशा यहीं पर क्यों लाती हूं, करते थे न अचंभा? मैं यहां उधर देखने के लिये नहीं आती हूं–उसने धुंधले से मटमैले खंडहरों की ओर इशारा किया–पर उसी के पास बैठने और उसकी आत्मा की याद में एक घूंट पी लिया करती हूं...

अध्याय १९

लुबोव अनीसिमोव्ना ने बात यहीं खत्म कर दी क्योंकि उसने सोचा कि कहानी यहीं समाप्त हो चुकी है; इतने में उसने एक छोटी सी बोतल अपनी जेब से निकाली और "उसकी याद में एक घूंट ले ली" या "बोतल से एक घूंट ले लिया", लेकिन मैंने उसे पूछा

"यह तो बताइये कि उस प्रसिद्ध प्रसाधन कलाकार को किसने दफ़नाया?"

"खुद राज्यपाल (गवर्नर) ने, हां राज्यपाल खुद उसकी अंत्येष्टि के समय मौजूद थे। स्वाभाविक ही था! क्योंकि वह एक अफ़सर था पादरी और डीकन ने उसे "अभिजात अरकादी" के नाम से अपनी प्रार्थना में सम्बोधित किया और जब लोगों ने उसका ताबूत क़ब्र में उतारा तो सिपाहियों ने बंदूकों की सलामी दागी। इस घटना के एक साल बाद जल्लाद ने संत इल्या दिवस पर चौराहे पर दरबान को कोड़े लगाये। उसने अरकादी इल्यीच की हत्या के लिये उसको तेंतालीस कोड़े मारे फिर भी वह जिन्दा बच गया और उसे दाग लगाकर साइबेरिया में कालेपानी की सज़ा के लिये भेज दिया गया। हमारे यहां से भी कुछ लोग उसे कोड़े लगते हुए देख पाये थे। उनमें से कुछ बूढ़े आदमियों को याद था कि किस प्रकार क्रूर काउंट के* हत्यारों को सज़ा दी गई थी। उन्होंने कहा कि हत्या के लिये तेंतालीस कोड़े तो बहुत कम थे; पर ऐसा इसलिये था कि अरकादी जन्म से अभिजात वर्ग का नहीं था जबकि काउंट के हत्यारों को एक सौ एक कोड़े गिनकर लगाये गये थे। कोड़ों की गिनती को सम-भार क़ानून के अनुसार रोकना नहीं था और विषम संख्या में ही रोकना चाहिए। बूढ़े काउंट के हत्यारे को कोड़े मारने के लिये जल्लाद को तूला से ख़ास तौर पर बुलाया गया था और उसे कोड़े लगाने से पहले रम के तीन गिलास पिलाये गये थे। उसने कोड़े इस तरह लगाये थे कि पहले सौ कोड़े तो दर्द होने के लिये ही लगाता रहा पर उसकी जान नहीं निकली और फिर एक सौ एकवां कोड़ा ऐसी ताक़त से लगाया था कि उस आदमी की कमर ही तोड़ डाली उसका कचूमर ही निकाल डाला। जब वे उसे नीचे हटाने लगें तो वह मर रहा था... उसे चटाई से ढक दिया गया और वापस जेल में ले जाते समय वह रास्ते में ही मर गया। लोग कहते हैं कि जल्लाद चिल्लाता रहा, 'लाओ मेरे सामने किसी और को, मैं ओर्योल के हर आदमी को मार डालूंगा।'"

"क्या तुम अरकादी की अन्त्येष्टि में गई थीं?"

---

* म० फ़० कामेन्स्की जिसकी हत्या का उल्लेख कहानी के शुरू है। – सं०

"सब लोगों के साथ मैं भी गई थी। काउंट ने थियेटर के सभी नौकरों को हुक्म दिया था कि वे जाकर यह देख सकें कि हमारे ही एक आदमी ने कैसा नाम कमाया है।"

"क्या तुमने भी उससे विदा ली थी?"

"निस्संदेह विदा तो ली ही थी। हर एक व्यक्ति सरकारी के पास विदा लेने गया था और मैं भी गई... वह इतना बदल चुका था कि मैं उसे मुश्किल से ही पहचान पाई। वह दुबला दिख रहा था और पीला सा पड़ा हुआ था... लोगों ने बताया कि उसका सारा खून निकल चुका था क्योंकि उसका गला आधी रात के समय काटा गया था... और उसने युद्ध में भी अपना बहुत सा खून बहाया था..."

वह कहते-कहते रुक गई और दिवा स्वप्न सा देखने लगी।

"तुम बाद में कैसे सहन कर पाई?" मैंने पूछा।

मुझे ऐसा लगा मानो वह किसी समाधि से उठी हो और उसने अपना हाथ ललाट पर फेरा।

पहले तो मैं यह याद न कर पाई कि शवयात्रा के बाद मैं घर कैसे वापस आई, उसने कहा, मेरा खयाल है कि औरों के साथ मैं भी वापस आ गई थी... किसी ने मुझे रास्ता दिखाया होगा... पर शाम को ग्रोमोवा पेत्रोव्ना ने मुझसे कहा:

"तुम इस तरह नहीं रह सकोगी। तुम्हें और तो आंसी ही नहीं बल्कि पत्थर की तरह पड़ी रहती हो। ऐसे काम नहीं चलेगा, तुम्हें जोर से चिल्लाकर रो लेना चाहिए जिससे दिल का बोझ जरा हल्का हो जाय।"

"मैं तो चिल्ला ही नहीं पाती", मैंने कहा, "मेरा दिल एक सुलगते हुए अंगारे की तरह है और मुझे दर्द से छुटकारा ही नहीं मिल सकता।"

"यदि ऐसा ही है तो", उसने कहा, "ऐसा लगता है कि तुम बिना बोतल के जिन्दा नहीं रह सकोगी।"

उसने मेरे लिये अपनी बोतल से वोद्का उंडेलकर कहा:

"पहले मैं तुम्हें पीने नहीं देती थी, मैं हमेशा तुम्हें ऐसा न करने के लिये समझाती रहती थी, पर अब तो ऐसा नहीं कर पाऊंगी। उंडेलो इसे सुलगते हुए अंगारे पर—ले लो घूंट!"

"मैं नहीं पीना चाहती", मैंने कहा।

"मूर्ख लड़की मत बनो", उसने उत्तर दिया, "पहली बार ऐसा कौन चाहता है? यह दुःख का कड़ुआ घूंट है पर दुःख का जहर तो

"यह तो बताइये कि उस प्रसिद्ध प्रसाधन कलाकार को किसने दफ़नाया?"

"खुद राज्यपाल (गवर्नर) ने, हां राज्यपाल खुद उसकी अंत्येष्टि के समय मौजूद थे। स्वाभाविक ही था! क्योंकि वह एक अफ़सर था। पादरी और डीकन ने उसे "अभिजात अरकादी" के नाम से अपनी प्रार्थना में सम्बोधित किया और जब लोगों ने उसका ताबूत क़ब्र में उतारा तो सिपाहियों ने बंदूक़ों की सलामी दाग़ी। इस घटना के एक साल बाद जल्लाद ने संत इल्या दिवस पर चौराहे पर दरबान को कोड़े लगाये। उसने अरकादी इल्यीच की हत्या के लिये उसको तैंतालीस कोड़े मारे फिर भी वह जिन्दा बच गया और उसे दाग़ लगाकर साइबेरिया में कालेपानी की सज़ा के लिये भेज दिया गया। हमारे यहां से भी कुछ लोग उसे कोड़े लगते हुए देख पाये थे। उनमें से कुछ बूढ़े आदमियों को याद था कि किस प्रकार क्रूर काउंट के* हत्यारों को सज़ा दी गई थी। उन्होंने कहा कि हत्या के लिये तैंतालीस कोड़े तो बहुत कम थे; पर ऐसा इसलिये था कि अरकादी जन्म से अभिजात वर्ग का नहीं था जबकि काउंट के हत्यारों को एक सौ एक कोड़े गिनकर लगाये गये थे। कोड़ों की गिनती को सम-मार क़ानून के अनुसार रोकना नहीं था और विषम संख्या में ही रोकना चाहिए। बूढ़े काउंट के हत्यारे को कोड़े मारने के लिये जल्लाद को तुला से ख़ास तौर पर बुलाया गया था और उसे कोड़े लगाने से पहले रम के तीन गिलास पिलाये गये थे। उसने कोड़े इस तरह लगाये थे कि पहले सौ कोड़े तो दर्द होने के लिये ही लगाता रहा पर उसकी जान नहीं निकली और फिर एक सौ एकवां कोड़ा ऐसी ताक़त से लगाया था कि उस आदमी की कमर ही तोड़ डाली उसका कचूमर ही निकाल डाला। जब वे उसे नीचे हटाने लगे तो वह मर रहा था... उसे चटाई से ढक दिया गया और वापस जेल में ले जाते समय वह रास्ते में ही मर गया। लोग कहते हैं कि जल्लाद चिल्लाता रहा, 'लाओ मेरे सामने किसी और को, मैं ओर्योल के हर आदमी को मार डालूंगा!'

"क्या तुम अरकादी की अन्त्येष्टि में गई थीं?"

---

*काउंट म० फ़० कामेन्स्की जिसकी हत्या का उल्लेख कहानी में किया गया है।—सं०

पहरेदार

(सन् १८३९ की घटना)

अध्याय १

निम्न कहानी में जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है वे कथानायक के लिये मर्मस्पर्शी व सनसनीपूर्ण महत्त्व की हैं तथा इनका अंत इतना असाधारण है कि ऐसा केवल रूस में ही हो सकता है।

यह एक मनोरंजक लघुकथा है जो अंशतः राजदरबारी व अंशतः ऐतिहासिक है, इसमें १९वीं शताब्दी के चौथे दशक के कम जाने हुए एवं अत्यन्त रोचक काल के सामाजिक व्यवहारों व प्रवृत्ति का बड़ा सही चित्रण है।

कहानी में कपोलकल्पना का अंशमात्र भी नहीं है।

अध्याय २

सैंट पीटर्सबर्ग में सन् १८३९ के जाड़े में एपीफेनी त्योहार के दिनों में इतनी गर्मी थी कि बसंत के आगमन का भ्रम हो गया था - बर्फ पिघल रही थी, दिन में छज्जों से पानी टपकता रहता था नदी पर जमी बर्फ गीली पड़ने लगी थी और इससे पानी ऊपर बह निकला। शीतकालीन महल के सामने नेवा नदी पर बर्फ की खोखली जगहों में से पानी निकल पड़ा। पछुवा हवा गर्म तो थी पर बड़ी तेज चल रही थी जिससे पानी समुद्र की ओर से नदी की ओर बहने लगा था और इसलिए चेतावनी की तोपें छोड़ी गई थीं।

महल के पहरे की गारद इज्माइलोव रेजीमेंट की एक कम्पनी द्वारा दी जाती थी जिसकी कमान एक युवा अफसर, निकोलाई इवानोविच मिलर

के हाथ में थी, जो उच्चशिक्षा प्राप्त व समाज का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था (बाद में जनरल और विद्यालय का निदेशक हो गया था)। वह "मानवीय" विचारों का व्यक्ति था, ऐसा उच्च अधिकारी लोग एक लम्बे अरसे से कहा करते थे और इसका उसकी सेवा पर भी कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था।

वास्तव में मिलर एक सुयोग्य और विश्वसनीय अफ़सर था और महल की गारद को कभी कोई खास खतरा नहीं उठाना पड़ा था। यह बहुत अमन-चैन का समय था। गारद को कुछ भी नहीं करना पड़ता था, सिर्फ़ संतरियों के पहरों को पूरी चौकसी रखनी होती थी। फिर भी एक बार कप्तान मिलर की निगरानी की गश्त में एक बड़ी अनोखी और भयावह घटना हो गई जिसके बारे में उसके समकालीन लोगों को अब भी थोड़ी बहुत याद है।

अध्याय ३

शुरू में गारद का काम ठीक ठाक चलता रहा था: चौकियों को बांटा गया, संतरी तैनात कर दिये गये और सब कुछ बिल्कुल विधिवत चल रहा था। ज़ार निकोलाई पावलोविच का स्वास्थ्य प्रसन्न था, वे शाम को गाड़ी में घूमने निकले थे, फिर लौट आये और सोने जा चुके थे। पूरा महल नींद की गोद में था। रात का समय एकदम शान्त था। गारद के कमरे में खामोशी थी। कप्तान मिलर ने अपने सफ़ेद रूमाल को ऊंची, चमड़े में मढ़ी, चिकनी सी अफ़सरी आरामकुर्सी पर रख दिया था और खुद समय काटने के लिए किताब पढ़ने लगा था।

मिलर एक शौक़ीन पाठक था इसलिये पढ़ने में तल्लीन हो गया था और उसे समय बीतने का कोई अंदाज़ ही नहीं रहा था। अचानक कोई दो बजे के क़रीब एक भयानक हंगामे से वह चौंक पड़ा: उसके सामने गारद का हवलदार डर के मारे पीला पड़ा व कांपता हुआ हाज़िर हुआ जो जल्दी बोलने की कोशिश में हकलाने लगा:

"मुसीबत है हुज़ूर, मुसीबत!.."

"क्या बात है?!"

"बड़ी बुरी क़िस्मत है, हुजूर!"

नि० इ० मिलर घबराकर अपनी कुर्सी से उछल पड़ा और बड़ी मुश्किल से जान पाया कि मुसीबत और "बड़ी बुरी किस्मत" क्या है।

अध्याय ४

बात यह थी: इस्माइलोव रेजीमेंट का एक संतरी, सिपाही पोस्तनिकोव, इग्रोर्दान्स्की दरवाजे के बाहर की चौकी पर तैनात था, उसने नेवा नदी की बर्फ पर खोखली जगह के पानी में एक आदमी के गिरने की आवाज के साथ मदद के लिये उसकी चीखों व पुकारों को सुना।

सिपाही पोस्तनिकोव पहले किसी अभिजात व्यक्ति के यहां नौकर था और बड़ी जल्दी घबरानेवाला व भावुक आदमी था। दूर से एक डूबते आदमी की चीखें सुनकर वह आतंक के मारे जम सा गया। उसने घबराकर अपने दायें-बायें नजर फेंकी लेकिन बांध पर या नदी के किनारे दूर तक कोई प्राणी दिखाई नहीं दिया।

पानी में गिरे हुए आदमी की मदद करनेवाला कोई भी नहीं था और उसका डूबना निश्चित ही था...

इसी बीच डूबता हुआ आदमी एक बहुत लम्बे व विषम संघर्ष में फंस रहा था।

ऐसा लगने लगा था कि उसके लिये बिना ताक़त लगाये नदी के तल में समा जाना ही बाक़ी था पर नहीं! मदद के लिये उसकी चीखें-चिल्लाहटें मंद होती गई जो थोड़ी देर बाद फिर से शुरू हो गईं और हर बार ये चीखें महल के ज्यादा नजदीक सुनाई दे रही थीं। स्पष्ट था कि उस आदमी का दिमाग़ अब भी काम कर रहा था और वह सड़क की बत्तियों की ओर सही दिशा में आगे बढ़ने के लिये जूझ रहा था। फिर भी वह बच नहीं पायेगा क्योंकि इग्रोर्दान्स्की बर्फ़ का गड्ढा* उसके रास्ते

---

*सेंट पीटर्सबुर्ग में शीतकालीन महल के सामने एपीफ़ेनी के त्योहार के अवसर पर बर्फ में एक गड्ढा खोदकर काटा जाता था, जहां पर धार्मिक प्रार्थनाएं की जाती थीं और पानी पवित्र किया जाता था।—सं०

में सीधा पड़ रहा था। यहां पहुंचते ही वह बर्फ़ के नीचे खिंच जाता और यही उसके जीवन का अंत हो जाता... फिर खामोशी छा गई पर एक मिनट बाद ही वह फिर पानी में छींटे उछालने और चिल्लाने लगा, "बचाओ, बचाओ..." आवाज़ इतनी पास आ गई थी कि पोस्तनिकोव उसके संघर्ष से हुई पानी की छपछपाहट को सुन सकता था...

पोस्तनिकोव को यह सूझा कि अब उस आदमी को बचाना सबसे आसान होगा। यदि वह बर्फ़ पर थोड़ा दौड़कर आगे बढ़े तो आदमी वहीं मिल जायगा। केवल एक रस्सा फेंककर या किसी लट्ठे या बंदूक को आगे बढ़ाकर उसे बचाया जा सकता है। वह इतना समीप आ चुका था कि उसे पकड़ा जा सकता है और वह कूदकर बाहर निकल सकता है। पर संतरी पोस्तनिकोव को अपना कर्त्तव्य और शपथ याद थी: उसे पता था कि वह एक पहरे पर तैनात संतरी है और चाहे कुछ भी हो जाय संतरी अपनी चौकी को नहीं छोड़ सकता है।

साथ ही पोस्तनिकोव का दिल बड़ा घबरा रहा था, उसमें दर्द हो रहा था व फिर ज़ोर-ज़ोर से धड़ककर उसका दिल रुकने सा लगा था... उन पुकारों और चिल्लाहटों से उसका दिल इतना व्याकुल हो गया था कि वह उस दिल को शरीर से बाहर निकालकर अपने पांवों तले रौंद डालना चाहता था। किसी आदमी का जीवन अंत होते देखना व उसकी मदद न कर पाना—जबकि यह साधारण सी व संभाव्य बात थी—कितना दुखप्रद प्रसंग था, आखिर संतरी की चौकी तो अपने स्थान से हट नहीं जायेगी और भी कोई नुक़सान वाली बात होने से रही। "क्या मैं वहां दौड़ कर जाऊं? मुझे कोई देख नहीं पायेगा... हे ईश्वर, कहीं यह समाप्त हो जायेगा तो! वह फिर से कराह रहा है..."

आधे घंटे तक ये ही आवाज़ें आती रहीं, सिपाही पोस्तनिकोव का दिल चूर-चूर हो गया था और वह महसूस करने लगा था कि वह अपना "विवेक खोनेवाला है"। पर वह एक चुस्त, होशियार और बुद्धिमान सैनिक था, जो यह जानता था कि संतरी के लिये अपनी चौकी छोड़ना ऐसा अपराध है जिसके लिये फ़ौजी अदालत से सज़ा मिलती है और बेंतों वाले सिपाहियों की दो क़तारों में से होकर कोड़े खाते हुए निकलना पड़ता है और फिर कालेपानी की क़ैद भोगनी पड़ती है अथवा शायद गोली से ही उड़ा दिया जाता है। परन्तु उफनती हुई नदी की दिशा से पुनः

चिल्लाहटें और पास आने लगीं। फिर उस आदमी की बड़-बड़ और उसके हताश होकर संघर्ष करने की आवाज सुनाई दी:

"बचाओ!.. मैं डूब रहा हूं!"

यह आवाज इयोर्दान्स्की बर्फ़ के गड्ढे के पास से ही आई थी... बस, अब मामला ख़त्म!

पोस्तनिकोव ने फिर कई बार दायें-बायें देखा। कोई प्राणी दिखाई नहीं दे रहा था, हवा से सड़क की बत्तियां झिलमिला रही थीं और उसके हर झोंके के साथ आवाज आती व गुम हो जाती... शायद वह उसकी आख़िरी चीख़ थी?

एक बार और छपछपाहट हुई व एक ही शब्द की तीखी चीख सुनाई दी और फिर पानी में छपछपाने की आवाज सुनाई दी।

संतरी इसे अधिक सहन न कर पाया – उसने अपनी चौकी छोड़ ही दी।

अध्याय ५

पोस्तनिकोव सीढ़ी की ओर बढ़ा और तेजी से धड़कते हुए दिल को थामे, दौड़कर बर्फ़ पर जा पहुंचा और फिर बहते हुए पानी तक पहुंच गया; डूबते हुए आदमी को खोजकर अपनी बन्दूक का कुन्दा उसकी ओर बढ़ा दिया।

आदमी ने कुन्दा पकड़ लिया व पोस्तनिकोव ने बंदूक़ को खींचा और उसे घसीटकर किनारे पर ले आया।

बचानेवाला और बचाया हुआ दोनों ही पानी में बुरी तरह से भीग चुके थे। रक्षित आदमी बुरी तरह थका हुआ कांप रहा था और गिरनेवाला था। सिपाही पोस्तनिकोव उसे वहीं छोड़ने का विचार न कर सका बल्कि उसे घसीटकर घाट पर ले आया और किसी के हवाले करने के लिये इधर-उधर देखने लगा। जब यह सब हो रहा था तभी एक स्लेजगाड़ी सड़क पर दिखाई दी जिसमें महल के अक्षम सैनिक टुकड़ी का एक अफ़सर था (बाद में यह दल रद्द कर दिया गया था)।

जो सज्जन वहां पोस्तनिकोव के लिये असमय में पहुंचा, वह स्वभाव से थोथा था, अधिक समझदार नहीं था पर पक्का बदमाश था। वह स्लेज से कूदकर सवाल पूछने लगा:

"यह आदमी कौन है?.. तुम कौन हो?"

"पानी में डूब रहा था..." पोस्तनिकोव ने कहना शुरू किया।

"क्या? डूब रहा था? कौन डूब रहा था? तुम? और इस जगह पर क्यों?"

आदमी ठीक से सांस लेने की कोशिश कर रहा था, पोस्तनिकोव वहां से खिसक गया: अपनी बंदूक कंधे पर रखे हुए वह संतरी चौकी पर वापस पहुंच गया था।

मालूम नहीं कि अफ़सर यह ठीक से समझ सका कि क्या हुआ, पर उसने इस सब का पता करने में अपना वक़्त नहीं गंवाया। उसने तुरंत बचाये गये व्यक्ति को खींचकर अपनी स्लेज में डाला और उसे पुलिस थाने पर ले आया।

उस अफ़सर ने थानेदार को रिपोर्ट की कि भीगे हुए कपड़ों वाला आदमी जिसे वह साथ लाया है, महल के सामने नदी में डूब रहा था व अफ़सर ने उसे अपना जीवन खतरे में डालकर बचाया है।

बचाया गया आदमी तरबतर भीगा हुआ कांप रहा था और बुरी तरह थका हुआ था। उसे डर के मारे और भारी मेहनत करने से बेहोशी आ रही थी और उसे इस बात का कोई खयाल नहीं था कि उसे किसने बचाया था।

निद्रामग्न पुलिस डाक्टर ने उस आदमी को संभाला और अपाप सैनिक टुकड़ी के अफ़सर के ज़बानी बयान के आधार पर पुलिस के दफ़्तर में एक रिपोर्ट लिखी गई, परन्तु पुलिस को यह संदेह हुआ था कि अफ़सर पानी में प्रवेश करके भी बिना भीगे हुए कपड़ों के कैसे वापस आ गया था। अफ़सर को चिन्ता थी कि उसे "जीवन-रक्षा पदक" मिले और उसने इसे अपने सद्भाग्य का संयोग बतलाया और बड़े अनाड़ी व अनिश्चित तरीक़े से अपनी सफ़ाई पेश की। पुलिस का सिपाही थानेदार को जगाने गया और घटना की जांच करने के लिये लोग भेजे गये।

उधर महल में इस घटना ने बहुत ही तेज़ी से एक अनोखा मोड़ ले लिया।

अध्याय ६

अफ़सर द्वारा डूबनेवाले ग्रादमी को अपनी स्लेज मे ले जाने के बाद
ो घटनाएं हुईं, इसका महल के गारद के कमरे मे कुछ पता नहीं था।
माइलोव रेजिमेंट के सिपाहियों व उनके अफसर को केवल इतना ही
ा चला था कि उनका एक सैनिक पोस्तनिकोव अपनी चौकी
हर एक आदमी को बचाने गया था और यह सैनिक नियमों को भारी
ता थी जिसके लिये संतरी पोस्तनिकोव को अवश्य ही फ़ौजी अदालत
सज़ा मिलेगी और उसे कोड़े खाने पड़ेंगे तथा कंपनी के कमांडर से
र रेजिमेंट के कमांडर तक सभी को इससे बड़ी तकलीफ होगी और
भी कोई माफ़ी नहीं मिलेगी और इस पर आपत्ति उठाई नहीं जा
है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि भीगे और कांपते हुए संतरी पोस्तनिकोव
तौरन ही चौकी से हटा दिया गया था। जब उसे गारद-घर में ले
गया तो उसने नि० इ० मिलर को अक्षम सैनिक टुकड़ी के अफसर
बचाये गये व्यक्ति को अपनी स्लेज में बिठाने और कोचवान को गाड़ी
ाक ले जाने का हुक्म देने तक की सारी बात पूरे विवरण सहित
ो।

तरा बराबर अधिक निश्चित और बढ़ता ही जा रहा था। यह सर्वथा
था कि अक्षम सैनिक टुकड़ी का अफसर पुलिस के थानेदार को सारी
बता ही देगा और थानेदार इसकी रिपोर्ट फौरन पुलिस के मुख्याधिकारी
ोकिन को भेज देगा जो सुबह होते ही ज़ार को रिपोर्ट दे देगा और
"तमाशा" शुरू हो जायगा।

सोचने का तो समय ही नहीं था, उच्च अधिकारियों को तुरत ही
ा किया जाता था।

निकोलाई इवानोविच मिलर ने अपनी बटालियन के कमांडर लेफ़्टिनेंट-
स्विन्यीन को पत्र भेज दिया, जिसमे उनसे महल के गारद-घर
यथासंभव शीघ्रता से पहुंचने के लिये और अपनी सत्ता के प्रयोग
ा भयानक स्थिति में पूरी सहायता पहुंचाने के लिये निवेदन
।

यह लगभग तीन बजे रात को हुआ और चूंकि कोकोरिकिन जार को सुबह सबेरे रिपोर्ट दिया करता था इसलिये योजना बनाने और उस पर अमल करने के लिये बहुत कम समय बचा था।

अध्याय ७

लेफ़्टिनेंट-कर्नल स्विन्यीन में वह दयालुता और मानवीयता नहीं थी जो निकोलाई इवानोविच मिलर में सदा से ही एक विशिष्टता रही थी। ऐसी बात नहीं थी कि स्विन्यीन हृदयहीन था पर जहां तक उसके कर्तव्य का प्रश्न था वह पूरी तरह से "सेवानिष्ठ" था (इस क़िस्म के लोगों की याद आजकल अफ़सोस के साथ की जाती है।) स्विन्यीन एक निष्ठुर अनुशासक के रूप में प्रसिद्ध था और उसे सख्त अनुशासन का प्रदर्शन पसंद था। उसकी प्रवृत्ति द्वेष की नहीं थी और न वह अकारण ही किसी को कष्ट देना चाहता था, पर यदि किसी व्यक्ति से सेवापालन करने में चूक हो जाती तो वह उसके साथ बड़ी सख़्ती बरतता था। यह चर्चा करना भी उसे असंगत लगता था कि दोषी के ग़लत आचरण करने में उसकी क्या भावना थी और वह इसी सिद्धान्त को मानता था कि जहां तक नौकरी का सवाल है हरेक दोष दोष ही है। पहरे की कंपनी के सभी लोग यह जानते थे कि संतरी पोस्तनिकोव को अपनी चौकी छोड़ने का नतीजा तो भुगतना ही पड़ेगा और स्विन्यीन को इसका ज़रा भी खेद नहीं होनेवाला था।

लेफ़्टिनेंट-कर्नल स्विन्यीन ने अपने उच्चाधिकारियों और अपने साथियों में ऐसी ही प्रतिष्ठा प्राप्त की हुई थी। उसके उन साथी अधिकारियों में ऐसे लोग भी थे जो स्विन्यीन से सहानुभूति नहीं रखते थे क्योंकि "मानवतावाद" और वैसी ही दूसरी कल्पनाएं तब तक समाप्त नहीं हुई थीं। पर स्विन्यीन इन बातों के प्रति पूरी तरह बेपरवाह था कि "मानवतावादी" उसके काम पसंद करते हों या नहीं। स्विन्यीन से याचना या प्रार्थना करना या उसमें करुणाभाव जगाना बिल्कुल व्यर्थ ही था। उस युग के सेवापरायण लोगों के अन्तर को धारण करके वह इन गुणों का धारी हो गया था, पर एकिलिस के समान उसमें भी एक कमज़ोरी थी।

स्विन्यीन ने अपना सैनिक जीवन भी भली भांति प्रारंभ किया था और वह अपनी फ़ौजी पोशाक की तरह इसे भी संजोना चाहता था ताकि उसकी सैनिक प्रतिष्ठा में कोई मामूली सा दाग भी न लग पाये। इतने में उसकी बटालियन के एक आदमी का अभागा कार्य निस्सन्देह सारी यूनिट के अनुशासन पर कलंक का टीका लगाता था। बटालियन के किसी सिपाही द्वारा आदर्श दया की भावना से प्रेरित होकर किये गये काम का दोष बटालियन के कमांडर के मत्थे मढ़े जाने के बारे में भी उन उच्चाधिकारियों द्वारा जांच किये जाने की संभावना नहीं थी, जिन पर स्विन्यीन का भली प्रकार प्रारंभ किया गया और बड़ी निष्ठा से पोषित किया गया सेवाकाल निर्भर करता था। फिर ऐसे लोग भी तो बहुत थे जो उसकी तरक्की में रुकावट डालकर अपने ही किसी व्यक्ति को आगे बढ़ाना अथवा किसी संरक्षण वाले नवयुवक को तरक्की कराना चाहते थे। स्थिति ऐसी भी हो सकती थी कि ज़ार स्वयं ही रेजिमेंट के कमांडर से कहता कि उसके "अफ़सर कमज़ोर हैं" और उनके "आदमी बेतुके हैं"। और दोषी कौन है? स्विन्यीन, अवश्य ही। फिर यही शब्द दोहराये जायेंगे कि "स्विन्यीन कमज़ोर है" और शायद यह कमज़ोरी का दोष स्विन्यीन की प्रतिष्ठा में एक अमिट कलंक बन जायेगा। ऐसी परिस्थितियों में उसे अपने समकालीन लोगों में असाधारण गौरव प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलेगा और न ही वह रूसी राज्य के महा पुरुषों की चित्रवीथियों में अपना चित्र ही छोड़ देगा।

उन दिनों लोग इतिहास का अध्ययन बहुत कम करते थे पर उसमें विश्वास ज़रूर रखते थे और सदैव इतिहास की रचना करनेवालों के रूप में उसमें भाग लेने के लिये बड़े लालायित रहते थे।

अध्याय ८

प्रातः तीन बजे कप्तान मिलर का चिन्ताजनक पत्र मिलते ही स्विन्यीन तुरंत बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, अपनी वर्दी पहनी और शीतकालीन महल के गारद-घर में भय और क्रोध के साथ आ पहुंचा। उसने फ़ौरन

ही संतरी पोस्तनिकोव से प्रश्न किये और उसे इस बात का भरोसा हो गया कि अनपेक्षित घटना वास्तव में घटी है। संतरी पोस्तनिकोव ने अपने बटालियन कमांडर को सब कुछ बड़ी ईमानदारी से बताया जो उसकी सैनिक चौकी पर हुआ था व जिसके बारे में उसने अपने कंपनी कमांडर मिलर को पहले कहा था। सिपाही ने कहा कि वह "ईश्वर और ज़ार के सामने दोषी है व उसे माफी की आशा नहीं है", कि वह अपनी चौकी पर खड़ा रहा था और उस डूबते हुए आदमी की कराहटें सुनता हुआ काफ़ी समय तक मानसिक पीड़ा भोगता रहा था, कि उसके कर्तव्य और करुणा के विचारों में एक लम्बा संघर्ष चलता रहा था और अंत में वह प्रलोभन में आया और जब वह इस संघर्ष को नहीं सह पाया तभी उसे चौकी छोड़नी पड़ी और वह बर्फ़ पर कूद पड़ा, उस डूबते आदमी को किनारे पर ले आया और वहीं दुर्भाग्य से उसे महल की अक्षम सैनिक टुकड़ी का अफ़सर जाता हुआ मिल गया था।

लेफ़्टिनेंट-कर्नल स्विर्यीन निराश हो गया था: वह स्वयं को केवल एक ही संतोष दे सका – उसने पोस्तनिकोव पर अपना क्रोध निकाला जिसे तुरंत गिरफ़्तार करवाकर कोठरी में बंद करा दिया। फिर उसने मिलर से कई चुभती हुई बातें कहीं, उस पर "उदारता" का दोष लगाया जिसे नौकरी में कभी उचित नहीं माना जाता। पर यह सब कुछ काफ़ी नहीं था ताकि स्थिति सुधारी जाय। किसी प्रकार की माफी दी जानी भी असंभव थी, औचित्य की तो बात ही छोड़ दीजिये, सिपाही द्वारा अपनी चौकी छोड़ना ऐसा ही दोष था। अब तो उसके लिये एक ही मार्ग बाक़ी बचा था – ज़ार से इस घटना को छिपाये रखना...

क्या ऐसी घटना भी कभी छिपाई जा सकती है?

लगता था कि ऐसी किसी बात की कोई संभावना नहीं थी, क्योंकि न केवल सारे गारद के लोग ही डूबनेवाले व्यक्ति को बचाये जाने के बारे में जानते थे बल्कि वह घृणित अक्षम सैनिक टुकड़ी वाला अफ़सर भी यह जानता था और उसने भी अवश्य तब तक यह सारा मामला जनरल कोकोश्किन को बता दिया होगा।

उसे कहां दौड़कर पहुंचना चाहिए? वह किससे जाकर निवेदन करे? किससे सहायता व सुरक्षा प्राप्त करनी चाहिए?

स्विन्योन ने तुरंत बड़े ड्यूक मिखाईल पावलोविच* के पास जाकर उसे पूरी कहानी साफ-साफ बताने की बात सोची। उन दिनों इस प्रकार की तिकड़मबाजी का चलन था। बड़ा ड्यूक तेज स्वभाव का व्यक्ति था, वह नाराज होकर उस पर चिल्ला सकता था, लेकिन उसका व्यवहार और आदत ऐसी थी कि शुरू में बहुत कठोर होने पर भी – यहां तक कि वह अपमान भी कर सकता था – उतना ही शीघ्र वह शान्त भी हो जाता था और फिर दोषी का पक्ष ले लेता था। ऐसे कई किस्से पहले हो चुके थे और कभी कभी जानबूझकर ऐसे मौके ढूंढे जाते थे। "कठोर शब्द चोट नहीं पहुंचाते हैं" और स्विन्योन सारी बात का इस अनुकूल स्थिति में परिवर्त्तन करना चाहता था, पर वह रात्रि के समय महल में कैसे प्रवेश कर सकता था और बड़े ड्यूक की शांति कैसे भंग कर सकता था? सुबह होने तक इंतजार करने और कोकोश्किन को रिपोर्ट जार तक पहुंचने के बाद बड़े ड्यूक को कहने में काफी देर हो सकती थी। और जब स्विन्योन का सिर इन सभी कठिनाइयों से चकरा गया था, इतने में वह शान्त हो गया और इस दुर्घटना से बचने का एक अन्य मार्ग उसके ध्यान में आया जो अब तक ओझल ही था।

अध्याय ९

फ़ौजी चालों में एक चाल ऐसी है जो किसी घिरे हुए किले की दीवारों की तरफ से होनेवाले सबसे ज्यादा खतरे के समय काम में ली जाती है – दीवारों से दूर मत हटो पर ठीक उनके नीचे जा खड़े होओ। स्विन्योन ने निर्णय लिया कि वह पहले सोची हुई कोई बात न करके सीधा कोकोश्किन के पास जायेगा।

सेंट पीटर्सबर्ग में पुलिस के मुख्याधिकारी कोकोश्किन के बारे में कई भयानक और बेतुके किस्से प्रचलित थे। साथ ही यह भी माना जाता था कि वह विस्मयकारी व बहुमुखी प्रतिभा वाला आदमी है। उसकी सफलता का रहस्य था कि वह "तिल का ताड़ बनाकर उसी प्रकार ताड़ का तिल बना देने में माहिर था।"

---

*सम्राट निकोलाई प्रथम के छोटे भाई, जो गार्ड्‌स कोर के कमांडर थे। – सं०

उसने थानेदार को आदेश भेजा कि अक्षम सैनिक टुकड़ी के अफ़सर और बचाये हुए व्यक्ति को साथ लेकर आये। इसी बीच स्विन्योन को अपने दफ़्तर के साथ वाले छोटे कमरे में इंतज़ार करने को कह दिया गया। फिर कोकोश्किन अपने कमरे में गया, उसने दरवाज़ा खुला ही छोड़ दिया और मेज पर बैठकर काग़ज़ों पर दस्तख़त करना शुरू करने ही वाला था पर मेज पर टिके हाथों का सहारा लग जाने से उसे गहरी नींद आ गई।

अध्याय ११

उन दिनों न तो शहरों में तार व्यवस्था थी और न ही टेलीफ़ोन थे, इसलिये अधिकारियों के जरूरी आदेश "चालीस हज़ार पत्रवाहकों" के साथ सभी दिशाओं में भेजे जाते थे। अपनी कामेडी में* गोगोल ने उन्हें अमर बना दिया है।

कहना न होगा कि यह काम इतनी फुर्ती से नहीं होता था जितना तार या टेलीफ़ोन द्वारा, पर इससे शहर में काफ़ी चहलपहल रहती थी और यह अधिकारियों की निद्राहीन सजगता का प्रमाण था।

बचानेवाले अफ़सर और बचाये हुए व्यक्ति को लेकर थानेदार थाने से चलकर महल तक हांफता हुआ आ पहुंचा। इसी बीच में बेचैन और सशक्त जनरल कोकोश्किन ने अपनी झपकी पूरी कर ली और वह ताज़गी महसूस करने लगा। यह उसके चेहरे के भाव और मानसिक स्थिति से प्रकट था।

कोकोश्किन ने स्विन्योन सहित सभी को अपने दफ़्तर में बुलाया।

"रिपोर्ट?" कोकोश्किन ने पुलिस के थानेदार से तरोताज़ा स्वर में पूछा।

थानेदार ने चुपचाप एक तह किया हुआ काग़ज़ उसे दिया और फुसफुसाया :

"मैं श्रीमान से कुछ गोपनीय बात अर्ज़ करना चाहता हूं..."

"बहुत अच्छा।"

---

* [illegible]...-जनरल"।—अनु०

अफ़सर ने अपना नाम बताया।

"सुना तुमने?"

"जी हां, हुज़ूर।"

"क्या तुम ईसाई हो?"

"हां, हुज़ूर।"

"यही नाम लिखवाना ताकि पादरी इनके लिये प्रार्थनाएं कर सके।"

"मैं जरूर लिखवाऊंगा, हुज़ूर।"

"इनके लिये प्रार्थना करना और अब यहां से बाहर चले जाओ– तुम्हारी यहां अब कोई जरूरत नहीं है।"

वह आदमी झुककर दौड़ पड़ा और बेहद खुश था कि उसे छोड़ दिया गया था।

स्विन्योन वहां बड़े अचरज में खड़ा हुआ था: भगवान की कृपा से मामले ने कैसा मोड़ ले लिया था!

अध्याय १२

कोकोश्किन ने अक्षम सैनिक टुकड़ी दल के अफ़सर को ओर घूमकर देखा।

"तुमने उस आदमी को अपनी जान की जोखिम उठाकर बचाया?"

"जी हुज़ूर।"

"कोई गवाह तो नहीं हैं, गवाह तो हो भी नहीं सकते, क्योंकि रात बहुत हो चुकी थी, क्यों यही बात है न?"

"जी हुज़ूर, बड़ा अंधेरा था और वहां सड़क पर संतरियों के सिवा कोई न था।"

"संतरियों के बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं है: संतरी अपनी चौकी पर रहता है और उसका ध्यान किसी बाहरी वस्तु से नहीं हटा करता है। मैं तो रिपोर्ट में लिखी हुई बात का विश्वास करता हूं। यह तो तुम्हारे कहे शब्दों के अनुसार है, है न?"

कोकोश्किन ने इन शब्दों का विशेष जोर से उच्चारण किया मानो वह कोई अभियोग लगा रहा या धमकी दे रहा हो।

अफ़सर इससे नहीं डरा, बल्कि अपनी आंखें फाड़कर देखने लगा . उसने अपना सीना तानकर जवाब दिया:

"मेरे गुरु के शब्द हैं और बिल्कुल सही हैं, हुज़ूर।"

"तुम्हारा कार्य पदक मिलने के योग्य है।"

अफ़सर ने फ़ौरन कृतज्ञता से सिर झुकाकर सलाम किया।

"इसके लिये मुझे धन्यवाद देने की कोई बात नहीं है", कोकोश्किन ने कहना जारी रखा, "मैं तुम्हारे निस्स्वार्थ कार्य के बारे में सम्राट को रिपोर्ट दूंगा और शायद आज ही तुम्हारा सीना पदक से सुशोभित हो जाय। तुम घर जा सकते हो, थोड़ी गर्म चाय पी लेना और कहीं बाहर मत जाना, तुम्हारी ज़रूरत पड़ सकती है।"

अक्षम सैनिक टुकड़ी के अफ़सर का चेहरा दमकने लगा, उसने झुककर विदाई ली और चला गया।

कोकोश्किन ने उस पर जाते समय नज़र दौड़ाई और कहा:

"बहुत सम्भव है कि महामहिम स्वयं ही उससे मिलना चाहें।"

"जैसी आपकी मरज़ी," थानेदार ने बात समझते हुए कहा।

"मुझे तुम्हारी अब कोई ज़रूरत नहीं है।"

थानेदार चला गया और दरवाज़ा बंद किया और अपनी धार्मिक आदत के अनुसार उसने उसी वक़्त क्रॉस का निशान बनाया।

अक्षम सैनिक टुकड़ी का अफ़सर सीढ़ियों के नीचे खड़ा थानेदार की प्रतीक्षा कर रहा था और आने के वक़्त से कहीं अधिक मित्रता दिखाते हुए दोनों चल पड़े।

स्विन्योन पुलिस मुख्याधिकारी के कमरे में अकेला ही रह गया था, कोकोश्किन ने उसकी ओर नज़र फेंकी और पूछा:

"तुम बड़े ड्यूक के पास तो नहीं गये?"

उन दिनों अब भी कोई बड़ा ड्यूक कहता तो उसका अर्थ बड़े ड्यूक मिख़ाईल पावलोविच से होता था।

"मैं सीधा आपके पास ही आया हूं" स्विन्योन ने उत्तर दिया।

"गारद कंपनी का अफ़सर कौन है?"

"कप्तान मिलर।"

कोकोश्किन ने फिर स्विन्योन की ओर देखा और पूछा:

"ऐसा लगता है कि इससे पहले तुम मुझे बिल्कुल अलग ही बात कह रहे थे।"

स्विन्योन यह नहीं समझ पाया कि वह किस प्रसंग में बात कर रहा

कई लोगों को कष्ट से बचाने के लिये कुछ तो करना था और कोकोश्किन ने सारी बातें ऐसी चतुराई से जचा दीं कि किसी को जरा भी असुविधा नहीं हुई बल्कि इसके विपरीत हर आदमी खुश और संतुष्ट सा लगता है। यह अपनी आपसी बात है—मुझे एक विश्वासी आदमी से पता लगा है कि कोकोश्किन मुझसे खुश है। वह यह जानकर काफी प्रसन्न हुआ कि मैं किसी और के पास न जाकर उसी के पास सीधा गया था और मैंने उस बदमाश से भी कोई बहस नहीं की थी जिसे पदक मिला था। संक्षेप में, किसी को भी कष्ट नहीं हुआ और सारा मामला ऐसी होशियारी से निपटा दिया गया कि भविष्य में भी किसी बात का डर नहीं है, पर हम लोग एक ही दृष्टि से ढीले हैं। हमें कोकोश्किन के उदाहरण का बड़ी होशियारी से अनुसरण करना चाहिये और हमारी ओर से मामले को ऐसा निपटाया जाना चाहिये कि यह निश्चित हो जाय कि आगे इसका कोई बुरा परिणाम नहीं निकलेगा। अब केवल एक ही व्यक्ति बाक़ी है जिसकी स्थिति स्पष्ट नहीं है। मेरा मतलब सैनिक पोस्तनिकोव से है। वह अब तक कालकोठरी में गिरफ्तार पड़ा है और वह निस्संदेह डर के मारे परेशान है कि उसके साथ क्या बर्ताव होनेवाला है। हमें उसकी इस दुखदायी अनिश्चितता का भी अंत करना है।

"हां, अब समय आ गया है कि हमें यह करना ही होगा," मिलर ने प्रसन्न स्वर में हां में हां मिलाई।

"और अवश्य ही इसे तुम्हीं सबसे अच्छी तरह कर सकोगे, इसलिये कृपा करके फ़ौरन बैरकों में जाओ, अपनी कंपनी की सफ़ेबन्दी करो, पोस्तनिकोव को कोठरी से बाहर निकालो और उसे सारी कंपनी के सामने दो सौ कोड़े मारे जाने की सजा दो।"

9329

अध्याय १४

इससे मिलर चकित हो गया और उसने स्विन्यीन को पोस्तनिकोव पर दया करने व उसे माफ़ी देने के लिये समझाने की कोशिश की क्योंकि वह कोठरी में काफ़ी यातना भोग चुका था और इस बारे में परेशान था कि उसके साथ कैसा व्यवहार होगा। इस पर स्विन्योन गुस्से में

श्रागबबूला हो गया और उसने मिलर को पूरी बात कहने का मौक़ा ही नहीं दिया।

उसे रोकते हुए स्विन्यीन बोला, "नहीं, ऐसी बातें छोड़ो: मैं श्रभी तुम्हें सूझबूझ से काम लेने के लिये कह रहा था और तुमने फ़ौरन ही यह बेतुकापन दिखा दिया! छोड़ो इस तरह की बात!"

स्विन्यीन अपना स्वर बदलकर रूखेपन और अफ़सरी ढंग से बड़ी कड़ाई के साथ कहने लगा:

"चूंकि तुम्हें स्वयं को भी दोष से मुक्त नहीं कहा जा सकता और वास्तव में तुम बहुत दोषी भी हो क्योंकि तुमने इतनी उदारता दिखाई थी जो किसी सैनिक के लिये उचित नहीं है और वही असर तुम्हारे मातहतों के व्यवहार में भी दिखाई देता है, अतः मैं आदेश देता हूं कि सज़ा के समय तुम स्वयं उपस्थित रहोगे व इसका आग्रह करोगे कि सज़ा पूरी तरह दी जाय... हर संभव कठोरता बरती जाय। कृपया इस बात का ध्यान रखना कि जो युवा सिपाही अभी हमें सेना से मिले हैं उन्हीं से कोड़े लगवायें क्योंकि हमारे पुराने लोग तो सभी गारद की उदारता से ग्रस्त हैं: वे अपने साथियों को कोड़े न लगाकर केवल उनकी पीठ से मक्खियां उड़ाने का काम करते हैं। मैं खुद वहां पहुंचूंगा और देखूंगा कि दोषी से कैसा बर्ताव किया जाता है।"

किसी उच्च अधिकारी के सीधे आदेशों की कोई अवहेलना नहीं की जा सकती थी, अतः दयालु नि० इ० मिलर को बटालियन के कमांडर द्वारा दिये गये आदेश का ठीक उसी प्रकार से पालन करना ही था।

पूरी कंपनी को इस्माइलोव बैरक के चौक में इकट्ठा किया गया और भंडार में से काफ़ी संख्या में कोड़े लाये गये। पोस्तनिकोव को कोठरी से बाहर निकाला गया और उसके साथ सेना से हाल ही में स्थानांतरित हुए युवा सैनिकों की मदद से "बर्ताव किया गया"। ये लोग गारद के उदारतावाद से बिगड़े हुए नहीं थे इसलिये बटालियन के कमांडर द्वारा निर्धारित कोड़ों की सज़ा का सही तरीक़े के अनुसार अक्षरशः पूर्ण पालन किया गया। सज़ा के स्थान से पोस्तनिकोव को उसी श्रोवरकोट में लपेटा गया जिस पर उसे कोड़े लगाये गये थे और उसे सीधा रेजिमेंट के अस्पताल में ले जाया गया।

अध्याय १५

बटालियन के कमांडर स्विन्यीन सज़ा दिये जाने की रिपोर्ट मिलते
पोस्तनिकोव को अस्पताल में जाकर पितातुल्य भाव से देखने गया और
ने इस बात का प्रमाण मिलने से बड़ा संतोष हुआ कि उसके आदेश का
क्षमता के साथ पालन किया गया है। दयालु और अधीर पोस्तनिकोव
साथ पूर्णतया सही "बर्ताव" किया गया था। स्विन्यीन ने प्रसन्न होकर
न पोस्तनिकोव को अपने पैसे से आधा सेर शक्कर और आधा पाव
य दिये जाने का हुक्म दिया ताकि वह स्वास्थ्य-लाभ के समय मज़ा ले
। पोस्तनिकोव ने अपनी खाट पर लेटे हुए ही चाय के बारे में हुक्म
लिया था और जवाब में बोला :

"हुज़ूर, मैं बहुत खुश हूं और आपको पितृवत दयालुता के लिये
वाद देता हूं।"

वह वास्तव में "बहुत खुश" हुआ था क्योंकि कोठरी में तीन दिन
रहने पर उसे इससे बहुत बुरी आशंका हो रही थी। उन क्रूर दिनों
दो सौ कोड़े तो फ़ौजी अदालत की सजा के मुक़ाबले कुछ भी नहीं
पोस्तनिकोव के भाग्य में भी ऐसी ही सज़ा भोगना हो सकता था,
दृढ़ता और सूझबूझ वाले उपरोक्त परिवर्तन न हुए होते।

हमारे द्वारा वर्णित घटनाओं के परिणामों से प्रसन्न होने वाला यही
अकेला व्यक्ति नहीं था।

अध्याय १६

पोस्तनिकोव की बहादुरी के कार्य की कहानी पीटर्सबुर्ग के भिन्न-भिन्न
क्षेत्रों में चुपचाप फैल चुकी थी, क्योंकि उन दिनों पत्र-पत्रिकाओं की
खामोशी के कारण राजधानी में इस प्रकार की गपशप लगातार चलती
रहती थी। मौखिक ढंग से प्रसारित होने के कारण असली नायक
पोस्तनिकोव का तो नाम ही ग़ायब हो गया था परन्तु कहानी आकार में
बढ़कर बढ़ती गई और इसका स्वरूप अत्यधिक दिलचस्प व रोमांचपूर्ण
गया।

ऐसा कहा जाने लगा था कि एक बड़ा असाधारण तैराक पीटर
र किले की दिशा से तैरता हुआ महल की ओर आने लगा था कि महल

के एक संतरी ने गोली दागकर उसे घायल कर दिया। इतने में उधर से गुजरते हुए अक्षम सैनिक टुकड़ी के अफसर ने नदी में कूदकर उस घायल आदमी को बचाया जिसके लिये उसे पुरस्कार दिया गया और संतरी को उसके मुताबिक सजा मिली। यह मूर्खतापूर्ण अफवाह एक मठ में भी पहुंच गई जहां एक धर्माध्यक्ष रहता था, जो बड़ा जागरूक व्यक्ति था व "सांसारिक घटनाओं" से पूर्णतया विमुख नहीं था और मास्को के धार्मिक स्विन्यीन परिवार के प्रति ईसाई सदिच्छा का भाव रखता था।

गोली मारनेवाली कहानी दूरदर्शी पादरी को अस्पष्ट लगी। फिर यह रात्रि का तैराक कौन था? यदि वह एक भागा हुआ अपराधी था तो उसे किले से नेवा नदी के पार तैरते हुए गोली मारने पर संतरी को सजा क्यों दी गई? यदि वह अपराधी न होकर कोई रहस्यमय व्यक्ति था जिसको नेवा की लहरों से बचाया जाना चाहिए था, तो संतरी को इस बात का कैसे पता लगता? और तब फिर शहर के लोगों को इस प्रकार की मनगढ़ंत बातें होना असंभव सा लगता था। सांसारिक लोग कई बातों के बारे में बड़ा विचारहीन रुख रखते हैं और वे "निकम्मी गप्पों" के शौकीन होते हैं, परन्तु जो लोग बंद मठों में रहते हैं, उनकी प्रवृत्ति बड़ी गम्भीर होती है और वे सांसारिक मामलों की असली सच्चाई जानते हैं।

अध्याय १७

एक मौके पर जब स्विन्यीन आदरणीय धर्माध्यक्ष से आशीर्वाद प्राप्त करने गया तो वे "प्रसंगवश, गोली मारनेवाली घटना पर" बोल उठे। स्विन्यीन ने उन्हें सारी सच बात कही, जैसा हमें ज्ञात है उसका प्रचलित क़िस्से "गोली मारनेवाली घटना" से कोई संबंध नहीं था।

धर्माध्यक्ष ने असली कहानी चुपचाप अपने सफेद मनकों को गिनते हुए और स्विन्यीन पर नजर जमाये हुए सुनी। जब उसने बात पूरी की तो धर्माध्यक्ष ने कोमल स्वर से पूछा:

"आपने जो कहा है उससे यही अंदाज लगता है कि यह कहानी हर जगह पूरी सच्चाई के साथ नहीं कही गई है?"

स्विन्यीन थोड़ा चुप कर रहा और तब प्रश्न को टालते हुए बोला कि "रिपोर्ट जनरल कोकोश्किन ने की थी न कि उसने।

अपनी मोम जैसी अंगुलियों से कई मनके घुमाते हुए मंद स्वर में धर्माध्यक्ष बोला:

"झूठ और अपूर्ण सत्य में अंतर किया जाना चाहिये।"

उसने फिर से मनके घुमाने शुरू कर दिये, फिर खामोशी हुई और आखिर में कोमल गुनगुनाहट में बोला:

"अपूर्ण सत्य झूठ नहीं होता है। पर इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं है।"

"सत्य है", स्विन्यीन ने उत्साहित होकर कहा, "मुझे तो अवश्य इससे अधिक चिन्ता हुई है कि संतरी को मुझे सजा देनी पड़ी, जिसने चाहे कर्तव्य के प्रति लापरवाही की हो..."

मनके फिर से घूमने लगे और बीच में रोकते हुए मंद गुनगुनाहट हुई:

"कर्तव्य से कभी विमुख नहीं होना चाहिये।"

"सत्य है, पर यह कार्य उसके दिल की अच्छाई से प्रेरित था, दया का भाव था और खतरे से शानदार मुकाबला था: उसने अनुभव किया कि दूसरे मनुष्य को बचाने में वह स्वयं को विनष्ट कर रहा है... यह एक उच्च और पवित्र भावना थी!"

"जो पवित्र है वह ईश्वर को ज्ञात है। साधारण लोगों को शारीरिक दंड दिया जाना प्राणघातक नहीं होता और राष्ट्रों की प्रथा के विरुद्ध भी नहीं होता और न ही बाइबल के विरुद्ध है। किसी गंवार के लिये लाठी की मार सहन करना आत्मा की बारीक चुभन सहन करने से कहीं आसान है। इस बारे में तुमने न्याय की उपेक्षा नहीं की।"

"पर उसको जीवन-रक्षा करने के पुरस्कार से वंचित कर दिया गया।"

"जीवन की रक्षा करना कोई योग्यता नहीं है, यह तो कर्तव्य मात्र है। जो किसी के जीवन को बचा सकता हो और जिसने बचाने की कोशिश न की हो, ऐसे व्यक्ति को क़ानून सजा देता है और जिसने किसी को बचाया है, उसने अपना कर्तव्य-पालन किया है।"

थोड़ी देर रुककर फिर मनके घूमे और पुनः मंद स्वर:

"एक सिपाही का अपने वीरतापूर्ण कार्यों के लिये अपमानित और घायल होना किसी पदक से पुरस्कृत होने से कहीं श्रेष्ठ है। इस मामले